"आचार्य हरेकृष्ण शतपथी कृत भारतायनम् महाकाव्य का समीक्षात्मक अध्ययन"

"AACHARYA HAREKRISHNA SHATPATHI KRIT BHARATAYANAM MAHAAKAVYA KA SAMIKSHATMAKA ADHYAYANA"

कोटा विश्वविद्यालय, कोटा

की

पीएच. डी. (संस्कृत) उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध–प्रबन्ध

(कला संकाय)

शोधार्थी
सुरेश कुमार सैनी

शोध–पर्यवेक्षक

डॉ. गीताराम शर्मा
सह–आचार्य (संस्कृत)

संस्कृत विभाग
राजकीय कला महाविद्यालय, कोटा (राज.)।

कोटा विश्वविद्यालय, कोटा (राज.) ।

वर्ष **2020**

प्रमाणपत्र

मुझे यह प्रमाणित करते हुए अत्यन्त प्रसन्नता है कि "आचार्य हरेकृष्ण शतपथी कृत भारतायनम् महाकाव्य का समीक्षात्मक अध्ययन" शीर्षक शोध–प्रबन्ध, शोधार्थी सुरेश कुमार सैनी ने कोटा विश्वविद्यालय, कोटा के पीएच.डी. के नियमों के अनुसार निम्नलिखित आवश्यकताओं के साथ पूर्ण किया है–

1. शोधार्थी ने विश्वविद्यालय के नियमानुसार कोर्स वर्क पूर्ण किया है।
2. शोधार्थी ने विश्वविद्यालय के 200 दिन के आवासीय आवश्यकताओं को पूर्ण किया है।
3. शोधार्थी ने नियमित रूप से अपना कार्य प्रतिवेदन प्रस्तुत किया है।
4. शोधार्थी ने विभाग एवं संस्था प्रधान के समक्ष अपना शोधकार्य प्रस्तुत किया है।
5. शोधार्थी को बताई गई शोध पत्रिका में शोधपत्र का प्रकाशन हुआ है।

मै इस शोध–प्रबन्ध को कोटा विश्वविद्यालय, कोटा के पीएच.डी. (संस्कृत) की उपाधि हेतु मूल्यांकनार्थप्रस्तुत करने की अनुमति देता हूँ।

दिनांक :–

स्थान :–

डॉ. गीताराम शर्मा

शोधपर्यवेक्षक

ANTI-PLAGIARISM CERTIFICATE

It is certified that PhD Thesis Titled "**आचार्य हरेकृष्ण शतपथी कृत भारतायनम् महाकाव्य का समीक्षात्मक अध्ययन**" by **Suresh Kumar Saini** has been examined us with the following anti-plagiarism tools :-

a. Thesis has significant new work/knowledge as compared already published or are under consideration to be published elsewhere. No sentence, equation, diagram, table, paragraph or section has been copied verbatim from previous work unless it is placed under quotation marks and duly referenced.

b. The work presented is original and own work of the author(i.e. there is no plagiarism). No ideas, processes, results or words of others have been presented as author's own work.

c. There is no fabrication of data results which have been compiled and analyzed.

d. There is no fabrication by manipulating research materials, equipment of processes or changing or omitting data or results such that the research is not accurately represented is the research record.

e. The thesis has been checked using **URKUND** Software, and found within limits as per HEC Plagiarism Policy and instructions issued from time to time.

Suresh Kumar Saini
(Research Scholar)

Date :-

Place :-

Dr. Geetaram Sharma
(Research Supervisor)

Date :-

Place :-

शोधसार

समीक्ष्य महाकाव्य २१वीं सदी का संस्कृतकाव्यधारा का प्रतिनिधि काव्य है। राष्ट्रियसंस्कृत विद्यापीठ (अब विश्वविद्यालय) तिरुपति से शिक्षाप्राप्ति के समय वर्ष २००८ में मुझे प्रस्तुत महाकाव्य के प्रणेता 'महाकवि आचार्य हरेकृष्ण शतपथी जी के महान व्यक्तित्व को समीप से जानने तथा 'भारतायनम् महाकाव्य का अध्ययन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इस महाकाव्य ने मुझे अत्यन्त प्रभावित किया। शोधमार्गदर्शक द्वारा स्वरुचि का विषय शोधप्रबन्ध हेतु चुनने को कहने के उपरान्त मैनें "आचार्य हरेकृष्ण शतपथी कृत 'भारतायनम्' महाकाव्य का समीक्षात्मक अध्ययन" विषय को अपने शोधप्रबन्धविषय के रूप में चुना। शोधसमिति द्वारा उक्त विषय को शोधकार्य हेतु स्वीकृत किये जाने के उपरान्त तिरुपतिविद्यापीठ, पुरीविद्यापीठ, जगन्नाथसंस्कृत विश्विद्यालय पुरी, कलिंगा सामाजिकविज्ञान विवि०, भुवनेश्वर, आदि स्थानों की शोधयात्राओं द्वारा; महाकवि की कृतियों के अध्ययन एवं साक्षात् भेंट द्वारा; कोटा, जयपुर, दिल्ली आदि स्थानों के विश्वविद्यालयों के पुस्तकालयों, दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी आदि से विषयवस्तु से सम्बंधित ग्रन्थों एवं सन्दर्भग्रंथो के गम्भीर अध्ययन द्वारा सूचनाओं का संग्रहण किया गया। संगृहीत सूचनाओं का अतिगम्भीरतया अध्ययन करके मार्गदर्शक डॉ० गीतारामशर्मा जी के अद्वितीय मार्गदर्शन एवं सहयोग से दिन–रात के अथक परिश्रम द्वारा एकत्रित सूचनाओं को प्रबन्ध का स्वरूप दिया गया। **''आचार्यहरेकृष्णशतपथी कृत 'भारतायनम्' महाकाव्य के समीक्षात्मक अध्ययन''** शीर्षक प्रस्तुत शोधकार्य को मेरे द्वारा गुरुवर्य डॉ० गीताराम जी शर्मा के मार्गदर्शन से पञ्च–अध्यायों में विभक्त किया गया है।

प्रथम अध्याय में 'भारतायनम्' महाकाव्य के प्रणेता आचार्य हरेकृष्णशतपथी जी का व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व वर्णित है। व्यक्तित्व के अन्तर्गत कविवंश, जन्म, जन्मस्थान, छात्रजीवन अथवा अध्ययनकाल, राजकीयसेवाओं, उपलब्धियों, प्राप्त सम्मानों एवं प्रशस्तियों का वर्णन किया है। कर्तृत्व के अन्तर्गत आचार्य हरेकृष्ण शतपथी जी की मूल, सम्पादित, अनूदित, टीका, तथा अन्य कृतियों के विषय में संक्षिप्त जानकारी प्रस्तुत की गयी है। **द्वितीय अध्याय** में भारतायनम् महाकाव्य की सर्गानुसारी कथावस्तु संक्षिप्तरूप में प्रस्तुत की गयी है।

तृतीय अध्याय में प्राचीन एवं अर्वाचीन काव्यशास्त्रों में विवेचित महाकाव्यस्वरुप का विस्तृत विवेचन किया गया है। प्राचीनकाव्यशास्त्रों के अन्तर्गत अग्निपुराण, काव्यालंकार, काव्यदर्पण, काव्यप्रकाश तथा साहित्यदर्पण तथा अर्वाचीनकाव्यशास्त्रों के अन्तर्गत अभिराजयशोभूषणं, अभिनवकाव्यालंकारसूत्र एवं डॉ० रहसबिहारी द्विवेदी द्वारा विवेचित महाकाव्यस्वरुप को प्रस्तुत किया गया है। अर्वाचीन एवं प्राचीन महाकाव्यलक्षणों के आधार पर भारतायनम् महाकाव्य का 'महाकाव्यत्व' प्रतिपादन भी तृतीय अध्याय में किया गया है।

चतुर्थ अध्याय में भारतायनम् महाकाव्य का "काव्यशास्त्रीयविवेचन" प्रस्तुत किया गया है; जिसके अन्तर्गत क्रमशः इतिवृत्त, पात्रयोजना, छन्दयोजना, अलङ्कारयोजना, अङ्गीरस एवं अङ्गभूतरसयोजना, भाषासौष्ठव, तथा गुणदोषविवेचन प्रस्तुत किया गया है।

पंचम अध्याय में 'भारतायनम् महाकाव्य में लोकचिन्तन' विषयान्तर्गत राष्ट्रीय, पौराणिक, सामाजिक, धार्मिक, दार्शनिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक, नारी, प्रकृति, पर्यावरण, संस्कृतभाषामूलक, नैतिक, वैश्विक, पर्यावरण आदि अनेक लोकचिन्तनों का विवेचन प्रस्तुत किया गया है। पंचम अध्याय के उपरान्त उपसंहार में भारतायनम् महाकाव्य के वैशिष्ठ्य के साथ ही संस्कृतसाहित्य को समीक्ष्य महाकाव्य की देन आदि विषयों को समाहित किया गया है। उपसंहार के उपरान्त सहायक एवं सन्दर्भग्रन्थों एवं पत्रपत्रिकाओं की सूची एवं विभिन्न पत्रिकाओं में प्रकाशित शोधपत्रों की सूची को प्रस्तुत किया गया है। परिशिष्ट के रूप में महाकाव्य की श्लोकानुक्रमणिका को प्रस्तुत किया गया है।

मेरे द्वारा कृत इस शोधप्रबन्ध का भविष्य में महाकवि आचार्य हरेकृष्ण शतपथी के व्यक्तित्व एवं कृतृत्व, उनकी रचनाओं, भारतायनम् महाकाव्य भाषासौष्ठव, रस, अलंकर, राष्ट्रीय, पौराणिक, सामाजिक, धार्मिक, दार्शनिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक, नारी, प्रकृति, पर्यावरण, संस्कृतभाषामूलक, नैतिक, वैश्विक, पर्यावरण, गंगानदिचिन्तन, श्रीजगन्नाथसंस्कृतिचिंतन इत्यादि विषयों पर भावि–शोधार्थियों के लिए महदुपयोगी साबित होगा। देशवासियों में देशभक्तिभावना के सञ्चार के साथ ही वर्तमान में देश में व्याप्त पर्यावरणप्रदूषण, स्त्री–अपराध, आतंकवाद, धार्मिक असहिष्णुता, क्षेत्रवाद, आदि ज्वलन्त समस्याओं के समाधान में मेरे इस शोध का महत्त्वपूर्ण योगदान रहेगा।

प्रस्तुत समीक्षात्मक अध्ययन को मैनें महत्पर्यत्न से सम्पादित किया गया है। "आचार्य हरेकृष्ण शतपथी कृत 'भारतायनम्' महाकाव्य का समीक्ष्त्मक अध्ययन" शीर्षकाधारित इस शोधप्रबन्ध के अन्तर्गत शोधार्थी द्वारा अर्वाचीनसंस्कृतसाहित्य के महर्षि, आचार्य, कविवर, महामहोपाध्याय, सरस्वतिपुत्र, वाग्मिप्रवर, आशुकवि, प्रशासकरत्न, आदि अनेक उपाधियों से विभूषित, अलौकिक प्रतिभासम्पन्न आचार्यहरेकृष्णशतपथी विरचित भारतायनम्' महाकाव्य का समीक्षात्मक अध्ययन करने का प्रयास किया है। अतः आन्तरिक संतुष्टि का अनुभव कर रहा हूँ।

Candidate's Declaration

I, hereby, certify that the work, which is being presented in the thesis, entitled **"आचार्यहरेकृष्णशतपथी कृत 'भारतायनम् महाकाव्य का समीक्षात्मक अध्ययन"** in partial fulfillment of the requirement for the award of the Degree of Doctor of Philosophy, carried under the supervision of Dr. Geetaram Sharma, and submitted to the University of Kota, Kota represents my ideas in my own words and where others ideas or words have been included. I have adequately cited and referenced the original sources. The work presented in this thesis has not been submitted elsewhere for the award of any other degree or diploma from any Institutions.

I also declare that I have adhered to all principles of academic honesty and integrity and have not misrepresented or fabricated or falsified any idea/data/fact/source in my submission. I understand that any violation of the above will cause for disciplinary action by the University and can also evoke penal action from the sources which have thus not been properly cited or from whom proper permission has not been taken when needed.

Date :-

Place :-

Suresh Kumar Saini

(Research scholar)

This is to certify that the above statement made by **Suresh Kumar Saini (Enrolment No-RS/481/18)** is correct to the best of my knowledge.

Date :-

Place :-

Dr. Geetaram Sharma

(Research Supervisor)

''मङ्गलाचरणम्''

''सिद्धिबुद्धिप्रदं देवं श्रीगणेशं विनायकं ।
वाग्देवीं शारदां वन्दे शोधकार्यार्थसिद्धये ।।''

''श्रीनाथं राधिकानाथं गोपगोपीजनप्रियम् ।
गोवर्धनधरं देवं नौमि गोकुलमण्डलम् ।।''

''दक्षिणे यमुना यस्य वामे च वृषभानुजा ।
परितो गोपिका यस्य तं वन्दे नन्दनन्दनम् ।।''

''श्रीवासुदेवं पुरुषं पुराणं ब्रह्मण्यदेवं परमात्मतत्त्वम् ।
अद्वैतमाध्यं तमचिन्त्यरूपं श्रीद्वारकाधीशमहं नमामि ।।

''आर्यावर्तधरां धन्यां धर्मप्राणां हरिप्रियाम् ।
सर्ववेदमयीं पुण्यां वन्दे ! भारतमातरम् ।।''

''शस्त्रास्त्रशास्त्रविज्ञानां वीराणां विदुषां पराम् ।
जननीं जन्मभूमिञ्च वन्दे ! भारतमातरम् ।।''

****

'कृतज्ञतानिवेदनम्'

''महाजनस्यसंसर्गः कस्य नोनन्नतिकारकः ।
पद्मपत्रस्थितं तोयं धत्ते मुक्ताफलाश्रियः ।।''

भारतीय परम्परा में पूज्यजनों का व्यतिक्रम नहीं किया जाता है। इसी मति से जिनके आशीर्वाद, अनुकम्पा, सहयोग तथा प्रोत्साहन से यह शोधप्रबन्ध पूर्णता को प्राप्त हुआ है। उन सभी का मैं यहाँ स्मरण कर रहा हूँ।

सर्वप्रथम स्वेष्टप्रभु के कमलचरणों में प्रणति निवेदन करता हूँ, जिनकी कृपा एवं दया से यह शोधकार्य पूर्णता को प्राप्त हुआ। तदुपरान्त साक्षात् प्रेम, दया, करुणा, एवं वात्सल्य की देवी, नित्यप्रातः वन्दनीया, कठिन परिश्रम करके मुझे समाजसेवायोग्य उत्तम नागरिक बनाने वाली, मेरे जीवन की प्रेरणास्वरूपा, आत्म–जननी श्रीमती धन्नीबाई तथा सदैव सत्यपथ पर चलने की प्रेरणा देने वाले, त्याग, करुणा, एवं परिश्रम के अपरनाम, 'सादा जीवन उच्चविचार' की भावना के पोषक, परिश्रम एवं अनुशासन हेतु मेरी प्रेरणा, अपना सबकुछ देकर भी कुछ नही चाहने वाले, भूमिपुत्र मेरे पूज्यनीय पिताश्री श्री छोटूलाल जी के चरणों में नमन करता हूँ। तदुपरान्त मेरे वरिष्ठाग्रज श्री रमेशचन्द्र, कनिष्ठाग्रज श्री भोलुराम, एवं मातृस्वरूपा, स्नेहमयी, सरला, मधुरा मेरी अग्रजा सहोदरी श्रीमती तुलसी के चरणों में प्रणति निवेदन करता हूँ। आप सब के आशीर्वाद एवं परिश्रम करते रहने की प्रेरणा से ही मैं सुरभारती की आराधना करते हुए शोधकार्यरुपी सागर को पार करने में समर्थ हुआ हूँ। मेरी जीवनसंगिनी श्रीमती अनीता एवं मेरी प्रिय पुत्री दिव्यांशी का भी हृदय से आभारी हूँ। आप दोनों ने त्याग एवं सेवाभाव का परिचय देते हुए मेरे इस कार्य को पूर्ण करने में अपेक्षित सहयोग दिया।

इसी क्रम में मैं मेरे शोधनिर्देशक, गुरुचरण, अभिभावकतुल्य, साहित्यादि शास्त्रों में कृतभूरिश्रम, डॉ० गीतारामशर्मा जी (सह–आचार्य), को नमन करता हूँ। आपके बारम्बार प्रोत्साहन, अकल्पनीय सहयोग एवं सफलनिर्देशन से यह प्रबन्ध निर्धारित समयावधि में पूर्ण हुआ। समीक्ष्य कृति के प्रणेता, उत्तमप्रशासक, राजकीय सेवार्थ राष्ट्रपति पुरस्कार एवं साहित्य सेवार्थ केन्द्रीय साहित्य अकादमी पुरस्कार से विभूषित, आधुनिकसंस्कृतसाहित्याकाश के दैदीप्यमान नक्षत्र, राष्ट्रियसंस्कृत –विद्यापीठम् तिरुपति के पूर्व कुलपति, कलिंगा सामाजिकविज्ञान विवि०, भुवनेश्वर के वर्तमान कुलपति, आचार्य हरेकृष्णशतपथी का हृदय से आभार प्रकट करता हूँ। आपने अपने व्यस्तजीवन में से मुझे अपना अमूल्य समय एवं आशीर्वाद देकर प्रोत्साहित कर इस कार्य की पूर्णता में अकल्पनीय योगदान दिया है।

इसी क्रम में राजकीय कला महाविद्यालय कोटा के प्राचार्य का भी हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ, जिनके परिश्रम एवं सेवा से यह महाविद्यालय 'ज्ञानसाधनास्थली' की उपमा को प्राप्त हुआ है। मैं उक्त

महाविद्यालय के संस्कृत विभागाध्ययक्ष एवं समस्त आचार्यगणों का आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने मुझे शोधकार्य में यथावसर सहयोग एवं मार्गदर्शन प्रदान किया। साथ ही राजकीय कला महाविद्यालय कोटा, कोटाविश्वविद्यालय कोटा, राष्ट्रिसंस्कृतसंस्थानम्, जनकपुरी नई दिल्ली एवं पुरी परिसर, दिल्लीसंस्कृत अकादमी, राष्ट्रियसंस्कृतविद्यापीठम् तिरुपति (आ०प्रदेश), श्रीजगन्नाथविश्वविद्यालय, पुरी ओड़िसा एवं दिल्ली लोक पुस्तकालय (Delhi Public Library) के पुस्तकालयाध्ययक्षों का हृदय से आभारी हूँ। आप सब ने अपेक्षित सहयोग प्रदान कर इस कार्य की पूर्णता में अपना योगदान दिया है।

इसी क्रम में राष्ट्रियसंस्कृतविद्यापीठम् तिरुपति (आ०प्रदेश), स्थानीय प्रो० डॉ० प्रहलाद आर० जोशी, डॉ० स्वेत्पद्माशतपथी, डॉ० सोमनाथ दास इत्यादि गुरुजनों एवं श्रीजगन्नाथसंस्कृत विश्वविद्यालय, पुरी ओड़िसा स्थानीय गुरुजनों का भूय–२ हृदय से आभार प्रकट करता हूँ। आपके कृत सहयोग ने प्रस्तुत प्रबन्ध हेतु अत्यन्त महत्त्वपूर्ण विषयसामग्री के संकलन में मेरा कार्य सुकर किया।

इसी अवसर पर मैं मेरे अभिभावकतुल्य विद्यालयप्रमुख एवं शिक्षकसाथियों, राजकीयमहाविद्यालय बूंदी के संस्कृत विभागाध्यक्ष डॉ० पूरणचंद्र उपाध्याय महोदय, मेरे अनन्य मित्र डॉ० पिंकेशदाधीच, सतपालसिंह, मनीष राठौड़, सुश्री प्रियंकाशर्मा आदि, का हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ, जिनका सहयोग एवं मार्गदर्शन मुझे मिला।

कृतज्ञतानिवेदनक्रमान्त में "गच्छतः स्खलं क्वापीति" मतानुसार 'महान पर्यत्न करने के उपरान्त भी प्रस्तुत शोधप्रबन्ध में न्यूनताऐं सम्भव हो सकती हैं', ऐसा विचार करके कविकुलगुरु महाकवि कालिदास के निम्न वचनों का स्मरण करके शोधप्रबन्धकार्य में समागत दोषों के समाधान की कामना करता हुआ पुनरेकबार माता–पिता एवं गुरुजनों के चरणों में प्रणति निवेदन करके अपनी वार्ता को विराम देता हूँ।

"आ परितोषाद् विदुषां न साधु मन्ये प्रयोगविज्ञानम् ।
बलवदपि शिक्षितानामात्मन्यप्रत्यय चेतः ।।[1]

[1] महाकविकालिदासप्रणीत अभिज्ञानशाकुन्तलम्–डॉ०प्रभाकरशास्त्री,पंचशील प्रकाशन, जयपुर, १/२

प्राक्कथन

संस्कृतभाषा जिससे भारतीय संस्कृति, साहित्य, दर्शन आदि परिपुष्ट हैं; विश्व की प्रचीनतमा भाषा है। विभिन्न परम्पराओं से सम्बद्ध प्राचीन भारतीय विद्वानों ने समस्त भाषाओं की जननी 'संस्कृतभाषा' में ही अपने मौलिकसाहित्य का सृजन किया है। वर्तमानकाल में भी विश्वपुञ्ज पर हमारा संस्कृतसाहित्य प्रधानता ने विराजित है। आदिकाल से वर्तमान पर्यन्त संस्कृतसाहित्य ने नितनवनूतनता का प्रदर्शन किया है। वस्तुतः साहित्य समाज का दर्पण हैं। जो तत्कालीन समाज का वह यथार्थ प्रतिबिम्ब हमारे समक्ष उपस्थित करता है जिसका अवलोकन कर सामाजिक लोग अपनी–२ स्थिति का मूल्यांकन करने में समर्थ होते हैं।

संस्कृतकाव्यामृतधारा वैदिककाल से प्रारम्भ होकर आदिकवि महर्षि वाल्मीकि के श्रीमुख से निसृत् होती हुई वर्तमान पर्यन्त अनवरतरूपेण प्रवाहित है। देवभाषा संस्कृत में निबद्ध अत्युत्कृष्ट एवं अथाह साहित्य का प्रभाव न केवल भारतवर्ष अपितु समस्त विश्व पर आज भी स्पष्टरूप से देखा जा सकता है। संस्कृतसाहित्य में मनुष्यजीवन से सम्बद्ध समस्त विषयों का निरूपण किया गया है। सद्भावनाप्रस्फुटन, सद्विचारोद्भवन, लौकिकभावसंरक्षण, कुरीतियों तथा आडम्बरों का खण्डन, प्राकृतिकसौन्दर्यावलोकन, नैतिकमूल्यों का स्थापन, जीवनसंरक्षण, परोपकारचिन्तन, सामाजिक, राजनैतिक एवं चरित्रनिर्माणादि विचारों की स्थापना संस्कृतसाहित्य ने ही की है। जगत्हिकारिणी, भवोदधितारिणी, सद्बुद्धिकारिणी, दुर्बुद्धिनिवारिणी, मंगलसञ्चारिणी, द्रुतप्रभावकारिणी 'संस्कृतभाषा' विश्वज्ञानविज्ञान की अमूल्य निधि है। आदिकाल से देवनदी–'गंगा' के समान नित्य–प्रवाहमाना यह देवभाषा अपनी पवित्रता से समस्त राष्ट्र को पवित्र करती आ रही है। संस्कृत–वांग्मय में समस्त विषयों का श्रेष्ठ रीति से विवेचन किया गया है। संस्कृत– साहित्य जीवन की विषम परिस्थितियों में भी अलौकिकानन्दान्वेषण करने तथा धैर्यवान बने रहने की शिक्षा देता है।

आधुनिक युग में जब मनुष्य अल्पसमय में अधिक लाभप्राप्ति की इच्छा करता हुआ मानसिक अशान्ति से पीड़ित है; तब 'साहित्य' ही मानसिक शान्ति एवं आनन्द प्राप्ति का सर्वोत्कृष्ट साधन होता है। 'साहित्य' मानवजीवन के यथार्थ एवं सौन्दर्य का प्रतीक है। जहाँ साहित्य की सत्ता होती है वहीं सौन्दर्यबोध एवं आह्लादकत्व की उपस्थिति होती हैं। साहित्य वह अमूल्य रत्नाकर है जिसमें अवगाहन करके कवि जगत्हितार्थ अमूल्य रत्नों को चुनता है। समाज के कष्टों को हरने तथा समाज में हर्षोल्लास के सञ्चरण हेतु कवि महत्प्रयासों से काव्यसृजन करता है। 'इस जगत् में 'कवि' होना मनुष्य होने से भी दुर्लभतर है। यथा–

"नरत्त्वं दुर्लभं लोके विद्या तत्र सुदुर्लभा ।

कवित्त्वं दुर्लभं तत्र शक्तिस्तत्र सुदुर्लभा ।।"[2]

माता सरस्वती की कृपा के फलस्वरूप कवित्त्व प्रतिभा का आदान विरल प्राणियों में ही होता है। यथा–

"काव्यं तु जायते जातुः कस्यचित् प्रतिभावत ।।"[3]

वस्तुतः काव्य समाज को जानने का सरलतम मार्ग है। चतुर्वर्गफलप्राप्ति, मनोरञ्जन, शिक्षा, स्वास्थ्य आदि सूक्ष्म विषयों का परिशीलन करके कवि काव्यसौरभ को प्रकट करता है। यद्यपि वेदों, पुराणों, स्मृतियों आदि में भी उक्त विषयों का विवेचन किया गया है, तथापि साधारण एवं अल्पज्ञजनों के शीघ्र अवबोधनार्थ काव्य को ही सर्वोत्तम मार्ग के रूप में विद्वानों ने स्वीकृत किया है। आचार्य दण्डी के मतानुसार काव्य रचना में कविप्रतिभा ही प्रर्याप्त तत्व नहीं है। अपितु इसमें व्युत्पत्ति एवं अभ्यास का भी महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। यथा–

"नैसर्गिकी च प्रतिभा श्रुतञ्च बहुनिर्मलम् ।
अमन्दश्चाभियोगोऽस्याः कारणं काव्यसम्पदः ।।"[4]

काव्यसृजन हेतु कवि के पास 'शब्द' नामक विशिष्ट साधन होता है, जिसके द्वारा वह काव्यजगत् का सृजन करता है। कवि के मानसपटल पर स्थित अलौकिकी कल्पना और भावना काव्यरूप में प्रकट होकर सहृदयहृदयों को अलौकिकानन्द प्रदान करती है। लोकान्वेषणानुकूल वर्णन, कवि के काव्यकौशल का प्रमाण होता है।

महाकाव्यों का उद्भव आदिकाव्य–'वाल्मीकिरामायण' से प्रारम्भ हुआ है। रामायण एवं महाभारत को उपजीव्य काव्य कहा जाता है। यद्यपि महर्षि 'पाणिनि' ने 'जाम्बवतिविजयम्' महाकाव्य लिखा, किन्तु प्राप्तिरभाव के कारण लौकिकसाहित्य में अश्वघोष को प्रथम महाकवि के रूप में देखा जाता है। 'बुद्धचरितम्' एवं 'सौन्दरानन्दम्' महाकवि अश्वघोषकृत दो महाकाव्य है। भारतीयविद्वान् कविकुलगुरु कालिदास को प्रथम महाकवि के पद पर स्थापित करते हैं। 'रघुवंशम्' एवं 'कुमारसम्भवम्' महाकवि कालिदास रचित दो महाकाव्य हैं। महाकवि कालिदासानन्तर भर्तृमेण्ठकृत 'हयग्रीववधम्', प्रवरसेन रचित 'सेतुबन्धम्', भारविकृत 'किरातार्जुनीयम्', कुमारदास रचित 'जानकीहरणम्', माघकृत 'शिशुपालवधम्', श्रीहर्ष रचित 'नैषधीयचरितम्', राजमल्लकृत 'जम्बूस्वामिचरितम्' आदि महाकाव्यों द्वारा १७वीं शताब्दी तक महाकाव्यपरम्पराप्रवाह दृष्टिगत होता है। तदनन्तर कुछ काल के लिए यह प्रवाह क्षीणप्रायहो गया। वर्तमान में पुनः कतिपय संस्कृत विद्वानों ने महाकाव्यलेखन पर अपनी लेखनी चलाई है। महाराणाप्रताप, रानीलक्ष्मीबाई, महात्मा गाँधी, पं० जवाहरलाल नेहरू, राम, कृष्ण, जानकी, इन्द्र, विष्णु, नारद, भारतभूमि आदि विषयों से सम्बन्धित अनेक महाकाव्यों का अनेक महाकवियों ने सृजन किया। इस महाकाव्य परम्परा में महाकवि आचार्य हरेकृष्ण शतपथी रचित 'भारतायनम्' महाकाव्य भी कथावस्तु, चरित्रचित्रण, रस, छन्द, अलंकार आदि महाकाव्यलक्षणों की दृष्टि से अपना विशिष्ट स्थान रखता है।

---

[2] आ०भामहकृत काव्यालंकार – डॉ. रामानंदशर्मा, चौखम्बा प्र.वाराणसी, २०१४, १/१
[3] आ०भामहकृत काव्यालंकार – डॉ. रामानंदशर्मा, चौखम्बा प्र.वाराणसी, २०१४, १/५
[4] महाकवि दंडी विरचित काव्यादर्श– आ.रामचंद्रमिश्र चौखम्बा प्र.वाराणसी, २०१४, १/१०३

संसार में 'विश्वगुरु' की उपाधि से विभूषित–'भारतभूमि' के आदर्शचरित्रस्थापना के साथ ही देश में व्याप्त वैमनस्य, वैरभाव, अविश्वास, देशभक्तिभावना का पतन, आतंकवाद, क्षेत्रवाद, पर्यावरणप्रदूषण, महिलाओं के प्रति बढ़ते अपराध, भ्रष्टाचार, दीनहीनों के शोषण आदि बुराइयों का समूलनाश समीक्ष्य महाकाव्य 'भारतायनम्' का मुख्योद्देश्य प्रतीत होता है। 'भारतायनम्' महाकाव्य में महाकवि ने उक्त सभी विषयों को साधने का प्रयास किया है। इस महाकाव्य का उद्देश्य राष्ट्रीयता एवं देशप्रेम की भावना को बल देने के साथ–साथ आतंकवाद, भ्रष्टाचार, असहिष्णुता, धार्मिकवैमनस्य, पर्यावरणप्रदूषण जैसी ज्वलन्त समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करना है। 'भारतायनम्' महाकाव्य के यही गुण आधुनिक महाकाव्यों में समीक्ष्य महाकाव्य को विशिष्ट स्थान प्रदान करते हैं।

"आचार्यहरेकृष्णशतपथी कृत 'भारतायनम् महाकाव्य का समीक्षात्मक अध्ययन"

अनुक्रमाणिका

क्र.सं.	अध्याय	विषयवस्तु	पृ०सं०
१–	————————	शोधसार	i–ii
२–	————————	मंगलाचरण	iii
३–	————————	कृतज्ञतानिवेदन	iv–v
४–	————————	प्राक्कथन	vii- viii
५–	————————	शब्दसंक्षिप्तिकरण	ix
६–	प्रथम अध्याय	महाकवि का व्यक्तित्त्व एवं कर्तृत्व –	1–41
		क. व्यक्तित्व –	
		अ. जन्म, जन्मस्थान एवं वंश–परम्परा	
		आ. शैक्षणिक उपलब्धियाँ	
		इ. अध्यापन सेवाएँ	
		ई. शैक्षणिक–प्रशासनिक सेवाएँ	
		उ. शोध–मार्गदर्शन	
		ऊ. व्याख्यान	
		ऋ. उपलब्धियां एवं पुरस्कार	
		ए. महाकवि–प्रशस्तियाँ	
		ख. कर्तृत्व –	
		अ. मौलिककृतियाँ	
		आ. संस्कृतभाषेतरमौलिकरचनाएँ	
		इ. अनुदितरचनाएँ	
		ई. व्याख्याग्रन्थ	
		उ. सम्पादितकृतियाँ	
		ऊ. सम्पादित पत्रपत्रिकाएं	

		ए. पठित एवं प्रकाशित शोधपत्र ऐ. सीडी, डीवीडी आदि	
७—	द्वितीय अध्याय	**भारतायनम् महाकाव्य की सर्गानुसारी कथावस्तु—** १. प्रथमसर्ग २. द्वितीयसर्ग ३. तृतीयसर्ग ४. चतुर्थसर्ग ५. पंचमसर्ग ६. षष्ठसर्ग ७. सप्तमसर्ग ८. अष्टमसर्ग ९. नवमसर्ग १०. दशमसर्ग	**42—72**
८—	तृतीय अध्याय	**संस्कृतकाव्यशास्त्रीयपरम्परा में भारतायनम् महाकाव्य का महाकाव्यत्त्व —** अ. संस्कृत की आर्षकाव्यशास्त्रीय परम्परा आ. संस्कृत की अर्वाचीनकाव्यशास्त्रीयपरम्परा इ. 'भारतायनम्' महाकाव्य स्वरूपविवेचन ई. 'भारतायनम्' महाकाव्य का महाकाव्यत्व	**73—99**
९—	चतुर्थ अध्याय	**भारतायनम् महाकाव्य का काव्यशास्त्रीय विवेचन—** अ. इतिवृत्त आ. पात्रानुलोचन इ. छन्दयोजना ई. अलंकारयोजना उ. रसयोजना ऊ. भाषासौष्ठव ऋ. काव्यगुणनिरूपण	**100—191**

१०—	पंचम—अध्याय	ए. काव्यदोषनिरूपण **भारतायनम् महाकाव्य में लोक चिन्तन—** क. राष्ट्रियचिन्तन ख. सांस्कृतिकचिन्तन ग. पौराणिकचिन्तन घ. सामाजिकचिन्तन ङ. धार्मिकचिन्तन च. दार्शनिकचिन्तन छ. राजनैतिकचिन्तन ज. नारी—चिन्तन झ. प्रकृतिचिन्तन ञ. पर्यावरणचिन्तन ट. संस्कृतभाषामूलकचिन्तन ठ. नैतिकचिन्तन ड. वैश्विकचिन्तन ढ. आर्थिकचिन्तन ण. गंगाचिन्तन त. श्रीजगन्नाथसंस्कृतिचिन्तन थ. तीर्थचिन्तन द. ऐतिहासिकचिन्तन	**192—255**
११—	————————	**उपसंहार—** अ. 'भारतायनम्' महाकाव्य का वैशिष्ट्य आ. संस्कृतसाहित्य में 'भारतायनम्' का स्थान— इ. प्रस्तुत शोधकार्य की उपादेयता	**256—269**
१२—		**शोधसारांश** **सन्दर्भग्रन्थानुक्रमणिका —**	**270—283**
१३—	————————	अ. शतपथिवाङ्मय	**284—294**

		आ. सहायकग्रन्थ इ. कोशग्रन्थ ई. शोधपत्रिकाएँ उ. वेबसाइट / यूआरएल ऊ. गूगलप्लेस्टोर **प्रकाशितशोधपत्र**	
१४–	**————————**	**सेमिनार / संगोष्ठिप्रमाणपत्र**	
१५–	**————————**	**परिशिष्ट**	
१७–	**————————**		

शब्द–संक्षिप्तिकरण

़	ङ्/ञ्/न्
ऽ	अवग्रहः
'	अर्धविराम
।	पूर्णविराम
" "	उद्धरण
–	योजक
आ०ह०कृ० शतपथी	आचार्यहरेकृष्णशतपथी
कवि०/पं०रा०	कविराज/पण्डितराज
विश्व०वि०सा०द०	विश्वनाथ विरचित साहित्यदर्पण
आ०भा०	आचार्य भामह
आ०वर्ध०वि०	आचार्य आनंदवर्धन
प्र०उ०	प्रथम उद्योत्
सं०सा०इति०	संस्कृत साहित्य का इतिहास
रा०का०दे०बहादुर	राधाकान्तदेवबहादुर
ना०शा०	नाट्यशास्त्र
वा०शि०आप्टे	वामन शिवराम आप्टे
अभि०का०अ०सू०	अभिनवकाव्यालंकारसूत्र
अभि०यशो०	अभिराज याशोभूषणम्
आ०कु०वि०	आचार्य कुन्तक विरचित
चो०प्र०वा०	चौखम्बा प्रकाशन वाराणसी
मा०/प्रा० वि०	माध्यमिक/प्राथमिक विद्यालय
सं०महा०का समा०अ०	संस्कृत महाकाव्यों का समालोचनात्मक अध्ययन

प्रथम अध्याय

आचार्यहरेकृष्णसतपथी का व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व [5] –

क. व्यक्तित्व –

अ. जन्म, जन्मस्थान एवं वंशपरम्परा

आ. शैक्षणिक उपलब्धियाँ

इ. अध्यापन सेवाएँ

ई. शैक्षणिक–प्रशासनिक सेवाएँ

उ. शोधमार्गदर्शन

ऊ. व्याख्यान

ऋ. उपलब्धियां एवं पुरस्कार

ए. महाकवि–प्रशस्तियाँ

ख. कर्तृत्व –

अ. मौलिक कृतियाँ

आ. संस्कृतभाषेतर मौलिक रचनाएँ

इ. अनुदित रचनाएँ

ई. व्याख्या ग्रन्थ

उ. सम्पादित कृतियाँ

ऊ. सम्पादित पत्र–पत्रिकाएं

ऋ. शोधग्रन्थ

ए. पठित एवं प्रकाशित शोधपत्र

ऐ. सीडी, डीवीडी आदि

---

[5] विविध स्त्रोतों एवं आचार्यहरेकृष्णसतपथी द्वारा प्रदत्त सूचनाओं के आधार पर।

आचार्यहरेकृष्णशतपथी का व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व –

क. व्यक्तित्व :–

किसी भी साहित्यकार का निजी व्यक्तित्व साहित्य की धारा में अपना अलग अस्तित्व रखते हुए प्रकाशित होता है। कवि के जीवनवृत्त तथा उसके व्यक्तित्व के आधार पर उसके जीवनदर्शन का स्वरुप प्रस्तुत किया जा सकता है। आचार्य हरेकृष्ण शतपथी का व्यक्तित्व सच्चे अर्थों में साहित्यिक एवं निजी रूप से भी गगनचुम्बी पहचान लिये हुए है। उन्होंने बनी बनायीं सरल रेखाओं का न तो अपने जीवन में और न ही साहित्य में अनुगमन किया है। जीवन के सहज और सरल रूप के समर्थक आचार्य हरेकृष्ण शतपथी के जीवन का सरलता ही मूलाधार है। आचार्य हरेकृष्ण शतपथी के व्यक्तित्व का संक्षिप्त विवेचन यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है।

अ. जन्मस्थान,जन्म एवं वंशपरिचय :–

भारतभूमि विश्व में पवित्रतमा भूमि है। कश्मीर से कन्याकुमारी तथा अरुणाचल से द्वारिका तक लगभग चतुर्भुजाकार स्वरूप में विस्तृत इस पुण्यभूमि पर मौक्तिकहारवत् सुशोभित अनेकराज्यों में 'उत्कलराज्य' अन्यत्तम है। यथा –

"वर्षाणां भारतः श्रेष्ठः, देशानामुत्कलः स्मृतः ।
उत्कलस्य समदेशो, देशो नास्ति महीतले ।।"[6]

साहित्य की दृष्टि से अत्यन्त उर्वराभूमि–'उत्कलराज्य' में अनेक महाकवियों ने जन्म लिया है। उन महाकवियों में 'यादवाभ्युदयम् के प्रणेता 'प्रतिहारेन्दुराज'; साहित्यदर्पणकार 'कविराज विश्वनाथ'; 'सह्रदयानन्दम्' महाकाव्य के रचियता 'कृष्णानन्दसंधिविग्रहमहापात्र'; गीतगोविन्दकार 'जयदेव'; 'वायसदूतम्' के प्रणेता 'भगीरथीनन्द'; 'रसगंगाधरखंडनकार' 'कुलमणिमिश्र' आदि प्रमुख हैं।

उड़ीसा के पंच पवित्रत्तम स्थानों में से एक–' केंद्रपाडा', आदिकाल से ही 'तुलसीक्षेत्र', 'ब्रह्मक्षेत्र', 'गुप्तक्षेत्र' आदि अनेक उपनामों से विख्यात, 'चरखामीलों' के लिए प्रसिद्ध एवं कलिंग राज्य का एक महत्त्वपूर्ण व्यापारिक केंद्र रहा है। पौराणिक कथाओं के अनुसार प्राचीनकाल में यहाँ 'केन्द्रासुर' नामक राक्षस का शासन था। भगवान बलभद्र ने केन्द्रासुर' का वध कर उसकी पुत्री 'तुलसी' से विवाह किया। तब से ही इस क्षेत्र को 'केंद्रपल्ली' या 'केंद्रपाड़ा' नाम से जाना जाता है। केंद्रपाड़ा के मध्य में भगवान बलभद्र का भव्य मन्दिर स्थापित है। प्राचीन मान्यता के अनुसार भगवान बलभद्र माता तुलसी के साथ यहाँ गुप्त रूप से निवास करते है; इसीलिए इस क्षेत्र को 'तुलसीक्षेत्र' तथा 'गुप्तक्षेत्र' के नाम से भी जाना जाता है।[7] तुलसीक्षेत्र अनेक कवियों, लेखकों एवं कलाकारों से गौरवान्वित है; जिनमें 'अच्युतानंद गोस्वामी', 'मधुदास', 'फागुदास',

---

[6] कपिलपुराणम् – डॉ.कृष्णमणित्रिपाठी चौखम्बा प्र.वाराणसी,२००६,पृ.सं.२२५

[7] ओरिसा रिव्यू मैगजीन, जून २००६ पृ०सं०३६–३७

'भिखारी दिबाकर', 'बैकुण्ठ महापात्र', 'वैश्यसदाशिव', 'भक्तकवि गंगाधर', 'अर्थबल्लभ मोहंती', 'कान्हुचरणमिश्र', 'भिखारिचरण पटनायक', 'सीताकांत महापात्र', 'व्यासकवि गोपालदास', 'फकीरमोहन सेनापति', आदि प्रमुख हैं। उपर्युक्त कवियों में राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ तिरुपति (आ॰प्र॰) के पूर्व कुलपति एवं 'कलिंगा सामजिक विज्ञान संस्थान (क़ीस) विश्वविद्यालय भुवनेश्वर (उड़ीसा) के वर्तमान कुलपति; 'कविशतकम्', 'जननि', 'भारतायानम्' आदि कृतियों के प्रणेता आचार्य हरेकृष्ण शतपथी अन्यतम हैं। संस्कृत साहित्याकाश में नक्षत्रमण्डलों में शरत्कालीनचन्द्र के समानसुशोभित, महाकवि आचार्य हरेकृष्ण शतपथी का आधुनिक महाकवियों एवं विद्वानों में अन्यत्तम स्थान है।

'आचार्य' विशेषण से विभूषित श्री हरेकृष्णशतपथी का जन्म ५ अगस्त १९५६ को उड़ीसा राज्य के 'केंद्रपाडा' जनपद के 'दनपुर' तहसील के 'भीतरवाम्फु' नामक ग्राम में हुआ। 'भीतरवाम्फु' ग्राम केंद्रपाडा जिला मुख्यालय से लगभग ३० किमी. दूर, बंगाल की खाड़ी के किनारे, लालगिरी पर्वत तथा महानदी के डेल्टा के समीप स्थित है। सकलशास्त्रावगाहननिपुण, आचार्य हरेकृष्ण शतपथी ने स्वमौलिकचिंतन एवं सूक्ष्मसमीक्षण से परम्परागत संस्कृतकाव्यशास्त्र का नूतन दिग्दर्शन किया है। उनकी मौलिक सृजनात्मकता, सूक्ष्मान्वेषिणी दूरदर्शिता, लालित्यपूर्ण काव्यों की भावाभिव्यक्ति एवं अभिव्यंजना, नववैशिष्ट्य से युक्त है। आचार्य हरेकृष्ण शतपथी ने अपनी प्रथम कृति 'कविशतकम्' में अपना संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत करते हुए लिखा है –

"साहित्यसंगीतलयवाद्यधुरंधरस्य,
श्रीकृष्णचन्द्रकलितस्य नरोत्तमस्य।
पुत्रेण नाम हरिणा भगवत्कृपातः,
एतत् कृतं कविवरस्तवनस्वरूपम्।।"[8]

आचार्य हरेकृष्ण शतपथी की माता का नाम 'हीरामणि' तथा पिता का नाम श्री कृष्णचन्द्र सतपथी' है; जो सहित्य तथा संगीतकला के मूर्धन्य विद्वान रहे है। उन्होंने 'भारतायनम्' महाकाव्य के प्रत्येक सर्ग के अन्त में प्रदत्त आत्मनोक्ति में स्वयं को कात्यायन गौत्रीय ब्राह्मण बताया है। यथा–

"इति श्रीकात्यायनगोत्रोद्भवाचार्यहरेकृष्णशतपथिशर्मविरचिते" भारतायनम्" इति महाकाव्ये ...।"[9]

'शतपथी' उत्कलीय ब्राह्मणों का उपनाम अथवा उपाधि है। ये उड़िसा राज्य के 'पुरी' क्षेत्र के आस–पास प्राचीन काल में "बेडबैक" नाम (स्थानीयनाम) से जाने जाते थे। कुछ विद्वान 'शतपथी' शब्द को शुक्लयजुर्वेद–वाजसनेयी संहिता से सम्बन्धित "आस्पद"[10] शब्द मानते हैं।

---

[8] कविशतकम्– आ.हरे.कृ.शतपथी उत्कलसंस्कृतरिसर्चसोसाइटी ओरिसा,श्लो.सं.१०७

[9] भारतायनम्– आ.हरे.सतपथी, रा०संस्कृत विद्यापीठ तिरुपति,२००८ध्पृ.सं.२७

[10] "आस्पद"– व्यक्ति के नाम या स्थान से जानी जाने वाली जातिया

'गणरत्नमहोदधि' ग्रंथ के अनुसार 'शतपथी' नामकरण शतपथब्राह्मण में विद्यमान शत–अध्यायों के आधार पर हुआ है। यथा –

"शतं पन्थानो यत्र शतपथः, शतं पन्थानो मार्गानामध्यायाः यस्य ताच्छत्पथम्...।।"[11]

वस्तुतः 'शतपथी' शब्द एक उपाधि है जिसका शाब्दिक अर्थ होता है– **"सत्यपथ पर चलने वाला ।"**[12]

आ. शैक्षणिक उपलब्धियाँ :–

बाल्यकाल से ही अत्यन्त मेधावी, आचार्य हरेकृष्ण शतपथी पर विद्या की अधिष्ठात्री देवी 'सरस्वती' की विशेष कृपा रही है। उन्होंने अपनी प्राथमिकशिक्षा अपने ग्राम भीतरवाम्फु के शासकीय प्राथमिक विद्यालय से प्राप्त की। प्राथमिकशिक्षा के उपरान्त ओड़िसा माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से माध्यमिक परीक्षा उत्तीर्ण की। राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान नवदेहली के पुरीस्थ परिसर "श्रीसदाशिव केंद्रीय संस्कृत विद्यापीठ" से प्रथम श्रेणी में "प्राक्शास्त्री" एवं तदुपरांत उत्कल वि.वि. भुवनेश्वर से प्रथम श्रेणी में स्नातक एवं अधिस्नातक एवं तदुपरांत राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान नव देहली के पुरीस्थ परिसर–"श्रीसदाशिव केंद्रीय संस्कृत विद्यापीठ" से शास्त्री तथा पुराणेतिहास विषय पर आचार्य की उपाधि अर्जित की। ज्ञानपिपासु श्रीहरेकृष्ण शतपथी जी ने 'श्री सदाशिव केंद्रीय संस्कृत विद्यापीठ' 'पुरी' से शास्त्री तथा आचार्य की उपाधियाँ प्राप्त करने के बाद "उत्कल विश्वविद्यालय" भुवनेश्वर से कलाशास्त्र में स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त की; तदुपरान्त "भुवनेश्वर–विधि–विश्वविद्यालय" से विधिस्नातक तथा विधिपरास्नातक की उपाधियाँ स्वर्ण पदक सहित प्राप्त कर 'विधिधुरन्धर' होने का परिचय दिया। उन्होंने विश्वविद्यालय में सर्वाधिक अंक प्राप्ति हेतु तीन स्वर्णपदक प्राप्त किये। तदुपरान्त श्री शतपथी ने 'राष्ट्रीय संस्कृत संस्थानम्' नव देहली से पुनः आचार्य की उपाधि तथा पुराणेतिहास विषय पर गहन शोध करके विद्यावारिधि (पी. एच.डी.) की उपाधि प्राप्त की। आचार्यहरेकृष्णशतपथी द्वारा प्राप्त शैक्षणिक उपलब्धियों का संक्षिप्त विवरण तालिका द्वारा आगे प्रस्तुत है–

आचार्यहरेकृष्णसतपथी:- शैक्षणिक उपलब्धियाँ-					
क्र सं	**उपाधि-नाम**	**संस्था का नाम**	***श्रेणी***	***अंक %***	वर्ष
१	प्रा.शिक्षा	प्रा.वि.भीतरवाम्फु केन्दरपाड़ा, उड़ीसा	I	५८.९	१९६५

[11] "गणरत्नमहोदधि–सत्यप्रकाशसरस्वती,चो.प्र.वा,पृ.सं.११७,शतपथब्राह्मण भूमिका पृ.सं.२

[12] हिंदीशब्दकोश– हरदेवबिहारी, राजपाल प्र. २००६, पृ.सं. ८५०

२	मा.शिक्षा	मा.वि.केन्द्रपाड़ा, उड़ीसा मा०शि० बोर्ड	II	६१.६	
३	उ.मा.शिक्षा/ प्राक्-शास्त्री	राष्ट्रिययसंस्कृतसंस्थानम् नव देहली	I	७१.४	१९७२
४	शास्त्री	रा०संस्कृतसंस्थानम् नवदेहली	I	७१.६	१९७५
५	आचार्य	रा०संस्कृतसंस्थानम् नवदेहली	I	६६.१	१९७७
६	स्नातक	उत्कल विश्वविद्यालय भुवनेश्वर,उड़ीसा|	I	७०.७	१९८०
७	स्नातकोत्तर	उत्कल विश्वविद्यालय भुवनेश्वर,उड़ीसा|	I		१९८५
८	विधि-स्नातक [L.L.B.]	भुवनेश्वर विधि- विश्वविद्यालय, उड़ीसा|	I		१९८१
९	विधि-परास्नातक [L.L.M.]	भुवनेश्वर विधि- विश्वविद्यालय,उड़ीसा|	I		१९८३
१०	विद्या-वारिधि [पी.एच.डी.]	राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान नव देहली			१९७९

इ. अध्यापन–सेवाएँ :–

आचार्य हरेकृष्ण शतपथी ने रेवेन्शा महाविद्यालय कटक, (उड़ीसा); से व्याख्याता के रूप में १४ सितम्बर १९७९ को अपना सेवाकार्य प्रारम्भ किया। उन्होंने लगभग ३४ वर्षों तक अपना जीवन अध्यापन हेतु समर्पित किया। उन्होंने ५ जनवरी १९८८ तक (लगभग ९ वर्ष) रेवेंशा महाविद्यालय में संस्कृत व्याख्याता के पद पर अपनी सेवायें दी तथा वहीं रीडर हो गये। तदुपरान्त ६ जनवरी

१९८८ को 'श्रीजगन्नाथ संस्कृतविश्वविद्यालय, पुरी, (उड़ीसा) में रीडर पद पर नियुक्त हुए एवं ६ जनवरी १९८८ से २२ जुलाई १९९६ तक रीडर एवं विभागाध्यक्ष पदों पर रहे। २३ जुलाई १९९६ को ' श्रीजगन्नाथसंस्कृतविश्वविद्यालय', में ही प्रोफ़ेसर हो गए एवं २३ जुलाई १९९६ से १८ अपेल २००६ तक श्रीजगन्नाथसंस्कृतविश्वविद्यालय पुरी में प्रोफ़ेसर एवं डीन रहे।

ई. शैक्षणिकप्रशासनसेवाएँ :–

प्रशासनिक कौशल में सिद्धहस्त आचार्यहरेकृष्णशतपथी का शैक्षणिक एवं प्रशासकीय अनुभव बहुत दीर्घ एवं सुविस्तृत रहा है। वर्ष १९७९ में 'रेवेंशा महाविद्यालय' कटक, (उड़ीसा) में संस्कृत व्याख्याता के पद पर नियुक्त होने के उपरान्त वर्ष १९८२ से १९८८ तक उक्त महाविद्यालय के प्रशासनिक सहायक रहे। उन्होंने १९८२ से १९८६ तक 'रेवेंशा महाविद्यालय' के 'राष्ट्रीय सेवा योजना' के 'कार्यक्रम अधिकारी' एवं १९८६ से १९८८ तक उक्त महाविद्यालय में 'वयस्क शिक्षा अधिकारी' रहने के दौरान उड़ीसा में बाढ़ एवं तूफ़ान के समय अनेक रहत शिविरों (कैम्पों) का संचालन किया। उन्होंने संस्कृत के माध्यम से लोगों की समस्याओं के अवबोध एवं निराकरण हेतु विभिन्न सम्मलेनों एवं कैम्पों का आयोजन करवाया।

तदुपरान्त १ जून १९८८ में 'श्रीजगन्नाथसंस्कृतविश्वविद्यालय', पुरी, (उड़ीसा) में रीडर नियुक्त होने के साथ ही साहित्य विभाग के अध्यक्ष भी नियुक्त हुए। वर्ष १९९३ से १९९७ तक वे 'श्रीजगन्नाथसंस्कृतविश्वविद्यालय', में स्नातकोत्तर शिक्षण विभाग के संयोजक रहे। उन्हें २४ जुलाई १९९९ को 'श्रीजगन्नाथसंस्कृतविश्वविद्यालय–स्नातकोत्तरपरिषद्' का प्रथम अध्यक्ष नियुक्त किया गया एवं ३१ मई २००० तक वे इस पद पर रहे। १ जून २००५ को उन्हें पुनः 'स्नातकोत्तरपरिषद्' का अध्यक्ष नियुक्त किया गया तथा १८ अप्रेल २००६ तक वे इस पद पर रहे। वे १९८८ से २००२ तक 'श्रीजगन्नाथसंस्कृतविश्वविद्यालय' के प्रोफ़ेसर पुस्तकालय प्रभारी रहे। आचार्य शतपथी ६ वर्षों (१९९१ से १९९४ एवं १९९८ से २००१) तक 'श्रीजगन्नाथसंस्कृतविश्वविद्यालय', के सिंडिकेट के सदस्य रहे तथा लगभग १० वर्षों तक अकादमिक काउन्सिल के सदस्य रहे। उन्हें विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा उक्त विश्वविद्यालय का 'रिफ्रेसर्स कोर्स प्रोग्राम संयोजक' नियुक्त किया गया। अक्टूम्बर १९९४ से नवम्बर १९९५ तक रिफ्रेसर्स कोर्स प्रोग्राम संयोजक रहे। वे लगभग १० वर्षों तक श्रीजगन्नाथसंस्कृतविश्वविद्यालय के सिनेट के सदस्य रहे। २१ अगस्त २००० से २४ अक्टूम्बर २००० तक श्री शतपथी श्रीजगन्नाथसंस्कृतविश्वविद्यालय, पुरी, (उड़ीसा) के कार्यवाहक कुलपति भी रहे।

आचार्य हरेकृष्ण शतपथी जी को वर्ष १९८८ में 'भारतीय विश्वविद्यालयों के संगठन' नव देलही द्वारा 'सांस्कृतिक–संयोजक' नियुक्त किया गया। श्री शतपथी को ओड़िसा सरकार द्वारा माध्यमिक शिक्षा बोर्ड उड़ीसा का कार्यकारी कमेटी सदस्य नियुक्त किया गया। वे १९९३ से १९९५ तक उड़ीसा माद्यमिक शिक्षा बोर्ड में कार्यकारिणी सदस्य रहे। तदुपरान्त वे १९९६ से २००० तक ' उड़ीसा उच्च माध्यमिक शिक्षा बोर्ड' में कार्यकारिणी काउन्सिल सदस्य भी रहे। वे

उड़ीसा साहित्य अकादमी एवं भुवनेश्वर जिला सांस्कृतिक कौंसिल के सदस्य रहे तथा 'श्रीजगन्नाथवेदकर्मकाण्डमहाविद्यालय', पुरी एवं 'नीलांचलनारायण आयुर्वेद संस्कृतकॉलेज', पुरी के प्रशासकीय समिति (गवर्निंग बॉडी) के सदस्य रहे। वे 'पुरी विद्वतपरिषद्' के सचिव भी रहे। 'श्रीजगन्नाथसंस्कृतविश्वविद्यालय', पुरी, (उड़ीसा) में १९८८ से २००६ तक लगभग १९ वर्ष की दीर्घ समयावधि तक विभिन्न पदों पर सेवाएँ देने के उपरान्त प्रो.(डॉ.) हरेकृष्ण शतपथी जी को मानवसंसाधनविकास मंत्रालय भारत सर्वकार द्वारा १९ अप्रेल २००६ को राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ (मानित विश्वविद्यालय) तिरुपति, (आ.प्र.) का कुलपति नियुक्त किया गया। आचार्य हरेकृष्ण शतपथी 'श्रीलालबहादुरशास्त्री' राष्ट्रीयसंस्कृतविद्यापीठ', नव देहली के कार्यपरिषद्, सेनेट एवं अकादमिक काउन्सिल के ६ वर्षों तक सदस्य रहे। वे 'राष्ट्रीय संदीपन वेदविद्या प्रतिष्ठान', उज्जैन, (म.प्र.) की कार्यकारिणी परिषद् के सदस्य रहे। वे ३ वर्ष तक 'मधुरन्तकम् संस्कृत कलाशाला' मधुरन्तकम् कांचीपुरम् (त.ना.) के प्रशासनिक समिति के मुखिया एवं 'श्रीचन्द्रशेखरेन्द्रसरस्वती विश्वविद्यालय', कांचीपुरम् की एग्जीक्यूटिव कौंसिल के सदस्य रहे। वे राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम् नव देहली के व्यवस्था–समिति के सदस्य भी रहे। आचार्य शतपथी जी 'श्रीलालबहादुरशास्त्री राष्ट्रीयसंस्कृतविद्यापीठम्', नव देहली में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा प्रायोजित विशेष सहायता कार्यक्रम के सलाहकार भी रहे। वे तिरुपति–तिरुमाला–देवस्थानम् की 'वेदागम सदास' की सामान्य एवं विशेष समिति के सदस्य रहे। वे तिरुपति तिरुमाला देवस्थानम् के 'श्रीवेंकटेश वैदिक विश्वविद्यालय' तिरुपति के अनुशासन परिषद् एवं अकादमिक परिषद् के सदस्य रहे। वे 'केन्द्रीय साहित्य अकादमी' नव देहली के अधीनस्थ, सलाहकारपरिषद् (संस्कृत) के सदस्य, 'केन्द्रीय संस्कृत अकादमी' नव देहली के सलाहकार परिषद् एवं 'मानव संसाधन विकास मंत्रालय' के अधीनस्थ राष्ट्रियसंस्कृतपरिषद् के सदस्य रहे। श्री शतपथी बेंगलुरु (कर्नाटक) स्थित 'पूर्णप्रजनसंशोधनमण्डल' की अकादमिक परिषद् के सदस्य भी रहे। वे 'श्रीव्यासदेव 'राष्ट्रीय–शोधसंस्थान', मैसूर, (कर्नाटक) के अध्यक्ष, 'अखिल भारतीय ओरियंटल सम्मलेन' 'सी. एस. ए. आई .ओ. सी.' के ४०वें ४१वें, एवं ४२वें सेशन के अध्यक्ष, संयुक्त सचिव, स्थानीय सचिव एवं सदस्य भी रहे। 'श्रीजगन्नाथ मंदिर समिति' पुरी, (उड़ीसा) द्वारा प्रतिवर्ष आषाढ़ माह में आयोजित होने वाली विश्वप्रसिद्ध 'रथयात्रा' के उड़िया, संस्कृत, हिंदी और आंग्लभाषा में सजीव प्रसारण हेतु वर्ष २००० से २००५ तक प्रवाचक (कोमेंरेटर) भी रहे है। आचार्य हरेकृष्ण शतपथी जी की देखरेख में स्वामी विवेकानन्द जी की १५०वीं जयन्ती के अवसर पर स्वामी विवेकानन्द के विचारों एवं दर्शन को प्रचारित करने एवं उनके लक्ष्यों को युवाओं में प्रसिद्ध करने हेतु वर्ष २०१३ में पुरी से कन्याकुमारी तक "जगन्नाथ युवा जागरण यात्रा" का आयोजन हुआ।

अप्रेल २००६ से अगस्त २०१६ तक उत्तम प्रशासक का परिचय देते हुए, अत्यन्त कुशलता से कुलपतिधर्म का निर्वहन करते हुए, आचार्य हरेकृष्ण शतपथी जी ३० अगस्त २०१६ को 'राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ' (मानित विश्वविद्यालय) तिरुपति (आ.प्र.) के कुलपति पद पर रहते हुए

राजकीय सेवा से सेवानिवृत्त हुए। किन्तु कर्मशीलविभूतियों को अवकाश कहाँ? सेवानिवृत्त होने के अगले ही माह सितम्बर २०१६ में उन्हें भुवनेश्वर (उड़ीसा) स्थित 'कलिंग इंस्टिट्यूट ऑफ़ सोशल साइंसेज' (कीस विश्वविद्यालय) का प्रथम कुलपति नियुक्त किया गया। जुलाई २०१७ में उन्होंने कुलपति का कार्यभार ग्रहण किया और वर्तमान में वें "कलिङ्ग सामाजिक–विज्ञान संस्थान, (कीस विश्वविद्यालय) भुवनेश्वर उड़िसा" में कुलपति के रूप में राष्ट्रसेवा में संलग्न है।

उ. शोध–मार्गदर्शन :–

आचार्य हरेकृष्ण शतपथी जी ने वर्ष १९८८ से २००६ की समयावधि में 'श्रीजगन्नाथ संस्कृत विश्वविद्यालय' पुरी, उड़ीसा में सेवारत रहने के दौरान लगभग १५ से अधिक शोधच्छात्रों का अत्यन्त कुशलतापूर्वक मार्गदर्शन एवं निर्देशन किया। आचार्य हरेकृष्ण शतपथी जी के निर्देशन में शोध–उपाधि प्राप्त कुछ शोधकर्ताओं की सूची यहाँ प्रस्तुत है–

आचार्य हरेकृष्ण सतपथी के निर्देशन में शोध-उपाधि प्राप्त कुछ शोध-कर्ताओं की सूची			
क्र. सं.	**शोधार्थी का नाम**	**शोधप्रबन्ध-विषय**	**वर्ष**
१	दुर्गाप्रसाद दास	"भक्तकविजगन्नाथस्य संस्कृत-साहित्यम्"	१९९३
२	कैलाशचन्द्र मिश्रा	"श्रीहर्षभञ्जयोस्तुलनात्मकाध्ययनम्"	१९९३
३	डॉ.आर.एन. आचार्य	"उत्कलेषु विरचितानि संस्कृत-महाकाव्यानि"	१९९४
४	बुद्देश्वर सारंगी	"शतपथ-ब्राह्मण-कथानां साहित्यिक-मूल्यान्कनम्"	१९९६
५	देवेन्द्रनन्द	"वैष्णव स्त्रोत्र लिटरेचर इन ओरिसा"	१९९७
६	निरंकार महालिक	"उत्कलस्य प्रख्यातव्याख्यानकार-नवलकिशोर:"	१९९८
७	ममतापधि	"कॉन्ट्रिब्यूशन अफ़ सूर्यवंशी गजपति किंग्स ऑफ़ ओरिसा टू संस्कृत"	१९९८
८	एस.डी.बहिनीपति	"कालिदासवात्सायनयोस्तुलनात्मकाध्ययनं"	१९९९

९	श्रीमती बीणापति आचार्य	"कालिदाससाहित्ये परिवेशविज्ञानम्"	१९९९
१०	मदनमोहन महापात्र	"संस्कृतवाङ्गमयं प्रति अनन्तत्रिपाठिशर्मण: योगदानम्"	२०००
११	गणेश प्रसाद त्रिपाठी	"स्यमन्तकाभ्युदयनाटकस्य समीक्षात्मध्ययनम्"	२०००
१२	आशीष कुमार मोहन	"विश्वनाथकविराजकृत-काव्यप्रकाशदर्पण-टीकाया: समीक्षात्मध्ययनम्"	२००२
१३	समासिता मोहन्ति	"रामचरित-महाकाव्यस्य संपादनम्"	२००४
१४	सोमनाथ दास	काव्येष्वलंकाररससन्निवेशनविधि:	२००६

ऊ. व्याख्यान :–

आचार्य हरेकृष्ण शतपथी एक उत्कृष्ट कवि, व्याख्याता एवं प्रशासक होने के साथ–२ एक उत्तम कोटि के वक्ता भी हैं। उन्होंने 'जादवपुर विश्वविद्यालय' कोलकात्ता (प.बं.), 'सम्पूर्णानन्दसंस्कृतविश्वविद्यालय' वाराणसी (उ.प्र.), 'श्रीलालबहादुरशास्त्री राष्ट्रियसंस्कृत विद्यापीठम्' नवदेहली, 'राष्ट्रियसंस्कृतविद्यापीठ' (मानित विश्वविद्यालय) तिरुपति (आ.प्र.), 'दीनदयाल उपाध्याय विश्वविद्यालय' गोरखपुर (उ.प्र.), 'श्रीजगन्नाथ संस्कृत विश्वविद्यालय' पुरी, उड़ीसा, 'राष्ट्रियसंस्कृत–संस्थानम्' नव देहली, 'उत्कल विश्वविद्यालय' भुवनेश्वर, उड़ीसा, आदि स्थानों पर आयोजित अनेक राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय व्याख्यानमालाओं एवं संगोष्टियों तथा पुनश्चर्यापाठ्यक्रम संगोष्ठियों में लगभग २०० व्याख्यान दिए है।

ऋ. प्राप्त उपलब्धियां/सम्मान/पुरस्कार :–

आचार्य हरेकृष्ण शतपथी निर्विवाद रूप से एक मूर्धन्य विद्वान्, आधुनिक संस्कृत महाकवियों में अग्रगण्य एव बहुमुखी प्रतिभासंपन्न व्यक्तित्व है। आचार्यहरेकृष्णशतपथी द्वारा प्राप्त उपलब्धियों, सम्मानों एवं पुरस्कारों का विवरण आगे प्रस्तुत किया जा रहा है।

१. अकादमिक सम्मान –

आचार्य हरेकृष्ण सतपथी को अध्ययनकाल में राष्ट्रीय, राज्य एवं विश्वविद्यालयस्तर पर विभिन्न साहित्यिक एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन हेतु लगभग २०० से अधिक वरीयता प्रमाणपत्रों एवं सम्मानों से सम्मानित किया जा चुका है।

२. लेखन एवं राजकीयसेवा हेतु प्राप्त सम्मान –

आचार्यहरेकृष्णशतपथी को उत्कृष्ट राजकीयसेवाओं एवं उनके उत्कृष्ट लेखन हेतु भी अनेक सम्मान प्राप्त हो चुके हैं। श्री शतपथी को वर्ष १९९४ में साधू गोढेश्वर महाविद्यालय, (जयपुर) द्वारा, वर्ष १९९३ में 'श्रीक्षेत्र युवा लेखक संस्था', पुरी द्वारा, १९९६ में 'उत्कल सांस्कृतिक संगठन', पुरी द्वारा, वर्ष २००० में 'प्रदेश युवा छात्र संघठन' बालेश्वर, द्वारा, वर्ष २००७ में उड़िया भाषा में रचित मौलिक कृति "संस्कृत साहित्य का इतिहास" के लिए "उड़ीसा साहित्य अकादमी पुरस्कार"[13] से सम्मानित किया गया। उच्चतर शिक्षा में अविश्वसनीय योगदान हेतु आचार्य शतपथी को 'इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ़ ओरिंटल हेरिटेज' कलकत्ता द्वारा "विश्वकवि रबिन्द्रनाथ सम्मान"[14] से, उत्कृष्ट संस्कृत लेखन हेतु उड़ीसा सरकार द्वारा "जयदेव पुरस्कार"[15] से, संस्कृत वांग्मय में लेखन हेतु उन्हें वर्ष १९९२ में "उड़ीसा संस्कृत अकादमी"[16] तथा वर्ष २००५ में "दिल्ली संस्कृत अकादमी" द्वारा संस्कृत 'साहित्य अकादमी पुरस्कार'[17] से सम्मानित किया गया। महाकवि शतपथी को वर्ष २०१० में 'रामकृष्ण जयदयाल डालमिया ट्रस्ट' द्वारा ५० वर्ष से कम आयु वाले श्रेष्ठतम संस्कृत लेखकों को दिये जाने वाले पुरस्कार–"श्रीवाणी–अलंकरण"[18] से सम्मानित किया गया। वर्ष २०११ में ही आचार्यहरेकृष्णशतपथी जी को तत्कालीन महामहीम राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभापाटिल द्वारा 'भारतीय–विद्या' में उनके योगदान के लिए "ब्रह्मर्षि–सम्मान"[19] तथा उत्कृष्ट राजकीयसेवा हेतु २०११ में महामहीम माननीय राष्ट्रपति द्वारा "राष्ट्रपति सेवा पदक"[20] से सम्मानित किया गया। श्री शतपथी को केन्द्रियसाहित्य अकादमी द्वारा उनकी अमरकृति–'भारतयनम्' के लिये केन्द्रीय साहित्य अकादमी पुरस्कार[21] २०११ से फरवरी २०१३ में सम्मानित किया गया। वर्ष २०१२ में उन्हें "आदि शंकराचार्य पुरस्कार", 'कविकुलगुरु कालिदास विवि०', नागपुर द्वारा महामहोपाध्याय[22]' उपाधि से तथा ''चित्तुर जिला विशिष्टरत्न सम्मान"[23] से सम्मानित किया गया। वर्ष २०१३ में महाराष्ट्र सरकार ने श्री सतपथी को "कविकुलगुरु कालिदास

---

[13] www.orisasahityaacadamy.org//listofawardwinners.

[14] www.rbu.ac//listofawardwinners

[15] www.orisa.gov.in//listofawardwinners.

[16] www.orisa.gov.in//listofawardwinners.

[17] www.sanskritdelhiacadamy.gov.in//listofawardwinners.

[18] www.rkjdss.dalmiatrust.in//listofawardwinners.

[19] https://rashtrapatisachiwalaya.gov.in//listofawardwinners.

[20] https://rashtrapatisachiwalaya.gov.in//listofawardwinners.

[21] www.sahitya-acadamy.gov.in//listofawardwinners.

[22] www.kksanskrituni.digitaluniversity.ac//listofawardwinners.

[23] https://www.chittoor.ap.gov.in//listofawardwinners.

संस्कृत साधना पुरस्कार"[24] से तथा 'भारतीय विद्या भवन' नई दिल्ली ने उन्हें "कौस्तुभ पुरस्कार"[25] से सम्मानित किया। उन्हें वर्ष २०१४ में भारतीय विद्या भवन' बेंगलुरु द्वारा एवं तिरुपति तिरुमाला देवस्थानम् द्वारा "आगमा सदस पुरस्कार"[26] से सम्मानित किया गया। वर्ष २०१६ में नेशनल एल्युमीनियम कंपनी लिमिटेड द्वारा आचार्य हरेकृष्ण शतपथी को "कालिदास पुरस्कार"[27] से सम्मानित किया गया। आचार्य शतपथी को अध्यापन, संस्कृतभाषा एवं उड़ियाभाषा तथा भारतीयसंस्कृति के प्रसार में अत्युत्कृष्ट योगदान हेतु अगस्त २०१६ में राष्ट्रपतिसम्मान[28] हेतु नामांकित किया गया है। इस प्रकार महाकवि आचार्य हरेकृष्णशतपथी अनेक पुरस्कारों एवं सम्मानों से सम्मानित है।

ए. महाकविप्रशस्तियाँ एवं अभिनन्दनानि —

समीक्ष्य महाकाव्य 'भारतायनम्' के प्रणेता 'आचार्यहरेकृष्णशतपथी के काव्यकौशल, शासननैपुण्य, व्यक्तित्ववैभव, व्यवहारगौरव, साधनसौरभ एवं वैदुष्यविशेष के विषय में विभिन्न शुभेच्छुजनों तथा मङ्गलाकङ्क्षीजनों एवं संस्थानों द्वारा महाकवि की प्रशंसा में रचित महाकविप्रशस्तियाँ एवं अभिनन्दनानि, यहाँ प्रस्तुत है :—

१. **"हरेकृष्णः कृष्णोपमनिरलसः कीर्तिविभवः,**
सरस्वत्याः पुत्रस्तवमसि मतिमन् ब्रह्मप्रभवः।
निराकारे दीर्घं गतगदमतो जीवनमिह,
सदास्माकं भिक्षां तव नवशुभं दीप्तिपटहः।।"[29]

२. **"अस्मिन् पूतसदाशिवे परिसरे वाणीप्रस्तालये,**
ये केचित्पठनाय सूक्ष्मतयश्छात्राः समभ्यागताः।
तेषु प्रौढ़विचारशालिविनयी धीरः प्रशान्तो हरे—
कृष्णः कृष्णपदाम्बुजेऽर्पितमना आसीद्भवानुज्ज्वलः ।।1।।
छात्रत्वेन भवान् यदाऽत्र मतिमानासीत्पुराकाऽऽशितो,
विद्यापीठमिदं तदा द्विगुणितानन्देन सम्फुल्लितम् ।
किं राधिकापतिं घनामृततिं लोकानुरक्तिं समा—
साद्य स्वाङ्कतले कलेऽतिविमले नाप्नोति मोदं नभः ।।2।।
शास्त्रीयं सारतत्त्वं मधुरसुरगिरा छात्रवृन्दैः प्रकाश्य—

---

[24] https://www.maharastra.gov.in//listofawardwinners.

[25] www.bvbdelhi.org//listofawardwinners

[26] https://www.tirumala.org//listofawardwinners.

[27] https://nalcoindia.com//listofawardwinners.

[28] https://rashtrapatisachiwalaya.gov.in//listofawardwinners.

[29] उड़िसासंस्कृतपरिषद् द्वारा उड़िसा

मित्युद्दिश्य प्रगल्भैर्नयमतिविभवैः सादरं योजितायाम् ।
स्पर्द्धायां राष्ट्रियायामतिशयनिपुणान् द्वन्द्विसन्दोहमुख्यान्
विद्राव्य द्राग् भवान् तान् कनकपदकभाक् नैकवारं व्यराजत ।।3।।
श्लोकान्ते कान्तकान्ते नियतयतियुते सुस्वरासक्तचित्ते
ये ये मूर्द्धन्यभूताः स्वरचितकविताः शान्तचित्ताः समेताः ।
आशामाशासु तेषां सरभसमसकृत् सारयन् सारवेत्ता
मध्ये मञ्चं लसत्काञ्चनमयपदकं किञ्च धीमानचैषीत् ।।4।।
आचार्यदीननेकानचिरमनुपथीन् धारयन् तानुपाधीन्
शिक्षादाने प्रविष्टस्त्रिदशगुरुसमो माननीयः समेषाम् ।
नैकान् ग्रन्थाँश्च काव्यान्यरचयदमलं स्फोटायन् प्रातिभं स्वम्
अद्योत्तुङ्गे चकास्ति प्रवर कुलपतेरासने सौम्यमूर्त्ते ! ।।5।।
भवादृशं योग्यसुतं प्रसूय विद्यालयोऽयं चिरमस्ति धन्यः ।
पिता जगत्यां बहुमानयुक्तो न जायते किं सुतगौरवेण ।।6।
''कुलपतिपदमाप्तं द्योतकं गौरवस्य
शशिकिरणसमाना कीर्त्तिरुड्डायिता च ।
किमधिकमिह देयं दुर्लभं यद्भवत्सु
पततु हरिकृपेति प्रत्यहं प्रर्थयामः ।।7।।" [30]

३. "गुरुवरा भवता परिबोधनं
विमलमुज्ज्वलमन्तरशोधकरं ।
श्रुतिपथे न कदात्र समेष्यति
प्रतिदिनं ललितं मधुभाषणम् ।।1।।
यदि कदा हृदये नयसंशयो
भवति कोऽत्र तदुन्न्यने क्षमः ।
सकलशिष्यकुलं तु शुचाकुलं
प्रतिदिनं विचिन्त्य विशुष्यति ।।2।।
नीलाद्रिनाथे जगतामधीशे
शेषाद्रिनाथे च निवेदनं नः ।
अस्मद्गुरून् पान्तु कृपाकटाक्षे–
र्जयश्रिया तान् परिमण्डयन्तु ।।3।।"[31]

---

[30] राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थान–श्रीसदाशिवपरिसर, उड़िसा के आचार्यों द्वारा
[31] श्रीजगन्नाथसंस्कृतविश्वविद्यालय, पुरी, के छात्रों द्वारा

४. "बाल्यात्सदा प्रथमतामधिगत्य धीराः
शिक्षालयेषु सकलेषु प्रसिद्धिमाप्ताः ।
नित्यं खिलेऽपि विषये प्रथमत्वमेव
त्वत्पादपद्मयुगलं परिचुम्बतु द्राक् ।।1।।
प्रवचनेऽप्रतिमा बुधशेखरा विविधकाव्यकलासु धुरन्धराः ।
नवनवार्थविचिन्तनतत्परा निखिलशिष्यगणे विहितादराः ।।2।।
नयविदां भवतां पुरतः स्वयं स्फुरति वस्तुचयः स्फुटमुज्ज्वलम् ।
न खलु दुर्नयवान्नयनावनौ सुविदुषां सुदृशां स्मयश्नुते ।।3।।
सकलशिष्यसमुन्नतिभावनाभरितसुन्दरमानसदर्पणे ।
मतिमतां भवतां लभते पदं प्रतिदिनं मधुरं नवचिन्तनम् ।।4।।
पित्रोः पुण्यबलात्प्रसन्नमनसां विद्यावतां श्रीमतां
जाता सर्वविधोन्नतिर्गुरुकुलस्याशीर्वचोभिर्मुहुः ।
दृष्ट्वा सुकृतमप्रमेयमघह्नन्नीलाद्रिनाथान्नु किं
शेषाद्रेरधिदेवता शुभधियस्तद्देशमध्येऽनयत् ।।5।।
श्रीनीलाद्रिपतिः समस्तविपदो विध्वंसयत्वाशिष्या
श्रीशेषाद्रिपतिस्तनोतु कुशलं प्रीत्याऽनिशं श्रीमताम् ।
विद्या भातु समुज्ज्वला गुरुगणस्याशीर्वचोभिः सदा
सर्वत्र प्रसरत्वशेषधवला श्रीमद्यशस्सन्तति : ।।6।।
विभातु भव्यं भवतां प्रशासनं करोतु लीलां पुनरेव भारती ।
भवत्प्रयत्नात्सकलं स्वतेजसा विभातु शास्त्रं धरणीतलेऽधुना ।।7।।"[32]

५. "साहित्यविधिशास्त्रमान्येविषये येषां समोपस्थितिः
प्राप्तायैश्च सुवर्णधन्यपदकं ह्याबाल्यतो नेतृताम् ।
शौशील्येन च कौशलेन च सदा संरक्षतां सत्पथं
तान् श्रीश्रीकरशारदापतिहरेकृष्णाख्यभाजो नुमः ।।1।।
नेताजीसुसुभाषचन्द्रविबुधो यत्रापठत् शैशवे
तत्रैवायमहो स्थले गुरुहरेकृष्णः सदध्यापकः ।
तस्मादेव च नेतृताशुभगुणाः संक्रामिताः सादरं
तैरेव प्रतिसंस्थमद्भुततमं संवर्द्धयन् राजते ।।2।।
श्रीक्षेत्रस्य च संस्कृतस्य महति श्रीविश्वविद्यालये
लब्ध्वा तत्र पदं प्रवाचकपदे मुख्यत्वमावाप्य यः ।

---

[32] श्रीजगन्नाथसंस्कृतविश्वविद्यालय, पुरी, उड़ीसा आचार्यों द्वारा

साहित्याम्बुधि पूर्णचन्द्रकलया राराज्यतेऽहर्निशम्
आचार्यत्वमवाप संस्कृतगिरां साहित्यविद्यानिधेः ।।3।।
तत्रैव प्रतिवासरं प्रतिभया संवर्धमानो द्विजः
तारुण्ये समवाप वै कुलपतेः दाक्ष्यं प्रपन्नो ह्यसौ ।
आन्ध्राणां सुकृतैः तिरुपतिश्रीविश्वविद्यालये
मान्योसौ नितरां सदा कुलपतेः प्राज्यं हि सम्प्राप्तवान् ।।4।।
छात्राणां खलु मार्गदर्शनविधीन् कुर्वन् सदानन्दयन्
शोधोपाधिमवापयन् प्रतिदिनं संवर्धयन् साधयन् ।
उत्साहेन च भाषणं च कलयन् छात्रान् सदा प्रेरयन्
धन्योऽसौ गुरुशिष्यवत्सलतया ख्यातिं सदा चार्जयन् ।।5।।
योऽन्तः प्रविश्य गुरुशिष्यमनस्सु नित्यं
संजीवयत्यखिलपीठयशोनिधानम् ।
विद्याविवेकसुगुणैः सहितो विराजन्
धन्यो यशस्विकुलभूषणभूषितोऽयम् ।।6।।
शोधं शोधमहर्निशं प्रतिदिनं पत्राणि शोधात्मकं
नित्यं तानि च मुद्रयन् पतिपलं संव्यापयन् मञ्जुलम् ।
आंग्लेय्या सुरगीष्षु चोत्कलवचस्यत्यद्भुतं भूषणं
कुर्वन् सप्तसुवर्णकेन्द्रपदकं लब्ध्वा वचोमाधुरीम् ।।7।।
गम्भीरां खलु राष्ट्रराज्यविषये प्रज्ञा प्रसारं सदा
सप्ताष्टौ च तथा पुनस्त्रयमसौ लब्ध्वा चतुर्विंशतिः ।
स्थानानीह दशाधिकां त्रयमहो सौवर्णवानञ्जसा
प्राचार्यो विबुधो महोन्नतहरेकृष्णस्सदा राजते ।।8।।
हरेकृष्णसमो वाग्मी न भूतो न भविष्यति ।
हरेकृष्णसमश्शास्ता न भूतो न भविष्यति ।।9।।"[33]

६. "श्रुतीनामध्येता विदितकुलनामा शतपथी
हरेकृष्णः श्रीमाञ्जयति कमनीयः कुलपतिः ।
महाकाव्यं कृत्वा स नवमयनं भारतभुवः
सचेतोवृन्दानां सदसि बहुमानं प्रचिनुते ।।1।।
तस्य कल्पतरोः कुञ्जं विद्यापीठं विराजते ।
सुमनःपूरकदारैः सततं सुरभीकृतम् ।।2।।

[33] तिरुपतिब्राह्मणसमाज की ओर से

अयं प्रशस्तयन्त्रराजिराजमानविभ्रम–
स्वयंविनीतनव्यशिष्यभव्यपुस्तकालयः ।
सदा समुन्नतिं श्रयेदनेकशोधसंविदा–
ऽनवद्ययोजनासु विश्ववन्द्यशिक्षणालयः ।।3।।" [34]

७. "श्रीमद्भारतभव्यराष्ट्रपतिश्चारोपिते नन्दने
श्रीमद्वेङ्कटपर्वतस्य निकटे विद्द्योतिते सुन्दरे ।
विद्यापीठसभाङ्गणे सुरगिरां छात्रौघसत्प्रातिभं
श्रीमत्कल्पतरुं विधाय सत्कुलपती राराष्ट्रि सन्मानसे ।।1।।
शास्त्राणां विभवं मनांसि विदुषां सम्माननैस्तोषयन्
जाड्यादिप्रतिबन्धकं प्रतिभया मूलैस्समुत्पाटयन् ।
यूनां मानसकुड्मलानि नितरां नूनं स्मुत्फलयन्
विद्वच्छ्रीतरुणः पदेन च हरेकृष्णश्च जेगीयते ।।2।।
न्याये संस्कृतसाहितीजलनिधौ पारङ्गतान् भाषणे
गैर्वाणीवचसा च धिक्कृतगुरून् आङ्ग्लेऽसमं भाषिणः ।
छात्रौघस्य शुभप्रदान् कुलपतीन् मान्यांश्च वाग्वैभवान्
सत्काव्यानभिनन्दनैर्गुरुहरेकृष्णान् स्तुवीमो वयम् ।।3।।
श्रीमत्पण्डितमण्डलीशतपथीसंदर्शिते वाक्पथे
राराष्ट्रि प्रभुशक्तिरत्र महिता सन्मन्त्रशक्ति स्त्वया ।
सोत्साहस्य च शक्तिस्तत्र लसिता विद्द्योततेऽनारतं
शक्तीनां त्रितयेन सत्कविहरेकृष्णो हि संवर्धते ।।4।।
कुलाध्यक्षपीठे विशुद्धान्तरात्मा
सदा छात्रवृन्दे हितैषी विभाति ।
हरेकृष्णनाम्ना जगन्नाथभक्तः
सदाचार्यहृद्यो विराराष्ट्रपीठे ।।5।।
विष्णौ भक्तियुतः प्रसन्नवदनः कायेन कान्तिं वहन्
धर्मात्मा मतिमान् सतां कुलपतिः स्वाचारबद्धादरः ।
विद्यावान् विषयी विवेकवलितः ख्यातो जगन्मण्डले
विद्वन्मण्डलमान्यसत्कविहरेकृष्णो हि वन्द्यो बुधैः ।।6।।
पुर्यौं श्रीपुरुषोत्तमस्य कृपयाशेषाचलाधीशितुः
कारुण्यामृतधारया गुरुहरेकृष्णः अहो भाग्यतः ।

---

[34] राष्ट्रपतिसम्मान से विभूषित, वाग्मीप्रवर प्रो० भास्कराचार्य त्रिपाठी महोदय द्वारा

विद्यापीठविकासकार्यचतुराः विद्यावतां वृद्धये
सस्मान्यं प्रथितं पदं कुलपतेस्सम्भूषयन्त्यद्भुतम् ।।7।।"[35]

८. "स्वसुखनिरभिलाषः शिक्षाकाणां गरिष्ठः
सुरगिरि परिसेवी त्यागपूतो वरिष्ठः ।
कुलपतिकुलरत्नः भारते भ्राजतेऽसौ
सफलकुशलकर्मा श्रीहरेकृष्णशर्मा ।।" [36]

९. "अलङ्कारस्य शास्त्रस्य ह्यलङ्कारो भवन् भवान् ।
अलङ्करोत्यनुष्ठानं पुरस्कारैरलंकृतः ।।1।।
कवयति कविरेषः पद्मरत्नं प्रगल्भं
सहृदयहृदयान्तः ह्लादकं भावपूर्णम् ।
कृतमुखबहुमान्यः वाग्मिनामग्रगण्यः
शतपथिबुधवर्यः द्योतते च प्रशस्त्या ।।2।।
पठति च मनुते स्वं प्राह शास्त्रं सलीलं
ननु बुधजनवर्गः श्रद्दधानोऽपि शास्त्रे ।
प्रवचनसुधुरीणः कश्चिदेवं सभायां
शतपथिसदृशो वाग्देवतानुग्रहेण ।।3।।
गुरुचरणकृपासंलम्भिताश्चर्यशक्तिः
गुरुचरणकृपां तां नैव विस्मर्तुमिच्छन् ।
गुरुवरकृपयैव प्राप्नुवन् श्रेय एषः
शतपथिमहनीयः छात्रवर्गानुसेव्यः ।।4।।" [37]

१०. "हरन्ति सर्वप्रियशिष्यबाधान्
कुर्वन्ति कार्याणि हिताय तेषाम् ।
प्रीणन्ति छात्रान् सुखयन्ति सर्वान्
पीठप्रीयान् पीठपतीन् नमामः ।।1।।
रुचा सुयुक्तं वपुरस्ति येषाम्,
चन्दन्ति भूखण्डसमस्तदेशे ।
कीर्तिश्च येषामखिलेऽपि विश्वे

---

[35] प्रो०जि०एस्०आर्० कृष्णमूर्ति द्वारा
[36] श्रीजगन्नाथसंस्कृतविश्वविद्यालय के कुलपति प्रो०गोपीनाथमहापात्र द्वारा
[37] आचार्य इ० देवनाथन् द्वारा

विज्ञान् हरेकृष्णगुरून् नमामः ।।2।।

कुर्वन्ति ये तु भ्रमणं प्रभाते,

यथा स्वभूमौ कृषकः करोति ।

पृछन्ति छात्रान् सुखदुःखकाले

तान् छात्रतातान् हि वयं नमामः ।।3।।

षष्ठं मुखं ये तु कुलाधिपानाम्,

आशिष्ठसुस्थेष्ठसुशासकाश्च ।

सुकाव्यलेश्यामयपण्डितान्तान्

नुमो हरेकृष्णवरान् वरिष्ठान् ।।4।।

नृत्यन्ति येषां रसनातले ये,

शब्दाः विशिष्टा उपमाप्रयुक्ताः ।

राराजमाना सुगले च वाणी

तान् वाग्मिकृष्णान् हि वयं नमामः ।।5।।"[38]

ख. कर्तृत्व :–

सभी काव्यरसज्ञ इस बात से सुपरिचित हैं कि कवि जो भी काव्य रचता है, उसकी पृष्ठभूमि में कोई न कोई कारण जरुर होता है; अन्यथा काव्य रचना का निर्माण असम्भव है। काव्यलेखन का गुण साधारण प्रतिभा नहीं है। कवि ईश्वरकृपा, गुरुजनों के
आशीर्वाद और स्वंय की तपस्या से ही कोई कवि काव्यरचना में समर्थ हो पाता है। यथा–

"तत्र तु कारणं केवलं कविर्गता एव प्रतिभा ।

तत्र च गुरुराजदेवताद्यनेकानि प्रयोजनानि काव्यस्येति।।" [39]

रामायण के अनुसार काव्यरचना साधारणजनों का कार्य नहीं है; कोई मुनिपुङ्गव ही काव्य रचना में समर्थ होता है। यथा–

"कम्प्रमाणमिदं काव्यं का प्रतिष्ठा महात्मनः ।

कर्ता काव्यस्य महत्तः क्व चासौ मुनिपुंगवः ।।"[40]

आदिकाव्यशास्त्र 'अग्निपुराण' में कवि को प्रजापति की उपाधि से विभूषित करते हुए कहा गया है कि प्रजापति की भांति कवि भी अपने रचनासंसार का सृजन करता है। यथा–

"अपारे काव्यसंसारे कविरेव प्रजापति।

यथास्मै रोचते विश्वं तथेदं परिवर्तते ।।"[41]

---

[38] तिरुपतिविद्यापीठ पूर्वच्छात्र एवं वर्तमान में आगराविवि०के संस्कृतविभाग में सहायकाचार्य, श्रीछगन्लालशर्मा द्वारा

[39] जगन्नाथ कृत रसगंगाधर– मधुसुधन शास्त्री, बनारस हिन्दू विवि० २००६, पृ.सं.५८

[40] वाल्मीकि कृत 'रामायण'– गीताप्रेस गोरखपुर २००५ए ७.६४.२३

[41] अग्निपुराणम् – डॉ. विनय चौखम्बा वाराणसी २००६, पृ.सं.१७६

महाकवि आचार्य हरेकृष्ण शतपथी का रचनासंसार अतिविस्तृत एवं विविध है। उनकी वक्तव्य कला असाधारण है। वे पाण्डित्य से अलंकृत विचक्षण विद्वान् हैं। उनमें काव्यत्व एवं भावनाओं का उत्तम समन्वय है। वे संस्कृतसाहित्य की सभी विधाओं समान रूप से अधिकार रखने के साथ–२ आंग्ल एवं उड़िया भाषा के भी मर्मज्ञ विद्वान् हैं।

''कालेन सम्भवेद् व्यासः तत्पुत्रः शुकः एव वा ।
हरेकृष्णसमो वाग्मी न भूतो न भविष्यति ।।''[42]

संस्कृत, उड़िया, आंग्ल आदि भाषाओं साथ–२ इतिहास, भूगोल, दर्शनशास्त्र, विधिशास्त्र आदि विषयों पर भी श्री शतपथी जी समान अधिकार रखते है। इस प्रकार की अद्भुद प्रतिभासम्पन्न महाकवि आचार्य हरेकृष्ण शतपथी की कृतियों का अतिसंक्षिप्त विवरण यहाँ क्रमवार दिया जा रहा है:–

अ. मौलिक कृतियाँ :–

महाकवि आचार्य हरेकृष्ण शतपथी ने संस्कृत भाषा के साथ–२ आंग्ल एवं मातृभाषा उड़िया में भी अनेक रचनाएँ की हैं। उनकी मौलिक रचनाओं का संक्षिप्त परिचय यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है–

१ 'भारतायनम्–

यह महाकवि आचार्य हरेकृष्ण शतपथी प्रणीत् सर्वोत्कृष्ट एवं प्रसिद्ध महाकाव्य है। इसका प्रथम संस्करण 'विद्यापीठ प्रकाशन' तिरुपति से वर्ष २००८ में प्रकाशित हुआ। इसके लिये आचार्य शतपथी को वर्ष २०११ में "केन्द्रिय–साहित्य–अकादमी पुरस्कार" से सम्मानित किया गया।

२. कविशतकम्–

यह आचार्य शतपथी की प्रथम रचना हैं। यह खण्डकाव्य महाकवि द्वारा अपने अध्यनकाल में वर्ष १९७७ में रचा गया। इसमें संस्कृत कवियों की प्रशंसा में १०७ पद्य ग्रंथित हैं। यह आधुनिक शतककाव्यपरम्परा की अतिश्रेष्ठ काव्यकृति है। इसका प्रकाशन "उत्कल संस्कृत शोध समिति" पुरी (उड़ीसा) द्वारा वर्ष १९७८ में किया गया।

३. आचार्यशंकरः –

यह भी महाकवि शतपथी की आरम्भिक काव्यकृतियों में से एक है। इसका प्रथम संस्करण 'राष्ट्रभाषा प्रेस कटक, (उड़ीसा)' से वर्ष १९८२ में प्रकाशित हुआ। इस काव्यग्रंथ में जगद्गुरु आदिशंकराचार्य का संक्षिप्त जीवनचरित्र वर्णित है।

४. गंगाजलदूषितम् –

---

[42] उत्कलसंस्कृतगवेक्षणासमाजपक्षतः कृत महाकवि प्रशंसा

यह एक खण्डकाव्य है। इसका प्रथम संस्करण 'किताबमहल प्रकाशन, कटक, (उड़ीसा)' से वर्ष १९८५ में प्रकाशित हुआ। काव्यकृति में देवनदी गंगा की दुर्दशा से व्यथितहृदय कवि ने अपनी भावनाएं प्रस्तुत की है।

५. श्रीचन्द्रशेखरेन्द्रसरस्वती शतपुष्पमाला –

इस खण्डकाव्य में कामकोटिपीठ काञ्चीपुरम के ६८ वें शंकराचार्य 'चन्द्रशेखरेन्द्र– सरस्वती 'अष्टम' का सम्पूर्ण जीवनचरित वर्णित किया है। इस काव्यग्रन्थ के प्रथम संस्करण का प्रकाशन "श्रीसदाशिवसंस्कृतविद्यापीठ, प्रकाशन, पुरी (उड़ीसा) से वर्ष १९८५ में हुआ।

६. विश्वायनम् –

इस महाकाव्य में महाकवि ने संस्कृत के वैश्विक स्तर पर प्रभाव को प्रस्तुत करते हुए संस्कृतभाषा के महात्म्य का वर्णन किया है। इसका प्रथम संस्करण 'विद्यापीठ प्रकाशन' तिरुपति से वर्ष २०१४ में प्रकाशित हुआ।

७. जननि –

मातृ–शिशु के वात्सल्यपूर्ण सम्बन्ध को प्रस्तुत करने वाली यह खंडकाव्यकृति का प्रथम संस्करण 'सारी प्रकाशन' पुरी से २००५ में प्रकाशित हुआ।

८. धर्मपदम् –

महाकवि द्वारा इस ग्रन्थ में धर्म की वर्तमान परिप्रेक्ष्य में व्याख्या प्रस्तुत की गयी है। इसका प्रकाशन "उत्कल संस्कृत शोध समिति" पुरी (उड़ीसा) द्वारा वर्ष १९७८ में किया गया।

आ. संस्कृतभाषेतर कृतियाँ :–

आचार्यहरेकृष्णशतपथी प्रणीत संस्कृतभाषेतर कृतियों का विवेचन इस प्रकार है :–

१. संस्कृत साहित्य का इतिहास (उड़ियाभाषा में रचित मौलिक कृति):–

यह ग्रन्थ आचार्य हरेकृष्ण शतपथी की आरम्भिक महत्त्वपूर्ण उड़िया रचनाओं में से एक है। इसमें संस्कृत साहित्य के सम्पूर्ण इतिहास को उड़िया लिपि में निबद्ध किया है। लगभग ७०० पृष्ठों में समाहित यह पुस्तक अत्यन्त प्रसिद्ध एवं प्रमाणिक है। इस कृति के लिये उन्हें १९९२ में उड़ीसा साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है। इसका ग्रन्थ प्रथम संस्करण 'किताबमहल प्रकाशन, कटक, (उड़ीसा)' से वर्ष १९८८ में प्रकाशित हुआ।

२. श्रीदारूब्रह्म चित्रकल्पः –

यह उड़ियाभाषा में विरचित अद्वितीय कृतियों में से एक है। विभिन्न शास्त्रों एवं पुराणों में वर्णित जगन्नाथसंस्कृति से संबंधित विषयों को आचार्य हरेकृष्ण शतपथी ने इस पुस्तक में आलोचनात्मक शैली में प्रस्तुत किया है।

३. Complete sanskrit works on jagannatha culture–vol-I **(कम्पलीट संस्कृत वर्क्स ऑन जगन्नाथा कल्चर)–**

यह ग्रन्थ विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा प्रायोजित अनुसन्धान परियोजना के तहत तैयार किया गया है। इस परियोजना के प्रमुख संयोजक आचार्यहरेकृष्णशतपथी थे। इस परियोजना का मुख्य उद्देश्य 'जगन्नाथ–संस्कृति' से सम्बन्धित संस्कृतकार्यों की पहचान कर उन्हें प्रकाश में लाना था। इसका प्रथम संस्करण 'विद्यापीठ प्रकाशन' तिरुपति से वर्ष २००८ में प्रकाशित हुआ। यह ग्रन्थ– 1. वामदेव संहिता, 2. कालिया संहिता और 3. नीलाद्री महोदय शीर्षक तीन भागों में विभक्त है।

४. Socializm in jagannatha culture **(सोसिअलिज्म इन जगन्नाथा कल्चर) –**

यह पुस्तक 'जगन्नाथ–संस्कृति' में समाहित 'समाजवाद' और 'जगन्नाथ–संस्कृति' पर हुए सामाजिक तत्वों का विश्लेष्ण प्रस्तुत करती है। इस ग्रन्थ का प्रथम संस्करण 'भारतीय बुक कॉर्पोरेशन, नई दिल्ली' से वर्ष २००२ में प्रकाशित हुआ।

५. Summerine of Papers AIOC-41 (सुम्मेरिन ऑफ़ पेपर्स)–

यह पुस्तक भी विभिन्न संगोष्ठियों में प्रस्तुत विभिन्न महत्त्वपूर्ण एवं अत्युत्कृष्ट शोध–पत्रों का संपादन है। इसका प्रकाशन अखिलभारतीय ओरिंटल कांफ्रेंस से वर्ष २००२ में हुआ।

६. A fresh peep to sanskrit litrature (अ फ्रेश पीप् टू संस्कृत लिटरेचर) :–

इसका प्रकाशन 'पञ्चसखा प्रकाशन, कटक, (उड़ीसा) से वर्ष १९९८ में हुआ। इस पुस्तक में संस्कृत वांग्मय पर संपन्न विभिन्न संगोष्ठियों की कार्यवाही का संपादन महाकवि आचार्यहरेकृ ष्णशतपथी ने किया है।

७. Eco-spititualism (ईको–स्प्रितुअलिस्म)– यह ग्रन्थ अभी मुद्रणाधीन है।

८. Geografical description of Vishnupuraana **(ज्योग्राफिकल डेस्क्रिप्शन ऑफ़ विष्णुपुराणा) –**

इस ग्रन्थ में आधुनिक भूगोलशास्त्र की लगभग सभी शाखाओं को सुनियोजित रूप से स्पर्श किया गया है। इस पुस्तक में हमारे पूर्वजों के भौगोलिक ज्ञान, कार्यप्रणालियों, दृष्टिकोण, पूर्वानुमान की सटीकता आदि का सम्मान करने का प्रयास किया गया है। यह ग्रन्थ अष्ट अध्यायों एवं ४०३ पृष्ठों में में समाहित है। प्रथम अध्याय में पुराणों के साथ–२ भूगोल शास्त्र का परिचय दिया गया है। द्वितीय अध्याय सौरमंडल; तृतीय अध्याय में पृथ्वी; चतुर्थ अध्याय में वायुमंडल; पञ्चम अध्याय में अंतरिक्ष; षड–अध्याय में जंबूद्वीप; सप्तम अध्याय में भारतवर्ष; एवं अंतिम अष्टम अध्याय में उपसंहार रूप में ग्रन्थ का सार वर्णित है।

इ. व्याख्याग्रन्थ –

आचार्यहरेकृष्णशतपथी कृत 'संस्कृतसरणी', 'संस्कृतशास्त्रसंग्रहः', 'संस्कृतसौरभम्', 'रघुवंशम्(प्रथमसर्गः)', 'रघुवंशम् (द्वितीयसर्गः)', 'रघुवंशम् (त्रयोदशसर्गः)', पञ्चतन्त्रम्,

स्वप्नवासदत्तम्, 'कुमारसम्भवम् (पञ्चमसर्गः)', किरातार्जुनीयम्, 'दशकुमारचरितम्', 'अभिज्ञानशाकुन्तलम् (एक दृष्टिपात्)', 'साहित्यदर्पण (दशमोऽध्यायः)', 'शुकनासोपदेशः', 'शिशुपालवधम् (प्रथमसर्गः)', 'कठोपनिषद्', 'सिद्धांतकौमुदी', 'श्रुतिबोध', 'श्रद्धानन्दम् (प्रथमसर्गः)', 'वेतालपञ्चविंशतिः', 'राघवयादवीयम्', आदि व्याख्याग्रन्थों को उड़ीसा राज्य के विभिन्न विद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों में समाहित किया गया हैं।

ई. सम्पादित कृतियाँ –

आचार्य हरेकृष्ण शतपथी एक उत्तम कवि एवं लेखक होने के साथ–साथ एक उत्तम सम्पादक भी हैं। उन्होंने ने केवल संस्कृत अपितु अन्य भाषाओं में भी अनेक रचनाकारों की रचनाओं, पांडुलिपियों एवं प्राचीन विद्वानों की अप्रकाशित कृतियों का अत्यंत कुशलतापूर्वक सम्पादन किया है। उनके द्वारा सम्पादित कृतियों का अतिसंक्षिप्त परिचय यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है।

१. धर्मशास्त्रे षोडशसंस्काराः –

इसमें भारतीय संस्कृति के महत्त्वपूर्ण अंग "गर्भाधानादि" षोडशसंस्कारों का आधुनिक परिवेश में उनके महत्त्व को रेखांकि करते हुए वैज्ञानिक रीति से विस्तृत वर्णन किया गया है। इसमें प्रत्येक संस्कार के महत्त्व एवं वैज्ञानिकता पर बल दिया गया है।

२. न्यायमनोविज्ञानेन प्रत्यक्षविमर्शः –

इस ग्रन्थ में प्राचीन एवं अर्वाचीन न्यायदृष्टियों का तुलानात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। इसमें प्राचीन न्याय दृष्टि से प्रत्यक्षलक्षणों, ऐन्द्रियलक्षणों, सन्निकेषेन्द्रियलक्षणों, आधुनिक वैज्ञानिकदृष्टि से प्रत्यक्षनिर्वचनसिद्धान्तों, शरीर मनोविज्ञानियों द्वारा प्रस्तुत ऐन्द्रिय निर्माणक्रम एवं उसके कार्यों का सचित्र वर्णन किया गया है।

३. तत्त्वचिंतामणि–उपाधिविमर्शः –

इस ग्रन्थ में न्यायशास्त्र के कठिन किन्तु अतिमहत्त्वपूर्ण विषय– "उपाधिप्रकरण" की उल्लेखनीय व्याख्या एवं दार्शनिक विवरण प्रस्तुत किया गया है।

४. पाणिनीयव्याकरणोदाहरणकोशः –

इस पुस्तक का प्रकाशन तीन खण्डों में अलग–अलग हुआ। प्रथम खंड में "उदाहरणसमाहारप्रकरण", द्वितीय खंड में "समासप्रकरण" एवं तृतीय खंड में "तिडन्तप्रकरण" का उत्तरार्ध भाग समाहित है। इसे ग्रन्थ में उपर्युक्त विषयों से सम्बंधित उदाहरणों को सरल प्रक्रिया से समझाया गया है।

५. रसगंगाधरवक्रोक्तिसौंदर्यम् –

इस अलंकारशास्त्रीय कृति में उड़ीसा के प्रसिद्ध काव्यशास्त्राचार्य पण्डित जगन्नाथ कृत "रसगंगाधर" में आगत वक्रोक्ति अलंकर सौंदर्य को विभिन्न विधाओं में प्रकट किया गया है।

६. द्वैतवेदान्तविश्वकोशः –

यह द्वैतवेदान्तदर्शन में प्रयुक्त तकनीकी शब्दों का कोशग्रन्थ है। इसमें वेदान्तदर्शन में प्रयुक्त ५०० से अधिक तकनीकी शब्दों की सरल शब्दों में व्याख्या प्रस्तुत की गयी है।

७. संस्कृतशिक्षा –

शिक्षाशास्त्री एवं शिक्षा–आचार्य की कक्षाओं में अध्ययनरत छात्रों के लिये अत्यन्त सहायक यह पुस्तक आचार्य शतपथी कृत आरंभिक रचनाओं में से एक है।

८. प्रत्यक्षम् –

दर्शनशास्त्र से सम्बन्धी इस ग्रन्थ में भारतीय दर्शन एवं कृत्रिम बुद्धिमत्ता artificial inteligence; (A.I.) के परिप्रेक्ष्य में "प्रत्यक्षतत्त्वविमर्श" प्रस्तुत किया गया है। यह पुस्तक इस क्षेत्र का प्रथम सोपान है। इस पुस्तक में यह जानने एवं समझने का प्रयास किया गया है कि कंप्यूटर एवं रोबोट कृत्रिम अवधारणात्मक ज्ञान किस प्रकार उत्पन्न करते हैं।

९. साहित्यत्रयी –

यह एक कोशग्रन्थ है। इसमें 'ध्वन्यालोक', 'काव्यप्रकाश' एवं 'साहित्यदर्पण' इन तीनो काव्यशास्त्रीय ग्रंथो के तकनीकी शब्दों का सरलार्थ प्रस्तुत किया गया है।

१०. श्रीनिवासविलासचम्पू –

यह चम्पूकाव्य दो भागों में विभक्त है। प्रथमभाग में तिरुमल्लस्वामि–''भगवन श्रीनिवास (वेंकटेश्वर)'' का तिरुमलापहाड़ियों पर आगमन तथा द्वितीयभाग में देवी ''पद्मावती'' के साथ उनके विवाह का वर्णन है।

११. काव्यतत्वलोकः –

इस काव्यशास्त्रीयग्रन्थ में साहित्यिक समालोचना के मुख्य विषयों यथा काव्यलक्षण, शब्दशक्ति, काव्यरस, ध्वनि, गुण, रीति, अलंकार आदि का विवेचन करते हुए भारतीय और पाश्चात्य सिद्धान्तों का तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

१२. बालसरस्वती –

यह वैष्णवमत से सम्बंधित धार्मिकग्रन्थ है। इसमें अनेक टिप्पणियों के माध्यम से वैष्णव मतावलंबियों के संदेहों का परिमार्जन किया गया है।

१३. श्रीपुरुषोत्तमचित्रकल्पः –

यह पुस्तक ''जगन्नाथचेतना'' पर एक अनूठा कार्य है। इस पुस्तक में जगन्नाथ– संस्कृति के महत्त्वपूर्ण तत्त्वों को व्यवस्थित रूप से प्रस्तुत किया गया है। इस पुस्तक में जगन्नाथ संस्कृति की दार्शनिक प्रणालियों एवं धार्मिकप्रतिबिम्बों का वर्णन है।

१४. शास्त्रार्थरत्नमाला –

यह पुस्तक व्याकरणशास्त्र, न्यायदर्शन, मीमांसादर्शन और वेदांतदर्शन के अनेक विषयों पर रचित निबन्धों का संग्रह है।

१५. शक्तिवादस्य विचारसंग्रहः –

द्वंदात्मक भावों का व्यापक अध्ययन प्रस्तुत करने वाली यह पुस्तक न्याय एवं दर्शन शास्त्र के छात्रों के लिये बहूपयोगी है।

१६. यज्ञपात्रपरिचय –

यह अपनी ही तरह का एक अनुठा कोशग्रन्थ है जिसमें वैदिक यज्ञ–अनुष्ठानों एवं यज्ञ–आहुतियों के सम्पादन हेतु आवश्यक सामग्रियों का सचित्र परिचय प्रस्तुत किया गया है। इसमें कुल ११६ यज्ञपात्रों का वर्णन वैज्ञानिक रीति से किया गया है।

१७. श्रीवैखानसकल्पसूत्रम् –

इस पुस्तक में आचार्यहरेकृष्णशतपथी ने महर्षि मनु, अपस्त्य, बोधायन, एवं हरित के महत्त्वपूर्ण मन्त्रों, संस्कारों एवं अनुष्ठानों से सम्बंधित विचारों का संपादन किया है। वैज्ञानिकता पर आधारित यह पुस्तक प्रत्येक मनुष्य को आत्ममूल्यांकन का अवसर देती है।

१८. श्रीपाञ्चरात्रवैहायसी–संहिता –

इस पुस्तक में वैष्णव आगमों में प्रमुख पाञ्चरात्र आगम का सम्पादन किया गया है। इसमें देवालयों में प्रयुक्त होने वाले नित्यार्चना के मन्त्रों का संकलन किया गया है।

१९. आह्निकभास्करः –

यह पुस्तक १८वीं सदी के प्रसिद्ध विद्वान श्री इन्द्रकण्टक यज्ञनारायणसूरी रचित पाण्डुलिपियों का सम्पादन है। इसमें एक दिन की समयावधि में पूर्ण होने वाले "आह्निक" शब्द की विस्तृत व्याख्या के साथ–साथ प्रातःकाल से रात्रिकाल पर्यंत मनुष्य के करणीय कर्त्तव्यों का वर्णन किया गया है।

२०. सिद्धान्तलक्षणम् –

इस पुस्तक में मिथिला के प्रसिद्ध तर्कशास्त्री 'तत्त्वशिरोमणि' के चिन्तनों का संपादन किया गया है। यह नव्यन्यायशास्त्र से सम्बंधित अद्वितीय कृति है।

२१. चलदूरवाणी –

यह आधुनिक विधा का अद्वितीय खंडकाव्य है। हास्यरस से परिपूर्ण यह कृति युवापीढ़ी को संस्कृतशिक्षण हेतु नवीन प्रविधियों का उपयोग हेतु प्रेरित करती है।

२२. शेषस्वनितम् –

यह पुस्तक डॉ. भुवनेश्वर द्वारा रचित विभिन्न काव्यों एवं कथाओं का संग्रह है। इसमें वेंकटेश्वर स्तुति, संस्कृत महिमा,नीतिश्लोक आदि विषय समाहित है। 'पंजारा' कविता इस कृति का मुख्या आकर्षण है। यह पुस्तक पाठकों में नैतिक–अंतर्दृष्टि के विकास में सहायक है।

२३. श्री उत्कलमंजूषा –

इस पुस्तक में २०१३ में 'विश्वभारती विश्वविद्यालय' कलकत्ता एवं २०१४ में राष्ट्रिय– संस्कृतविद्यापीठ (मानित विश्वविद्यालय) तिरुपति (आ.प्र.) में संपन्न संगोष्ठियों की कार्यवाहियों में से जगन्नाथसंस्कृति, चैतन्यदर्शन एवं जयदेवसाहित्य पर प्रस्तुत उत्तम श्रेणी के कुल ३० शोधपत्रों का समावेश है।

२४. पञ्चप्रश्नतन्त्रम् –

इस पुस्तक में श्रीशतपथी ने बद्रिकाश्रम में सम्पन्न नारदव्यासमुनिसंवाद का सम्पादन किया है। नारदमुनि व्यासजी से नारायण की माया, पूजाविधि आदि के बारे में ५ प्रश्न पूंछते हैं। नारद के प्रश्नों एवं व्यासजी के उत्तरों का सम्पादन इस आगम साहित्य से सम्बंन्धित पुस्तक में किया गया है।

२५. सरस्वती–विलास–"व्यवहारकाण्ड" –

यह पुस्तक गजपतिनरेश–'प्रतापरूद्रदेव' विरचित "सरस्वतीविलास" ग्रन्थ का सम्पादन है। सरस्वतीविलास में उड़िया के प्रसिद्ध 'गजपतिसाम्राज्य' का राजधर्म एवं व्यवहारशास्त्र (विधिशास्त्र) का वर्णन है।

२६. लघुशब्देन्दुशेखरः –

यह पुस्तक श्री नागेशभट्ट की प्रसिद्ध कृति "बालबोधिनी' की व्याख्या है। मूलतः यह पुस्तक "अडयार संग्रहालय" चेन्नई में पाण्डुलिपि रूप में स्थित "श्री रामसेतु–माधवाचार्य कृत "भावबोधिनी" की टीका है, जिसका आचार्यहरेकृष्णशतपथी ने पुनः सम्पादन किया है।

२७. न्यायकुसुमाञ्जलिः –

यह पुस्तक न्यायदर्शन से सम्बन्धित है इसमें महान तर्कशास्त्री 'श्री रघुनाथशिरोमणि के तर्कों का सम्पादन आचार्यहरेकृष्णशतपथी ने किया है।

२८. पदार्थतत्वनिरूपण –

यह पुस्तक महान तर्कशास्त्री 'श्री रघुनाथशिरोमणि की न्यायदर्शन से सम्बन्धित कृति का है।

२९. पाणिनीयतद्धितभागस्य विशिष्ठाध्ययनम् –

इस पुस्तक में आचार्यहरेकृष्णशतपथी ने प्रसिद्ध वैयाकरण पाणिनि की अमर कृति "अष्टाध्यायी" के प्रधानभूततत्व–''तद्धितभाग" का सरल उदाहरणों के साथ सम्पादन किया है।

३०. व्याकरणसिद्धान्तसुधानिधिमर्मप्रकाशः –

यह पुस्तक आचार्य विश्वेश्वरसूरी विरचित "व्याकरणसिद्धान्तसुधानिधि" ग्रन्थ का संपादन है। इस पुस्तक में "पदार्थतत्त्व" का विस्तृत विवेचन किया गया है।

३१. सिद्धान्तकौमुदी–चन्द्रिकायाः विमर्शः –

यह पुस्तक प्रसिद्ध व्याकरणाचार्य श्रीभट्टोजिदीक्षित विरचित प्रसिद्ध व्याकरणग्रन्थ "सिद्धान्तकौमुदीः'' तथा श्रीरामाश्रय प्रणीत "सिद्धान्तचन्द्रिका" ग्रन्थ का आलोचनात्मक सम्पादन है।

३२. पाणिनीयपदव्यवस्था –

इस पुस्तक में पाणिनीय अष्टाध्यायी के आधार पर पदव्यवस्था के विषय में उपस्थित विभिन्न मतभेदों का समाधान प्रस्तुत किया गया है।

३३. वेदव्याकरणे सारतत्वविमर्शः –

इस ग्रन्थ में आचार्यहरेकृष्णशतपथी ने वैदिक संस्कृत एवं शास्त्रीय संस्कृत के मध्ये के अनेक अंतरों का विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत किया है।

३४. पंचाङ्गपीठिकालेखनप्रक्रिया –

यह ज्योतिष शास्त्र से सम्बंधित ग्रन्थ है। इसमें 'पंचांगपीठिकालेखनप्रक्रिया' में उपयोगी अनेक विषयों पर प्रकाश डाला गया है।

३५. वृहज्जातकम् –

यह पुस्तक ज्योतिषशास्त्र एवं खगोलशास्त्र से सम्बंधित प्रसिद्ध पुस्तक "वृहज्जातक" का सरल भाषा में संपादन है। यह पुस्तक ज्योतिषशास्त्र एवं खगोलशास्त्र के रसज्ञों के लिये बहूपयोगी सामग्री का भण्डार है।

३६. दर्शनेषु मनस्तत्वपरिशीलनम् –

इस पुस्तक में सांख्य, योग, मीमांसा, द्वैतवेदान्त, अद्वैतवेदान्त आदि आस्तिक एवं चार्वाक, जैन, बौद्ध आदि नास्तिक परम्पराओं में 'मन की स्थिति का' विश्लेषण प्रस्तुत किया है।

३७. काव्येष्वलंकाररससन्निवेशनविधिः –

इस पुस्तक में आचार्यहरेकृष्णशतपथी ने विभिन्न लक्षण ग्रन्थों में वर्णित 'अलंकाररससन्निवेशनप्रक्रिया' को सरल एवं आकर्षक भाषा में समझाया है।

३८. रसप्रदीपविमर्शः –

यह काव्यसौन्दर्यशास्त्र से सम्बन्धित पुस्तक है। इस पुस्तक में काव्यसौन्दर्य हेतु आवश्यक सभी महत्त्वपूर्ण तत्त्वों का वर्णन किया गया है।

३९. शब्दार्थचिन्तामणि –

यह एक चित्रविलोमकाव्य है। इसमें रामायण एवं भागवत कथाओं का चित्रात्मक वर्णन प्रस्तुत किया गया है।

४०. काव्यप्रकाशहृदयप्रकाशः –

यह अपनी ही तरह का एक अनूठा ग्रन्थ है। इसमें काव्यप्रकाश पर प्रस्तुत विभिन्न टीकाकारों की राय को रसशास्त्र के आधार पर प्रस्तुत किया गया है।

४१. सिद्धान्तसिन्धुः –

यह अद्वेत–वेदान्तदर्शन की प्रवेशिका के समान महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है। यह पुस्तक दर्शनशास्त्र के पाठकों के लिये बहूपायोगी हैं

४२. आदिपुराणविमर्शः –

इस पुस्तक में आचार्यहरेकृष्णशतपथी ने पुराणों में वर्णित श्रीकृष्ण कथाओं का सम्पादन किया है। यह पुस्तक पञ्च अध्यायों में विभक्त है।

४३. अद्वैतवेदान्त–अज्ञानविमर्शः –

इस पुस्तक में अद्वैतवेदान्त के तत्त्वों यथा अविद्यास्वरुप, विषय, प्रमाण आदि विषयों का सम्पादन किया गया है।

४४. श्रीजग्गुवाकुलाभूषणकाव्यमाला –

इस पुस्तक में महाकवि आचार्यहरेकृष्णशतपथी ने कवि 'जग्गुवाकुलाभूषण' रचित काव्यों का सम्पादन किया है।

४५. रहस्यत्रयम् –

इस पुस्तक में श्री शतपथी ने रामानुजाचार्य कृत "रहस्यत्रयम्" पर विस्तृत टिप्पणियों का सम्पादन किया है।

४६. स्त्रोत्रमाला –

इस माला ग्रन्थ में श्री शतपथी ने जगन्नाथ स्त्रोत्र, वेंकटेश स्त्रोत्र आदि स्त्रोतों का सम्पादन किया है।

४७. वन्दनावितानम् –

इस पुस्तक में अनेक देववन्दनाओं का सम्पादन है।

४८. वेदः –

यह वेदों की परिचयात्मक पुस्तक है। इसमें चारों वेदों से कुछ चयनित काव्यों का संग्रह हैं। यह पुस्तक 'किताबमहल प्रकाशन, कटक, (उड़ीसा)' से वर्ष १९८१ में प्रकाशित हुई।

४९. Paninian linguistics (पाणिनियन लिंग्विस्टिक्स) –

आचार्य हरेकृष्णशतपथी की यह पुस्तक संस्कृत के प्रसिद्ध वैयाकरण "पाणिनी" कृत "अष्टाध्यायी" का सैधांतिक आधार पर एक आकर्षक परिचय प्रस्तुत करती है। दश अध्यात्मक इस पुस्तक में पाठकों की अपेक्षा के अनुरूप आधारभूत व्याकरण ज्ञान को प्रस्तुत किया गया हैं

५०. 20th Century sanskrit poets & their contributions (20 सेंचुरी संस्कृत पोएट्स एंड देयर कंट्रीब्यूसन) –

यह पुस्तक दो भागों में विभक्त हैं। प्रथम भाग में १८७५ से १९३० तक के कालखंड के संस्कृत कवियों एवं उनकी कृतियों का विस्तार से वर्णन किया गया है। प्रथम भाग सात अध्यायों में विभक्त है। द्वितीय भाग में १९३१ से १९७० तक के कालखंड के संस्कृत कवियों एवं एवं उनकी कृतियों का विस्तार से वर्णन किया गया है। द्वितीय भाग में पञ्च अध्याय हैं।

५१. Fundamentals of webdesigning (फंडामेंटल्स ऑफ़ वेब डिजाइनिंग) –

यह पुस्तक महाकवि आचार्य हरेकृष्णशतपथी के संपादन में विद्यापीठ प्रकाशन तिरुपति से प्रकाशित है। यह तकनीक एवं प्रविधि पर आधारित पुस्तक है। इसमें वेब डिजाइनिंग के परिचयात्मक पाठ्यक्रम को प्रस्तुत किया गया है।

५२. English grammer from Paninian perspective (इंग्लिश ग्रामर फ्रॉम पाणिनियन पर्सपेक्टिव) –

यह पुस्तक पाणिनीय व्याकरण का अंग्रेजी व्याकरण के सन्दर्भ में विश्लेषण प्रस्तुत करती है। यह ग्रन्थ संस्कृत के महान वैयाकरण पाणिनी कृत व्याकरण की सार्वभौमिकता का दिग्दर्शन है।

इसमें पाणिनीय व्याकरण के मुख्य स्त्रोतों एवं उसकी प्रयोज्यता को दिखने के साथ ही पाणिनीय भाषा के विश्लेषण हेतु अनेक तथ्यों को स्थापित किया गया है।

५३. Dharmasuri:-life & works (धर्मसूरी–लाइफ एंड वर्क्स) –

इस कृति में प्रसिद्ध प्राचीन दार्शनिक एवं समालोचक 'धर्मसूरी' का जीवनचरित्र वर्णित है। धर्मसूरी पंचम से षष्ठम शताब्दी के मध्य आन्ध्रप्रदेश के प्रसिद्ध विद्वान् हुए। उनकी कृति "साहित्यरत्नाकर" को 'काव्यशास्त्रविश्वकोश' एवं 'काव्यशास्त्रनिधि' कहा जाता है। इस ग्रन्थ में श्रीधर्मसूरी एवं उनकी अमरकृति 'साहित्यरत्नाकर' का विस्तृत विश्लेषण आचार्य हरेकृष्ण शतपथी ने प्रस्तुत किया है।

५४. Pictional & descriptive glossary of Bharataa's Natyashastra (पिक्सनल एंड डिस्क्रिप्टिव ग्लोसरी ऑफ़ भरताज् नाट्यशास्त्रा) –

इस पुस्तक में भरतमुनि के 'नाट्यशास्त्र' में आगत सम्पूर्ण तकनीकी शब्दावली का निरूपण किया है। यह पुस्तक तीन भागों में विभक्त है। प्रथम भाग में नाट्यशास्त्र का परिचय एवं इससे प्रभावित परवर्ती काव्यों का विवरण, द्वितीय भाग में वर्णानुक्रम से नाट्यशास्त्र में आगत सम्पूर्ण तकनीकी शब्दावली का व्यवस्थापन एवं तृतीय भाग में प्रत्येक शब्द का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

५५. Fats of indian astronomy (फैक्ट्स ऑफ़ इंडियन एस्ट्रोनॉमी) –

यह ग्रन्थ भारतीय भूगोल, विज्ञानं एवं गणित से सम्बंधित छात्रों के लिये बहूपयोगी है। इस पुस्तक में एक मनुष्य के सम्पूर्ण जीवन–चक्र पर व्यवस्थित रूप से प्रकाश डाला गया है। यह ग्रन्थ आधुनिक वैज्ञानिक ज्ञान के छिपे हुए खजाने की कुंजी है।

५६. Ancient indian mathematics with special refrences to vedic mathematics (एनसिएन्ट इंडियन मैथमेटिक्स विद स्पेशियल रेफरेन्सेस टू वैदिक मैथमेटिक्स एंड एस्ट्रोनॉमी) –

यह पुस्तक गणित तथा ज्योतिष के क्षैत्र में हमारे पूर्वजों की शानदार उपलब्धियों की ओर दृष्टिपात करने साथ ही वैदिक विज्ञान एवं ज्योतिष के क्षैत्र में आगे अनुसन्धान हेतु पथप्रदर्शन करती है।

५७. A living lagend- Satyavrita shastri (ए लिविंग लेजेंड–सत्यव्रतशास्त्री) –

"महामहोपाध्याय पद्मभूषण प्रोफ़ेसर (डॉ.) सत्यव्रतशास्त्री की जीवनी इस पुस्तक में प्रोफ़ेसर (डॉ) सत्यव्रतशास्त्री के जीवनचरित्र एवं कार्यों पर प्रकाश डाला गया है।

५८. Aspects of eastern & western aesthetics (आस्पेक्ट्स ऑफ़ इस्टर्न एंड वेस्टर्न एस्थेटिक्स) –

"भारतीय बुक कारपोरेशन नई दिल्ली से प्रकाशित इस पुस्तक में आचार्य हरेकृष्ण शतपथी ने पाश्चात्य साहित्य में वर्णित सौन्दर्यशास्त्र एवं संस्कृत वाङ्मय में वर्णित सौंदर्यशास्त्र का विश्लेषण प्रस्तुत करते हुए संस्कृत साहित्य में वर्णित सौन्दर्य का श्रेष्ठत्व प्रतिपादित किया है।

५६. The apoch of Svami Vivekananda in morden india (दि अप्रोच ऑफ़ स्वामी विवेकानन्दा इन मोर्डन इंडिया) –

यह पुस्तक आधुनिक भारत के पुरोधा स्वामी विवेकानन्द के युग पर प्रकाश डालती है। इसमें स्वामी विवेकानन्द के जीवन से भारतीय युवा किस प्रकार प्रेरित होते हैं इस विषय पर प्रकाश डाला गया है। साथ ही वर्तमान में भी स्वामी विवेकानन्द का जीवन एवं उनके कार्य कितने प्रासंगिक हैं? इन तथ्यों का भी यह पुस्तक विश्लेषण प्रस्तुत करती है।

६०. Narative litarature in english & sanskrit (नैरेटिव लिट्रेचर इन इंग्लिश एंड संस्कृत) –

इस पुस्तक में महाकवि आचार्यहरेकृष्णशतपथी ने सितम्बर २०१३ में राष्ट्रिय संस्कृतविद्यापीठ (मानित विश्वविद्यालय) तिरुपति (आ.प्र.) में संपन्न संगोष्ठियों की कार्यवाहियों का संपादन किया है।

६१. भजगोविन्दम् –

यह पुस्तक "जगदगुरु आदिशंकराचार्य' विरचित "मोहमुद्गार" पर कृत उड़ियाभाषा–टीका "उत्कलभाष्य" का संस्कृत अनुवाद है।

उ. सम्पादित पत्रपत्रिकाएं :–

आचार्यहरेकृष्णशतपथी ने विभिन्न स्थानों से प्रकाशित होने वाली जिन पत्र–पत्रिकाओं का सम्पादन किया है, उनमें 'देवभाषा', 'अभिव्यक्ति':, 'विद्वत्प्रभा', 'अमृतभाषा', 'सुभद्रा', 'महस्विनी', 'शेमुषी', 'वाग्वर्धिनी' तथा "अखिल भारतीय ओरियंटल कांफ्रेंस' पुरी के तत्वाधान में प्रकाशित विभिन्न स्मारिकापत्रिकाएं सम्मिलित हैं।

ऊ. प्रकाशित शोधपत्र :–

आचार्य हरेकृष्ण सतपथी द्वारा विभिन्न भाषाओं में निर्मित लगभग ३७ से अधिक शोधपत्र विभिन्न शोधपत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं। उनके शोधपत्रों की सूची तालिका द्वारा प्रस्तुत की जा रही है:–

आचार्यहरेकृष्णसतपथी पठित एवं प्रकाशित शोध-पत्रों की सूची -			
क्र०	**शोध-पत्र शीर्षक**	**विशेष विवरण**	**वर्ष**
१	Effect of Awarding Punishment. "राघवयादवीयस्य	संस्कृत साहित्य एवं विधिशास्त्र [Law] पर आधारित लगभग ५५ पृष्टों का शोध-निबंध	१९९२

२	समालोचनात्मकमध्ययनम्”	अखिलभारतीय ओरियंटल कांफ्रेंस के ३१वें सत्र में प्रस्तुत कुल २६० पृष्ठों में समाहित	१९८२
३	Golden Era of Sanskrit Literature in Orissa.		१९८४
४	Sanskrit Through adverse Circumstances in Orissa.	अखिलभारतीय ओरियंटल कांफ्रेंस के ३२वें सत्र में प्रस्तुत कुल २६० पृष्ठों में समाहित	१९८६ एवं १९९८
५	Contribution of Jagannath das to Sanskrit Literature.	अखिलभारतीय ओरियंटल कांफ्रेंस के ३३वें सत्र में वर्ष १९८६ में प्रस्तुत एवं १९९८ में एवं “अ फ्रेश पीप टू संस्कृत लिटरेचर” शीर्षक पुस्तक में प्रकाशित	१९८८
६	गुणरीतिवृत्तीनां मिथ: सम्बन्धविमर्श:	अखिलभारतीय ओरियंटल कांफ्रेंस के ३४वें सत्र में प्रस्तुत कुल ७७ पृष्ठों में समाहित एवं “अ फ्रेश पीप टू संस्कृत लिटरेचर” शीर्षक पुस्तक में प्रकाशित	१९९०
७	विश्वनाथ-कविराजस्य काव्य-लक्षणविमर्श:		
८	Prevalent Position of Sanskrit in Orissa.	अखिलभारतीय ओरियंटल कांफ्रेंस के ३५वें सत्र में प्रस्तुत कुल १२३ पृष्ठों में समाहित	१९९३
९	Critical study on some particular terms used by Kalidasa.	अखिलभारतीय ओरियंटल कांफ्रेंस के ३६वें सत्र में प्रस्तुत	१९८२
१०	Hindu Women’s Right to Property	महाविद्यालय संस्कृत शिक्षकों के लिए आयोजित अखिलभारतीय कांफ्रेंस [पुरी] के द्वितीय-सत्र में प्रस्तुत	१९८४
११	Poetic Excellence of Acharya Shankar	महाविद्यालय उड़िया शिक्षकों के लिए आयोजित अखिलभारतीय कांफ्रेंस के तृतीय-सत्र [कटक] में प्रस्तुत	१९९३
१२	Contemprary Environmental Pollution vis-a-vis Vedic Concept of a Livable Earth.	श्री जगन्नाथ संस्कृत विवि० के धर्मशास्त्र विभाग की और से प्रकाशित “ब्रह्माअंजलि” जर्नल के द्वितीय संस्करण में कुल ३५ पृष्टों में प्रकाशित	१९९४
	Some Distinctive Features of Sahitya	श्री जगन्नाथ संस्कृत विवि०, पुरी ,[उड़ीसा] से प्रकाशित शोध-जर्नल “श्री जगन्नाथज्योति:” के १०वें संस्करण में प्रकाशित	१९९५

१३	Darpan compared to Kavyaprakash.	जाधवपुर विवि० कलकत्ता, [प.बंगाल] में "Vedas & Ecology" विषय पर आयोजित राष्ट्रीय सेमिनार में प्रस्तुत एवं "Environmental Grandeur" पुस्तक में प्रकाशित	१९९७
	Elements of Poetry in the Vedas.		
१४	Puri: The Abode of Lord jagannath.	भुवनेश्वर स्थित "इंस्टिट्यूट ऑफ़ ओरिसा कल्चर" के तत्वाधान में आयोजित राष्ट्रीय सेमिनार में प्रस्तुत एवं "अ फ्रेश पीप टू संस्कृत लिटरेचर" शीर्षक पुस्तक में प्रकाशित	१९९८
१५	Crisis of Literature.	यह शोधपत्र "काव्यरचनाया: मूलप्रेरणास्त्रोत्र:" शीर्षक से लालबहादुरशास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत [LBS], विद्यापीठ, नई दिल्ली में आयोजित राष्ट्रीय सेमिनार में प्रस्तुत |	१९९८
१६	Sanskrit & Ecology		२०००
१७	Bhakti & Social changes.	'लोकसेवक युवा मंडल, पुरी' के तत्वाधान में पुरी में आयोजित "इंटरनेशनल यूथ कांफ्रेंस"- १९९८ में प्रस्तुत एवं शोध-जर्नल में प्रकाशित	२००२
१८	Professor Jha; Guru & Guide.	"अखिलभारतीय ओरियंटल कांफ्रेंस" ४०वें सत्र [चैन्नई] दिया गया अध्यक्षीय सम्बोधन	२००३
	Status of Sanskrit in Orissa.		
१९	Status of vedic Studies in Orissa.	श्री जगन्नाथ संस्कृत विवि०, पुरी ,[उड़ीसा] से प्रकाशित शोध-जर्नल "श्री जगन्नाथज्योति:" के १०वें संस्करण में प्रकाशित	२०००
२०			२००१
२१	Impact of Sanskrit Literature on morden Oriya Literature.	"श्री शंकराचार्य संस्कृत विवि०, कालड़ी, [केरल] की शोध-जर्नल में प्रकाशित	
		प्रोफेसर 'हरिहर झा' के सम्मान में प्रकाशित 'स्मारिका-जर्नल' में प्रकाशित	२००४
२२	कालिदाससाहित्ये परिवेशविज्ञानम्	उज्जैन से प्रकाशित शोध-जर्नल "संस्कृत स्टडीज़ इन इंडिया" में प्रकाशित	
	वाक्यं रसात्मकं काव्यमेकं	उज्जैन [म.प्र.] स्थित 'महर्षि संदीपनी राष्ट्रीय वेद-विद्या प्रतिष्ठान" से प्रकाशित	२००५

२३	पुनर्मूल्यायनम्	"वैदिक स्टडीज इन इंडिया" शीर्षक जर्नल में प्रकाशित	
२४	गुणरीतिवृत्तीनां पारस्परिकसमन्वय:	श्री जगन्नाथ संस्कृत विवि०, पुरी ,[उड़ीसा] से प्रकाशित शोध-जर्नल "श्री जगन्नाथज्योति:" के १०वें संस्करण में प्रकाशित	१९९५
२५	काव्यानन्दे अपेक्षानुभूति: वेदेषु काव्यमाधुरी	श्री जगन्नाथ संस्कृत विवि०, पुरी ,[उड़ीसा] से प्रकाशित शोध-जर्नल "श्रीजगन्नाथज्योति:" के षष्ठम संस्करण में प्रकाशित	१९९६ १९९७
२६	ऋत-सत्य-धर्माणां पारस्परिकान्वय:	श्री जगन्नाथ संस्कृत विवि०, पुरी ,[उड़ीसा] से प्रकाशित शोध-जर्नल "श्री जगन्नाथज्योति:" के ५वें संस्करण में प्रकाशित	१९९७
२७	आलंकारिक: विश्वनाथ:	"अभिव्यक्ति:" शोध-जर्नल के द्वितीय संस्करण में पृ.सं. ९ पर प्रकाशित	१९९७
२८	एको रस: करुण: एव	"अभिव्यक्ति:" शोध-जर्नल के तृतीय-संस्करण में पृ.सं. १९ पर प्रकाशित	१९९९
२९	व्यञ्जनावृत्तिविमर्श:	'पुरी विद्वत् परिषद्' की और से प्रकाशित होने वाली "**विद्वत्प्रभा"** जर्नल के प्रथम संस्करण में प्रकाशित	२०००
३०	महिमभट्टस्य ध्वनितत्वखण्डन-विमर्श:	पुरी विद्वत् परिषद्' की और से प्रकाशित होने वाली "**विद्वत्प्रभा"** जर्नल के द्वितीय संस्करण में प्रकाशित	१९९८
३१	रम्या रामायणी कथा	संस्कृत जर्नल "देवभाषा" में प्रकाशित	१९९८
३२	पुराणेषु वैदिको देवो जगन्नाथ:	संस्कृत जर्नल "देवभाषा" में प्रकाशित	
३३	जातीयचरित्रनिर्माणे संस्कृतस्य भूमिका	बेंगलुरु [कर्णाटक] में २-९ जनवरी १९९७ को आयोजित 'अंतर्राष्ट्रीय संस्कृत कांफ्रेंस' में प्रस्तुत	
३४	जात्यादिर्जातिरेव वा	जाधवपुर विवि० [प.बंगाल] में संपन्न अखिलभारतीय ओरियंटल कांफ्रेंस के ३८वें सत्र में प्रस्तुत	
३५		'भद्रक महाविद्यालय, भद्रक, [उड़ीसा] में	

३६ ३७	"काव्यरचनाया: मूलप्रेरणास्त्रोत्र: - वेद:"	संपन्न सेमिनार में प्रस्तुत सम्पूर्णानन्द संस्कृत विवि०, वाराणसी, [उ.प्र.] में संपन्न राष्ट्रीय सेमिनार में प्रस्तुत एवं विवि० द्वारा प्रकाशित जर्नल "सारस्वतसुषमा" में प्रकाशित 'साधू गन्धेश्वर संस्कृत महाविद्यालय, जयपुर [राज०] में "संस्कृतवर्षसमारोह २०००" के उपलक्ष में आयोजित सेमिनार में प्रस्तुत वड़ोदरा,[गुजरात] में संपन्न अखिलभारतीय ओरियंटल कांफ्रेंस के ३९वें सत्र में प्रस्तुत एवं "अभिव्यक्ति:' जर्नल में प्रकाशित लालबहादुरशास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत [LBS], विद्यापीठ, नई दिल्ली में आयोजित राष्ट्रीय सेमिनार में प्रस्तुत	

इनके अतिरिक्त आचार्यहरेकृष्णशतपथी ने अपने अकादमिक जीवनकाल में देश एवं विदेशों में आयोजित अनेक सेमिनारों, संगोष्ठियों एवं सम्मेलनों में भाग लिया। कुलपति पद पर नियुक्ति के उपरान्त उन्होंने देश के विभिन्न भागों एवं विदेशों में संपन्न १०० से अधिक सेमिनारों, संगोष्ठियों एवं सम्मेलनों में वक्ता, मुख्यातिथि एवं अतिथि के रूप में भाग लिया। कुछ महत्त्वपूर्ण सेमिनारों, संगोष्ठियों एवं सम्मेलनों का बिन्दुवार विवरण यहाँ प्रस्तुत है:–

१. श्रीशतपथी जी ने २४ से २६ अक्टूबर १९८६ में 'एशियाटिक सोसाइटी, कलकत्ता' द्वारा आयोजित अखिलभारतीय ओरियंटल कांफ्रेंस के ३३वें सत्र में भाग लिया एवं "Sanskrit thourgh adverse circumstances in Orissa" विषय पर निर्मित अपना शोध–पत्र प्रस्तुत किया।

२. उन्होंने दिनांक १० से १६ नवम्बर १९९७ में उज्जैन, (म.प्र.) में आयोजित राष्ट्रीय सेमिनार' में भाग लिया एवं "कालिदासस्य साहित्ये दर्शनस्य प्रभाव:" विषय पर निर्मित अपना शोध–पत्र प्रस्तुत किया।

३. उन्होंने चैन्नेई में २८ से ३० मई २००० में सम्पन्न अखिलभारतीय ओरियंटल कांफ्रेंस के ४०वें सत्र की अध्यक्षता की।

४. उन्होंने संस्कृत वर्ष २००० के तत्त्वाधान में 'श्री जगन्नाथ संस्कृत विवि०, पुरी, (उड़ीसा) में २ राज्यस्तरीय एवं १ राष्ट्रीय स्तर के आयोजनों का कुलपति एवं राज्य समिति के संयोजक के रूप में कुशलतापूर्वक निर्देशन एवं संचालन किया।

५. उन्होंने "Future of Vedas ; an analysis in 21st century" विषय पर २८ से ३० जनवरी २००० में 'राष्ट्रीय वेद–विद्या प्रतिष्ठान', उज्जैन एवं 'जाधवपुर विवि० (प. ब.) द्वारा कलकत्ता में आयोजित अखिलभारतीय संगोष्ठी की अध्यक्षता की।

६. 'राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्', नई दिल्ली के तत्वाधान में 'सदाशिव केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ', पुरी, (उड़ीसा) में २६ से ३० सितम्बर २००१ को "वास्तु विद्या" विषय पर आयोजित "राष्ट्रीय संगोष्ठी" में भाग लिया एवं "कालिदाससाहित्ये वास्तुकला" विषय पर निर्मित अपना शोध–पत्र प्रस्तुत किया।

७. उन्होंने १२ से १४ जनवरी २००१ को 'कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विवि०', दरभंगा, (बिहार) में आयोजित राष्ट्रीय सेमिनार में में भाग लिया एवं "Contribution of Padmashri Venkatachalam to sanskrit" विषय पर निर्मित अपना शोध–पत्र प्रस्तुत किया।

८ . उन्होंने १८ से १६ जनवरी २००३ में 'राष्ट्रियसंस्कृतविद्यापीठम्', तिरुपति, (आ.प्र.) द्वारा आयोजित राष्ट्रीय सेमिनार में में भाग लिया एवं "Some Dependable Sanskrit Sources on Jagannatha Culture" विषय पर निर्मित अपना शोध–पत्र प्रस्तुत किया।

६. उन्होंने 'रेवेंशा महाविद्यालय, कटक, (उड़ीसा) में 'प्रो. जगन्नाथ पटानिक' की स्मृति में 'ओरियन कल्चर' विषय पर ६ से ७ अप्रेल २००३ में आयोजित राष्ट्रीय सेमिनार में में भाग लिया एवं "Eco-Spiritualism ; its impact on orian culture" विषय पर निर्मित अपना शोध–पत्र प्रस्तुत कियाद्य

१०. आचार्य हरेकृष्ण शतपथी ने १० से १४ जुलाई २००६ में 'एडिन्बर्ग', (स्कॉटलैंड) में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनार में भारत के प्रतिनिधि के रूप में भाग लिया।

११. उपर्युक्त के अतिरिक्त उन्होंने 'उड़ीसा संस्कृत अकादमी', 'उड़िसा साहित्य अकादमी', केन्द्रियसाहित्य अकादमी', 'श्रीजगन्नाथ संस्कृत विवि०, पुरी आदि द्वारा आयोजित राज्यस्तरीय एवं राष्ट्रीयस्तरीय अनेक सेमिनारों, संगोष्ठियों एवं सम्मेलनों में वक्ता, मुख्यातिथि, अतिथि के रूप में भाग लिया।

१३. सम्पूर्णानन्द संस्कृत विवि०, वाराणसी, (उ.प्र.) में वर्ष १६६६ में सम्पन्न राष्ट्रीय सेमिनार में भाग लिया एवं "पुराणेषु वैदिको देवो जगन्नाथः" विषय पर निर्मित अपना शोध–पत्र प्रस्तुत किया।

ऋ. अन्य कार्य :–

उपर्युक्त मौलिक, सम्पादित, अनुवादित ग्रंथों एवं पात्र–पत्रिकाओं के अतिरिक्त आचार्य हरेकृष्णशतपथी ने कुछ इलेक्ट्रोनिक स्वरुपों [CD, DVD] में भी कुछ कार्यों का संपादन किया है जिनका विवरण अधोलिखित है।

१. श्रीजगन्नाथ–सुप्रभात–स्त्रोत्र–लहरी –

इस लहरी काव्य का ऑडियो (MP-3.) स्वरुप में आचार्य हरेकृष्ण शतपथी ने संपादन किया है।

२. जयदेव कृत गीतगोविन्दम् –

यह उड़ीसा के गौरव प्रसिद्ध संस्कृत विद्वान् जयदेव की अमर कृति "गीतगोविन्दम्" का ऑडियो (MP-3.) स्वरुप में संपादन है। इसमें उड़ीसा आन्द्रप्रदेश के प्रसिद्ध गायकों की आवाज है।

३. आचार्य हरेकृष्ण शतपथी 'विश्वविद्यालय अनुदान आयोग', (UGC) नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित "Ecological Harmony And Vedik Literature" शीर्षक 'शोधपरियोजना' (Research Project) के संयोजक भी रहे; जो ३१ मार्च १९९८ में पूर्ण हुआ।

४. उन्होंने 'विश्वविद्यालय अनुदान आयोग', नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित "A Critical Survey of Sanskrit Literature on Jagannath Culture" शीर्षक एक विशाल शोधपरियोजना का सफलतापूर्वक निर्देशन किया।

इस प्रकार उपर्युक्त वर्णनक्रम में आचार्य हरेकृष्ण शतपथी महोदय ने विभिन्न ग्रंथों का प्रणयन, सम्पादन एवं प्रकाशन कर संस्कृतसेवा में अपनी महती साधना को साकार किया है।

.....**इति प्रथमोऽध्यायः**.....

द्वितीय अध्याय

'भारतायनम्' महाकाव्य की सर्गानुसारी कथावस्तु–

१. प्रथमसर्ग

२. द्वितीयसर्ग

३. तृतीयसर्ग

४. चतुर्थसर्ग

५. पंचमसर्ग

६. षष्ठसर्ग

७. सप्तमसर्ग

८. अष्टमसर्ग

९. नवमसर्ग

१०. दशमसर्ग

'भारतायनम्' महाकाव्य की सर्गानुसारी कथावस्तु :–

सुविस्तृत संस्कृतकाव्यजगत में राष्ट्रीय–चेतनाप्रधान काव्यों की सुसमृद्ध परम्परा दृष्टिगोचर होती है; यथा भट्टमथुरानाथशास्त्री कृत "भारतवैभवम्", सत्यव्रतशास्त्री विरचित "वृहत्तमभारततम्" योगी अरविन्द विरचित "भवानी भारती", महादेवशास्त्री रचित "भारतशतकम्", श्रीपादशास्त्री हसूरकर प्रणीत "भारतरत्नमाला", श्रीप्रीतमपाल नरसिंहलाल कच्छी कृत "मातृभूमिकथा", नारायणप्रसादत्रिपाठी कृत "श्रीभारतमाला", शिवप्रसाद भारद्वाज कृत "भारतसन्देशः", बालकृष्णभट्ट कृत "स्वतंत्रभारतम्", प्रो.रमाकान्त शुक्ल प्रणीत 'भाति मे भारतम्" एवं "जय भारतभूमे", श्रीमन्महादेव कृत "भारतशतकम्", पं॰ नवलकिशोर कांकर रचित "राष्ट्रवेद", महालिंगशास्त्री विरचित "भारतीविषादः", दत्त दिनेशचंद्र कृत "भारतगाथा" नागार्जुन रचित "भारतभवनम्", रामनाथ पाठक विरचित "राष्ट्रवाणी", रेवाप्रसाद द्विवेदी विरचित "स्वातन्त्र्यसम्भवम्", लक्ष्मणसिंह अग्रवाल विरचित "राष्ट्रदर्पणम्", आचार्य मनोमोहेन कृत "गीतभारतम्", डॉ. हरेकृष्ण मेहत्तर कृत "मातृगीताञ्जलिः" आदि प्रमुख हैं।[43] इसी परम्परा में महाकवि आचार्य हरेकृष्ण शतपथी विरचित 'भारतायनम्' महाकाव्य का भी महत्त्वपूर्ण स्थान है। भारतमाता के गौरव एवं भारतीय आध्यात्म के गुणगान से परिपूर्ण ''भारतायनम्' महाकाव्य २१वीं सदी का सर्वोत्कृष्ट महाकाव्य है। इस महाकाव्य में दश सर्गों में ६५६ पद्यों में महाकवि ने भारतमातृभूमि के वैभव, औदार्य एवं गौरव का शान्त–कान्त चित्र, मधुर पदावलियों द्वारा प्रस्तुत किया है। समीक्ष्य महाकाव्य की सर्गानुसारिणी कथावस्तु यहाँ प्रस्तुत है।

१. प्रथमसर्ग–

[43] संस्कृत साहित्य 20वीं शताब्दी –राधावल्लभत्रिपाठी रा.सं.संस्थानम् २०१३, पृ.सं.–३१३

"भारत–जननी–वात्सल्यम्" शीर्षक प्रथमसर्ग में कुल १२० पद्यों में महाकवि ने सन्तति के प्रति जननी के वात्सल्य एवं जननी तथा जन्मभूमि के प्रति सन्तति के प्रेम को शब्दों द्वारा अभिव्यक्त करने का महनीय प्रयास किया है। महाकाव्य के प्रथमसर्ग में जननिस्वरुप में जन्मभूमि की परिकल्पना की गयी है। अनन्तसौन्दर्य एवं विशेष प्रकार के वैभवों से युक्त नगाधिराज हिमालय से सागरतटों तक सुविस्तृत यह भारतभूमि ही हमारी जननी है। यथा–

"असीमसौन्दर्य्यविशेषसौरभं ,
हिमालयादन्यदिगन्तवैभवम् ।
यदा नमामि प्रियभारतं मम,
तदा स्वरूपं प्रतिभाति तेऽम्बिके ! ।।"[44]

जननी वात्सल्यता की प्रतिमूर्ति है। देवता भी इसके स्नेहसागर की थाह पाने में असमर्थ रहे हैं। अनन्त वेदनाओं एवं असंख्यकष्टों को सहकर भी अपनी सन्तति का कल्याण करने वाली जननी को कभी भी विस्मृत नहीं किया जा सकता है। जननी ने इस पृथ्वी पर 'ईश्वरीय धारा' को संरक्षित किया है। परमात्मा ने जगत के कल्याण हेतु पृथ्वी पर जननी का सृजन किया है। यथा–

" असीमसौन्दर्यविभूषितवस्तुना
जगद्धितार्थं विधिनाऽपि निर्मिता ,
विधेश्च धरा हि यया सुरक्षिता
सुपूजिता सा जननी गरीयसी ।।"
"उदासभावान्वितचेतानाहतः ,
स साक्षिभूतः पुरुषो हि निश्चलः ।
यया स्वशक्त्या क्रियतेऽत्र शक्तिमान् ,
सुपूजिता सा जननी गरीयसी ।।"[45]

जिस प्रकार धरती समस्त सम्पदाओं को लोककल्याणार्थ धारण करती है; उसी प्रकार माता भी अपने समस्त वात्सल्य को अपनी सन्तति को अर्पित कर देती है। इस पृथ्वी पर जननी से सुन्दर अन्य कोई वस्तु नही हो सकती है। जननी देवनदी गंगा के समान पवित्र एवं वन्दनीय है। अपने वात्सल्यतापूर्ण शीतलजलामृत से सन्तति को पवित्र कर जीवन प्रदान करने वाली, अपने स्नेहमयी करकमलों से सन्तति को स्पर्श कर उसके समस्त पापसन्तापों को हरने वाली, स्वयंप्रभा, दानवदेववन्दिता देवनदी गंगा भी जननी का ही श्रेष्ठ रूप है। यथा–

''पवित्रभावान्वितशीतलैर्जलैः
ददाति या जीवनमेव जीविने ।
अनन्तपीयूषविशेषभूषिता

---

[44] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, १/१
[45] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, १/१३–१४

महीतले सा जननीय न जाह्नवी ।।[46]

जिस प्रकार पृथ्वी अपना वक्ष विदीर्ण करके, पङ्काकुला होकर, प्रचण्ड सूर्यरश्मियों से प्रतप्त होकर, अनेक फलपुष्पकन्दमूलादि खाद्यान्नों का उत्पादन जगत के पोषण हेतु करती है; उसी प्रकार जननि भी अनेक कष्टों को सहकर सन्तति का पोषण करती है। अतः जननी पृथ्वी से भी महान है। यथा–

''परार्थमेकां जनकात्मजां कदा
प्रसूय जाता धरणीह निश्चला ।
परं प्रसूते जनकाँस्तु या हि सा
सदा पृथिव्याः जननी गरीयसी ।।''[47]

जननी की सहनशीलता अद्वितीय है। सन्तति शैशवावस्था में जननी को न जाने कितनी बार एवं कितनी तरह से कष्ट देती है; किन्तु वात्सल्यता की प्रतिमूर्ति 'जननी' कभी भी क्रोधवश सन्तति को प्रताड़ित नही करती है। वह समस्त भोगविलासों का त्याग कर अपनी सन्तति के लिये केवल तप करती है। शिशु भविष्य में जो कुछ भी प्राप्त करता है वह जननि की कृपा से ही प्राप्त करता है। अपने पुत्रों एवं कुपुत्रों के भी मनोरथों की अगति देख माता का दयामय हृदय दुःखी होता है। माता का कोमल हृदय प्रतिक्षण अपनी जीवनसाधना 'सन्तति' के लिये व्याकुल रहता है। गान्धारी, सावित्री, गार्गी, आदि विभिन्न पूज्यस्त्रियाँ जननि के श्रेष्ठ रुप है। जिस प्रकार पार्वती ने विश्वहिताय भय का त्याग करके, लोक निंदा की परवाह न करके, भयङ्कर जीवों से युक्त हिमालय पर तप किया; उसी प्रकार जननि भी सन्तति के लालनपालन लिए तप करती है। जिस प्रकार लक्ष्मी सभी रत्नों, सुखों, ऐश्वर्यों आदि का स्त्रोत्र है; उसी प्रकार जननी भी सन्तति के लिये समस्त सुखों की कुंजी है। यह सम्पूर्ण पृथ्वी भी हमारी माता है और यह आकाश हमारा पिता है। इस दोनों के मध्य स्थित हमको किसी से भयभीत होने की आवश्यकता नहीं है। यथा–

"पिता मदीयः गगनोपमो महान् ,
वसुन्धरा मे जननी धुरन्धरा ।
सुरक्षितोऽहं धरणीनभोऽन्तरे ,
बिभेषि कस्मादयि ! दिव्यबालकः ! ।।"[48]

जननी सरस्वतिस्वरूपा है, सन्तान की प्रथम गुरु है। वह महस्विनी के रूप में ममत्व का वर्धन करती है, एवं सन्तति की रक्षार्थ दुर्गा का अवतार भी धारण कर लेती है। जननी तरिणी 'गंगा' के रूप में सन्तान को जीवन का रसपान भी कराती है। जननी ही बुद्धि, चेतना, कामना एवं हृदयस्थ भावना है। चाहे पुत्र जननि की उपेक्षा करें; किन्तु जननी कभी भी अपनी सन्तति की उपेक्षा नहीं करती है। यह शरीर भी विभिन्न रोगरूपी शत्रुओं का निवासस्थल है। यह जीवन

---

[46] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, १/३२
[47] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, १/ ४४
[48] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, १/ ८५

बड़ा दुर्विसह्य है। शत्रु अनेक रूपों में हमारे आस–पास विचरण करते रहते हैं। उनका स्वरुप सरलता से नही जाना जा सकता हैं। इस प्रकार के शत्रुओं का नाश यथासमय अत्यावश्यक है; और शत्रुओं के उन्मूलन हेतु जननी ही विजय की कुंजिका है। जननी ही हमें मित्रों एवं शत्रुओं में भेद करना सिखाती है। हम भारतीयों की जन्मभूमि 'यह भारतभूमि' भी हमारी माता है; और हम सब भारतीय इसकी सन्तति है। इस मातृभूमि का स्तन्यामृतपान करके हम सभी परिपुष्ट हुए हैं। यथा–

''**माता हि नो जगति भारतभूमिरेषा ,**
तस्याः वयं हि नियतं शिशुपुत्रकल्पाः ।
स्तन्यामृतं मधुमयं समवाप्य तस्याः ,
सर्वे भवन्तु सुखिनः शिशवः तदङ्के ।।"[49]

इस प्रकार प्रथमसर्ग में महाकवि ने जननि एवं जन्मभूमि के वात्सल्य का विस्तृत वर्णन किया है।

२. द्वितीयसर्ग :–

"मातृगौरवशिशुस्पन्दनम्" इत्याख्य द्वितीयसर्ग में कुल ५३ पद्यों में महाकवि ने जननी तथा शिशु के वात्सल्यतापूर्ण एवं शाश्वत सम्बन्ध का कोमल पदावलियों द्वारा वर्णन किया है। यह विस्तृत एवं अतुल्य भारतभूमि हम सब की माँ के समान है। 'शिशु' नवमासपर्यन्त जननी के 'गर्भनिलय' में सांसारिक माया–मोह से मुक्त, निश्छल रूप में अवस्थित रहता है। नवमास के उपरान्त जब वह गर्भस्थ शिशु जगत्पारायण 'परमात्मा' के दिव्य स्वरुप को लेकर; जननी के गर्भ से पृथ्वी पर अवतरित होता है। तब समस्त प्रकृति मुनिस्वरूप शिशु की आराधना करती है। सभी परिजनों के हृदय आनन्दयुक्त हो जाते हैं। श्लोक संख्या ७ से १६ तक कवि ने शिशु का स्वभाव दिव्य एवं निर्मल होता है। शिशु का कोई शत्रु नही होता है; और न ही उसे कोई दुःख अथवा शोक ही होता है। लाभ–हानि, सुख–दुःख सब उसके लिये समान है। यथा–

"**लाभं न वाञ्छति कदा न कदापि हानिं**
ऐतद्द्वयं भवति तस्य कृते समानं ।
निष्कारणं हसति रोदिति वा तथैव ,
दुःखं सुखं द्वयमहोऽस्ति शिशोर्न भिन्नम् ।।"[50]

निर्मल शिशु शत्रुमित्रादि किसी में भेद नहीं करता है। 'धूलि' शिशु के लिये चन्दन के समान पवित्र होती है। मृदाचन्दन से मलिन उस शिशु को सभी मनुष्य अपने अङ्क में लेकर प्रसन्न होते हैं। शिशु के हास में समस्त सृष्टि के दर्शन होते हैं। शिशु की अस्पष्ट वाणी को सुनकर दुःखी प्राणियों का भी मन प्रफुल्लित हो जाता है। स्वाभाव से अत्यन्त चारु वह शिशु जननी के आँचल में इस प्रकार सुशोभित होता है; जैसे सरोवर के आँचल में कमल, जैसे वसन्तकाल में

---

[49] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, १/ १२०
[50] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८ २/ १३

वृक्षों पर कोमल पल्लव; एवं आकाश के वक्ष में स्फुट चन्द्र सुशोभित होता है। चंचलनिर्मल 'शिशु' जननी के स्तनों को कन्दुक समझकर दुग्धपान करते–करते उनसे खेलने लगता है। शिशु अपने मन के भावों को बड़ी ही सरलता से प्रकट कर देता है। उसकी अस्पष्ट–उच्चारण युक्त वाणी अत्यन्त मनोहर प्रतीत होती है। उसकी बाललीलाओं को देखकर सभी लोगों को अपना बचपन याद आ जाता है। वृद्ध, तरुण, प्रौढ़ स्त्री, पुरुष आदि सभी उस शिशु को देखकर दुःख से अपने निर्मल जीवनकाल (शैशवावस्था) के व्यतीत हो जाने को बार–२ उसे पुनः दुःख से स्मरण करते हैं। श्रीकृष्ण, ध्रुव, प्रहलाद आदि शिशुओं ने इस भारतभूमि को अपनी दिव्य लीलाओं से सुशोभित किया है।

शैशवावस्था व्यतीत हो जाने के साथ ही मनुष्य ज्यों–२ बड़ा होता है; उसके स्वभाव में अनेक विकृतियाँ प्रविष्ट होती जाती है। शैशवावस्था का 'उन्मुक्तजीवन' अवस्था बदलने के साथ ही सांसारिक माया–मोह में बद्ध होकर उत्तरोत्तर सन्तापित होता जाता हैं। समय बीत जाने पर वह धूलि–मेखला; माता के वक्षस्थल पर क्रीड़ा करते हुए स्तनपान करना आदि; सब लुप्त हो जाता हैं। ज्यों–२ मनुष्य की आयु बढ़ती है, त्यों–२ चातुर्य, दुष्टता, दम्भ; दर्प आदि अनेक कलुषित मनोवृत्तियाँ उसमें प्रविष्ट होती जाती हैं। सांसारिक बन्धनों में परिबद्ध होकर, अपने निश्छलनिर्मल स्वभाव को पूर्णतया त्यागकर, कामवासनाओं के प्रहार से जर्जरित होकर, मनुष्य अन्धकार में भटकता रहता हैं। उस माधुर्य एवं आनन्द की दिव्य अवस्था (शैशवावस्था) को त्यागकर विश्वासहीन; छलयुक्त एवं स्वार्थबद्धहृदय होकर मनुष्य इस संसार में नर्कयात्री बनकर भटकता रहता है। शैशवावस्था व्यतीत हो जाने पर मनुष्य की आँखों के समक्ष विषमता फैल जाती है। स्वार्थी मनुष्य स्खलितवाणि, पक्वकेश, जर्जरितदेहयुक्त अपने माता–पिता एवं गुरूजनों को बोझ समझने लगता है। आज छलकपट से युक्त वाणी मनुष्य को प्रिय है, किन्तु वह मूढ़बुद्धि इसके दुष्परिणामों को नही जानता है। यह कपटयुक्त वाणी वैश्विक शान्ति एवं सद्भावना की नाशिका है। यथा–

"वाणी विषण्णहृदया छलनाप्रपञ्चै–
रुचार्यते भुवि यदा मनुजैस्तु सर्वैः ।
न ज्ञायते हि कियती क्रियतेऽत्र हानिः ,
सद्भावशान्तिविषये विषदग्धविश्वैः ।।"[51]

उस सुविमल शैशवावस्था के व्यतीत हो जाने पर मनुष्य यौवनमद में उद्दीप्त होकर मत्तचित्त हो जाता है; और स्वजनों का भी अनादर करने लगता है। महान लोगों के महान गुणों का विस्मरण कर कलयुगी मनुष्य आज स्वयं को ही सभी कार्यों में दक्ष मानने लगा है। किन्तु मूढ़मति अज्ञानी मनुष्य नही जनता है कि युवावस्था एवं प्रौढ़ावस्था में जीवन में जो चतुरता एवं क्रियाशीलता दृष्टिगत होती है, वह स्वयं को छलने, पराश्रित होने एवं स्वार्थपूर्ति के हेतु मात्र है। यथा–

---

[51] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, २/४३

"कालक्रमेण मनुजः निजबाल्यभावं ,
सन्त्यज्य संसृतिविषाक्तमना यदास्ते ।
विस्मृत्य विश्वमहनीयगुणाँस्तदा स ,
ह्यात्मानमेव मनुते बहुकर्मदक्षम् ।।"[52]

इस प्रकार महाकवि आचार्य हरेकृष्णसतपथी ने द्वितीयसर्ग में मनुष्य की शैशवावस्था की लीलाओं का विस्तृत वर्णन करते हुए अवस्था व्यतीत होने के साथ ही मनुष्य पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों का वर्णन किया है। दार्शनिक दृष्टि से जननि एवं शिशु; आत्मा और परमात्मा के रूप में भारतभूमि के रूप–लावण्य का आनन्द लेने हेतु भारतभूमि पर अवतरित होते है।

३. तृतीयसर्ग :–

"भारतनीलाञ्चलमहिमवर्णनम्" शीर्षक तृतीयसर्ग में कुल ३७ पद्यों में महाकवि ने भारतमातृभूमि की महिमा का वर्णन करते हुए परमपवित्र पुरुषोत्तम क्षेत्र (पुरी) का विस्तृत वर्णन, नीलमाधव प्रभु जगन्नाथ की महिमा एवं जगन्नाथसंस्कृति का वर्णन किया है। इस पवित्र भारतभूमि पर भ्रमण करने का अवसर सौभाग्य से प्राप्त होता हैं। दलितों के रक्षण में तत्पर, प्राणियों के सैंकड़ों दुखों को हरने वाली, समस्त विश्व से सुन्दर, इस मनोरम भारतभूमि की शोभा अतुलनीया एवं दर्शनीया है। यह भारतभूमि अपने यश से समुज्ज्वल है। कविजन आदिकाल से ही निरन्तर भारतभूमि का महिमामण्डन करते आ रहे हैं। यह पवित्रभूमि अनेक ऋषियों तथा तपोवनों से युक्त, तीर्थों से पवित्र, सकललोक में विश्रुत है। यह भारतभूमि नद, नदी, गिरि, कंदरा आदि प्राकृतिक सौन्दर्यो से युक्त है। गुरुपरम्परा से परिदीपित हमारा भारतदेश 'जगद्गुरु' के नाम से विभूषित तथा सत्यता, शुचिता एवं शिवतत्व से सुपरिचित है। ऋषिमुनियों, देवताओं, दानवों की तपस्याओं से परिमण्डित; विविध प्रकारक संस्कृतियों एवं विचारधाराओं से युक्त, महार्घ, मनोरम, यह भारतभूमि वन्दनीया है। यथा–

''विविधसंस्कृतिसंस्कृतमानसं
भुवि सुधारससागरसौरभम् ।
निखिलपुण्यपरिक्षतरौरवं
जयति शाश्वत भारतगौरवम् ।।''[53]

इस पवित्र भारतभूमि पर स्थित समस्ततीर्थों में पवित्रतम तीर्थ नीलांचलभूमि पर पुरीतीर्थ में संसारभयार्तिहारक, 'प्रभुजगन्नाथ' स्वयं विराजते हैं। प्रभु की रहस्यमयी 'दारूमूर्ति' धर्म एवं दर्शन का समन्वित रूप है। पवित्र नीलाञ्चल क्षेत्र में प्रवेश करते ही दूर से ही जगन्नाथ प्रभु के मन्दिर पर शुशोभित दिव्यचक्र 'सुदर्शन' के दर्शन होते हैं। यह सुनील 'सुदर्शनचक्र' सभी दिशाओं से आत्माभिमुखी प्रतीत होता हुआ भक्तों को दूर से ही आकर्षित करता है। भगवान पुरुषोत्तम का

---

[52] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८ २/४८
[53] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८ ३/१३

आयुध 'सुदर्शन' मिथ्या गर्व के नाश एवं विनम्रता के रक्षण हेतु अहर्निश जाग्रतावस्था में रहता हैं। इस दिव्यचक्र 'सुदर्शन' को देखकर जगद्गुरु आदिशंकराचार्य आदि विमोहित हुए। यथा–

"तदेव दृष्ट्वा नतमस्तकोऽभवत्
जगद्गुरुः शंकररूपशंकरः ।
परे च रामानुजनानकादयः ,
बभूविरे केवलमात्मविस्मृताः ।।"[54]

तृतीयसर्ग के उत्तरार्द्ध में राजा 'इन्द्रद्युम्नप्रसंग' का प्रारम्भ होता है। बहुभाग्यभाजन, नृपों में अतुलनीय, भक्तिवान्, राजा 'इन्द्रद्युम्न' ने एक दिन विद्वानों के श्रीमुख से प्रभु 'नीलमाधव' की महिमा सुनी। जब भगवान् श्रीकृष्ण ने अपनी देह का परित्याग किया तो पाण्डवों ने उनके दिव्यशरीर को अग्नि में समर्पित किया। किन्तु उनके शरीर का नाभिभाग अग्नि से भी भस्म नही हुआ। पाण्डवों ने उस नाभिभाग को समुद्र में विसर्जित कर दिया। कालान्तर में वह नाभिभाग श्रीनीलमाधव के रूप में पवित्र नीलांचलक्षेत्र के 'विश्ववासु' नामक निर्धन ब्राह्मण को समुद्रतट पर रेत में छिपा हुआ मिला। वह ब्राह्मण 'पुरुषोत्तमक्षेत्र' में एकान्त स्थान पर प्रभु श्रीनीलमाधव की गुप्त रूप से पूजा–अर्चना करने लगा। यथा–

"विश्वासुः शवरवंशकलावतंसः
नीलाचलोपरि तदा रहसि प्रकामम् ।
श्रीनीलमाधवविभोर्महतादरेण
पूजाविधानमकरोत्कमनीयमूर्तेः।।"[55]

राजा 'इन्द्रद्युम्न' ने अपने दरबार के प्रसिद्ध विद्वान् 'विद्यापति' को श्रीनीलमाधव की मूर्ति के रहस्यमय स्थान को खोजने भेजा। वह चतुर 'विद्यापति' 'विश्ववासु' की पुत्री से विवाह कर, उस रहस्यमय स्थान के बारें में सत्यता जान कर राजा 'इन्द्रद्युम्न' को सूचित करता है। राजा 'इन्द्रद्युम्न' भक्तिप्रचोदित मन से श्रीनीलमाधव की मनोहर दिव्य मूर्ति के दर्शनार्थ अपने अनुयायियों एवं सैनिकों के साथ पुण्यपुरुषोत्तमधाम आता है। गर्व से गर्वित उस राजा के वहाँ पहुचने से पूर्व ही श्रीनीलमाधव की वह मनोहर मूर्ति अन्तर्ध्यान हो जाती है। यह देख वह राजा 'इन्द्रद्युम्न' दुःखी होकर सोचता है कि मेरे द्वारा कृत अनेक दुष्कर्मो के कारण ही आज मुझे मेरे इष्ट के दर्शन नही हुए है। यथा–

"कृतं हि किं दुष्कृतमेव जीवने
यतो न लब्धं हि ममेष्टदर्शनम् ।
न वा स्वधर्मो विहितस्ततः फलं
न लब्धमित्येव नृपो व्यचिन्तयत् ।।"[56]

---

[54] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८ ३/ २६
[55] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८ ३/ २६
[56] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८ ३/ ३१

इस महान घोर करालकाल में, दुःखी राजा 'इन्द्रद्युम्न' जब वहीं सो जाता है; तब राजा को स्वप्न में स्वेष्टदेव के दर्शन होते हैं। वे राजा को समुद्र की लहरों के साथ प्रवाहित होकर आये 'दिव्यदारुखण्ड' को सागरतट से लाकर उससे अपने इष्टदेव के विग्रहनिर्माण का आदेश देते हैं। तदुपरान्त अत्यन्त प्रसन्नचित्त वह राजा 'इन्द्रद्युम्न' पवित्र नृसिंहक्षेत्र में यज्ञ आदि का संपादन करके ईश्वर के प्रतीक उस 'दिव्य दारुखण्ड' को लाने हेतु महोदधितट की ओर प्रस्थान करता है। सागरतट पर पहुँचकर सर्वतीर्थो के साररूप पुण्य 'महोदधि' को देखकर परम भक्तिवान् राजा 'इन्द्रद्युम्न' हाथ जोड़कर सागर को प्रणाम करने के साथ ही तृतीय सर्ग की कथा समाप्त हो जाती है।

४. चतुर्थसर्ग :–

"महोदधिमहिमवर्णनम्" नामक चतुर्थसर्ग में महाकवि ने आहत्य ४६ पद्यों में महोदधि की महिमा का वर्णन किया है। पुरीस्थ सागर को जगन्नाथसंस्कृति में 'महोदधि' कहा जाता है। स्वेष्टप्रभुविग्रहनिर्माणार्थ 'दिव्यदारुखण्ड' को महोदधितट से लेने आये हुए राजा 'इन्द्रद्युम्न' महोदधि को प्रणाम करते हैं। फिर वे विभिन्न रूपकों, उपमाओं आदि से सागर की प्रशंसा करते हैं। यह महोदधि समस्त देवताओं की शक्तियों से युक्त एवं महनीय तरंगों की राशि से युक्त, देवी महालक्ष्मी का निवास स्थल एवं तीर्थों का राजा है। विश्वकल्याणार्थ अनेक ऋषिमुनि महोदधि के पवित्र जल से पूजा– अर्चना करते हैं। सागर के तट पर स्थित रमणीयपुष्पों को सागरपूजार्थ लोग चुनते हैं। अनेक पवित्र नदियाँ महोदधि के पावन चरणों का प्रक्षालन करती है। यथा–

"पूतातिपूतसलिलं सततं वहन्त्यः
गंगाद्यनेकसरितः मिलिताश्च यत्र ।
प्रक्षालयन्ति भवदीयपदाब्जयुग्मं
हे तीर्थराज ! जलधे ! तव सुप्रभातम् ।।"[57]

महोदधि अनेक रत्नाभूषणों को अपने गर्भ में संचित रखता है एवं कालान्तर में उन्हें संसार के लोगों के कल्याणार्थ पुनः संसार को अर्पित कर संसार का पोषण करता है। नीलाद्रिशेखर, विभु, जगदीश्वर, प्रभु जगन्नाथ के दिव्यातिदिव्य दिव्य दारुमयरूप के स्पर्श से महोदधि भी भगवत्स्वरूप को प्राप्त हो गया है। इस महोदधि ने ही महाप्रलय के समय 'मीनरूप' धारण कर वेदों की रक्षा की। दारिद्रय जनित दुःखों के नाश में दक्ष, दिव्यदेहा– 'लक्ष्मी' महोदधि में भगवान 'श्रीहरि' के साथ निवास करती है। शान्तरूप महोदधि भीमरूप है तथा महानता एवं स्वच्छता का प्रतीक है। यथा–

"शान्तस्वरूप ! जलधे ! शिवकल्पयोगिन् !
नित्यं तपश्चरणपावितशुद्धचित्तः ! ।

---

[57] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ४/४

स्वच्छप्रतीक ! महनीय ! विशालतायाः

हे दिव्यदेह ! विभो ! तव सुप्रभातम् ।।" [58]

रम्यनायक 'महोदधि' के हृदय में विलय हेतु गंगा, कृष्णा, गोदावरी आदि अनेक नदियाँ स्वेच्छा से सागर की ओर दौड़ती आती हैं। सागर प्राणदाता है। तृषार्तजन इससे जल प्राप्त करते हैं; क्षुधार्तजन इसके तटों से खाद्यान्न प्राप्त करते हैं; रोगों से पीड़ित लोग सागर तट के स्वस्थ वातावरण से अनेक रोगों से मुक्ति प्राप्त करते हैं। संसार के पालन एवं रक्षा हेतु सागर का गर्भ मौक्तिकों, प्रवालों, मणियों एवं काञ्चन से खचित है। विश्वमङ्गल के विधानार्थ समुद्रमन्थन के समय अनन्त पीड़ाओं को सहकर लोकपोषण हेतु महोदधि ने अनेक शुभकारी वस्तुएं संसार को प्रदान की है। सृष्टि के अनादि समय में जब न तो पादपों, न लताओं और न ग्रहमण्डलों का ही अस्तित्त्व था; जब सब कुछ महाप्रलय में सब लुप्त हो गया था; तब भी 'महोदधि' मीनरूप में अस्तित्त्व में था। यथा–

''सृष्टेरनादिसमये न यदा किमासीत्

नो पादपः न च लता ग्रहमण्डलं च ।

धृत्वा तदा जलमयीं स्वतनुं त्वमासी

हे ब्रह्मलीनजलधे ! तव सुप्रभातम् ।।"[59]

भक्तों द्वारा अर्पित वस्तुओं को ग्रहण न करके पुनः उन्हें भक्तों को ही समर्पित करके 'महोदधि' अपरिग्रह व्रत का पालन करता है। पुरुषार्थचतुष्टयों–'धर्मार्थकाममोक्ष' का प्रत्यक्षरूप– 'महोदधि' धर्म से अपने समस्त कर्मों का पालन करता है। 'अर्थ' जीवन का मुख्य लक्ष्य है;' अर्थ' से ही संसृतिधर्मचक्र संचालित होता है। यह रत्नाकर 'महोदधि' सकल–अर्थों का सार है। जीवों के हृदयों में स्थित कामनाओं की पूर्ति में और संसारबंधनों से मुक्त करके लोगों को मोक्ष प्रदान करने में महोदधि समर्थ है। यथा–

''संसारबन्धकवलात्कलिकल्मषाच्च

लोकान् निरन्तरमहो भुवि मोचयित्वा ।

मोक्षं ददासि ननु वक्षसि ताँश्च धृत्वा

हे मुक्तिदायिजलनिधे ! तव सुप्रभातम् ।।"[60]

चतुर्थसर्गान्त में प्रकृति की परिधि में मनुष्य के बढ़ते हस्तक्षेप के परिणामस्वरूप प्रकट होने वाले दुष्परिणामों एवं विनाशकारी प्राकृतिक आपदाओं की ओर संकेत करते हुए महाकवि सागर से अपना रोद्ररूप न दिखाकर शान्त होने की प्रार्थना करते हैंयथा–

"विलसितात्त्व वक्षसि तत्सुधा–

मधुरताप्रथिताखिलसौरभम् ।

---

[58] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ४/१२

[59] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ४/२१

[60] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ४/२६

जय जय प्रियजैत्रपथातिथे !

भुवि च बर्द्धय भारतगौरवम् ।।" [61]

इस प्रकार से "महोदधिमहिमवर्णनम्" नामक चतुर्थ सर्ग में महाकवि आचार्य हरेकृष्ण शतपथी ने सागरमहिमा का विस्तार से वर्णन किया है।

५. पंचमसर्ग :–

"सागरसमर्पणम्" शीर्षक पंचमसर्ग में महाकवि ने स्वहृदयान्तर्भावों का वर्णन करते हुए, संसार की नश्वरता का वर्णन करते हुए अनेक दार्शनिक विचार व्यक्त किये हैं। वे असमय देवलोकगता अपनी सुहृदा 'भगिनी' को सम्बोधित करके करुणा से ओतप्रोत अपनी भावनाओं से युक्त करुणामय पत्र लिखकर सागर से उसको अपनी स्वर्गवासिनी 'भगिनी' के पास पहुचाने का निवेदन करते हैं। करुणरस एवं शान्तरस से आप्लावित पंचमसर्ग में महाकवि द्वारा कृत भावुकतापूर्ण वर्णन पाठकों के हृदयों को करुणा से भर देता है। कवि अनिष्ट की आशंका से युक्त स्वमन तथा प्रकृति की विपर्यावस्था का वर्णन करते हैं। सागरतट पर काकसमूहों के कारण भगवान–भास्कर भी अदृश्यटा, वृक्षों द्वारा हठपूर्वक लताओं पर गिराये गये पुष्पों एवं पत्रों के समूहों की प्रचण्ड वायुवेग के कारण लताओं पर ठहरने में असमर्थता आदि प्राकृतिक दृश्यों को देखकर कवि के हृदयाभ्यान्तर में स्थित पीड़ा उनके हृदय को करुणा से भर देती है। उन्हें सम्पूर्ण वातावरण दुःखमय प्रतीत होने लगता है। यथा–

''तृणानि तत्युर्हरिणा वने वने ,

तथैव तस्थुः कलिकास्तरौ तरौ ।

कदापि पुंस्कोकिलरावसौष्ठवं ,

अदृश्ताहो प्रकृतेर्विपर्ययः ।।"[62]

यद्यपि निरन्तर गतिमान रहना प्रकृति का नियम है, किन्तु आज प्रकृति जैसे ठहर सी गयी है। प्रकृति की यह स्तम्भावस्था अकारण नही है। कुछ अनिष्ट घटित होने की आशंका से कवि का हृदय शोक भर जाता है। कवि की यह पीड़ा स्वसहोदरी के असमय निधन के कारण है। प्रकृति की विपर्यावस्था को देखकर तथा दशों दिशाओं में अमङ्गलकारी अपशकुनों को देख कर उन्हें अपनें परिवारजनों का स्मरण हो आता है। उनको देर रात्रि तक निद्रा नहीं आयी। सेवक ने उन्हें सूचित करता है कि कोई उनसे मिलने आया है। चिन्ता से पीतमुख अपने सहोदर को वे कठिनता से पहचान सके। सहोदर से भगिनी के दिवंगत होने का शोकसन्देश सुनकर उन्हें लगा मानो प्रचण्ड वायु–वेग ने लता को जड़ से उखाड़ दिया हो। सांसारिक मायामोह ही दुःख के

---

61 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ४/४६

62 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ५/८

मूल कारण है। मायामोह से रहित वनवासी सन्यासी लोग सदैव आनन्द से रहतें हैं। समस्त पृथ्वी उनका घर होती है एवं समस्त वन्यजीव उनके बन्धुजन होते हैं। यथा–

''अहो जगद्दृश्यमतीवविचित्रकं
सुखस्य शत्रुः परिवर्तनप्रियम्।
तदेव मन्ये नितरां प्रमोदिताः
वनालया वृक्षफलाशिनो जनाः।।"[63]

इस जगत में कोई किसी का नही है; सारे बन्धन स्वार्थ के हेतु है, जब तक अस्थिमेद से युक्त यह देह रुचिकर प्रतीत होती है; तब तक समस्त संसार में अनेक बन्धुजन मिल जाते हैं। आयु व्यतीत हो जाने एवं स्वार्थपूर्ति हो जाने पर कोई किसी को की परवाह नही करता हैं। सांसारिक वासनाओं में परिबद्ध मनुष्य मरने के बाद पुनः–२ जन्म लेता रहता हैं एवं अनेक योनियों में भटकता रहता है। धरातल पर शयन करने वाले, वल्कलवस्त्र धारण करने वाले एवं ज्ञानरूपी भोजन करनेवाले सन्यासियों का जीवन ही सर्वश्रेष्ठ जीवन है। फलपुष्पपल्लवोयुक्त प्रकृति सबको आनन्द देती है, किन्तु मनुष्य का शोक उसे अग्नि की तरह जलाने वाला है।

जिसका जन्म हुआ है उसकी मृत्यु निश्चित है। इसलिए मनुष्य को शोक नही करना चाहिए। क्योंकि प्राणियों का जन्म ही मृत्यु का बीजारोपण है। मृत्यु शाश्वत सत्य है। किन्तु अज्ञान के अन्धकार में विमोहित मनुष्य समीपस्थ इस निगूढ़तत्त्व को नही जन पाता है। यह मनुष्य जन्म निरर्थक न हो इसलिए मनुष्य को धैर्यपूर्वक अपना कर्म करते रहना चाहिए क्योंकि प्रयोजन पूर्ण नही होने तक मनुष्य को पुनः–२ जन्म लेना पड़ता है। बलपूर्वक प्रभु के चरणों का आश्रय प्राप्त कर लेने पर भी यदि शोकजन्य पीड़ा का शमन न हो तो मनुष्य को धैर्य रखना चाहिए। क्योंकि रागमोह के बन्धनों से मुक्त होना अति कठिन कार्य है और यही दुःख का मूल कारण है। इन मोहपाशों से मुक्ति ही सुख का हेतु है। यथा–

"कलेवरं रक्तपलादिनिर्मितां ,
विभाति यावत् रुचिरं मनोहरम् ।
भवन्ति तावत्सुहृदः समे भवे ,
वयोगते पृच्छति को जरातुरे ।।"[64]

तत्वतः न चाहते हुए भी सांसारिकजन दुःख के भागी हो ही जाते हैं। सुबुद्धि एवं मधुरता से युक्त प्रियजनों की वाणी उसी प्रकार शोकसन्तप्त जनों के दुःखों को दूर कर देती है जिस प्रकार कमल की पवित्र सुगन्ध कीचड़ की दुर्गन्ध को दूर कर देती है। प्रियजनों के अचानक चले जाने से किसे पीड़ा नही होती? महाकवि भी इस दुस्तर संसार में प्रिय भगिनी को खोकर अधीर हो गए हैं। जो लोग अपने परिजनों के विरह से मोहयुक्त है; उनके लिए इस संसार में कुछ भी नहीं है। यदि भ्रमर कमलपुष्प की आशङ्का में केतकी के पुष्प में प्रवेश करेगा तो काँटों से पीड़ित

---

63 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ५/ २३

64 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ५/२६

होगा ही। यदि पतंगा प्रेम में बद्ध होकर, शान्ति की चाह में अग्नि में प्रवेश करेगा तो उसका जलना निश्चित है। अर्थात मोह के कारण ही मनुष्य को कष्ट भोगने पड़ते हैं। जो मनुष्य समस्त पृथ्वी को माता एवं सुविस्तृत सुनील आकाश को पिता के समान मानता है; उसका जीवन स्वर्ग के समान आनन्दमय होता है।

सर्गान्त में महाकवि अनेक दृष्टान्तों, रूपकों एवं उपमाओं से सागर की वन्दना करते हैं एवं पत्र को दिवंगता भगिनी के पास स्वर्ग लोक में ले जाने का निवेदन करते हुए कहते हैं कि हे जलधि! आप सर्वज्ञाता हैं। आपने देवताओं को अमृत एवं प्राणियों को चन्द्रमा प्रदान किया है। आप रागद्वेष त्यागकर शरणागतों की तृषाशमन करते है। मैं भी शोकाग्नि से प्रतप्त हूँ। हे अन्तर्यामी ! आप ही दुखागम से व्यथित मेरे मन के कष्टों को हर सकते हैं। अयोध्या एवं लङ्का को मिलाने में समर्थ आपके लिये कुछ भी असम्भव नही है। हे मित्र ! मैं आपके समक्ष अपनी पीड़ा व्यक्त कर रहा हूँ, क्योंकि सुहृदजनों के समक्ष अपना दुःख व्यक्त करने पर दुःख की पीड़ा काम हो जाती है। यथा–

"यस्माद्बंधोऽद्य भवजविषादाग्निना दग्धचित्तो ,
नानामान्द्यादिकलिततनुस्ताड़ितस्ताडनाद्यैः ।
तस्मात् किञ्चिन्मम विषयकं दुःखवृन्दं वदामि ,
प्रोक्ते दुःखे भवति हि लघु प्राणबन्धोः समीपे ।।"[65]

अतः आपसे करबद्ध निवेदन है कि भगिनी के लिये लिखित इस पत्र को ग्रहण करें।

इस प्रकार प्रस्तुतसर्ग में महाकवि अपने हृदयोद्गारों को एक पत्र में प्रकट कर उस पत्र को स्वर्गलोक में अपनी भगिनी के पास पहुचाने हेतु सागर को समर्पित करते हैं।

६. षष्ठसर्ग :–

"दारुमहोत्सवमन्दिरनिर्माणम्" शीर्षक षष्ठसर्ग में कुल ४० पदयों में राजा 'इन्द्रद्युम्न' द्वारा महोदधि से पवित्र 'दारुखण्ड' को पवित्र नीलांचलक्षेत्र में लाकर उससे प्रभुविग्रहनिर्माण, पुरी मन्दिरनिर्माण, प्रभुजगन्नाथ आदि की मूर्तिस्थापना एवं जगन्नाथरथयात्रा की कथा का वर्णन है। वह राजा 'इन्द्रद्युम्न' अनेक प्रकार से सागर की स्तुति करके उसकी लहरों के साथ प्रवाहित होकर तट पर आये हुए पवित्र दारुखण्ड को अपने साथ ले जाने हेतु महोदधि से अनुमति मांगता है। सागर भी लहरों के द्वारा 'ॐ' कार का उच्चारण करके उस राजा को दिव्यदारुखण्ड को ले जाने की अनुमति देता है। राजा उस दिव्यदारुखण्ड को 'रानी गुण्डिचा' के महल में लेकर आता है; और यज्ञ का आयोजन करता है। उस यज्ञ में राजा 'इन्द्रद्युम्न' ने समस्त देवों एवं ब्राह्मणों को आमंत्रित किया। देवस्वरुप ब्राह्मणों के वैदिक–मंत्रोच्चारण से समस्त आकाश गुंजायमान एवं पवित्र हो गया। सज्जनों की सेवा को ही मनुष्य का परम–धर्म मानकर उस राजा

---

[65] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ५/ ७६

'इन्द्रद्युम्न' ने यज्ञसम्पादनार्थ आये हुए ब्राह्मणों की महती सेवा की एवं उन्हें मनोवांछित दान दिये। यथा –

"तेषां बुधानां महती हि सेवा ,
कृता च राज्ञा महतादरेण ।
दानं प्रदत्तञ्च मनोऽनुरूपं ,
सतां हि पूजा मनुजस्य धर्मः ।।"[66]

यज्ञ, दानादि के सम्पादनानन्तर उस राजा ने उस दिव्यदारुखण्ड से प्रभुविग्रहनिर्माण हेतु अनेक कुशल शिल्पकारों को आहूत किया। किन्तु वे उस दिव्य दारुखण्ड को स्पर्श भी नही कर सके। इसके उपरान्त देवलोक के शिल्पकार 'विश्वकर्मा' एक अतिवृद्ध शिल्पकार का रूप धारण करके राजा के समक्ष उपस्थित हुए एवं २१ दिनों में दारुविग्रह निर्माण पूर्ण करने की बात कही, साथ ही यह भी कहा कि दारुविग्रह निर्माण का कार्य वह एक बन्द प्रकोष्ठ में करेंगे एवं २१ दिनों तक अन्न–जल आदि कुछ भी ग्रहण नही करेंगे। यदि समयावधि से पूर्व किसी ने बन्द द्वारों को खोला तो वे मूर्तिनिर्माणकार्य उसी अवस्था में छोड़ कर चले जायेंगे। यथा –

''परन्तु सर्त्तोऽभवदेव वृद्धः
रुद्धे गृहे कार्यरतः यदा स्यात् ।
न कोऽपि च द्वारविमोचनेन
तदा पुनर्द्रक्ष्यति मूर्तिकार्यम् ।।''[67]

राजा ईन्द्रधुम्न ने आशंकित मन से उस वृद्ध शिल्पी को मूर्तिनिर्माणकार्य सौंप दिया। कुछ दिन व्यतीत हो जाने के उपरान्त, जब उस बन्द कमरे से किसी भी प्रकार की आवाज आना बन्द हो गया तो राजा 'इन्द्रद्युम्न' ने उत्सुकतावश द्वार खोल दिए। कमरे के अन्दर का दृश्य देखकर राजा की आँखे फटी की फटी रह गयी। वहाँ न तो वह वृद्ध शिल्पी था और न ही मूर्ति कार्य पूर्ण हुआ था। स्वयं को इसका उत्तरदायी मानकर वह राजा 'इन्द्रद्युम्न' अत्यन्त दुःखी हो जाता है। तत्क्षण ही राजा को आकाशवाणी सुनायी दी कि "हे राजन ! दुःखी न हो; यह सब देवयोग से हुआ है और यह दिव्य विग्रह मेरे ही है।" यह सुनकर सन्तुष्ट हुए राजा ने प्रहलाद नामक भक्त की रक्षा हेतु नृसिंह अवतार धारण करने वाले, त्रेतायुग में रावण के नाश हेतु पुरुषोत्तम श्रीराम का स्वरुप धारण करने वाले एवं कलियुग के एकनाथ प्रभु जगन्नाथ को राजा ने प्रणाम किया। यथा–

''स्रष्टा त्वमेवासि परं नियन्ता
संसाररक्षणसक्षमोऽसि ।
त्वमेव शम्भुश्च विनाशकर्ता

---

66 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ६/५

67 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ६/ ६

विश्वात्मकं त्वं शरणं प्रपद्ये ।।"[68]

तदुपरान्त रानी 'गुण्डिचा' ने गुण्डिचामहल में एक सुन्दर चबूतरे का निर्माण कर उन दारुविग्रहों को चबूतरे पर स्थापित करके अत्यन्त भक्तिभाव से उनकी सेवा की। इसके बाद राजा 'इन्द्रद्युम्न' ने कल्पवृक्षों से आच्छादित, पुरी नामक स्थान पर प्रभु जगन्नाथ के एक भव्य मन्दिर का निर्माण करवाया। मन्दिर के भूमिपूजन पर स्वयं प्रजापति सहित समस्त देवगण उपस्थित हुए। मन्दिर पर उत्कलशिल्पशेखरों द्वारा प्रदर्शित अनुपम शिल्पकला की उपमा पृथ्वी पर दुर्लभ है। यथा–

"प्रियेऽत्र या शिल्पकलाऽस्ति मन्दिरे
प्रदर्शिता ह्युत्कलशिल्पशेखरैः।
न साऽधुना कल्पयितुं हि शक्यते
न वास्ति तस्या उपमा महीतले ।।"[69]

मन्दिरनिर्माण के उपरान्त राजा ने गुण्डिचामहल से प्रभु जगन्नाथ, भगवान बलभद्र एवं देवी सुभद्रा के दारूविग्रहों को सुन्दर एवं विशाल रथों में बिठाकर पुरी मन्दिर में स्थापित किया। तब ही से प्रतिवर्ष आषाढ़ शुक्ल द्वितीय से एकादशी पर्यन्त रथयात्रा का आयोजन किया जाता है। गुण्डिचामहल से पुरीस्थ श्रीजगन्नाथमन्दिर तक के यात्रामार्ग की धूलि चन्दन के समान पवित्र है। यह मार्ग सुख का रक्षक एवं समस्त दुःखों एवं पापों का नाशक है। रथों पर आरूढ़ त्रिमुर्तियों को देख जन्म सफल हो जाता है। यथा–

"कदाऽऽषाढ़े मासे विजयविभवे भक्तजनता–
समावेसे रासे निहितमनसं घोषसरसम् ।
रथे तं ह्यारूढ़ं भवभयहरं कान्तवपुषं ,
जगन्नाथं दृष्ट्वा जननमिह मन्ये मधुमयम् ।।"[70]

इस प्रकार "दारुमहोत्सवमन्दिरनिर्माणम्" शीर्षक षष्ठमसर्ग में महाकवि ने दारुविग्रहनिर्माणकथा एवं मन्दिरनिर्माणकथा का वर्णन किया है।

७. सप्तमसर्ग :–

"द्वारिकाराधना" शीर्षक सप्तमसर्ग में आहत्य ३७ पद्यों में चारधामों में अन्यतम द्वारिकातीर्थ एवं बद्रीनाथतीर्थ के महात्म्य का भक्तिमय वर्णन के साथ–२ 'साधना' की शक्ति का महिमामण्डन किया है।

---

68 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ६/ २०
69 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ६/ २७
70 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ६/ ३५

भारतवर्ष के पश्चिमभाग में ज्योतिर्लिङ्ग प्रभुसोमनाथ एवं राष्ट्रपिता महात्मागाँधी की पुण्यभूमि– 'सौराष्ट्र' में योगेश्वर प्रभुवासुदेव की प्रियराजधानी–'द्वारिका' धरातल के पुण्यतीर्थों में अन्यतम है भगवान वासुदेव श्रीकृष्ण ने जरासन्ध के आक्रमण के समय मथुरा को छोड़कर द्वारिका को अपनी राजधानी बनाया था। 'द्वारावती' नाम को सार्थक करते हुए द्वारिकानगरी के विशाल द्वार मन की विशालता के प्रतीक है। धरातल के धामों में धन्या एवं धार्मिकनगरों में अनन्या द्वारिकानगरी अरबसागर के जल में योगसंलग्न साधू के समान शोभायमान है। यथा–

''सौराष्ट्रसंशोभितसागरस्य
तीरेऽपि नीरे स्मरणीयशोभा।
आभाति वेलावलयाभिलग्ना
सा द्वारिका सम्प्रति योगलग्ना।।''[71]

आदिशंकराचार्य ने सनातनधर्म के प्रचारप्रसारार्थ द्वारिका में 'शारदापीठ' की स्थापना की। यह मठ धार्मिक कृत्यों का अधार है एवं ज्ञान की आभा से प्रदीप्त है। द्वारिका के भव्य मन्दिर एवं भवन मेखलायें अपनी स्थापत्यकला के लिये विश्वप्रसिद्ध है। द्वारिका भारतभूमि के भव्य शिल्पचातुर्य की सहज अभिव्यक्ति है। कामप्रदा रुक्मिणी, मोक्षप्रदा केशवकान्ति एवं अर्थप्रदा सागरवेला से युक्त धर्मप्रदानगरी 'द्वारिका' धर्मार्थकाममोक्षदात्री है। यथा–

"कामप्रदा वन्दितरूक्मिणीयं ,
मोक्षप्रदाकेशवकान्तिरेषा ।
अर्थप्रदा सागररम्यवेला ,
धर्मप्रदेयं नगरी नमस्या ।।"[72]

शान्ताकृति एवं कमनीयमूर्ति 'प्रभुबद्रीनाथ' हिमालय पर लोकहितार्थ तपस्या करते हैं। प्राकृतिक सोंदर्यों से युक्त हिमालय के आँचल में; सुन्दर द्वारों से युक्त मंदिर में स्थित होकर 'प्रभु बद्रीनाथ' तपस्वी के वेश में समाधिमग्न होकर संसार को त्याग, तपस्या एवं वात्सल्य का सन्देश देते हैं। सप्तमसर्गान्त 'साधना' की महिमा का वर्णन किया है। किसी लक्ष्य की प्राप्त्यर्थ किया जाने वाला कार्य 'साधना' कहलाता है। धार्मिक एवं आध्यात्मिक अनुशासन जैसे पूजा–पाठ, ध्यान, योग, जप, उपवास, तपस्यादि को साधना कहते है। ईश्वरप्राप्ति, आनन्द–प्राप्ति या आध्यात्मिकप्रगति हेतु तन, मन, धन, बुद्धि आदि से किये गए प्रयास 'साधना' है। इस जगत में जीवन जीने हेतु मनुष्य को साधना अवश्य करनी चाहिए। साधना की शक्ति से ही राष्ट्रपिता महात्मागाँधि आदि अनेक देशभक्तों ने देश को स्वतन्त्र करवाया। साधना से ही माता 'पार्वती' ने भगवान शिव को पति के रूप में प्राप्त कर जगत का कल्याण किया। साधना से चित्त व्यवस्थित रहता है। साधना मनुष्य के जीवन में सुख एवं समृदधि लाती है। साधना के कारण ही सिंह वन में, राजा राज्य में, मकर

---

[71] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ७/६
[72] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ७/१५

जल में एवं पक्षी आकाश में शासन कर पाते हैं। अर्जुन की साधना के कारण महाभारत के भीषण रण में कर्ण जैसे शूरवीर भी पराजित हो गये। साधना के द्वारा ही समाधि अवस्था प्राप्त करके मोक्षप्राप्ति सम्भव है। साधना के विना शास्त्रों का ज्ञान प्राप्त नही हो सकता। साधना से ही देवता अमृत को प्राप्त करते हैं। भगवान विष्णु जगत के पालन हेतु आज भी साधना करते हैं। साधना के प्रत्यक्ष रूप प्रभु 'बद्रीनाथ' के शुभ–आशीषों से समस्त विश्व सुखशान्ति को प्राप्त करता है। यथा –

"हिमालयस्योपरि राजमानः ,
तपश्चरन् लोकहिताय नित्यम् ।
वन्दावहे श्रीविभुबद्रिनाथं ,
प्रत्यक्षरूपं खलु साधानायाः ।।"[73]

८. अष्टमसर्ग :–

"काशीविलास" इत्याख्य अष्टमसर्ग में महाकवि ने कुल ७६ पद्यों में पवित्रविश्वनाथनगरी (काशी), प्रभुविश्वनाथ, माँ अन्नपूर्णा एवं देवनदिगंगा के भक्तिमयवर्णन, देवनदी गंगा की दुर्दशा, पर्यावरणप्रदूषण, साम्प्रदायिकता, क्षेत्रवाद, आतंकवाद, भ्रष्टाचार, राष्ट्रीय–एकता, विश्वबन्धुत्व, विश्वशान्ति, आदि विषयों का वर्णन किया है।

विद्वानों द्वारा वरेण्या, देवनदी 'गंगा' की पवित्र तरङ्गों से धन्या, विद्याविनोद की नगरी 'वाराणसी' महान है। यह काशीनगरी देवनदी गंगा के पवन जल से पवित्र एवं समस्त पापों का नाश करने वाली है। देवनदी गंगा हमारी महान सनातन परम्परा की प्राणदायिका एवं सकल कल्याणभूता है जो स्वर्गलोक से भगवान विष्णु के चरणों को प्रक्षालित करते हुए दिव्यदेहरूप में भगवान शिव के मस्तक पर विराजित है। यथा –

"गंगाऽस्मदीयमहनीयपरम्परायाः ,
प्राणप्रदासकलमंगलहेतुभूताः ।
प्रक्षाल्यविष्णुपदपद्मयुगं सदा सा ,
शम्भोः परं शिरसि राजति दिव्यदेहा ।।"[74]

भगीरथ की साधना से धरती पर अवतरित 'देवनदी गंगा' की दुर्दशा देख आज सहृदयों का हृदय व्याकुल हो जाता है। भारतमाता के हृदय को पवित्र करने वाली, भारत की प्राणस्वरूपा, सर्वांगमधुरा, देवनदी–'गंगा' आज प्रदूषित होकर पंकाकुला एवं व्याकुला है। प्रदूषण के कारण गंगा के तटों पर स्थित तीर्थस्थल नष्ट हो रहे हैं। आज सिद्ध योगी भी 'गंगा' के प्रदूषित जल से स्नान, आचमन आदि से डरते हैं। गंगाजल के प्रदूषित हो जाने से गंगाजल पर आश्रितजीव लुप्त हो रहे हैं। प्राचीनकाल में देवता एवं देवाङ्गनाएँ गंगा के तटों पर आमोद–प्रमोद हेतु स्वर्ग

---

[73] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ७/२०, ७/३५

[74] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ८/६

से धरती पर आया करते थे; किन्तु वे पवित्रतट आज जलाये जाते हुए शवों की दुर्गन्ध से व्याप्त है। गंगातटों पर स्थित उद्योग एवं उनसे निकलने वाला अपशिष्ट जिसको बिना किसी परिष्करण के, सीधे गंगाजल में प्रवाहित कर दिया जाता है, गंगाजल के प्रदूषण का मूल कारण है। कानपुर के चर्म–उद्योग से गंगाजल को सर्वाधिक हानि हो रही है। मनुष्य देवनदी के तटों पर शवों को अर्धज्वलित करके उन्हें गंगा जल में प्रवाहित करते है, और फिर हरिश्चंद्र आदि घाटों पर गंगा महा–आरती का आडम्बर करते हैं। यथा–

"गंगा नाम पवित्रमस्ति नितरामुच्चार्य्यते केवलं ,
लोकानां शवमेव सम्प्रति हरिश्चन्द्रादिघाटोच्चये ।
मात्रं ह्यधर्मितं विदाह्य च पुनःनिक्षिप्य तत्तज्जले ,
नित्यं मोहवाशादुपार्जनपराः स्वार्थे नियुक्ताः डमाः ।।"[75]

गंगाजल के परिशोधनार्थ सरकार एवं विभिन्न नीतिनिर्माताओं ने अनेक योजनाएँ प्रस्तुत की तथा केन्द्र एवं राज्यों की सरकारों ने इस हेतु पानी की तरह धन बहाया, किन्तु सब व्यर्थ रहा। अनियोजित औधोगिकीकरण, मनुष्य की स्वार्थ एवं लालच से युक्त मनोवृत्ति आदि प्रदुषण का मुख्य कारण है। उद्योगों के परिचालनार्थ आवश्यक साधन–'विद्युत' के उत्पादनार्थ बड़े–२ बांधों का निर्माण किया गया। जिन्होंने नदियों के तटों पर स्थित समस्ततीर्थों को निगल लिया। प्रदूषित जल के कारण खाद्यान्न दूषित हो रहा है और सब्जियाँ गुणों से हीन हो रही है। इस अवस्था में पृथ्वी पर जीवित रह पाना कठिन हो रहा है। शान्ति की आशा में लोग तीर्थों की ओर आते हैं, किन्तु प्रदूषण के कारण तीर्थों की दुर्दशा को देख खिन्नहृदय हो जाते हैं। हमने धार्मिक एवं आध्यात्मिक क्षेत्रों में बहुत उन्नति की है; किन्तु आज पर्यटनस्थलों के कुरूप हो जाने पर पर्यटन उद्योग बर्बादी की कगार पर खड़ा है। वैज्ञानिक प्रगति के मद में आज मनुष्य अपने परम्पराओं एवं सच्चिदानन्द स्वरुप को भूल करके यन्त्रों पर निर्भर होकर पङ्गुवत हो गया है। आज भारत की जनता राष्ट्रपिता महात्मागाँधि के रामराज्य के स्वप्न को भूलकर; कृषि एवं कुटीर उद्योगों को छोड़कर; मोहित हो प्रदूषित नगरों की ओर दौड़ रही है। यथा –

"त्यक्त्वा ग्राममहो कृषिञ्च कुटिरप्राणैकशिल्पस्थलम् ।
व्यामोहान्नमनुजाः भ्रमन्ति दनुजाः नग्रस्थले दूषिते ।।"[76]

धन के लालची लोग अपनी ताकत के बल पर, दानव का रूप धारण कर दीन–हीन जनों का शोषण कर रहे हैं। वैज्ञानिक प्रगति के परिणामस्वरूप नदियों के तटों पर अनेक उद्योग अनियोजित तरीके से स्थापित हुए; जिससे प्रदूषण में तीव्र वृद्धि हुई। इस प्रकार के विकाश से लाभ की अपेक्षा हानि अधिक होती है। उद्योगों में अत्यधिक परिश्रम एवं धन के निवेश के उपरान्त उत्पादित होने वाली विलासतापूर्णवस्तुओं से भारत की दरिद्र जनता का कोई सरोकार नही है। वस्तुतः दरिद्रों का शोषण करना एवं अत्यधिक धनार्जन करना ही आधुनिक उद्यमियों का

---

75 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ८/४८
76 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ८/३२

मुख्य उद्देश्य है। आज के चतुर उद्यमी, उद्योगों की स्थापना हेतु सरकार से ऋण प्राप्त करतें है; फिर उद्योगों को रुग्ण बताकर ऋण की देनदारी से बड़ी चतुरता से मुक्त होकर भ्रष्टाचार के बल पर पुनः ऋण प्राप्त कर लेतें है। यथा –

"रुग्णा शिल्पगणास्तः स तु परं शिल्पाधिकारी ऋणी ,
सम्प्राप्य क्षतिपूरणं बहुविधैर्मिथ्याप्रकारैः पुनः ।
किञ्चिद्वञ्चकचञ्चकत्वपटुतामिष्टक्षणे दर्शयन् ,
कृत्वा वित्तचयं स, मौलिक ऋणान्मुक्तो भवेल्लीलया ।।"[77]

हमारे देश में खनिज सम्पदाओं की कोई कमी नही है। यदि सरकार बुद्धि एवं चेतना से औधोगिक नीतियों का निर्माण करके उधोगों की स्थापना समुचित स्थानों पर करे तो सुव्यवस्थित औधोगिकीकरण से पर्यावरण को किसी भी प्रकार की क्षति न हो। हमारा यह शरीर पृथ्वी, अग्नि, जल, वायु, और आकाश इन पञ्च महाभूतों से मिलकर बना है। प्रदुषण के कारण यदि अगर वायु, पृथ्वी, जलादि तत्त्व दूचित हो जायेंगें तो फिर मनुष्य शरीर जीवन धारण कैसे करेगा? यथा –

"तेजोव्योममरुत्पयः क्षितिचयैः नृ॒णां तनुः सृज्यते ,
भूतानां कृपया पुनर्जगदिदं स्थातुं सदा शक्यते ।
बन्ध्या चेत् पृथिवी जलं कलुषितं वायुश्च चेद्दूषितः ,
तेजो व्योम तथा भवेद् यदि तदा जीवः कथं धार्यते ।।"[78]

आज जब हम भारतीय ही आपस में बंटे हुए है तब 'वसुधैव–कुटुम्बकम्' एवं 'विश्वबन्धुत्वम्' कैसे सम्भव है ? गर्वमद में चूर यह जगत उपर्युक्त उदात्त भावनाओं का नाश करने को आतुर है। यह भारतभूमि कहीं पर पाकिस्तान प्रायोजित आतंक से पीड़ित है तो कही खालिस्तान, गुर्खालैण्ड जैसे कलुषित मानसिकताओं वाले लोग भारतभूमि पर आतंक मचा रहें है। अपना अंगभंग होने की आशंका से भारतमातृभूमि क्रन्दन कर रही है। यदि हम अपनी जन्मभूमि के अश्रु नही पोंछ सकते तो हमारा इस भूमि पर जन्म लेना धिक्कार है। जो लोग भारतभूमि के टुकडे करना चाहते हैं; वे भारतमाता की सन्तति हो ही नही सकते। इस सङ्कटपूर्ण स्थिति में यदि हम भारतीय परस्पर दुर्भावनाओं से ग्रसित रहेंगे तो भारतमाता की क्या दुर्दशा होगी ? यथा –

''अस्मिन् संकटपूर्णसंधिसमये नानासमस्याश्रये
काऽवस्था भविता सतां यदि जनाः दुर्भावनादूषिताः ।
खाद्योत्पादनसाधने खलु कुरुक्षेत्रं प्रसिद्धं यदि
रक्तप्लावितमस्ति तत्कथय भोः! किं स्याज्जनन्याः मनः।। '' [79]

---

77 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ८/३०
78 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ८/७३
79 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ८/६१

गंगानदी देवनदी है; पृथ्वी पर किसी ने उसका खनन नही किया है। वह भगीरथ की महान साधना से धरती पर अवतरित हुई है। किन्तु आज न तो भगीरथ है और न ही भागीरथी साधना। इस कलियुग में धर्महीन एवं स्वार्थी तत्त्वों का बाहुल्य है। आज जब सभी वैज्ञानिकों एवं नीतिनिर्माताओं के प्रयास निष्फल हो रहें है तब इस विषम परिस्थिति में देवनदी गंगा स्वयं अपना परिष्कार करने मे समर्थ है। यथा –

''लोकाः सन्तु निरामयाश्च च सुखिनो भद्राणि पश्यन्तु ते
भद्रं तत्परिकल्पयन्तु सकलं भद्राणि शृण्वन्तु ते
भद्राचरणं तथा विचरणं भद्रं भवेत् प्राणिनां
गंगे ! ते गरिमा करोतु निखिलं नष्टं जलं निर्मलम् '' [80]

गंगा की कृपा से समस्त जल निर्मल हो जाने पर इस पृथ्वी पर त्रैलोक्य सुखों से युक्त शान्ति फ़ैल जायेगी और बंजरभूमि सदा के लिये धनधन्य एवं वनों से युक्त हो जायेगी।

६. नवमसर्ग :–

"कांचीवैभवम्" नामक नवमसर्ग में कुल १११ पद्यों में काञ्चीपुरम् के वैभव एवं जगद्गुरु आदिशंकराचार्य का संक्षिप्त वर्णन तथा कामकोटि पीठ के ६८वें शंकराचार्य चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वती "अष्टम" का विस्तृत जीवनचरित्र वर्णित है। दक्षिण भारत में स्थित नगरी जहा मोक्ष के साक्षात् स्वरुप 'एकाम्बरनाथ' विराजते है, जहाँ पर जीवनमार्ग की सिद्धि हेतु जगद्गुरु आदिशंकराचार्य ने पञ्चममठ की स्थापना की; वह अनेक मन्दिरमेखलाओं से युक्त मन्दिरों की नगरी–'कांची' भक्तों एवं दर्शकों को निरन्तर आकर्षित करती है। यथा –

''जयत्यहो जीवनमार्गसिद्धये
समागतो यत्र स आदिशंकरः।
विभाति सा भारतदक्षिणस्थले
सुरम्य काँचीनगरी गरीयसी ।।'' [81]

भारत के दक्षिण भाग में स्थित मलयालम भाषाञ्चल केरलप्रदेश धन्य है; जहाँ पर प्रथम जगद्गुरु आदिशंकराचार्य ने जन्म लिया। उन्होने ब्रह्म की सत्यता एवं जगत की मिथ्यता का सन्देश देते हुए धार्मिक एकता की स्थापना हेतु एवं विश्वमङ्गलार्थ 'परिव्राजक' का रूप धारण करके सम्पूर्ण भारत का पैदल भ्रमण करके चारों दिशाओं में चार मठों (पूर्व में पुरी में 'गोवर्धनपीठ', पश्चिम में द्वारिका में 'शारदापीठ', उत्तर में बद्रीनाथ में 'ज्योतिर्पीठ' एवं दक्षिण में 'श्रृङ्गेरीपीठ') की स्थापना की। तदुपरान्त आदिशंकराचार्य ने कांचीपुरम् में 'कामकोटि' नामक पञ्चम मठ की स्थापना की एवं कामकोटि पीठ के प्रथम आचार्य के रूप में सुशोभित हुए। यथा –

---

[80] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ८/७१
[81] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ६/१

''अनन्तरं जीवनजीवमुक्तये
समेत्य काँचीनगरं जगद्गुरुः
मठं विनिर्माय च तत्र पंचमं
स्वमिच्छया मण्डितवान् महाप्रभुः ''[82]

कामकोटिपीठ के ६८वें शंकराचार्य चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वती "अष्टम" सम्पूर्ण वेदों, शास्त्रों एवं भारतीय संस्कृति के ज्ञाता; शंकराचार्य चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वती "अष्टम"; कामकोटिपीठ के ६८वें शंकराचार्य हुए। उनका जन्म 'तमिलनाडु' के 'अर्काट' जिले के 'डिण्डीवन' में एक ब्राह्मण परिवार में हुआ। 'सर्ववेदविशारद' गणपतिशास्त्री इनके पितामह थे। उनके पिता सुब्रह्मण्यमस्वामी अर्काट के तत्कालीन जिला शिक्षाधिकारी थे। उनकी माता महालक्ष्मी अत्यन्त धर्मपरायण स्त्री थी। चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वती "अष्टम का नाम "स्वामिनाथन" रखा गया। स्वामीनाथन ने आठ वर्ष की अवस्था तक घर पर ही अध्ययनकार्य करते हुए कन्नड़ के साथ–२ संस्कृत भाषा में भी दक्षता प्राप्त कर ली। नववर्ष की अवस्था में स्वामिनाथन का विद्यालय में प्रवेश हुआ, जहाँ में प्रथम स्थान प्राप्त करके उन्होंने सभी कक्षाओं को उत्तीर्ण किया। चतुर्थी कक्षा में एक रूपक में उनके द्वारा निर्वाहित "आर्थर" की भूमिका की सभी गुरुजनों ने प्रशंसा की। १३ वर्ष की अल्पावस्था में स्वामिनाथन कामकोटिपीठ के शंकराचार्य के दर्शनार्थ कांचीपुरम् पहुंचे। जहाँ शंकराचार्य ने उन्हें जीवन में महान बनाने का आशीर्वाद देते हुए उन्हें कामकोटिपीठ का उत्तराधिकारी शंकराचार्य घोषित किया; एवं उन्हें ''चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वती 'अष्टम" का नाम दिया। इसके उपरान्त उन्होंने कामकोटिपीठ में ही विद्वानों के सानिध्य में वेद, वेदान्त, मीमांसा, न्याय, व्याकरण आदि शास्त्रों का अध्ययन किया एवं पर्यावरण, विज्ञान, तथा संगीतशास्त्र में भी प्रसिद्ध हो गये। समस्तशास्त्रों में निष्णान्त होने के "उपरान्त चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वती 'अष्टम'" ने कामकोटिपीठ के ६८वें शंकराचार्य का पदभार ग्रहण किया। उन्होंने वैदिक ज्ञान एवं सनातन धर्म के प्रचार–प्रसारार्थ एवं धर्म की पुनर्स्थापना हेतु 'आर्यधर्म' नामक पत्रिका का प्रकासन करवाया। यथा –

"समस्तवेदेषु च शास्त्रराशिषु ,
कृतश्रमः भारतीयसंस्कृतौ हि यः ।
अभूत्स विश्वश्रुतचंद्रशेखर–
सरस्वती तत्र स्वयं हि शंकरः ।।"[83]

इसके उपरान्त शंकराचार्य चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वती 'अष्टम' ने कामकोटिपीठ के प्रथम शंकराचार्य 'जगद्गुरु' 'आदिशंकर' के पदचिन्हों पर चलते हुए, धर्म की पुनर्स्थापना हेतु एवं भारतराष्ट्र को एकता के सूत्र में बांधने हेतु महाशिवरात्रि के दिन अपनी दिग्विजय यात्रा को प्रारम्भ कर, सम्पूर्ण भारतभूमि की पैदल यात्राएँ की। यथा –

"वेदे तथा वैदिकधर्मतत्त्वे ,

---

82 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ६/१०

83 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ६/१५

सचेतनाः सन्तु समस्त लोकाः ।

इत्येव मत्वा शिवरात्रिकाले ,

जयस्य यात्रां कृतवन्त एते ।।"[84]

उन्होंने सम्पूर्ण भारत के विभिन्न तीर्थों में स्नान करके विभिन्न मंदिरों में पूजा–अर्चना करते हुए, चतुर्मास आदि सभी व्रतों का पालन करते हुए, एवं नवरात्र पूजा करते हुए, भारतीयों को धार्मिक एकता एवं राष्ट्रीय–चेतना का सन्देश दिया। यात्रामार्ग में शंकराचार्य चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वती ने भारतमाता की स्वतन्त्रता हेतु प्रयासरत स्वतंत्रतासेनानियों एवं क्रांतिकारियों का मार्गदर्शन कियाद्य उन्होंने देशबन्धु 'चितरञ्जनदास' को आत्ममनोरथ में सफल होने का आशीर्वाद दिया। केरलयात्रा के समय उन्होंने 'महात्मागाँधि' से भेंट करके देश की स्वतन्त्रताप्राप्त्यर्थ विचारविमर्श किया। कन्याकुमारी में क्रांतिकारियों के आपसी मतभेदों का निराकरण किया एवं मदुरै में स्वतन्त्रतासेनानियों का उत्साहवर्धन किया। स्थितप्रज्ञ शंकराचार्य चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वती अपने माता–पिता के स्वर्गवास हो जाने की सूचना से विचलित न हुए एवं अपनी धर्मविजय यात्राएँ जारी रखी। यथा –

"स्वाधीनता भारतवासिनां सा ,

वैदेशिकैर्याऽपहृता पुराऽऽसीत् ।

सम्प्राप्स्यते केन पथा तदर्थं ,

विधाय चिंतामचलन्मनीषी ।।"[85]

उन्होंने 'चेंगलपट्टम्' के चोलराजाओं के समस्त अभिलेखों एवं शिलालेखों का आलोचनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करके आलोचनात्मक इतिहास लेखन का सूत्रपात किया। तदुपरान्त रामानन्दाचार्य की भूमि 'पेरुबुन्दुरु' होते हुए श्रीकालहस्ती पहुंचे। वहाँ 'स्वर्णमुखीतीर्थ' में स्नान करके तिरुपति पहुँचकर 'गोविन्दराज वेंकटेश' के दर्शन किये। तदुपरान्त वे 'कुम्भकोर्ण' होते हुए तंजावुर के शंकरमठ पहुंचे। वहां से मध्वाचार्य के पवित्र क्षेत्र चिदम्बरम् पहुँचकर राष्ट्रीय एकता का प्रचार किया। मद्रास में शंकराचार्य 'चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वती' ने मद्रजनों को दारिद्रयनिवारणार्थ महत्त्वपूर्ण सन्देश दिया। दक्षिणभारत के लगभग समस्त महत्त्वपूर्ण स्थलों की यात्रा करने के उपरान्त वाराणसी की ओर प्रस्थान के इच्छा से शंकराचार्य चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वती 'श्रीशैल' पहुँचे। वहाँ मातृदेवी 'मल्लिका' की पूजा करने के उपरान्त 'हैदराबाद' पहुँचे। वहाँ से अनेक दिनों की लम्बी यात्राएं करते हुए, पूर्णकुम्भ के समय विश्वनाथ नगरी 'काशी' पहुँचे। यहाँ पवित्र गंगाजल में स्नान करके विभिन्न मन्दिरों में पूजा की। काशी यात्रा के समय पण्डित मदनमोहन मालवीय ने शंकराचार्य चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वती से भेंट की। दोनों विद्वानों नें काशी– विद्वतसभा में समस्त दर्शनों के सारभूत अपने–२ व्याख्यान दिये। यथा –

''काशीनिवासिविदुषां सुमहत्सभायां

---

[84] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ६/४१

[85] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ६/४६

संसत्पतिर्मदनमोहनमालवीयः ।

तत्र ह्यदात् परमपूज्यगुरुः स्वकीयं

सम्भाषणं सकलदर्शनसारभूतम् ।।''[86]

वाराणसी से शंकराचार्य चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वती गुजरात के 'पट्टन' पहुँचे, वहाँ उन्होंने कुछ दिन प्रवास किया एवं वहाँ पर "जन्मपूतमहोत्सव" का आयोजन करवाया। वहाँ से पवित्र नगरी "गया" पहुँचकर वहाँ के अनेक बौद्धविहारों का भ्रमण कर धार्मिक सहिष्णुता एवं एकता का परिचय दिया। तदुपरान्त बंगाल के विभिन्न तीर्थों की यात्राएँ करते हुए उत्कल के केन्दुझार, कटक, भुवनेश्वर आदि पवित्र स्थलों की यात्रा करते हुए शंकराचार्य चन्द्रशेखरेन्द्रसरस्वती ने 'परमपवित्र–पुरुषोत्तमक्षेत्र' जगन्नाथपुरी पहुँच भगवान जगन्नाथ' की पूजा की। पुरी से आन्द्रप्रदेश पहुंचकर 'इन्द्रकीलपर्वत' स्थित देवी 'कनकदुर्गा' की पूजा की। शंकराचार्य ने आन्द्रप्रदेश स्थित अनेक वैष्णव एवं शैव मंदिरों में पूजा करके वैष्णवमत का शैवमत से अभेद स्थापित कर धार्मिक एकता का सन्देश दिया। यथा –

"आन्द्रप्रदेशे बहु मन्दिराणि ,

विभान्ति विष्णोर्नरसिंहमूर्तेः ।

आचार्यपादश्च ततः शिवेन ,

विष्णोः हि संस्थापितावानभेदम् ।।"[87]

इस प्रकार कामकोटि पीठ के ६८वें शंकराचार्य चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वती "अष्टम" ने भारत के विभिन्न तीर्थों की यात्राएँ की एवं २१ वर्षों के उपरान्त पुनः कामकोटिमठ कांचीपुरम् पहुँचकर अपनी 'धर्मदिग्विजययात्रा' का समापन किया और पुनः अपने जीवन के प्रधान लक्ष्य "समाजसेवा" में रत हो गये। उन्होंने सनातनधर्म, भारतीयसंस्कृति एवं वेदविद्या के प्रचारप्रसारार्थ सम्पूर्ण देश में अनेक वैदिक पाठशालाओं की स्थापना की। यथा –

''धर्मप्रचाराय विकाशनाय

वेदस्य वा भारतसंस्कृतेश्च।

आचार्यपादेन सदादरेण

देशस्य सर्वत्र कृताः व्यवस्थाः ।।''[88]

१०. दशमसर्ग :–

"तीर्थवसति" शीर्षक दशमसर्ग में कुल ५५ पद्यों मे पूर्व में वर्णित भारतभूमि के तीर्थस्थलों के अतिरिक्त शेष दक्षिण भारतीयतीर्थों– 'रामेश्वरम्, कर्णाटक एवं तिरुपति का वर्णन किया है।

---

86 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ६/८०

87 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ६/६६

88 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ६/१०५

सर्गान्त में संस्कृतभाषा का महात्म्य वर्णित करते हुए 'सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः' की मङ्गलकामना के साथ कुछ श्लोकों में आत्मनिवेदन प्रस्तुत किया है।

'रामेश्वरतीर्थ की महिमा का वर्णन करते हुए आचार्य शतपथी कहते हैं कि लंकाप्रयाण के समय स्वयं भगवान रामचंद्र ने यहाँ पर अपने पितरों की पूजा की थी। तब से ही यह तीर्थ एक परिपूर्णतीर्थ के रूप में प्रसिद्ध है। यथा–

"लंकाप्रयाणसमये सह बन्धुवृन्दैः ,
यत्र स्वयं हि कृतवान् प्रभुरामचन्द्रः ।
श्रद्धास्पदेन मनसा पितृतर्पणं तत् ,
रामेश्वरं भवति तत्परिपूर्णतीर्थम् ।।"[89]

स्वर्णभूमि कर्णाटक राज्य अपने 'स्वर्णोत्सव' के लिये प्रसिद्ध है। यह प्रदेश 'तुंगभद्रा' एवं 'कावेरी' नदियों के पावन जल से पवित्र एवं रन्न–पम्प–पोन्न महाकवियों की भूमि है। घाटप्रभा नदी पर स्थित "गोकाक–तीर्थ" हिन्दुओं का पवित्र तीर्थ है। 'सिद्धगंगा', 'उड्डुपी', 'श्रंगेरी', 'वृन्दावन', 'श्रीरंगपट्टम्', आदि कर्णाटक राज्य के प्रसिद्ध तीर्थ है। यह प्रदेश रामानन्दाचार्य एवं मध्वाचार्य की जन्म एवं कर्मभूमि है। इन दोनों का भारतीयदर्शन में अमूल्य योगदान है। मध्वाचार्य ने 'आत्मा–परमात्मा', 'जीव–ब्रह्मा', अथवा 'सृष्टि–सृष्टा' की समानता से युक्त "तत्त्ववाद" अथवा "द्वैतवाद" का प्रतिपादन किया। चालुक्यवंश के प्रसिद्ध शासक सौमेश्वर 'तृतीय' ने संस्कृत के प्रसिद्ध ग्रन्थ "मानसोल्लास" का सृजन किया जो "अभिलसितार्थचिंतामणि" के नाम से भी प्रसिद्ध है। यह विश्व का प्रथम कोशग्रन्थ है, जिसमे शत–अध्यायों में संगीत, नृत्य एवं वाद्ययन्त्रों के सिद्धान्तों का विस्तृत वर्णन है। यथा –

"साहित्ये यत्र धन्याः सुविदितकवयो–रन्न–पोन्न–कुवेम्पू–
पम्पा–निःसारमुख्याः स्वमधुरजनुषाऽभूषयन् यं प्रदेशम् ।
यस्मिंश्च ज्ञानपीठोज्ज्वलमणिमहसाऽनन्तमूर्त्तिश्च गोकाक्–
वेन्द्रे–सिद्धाः विभान्तीह स जयतु सदा स्वर्णकन्नड्प्रदेशः ।।"[90]

'तिरुपतितीर्थ' का वर्णन करते हुए महाकवि कहते हैं कि तिरुमला के समान पावन तीर्थ भूतल पर अन्यत्र कहीं भी नहीं है। सप्तगिरि पर स्थित विशाल मन्दिर में महान नायक 'वेंकटेश्वर' स्वामी विराजते हैं। यहाँ प्रतिदिन लाखों भक्त 'तिरुमल्लस्वामी' के दर्शनार्थ आते हैं। प्राकृतिकसौन्दर्य से परिपूर्ण, शिक्षा, दीक्षा, भक्ति, एवं विद्याविनोद की नगरी तिरुपति विश्वप्रसिद्ध है। शेषनाग के स्वामी, विष्णु–अवतार, प्रभु वेङ्कटेश की
कृपा से यहाँ कोई दीनहीन नही है। रामानन्दाचार्य ने सप्तगिरि पर्वत पर तपस्या कर स्वप्न में भगवान वेङ्कटेश के दर्शन किये एवं परम गति को प्राप्त किया। तिरुपति तीर्थ से संस्कृतभाषा

---

89 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, १०/१

90 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, १०/६

की पुण्यधारा निरन्तर प्रवाहित हो रही है। यह देववाणी संस्कृत का ही प्रभाव है कि सभी धर्मों के अनुयायी यहाँ पर सौहार्दपूर्ण तरीके से रहते है। यथा –

''लक्षाधिकाः प्रतिदिनं ननु यत्र भक्ताः
स्वात्मार्पणे न निगडाच्च भवन्ति मुक्ताः
शेषाद्रिनाथकृपयाऽत्र न केऽपि दीनाः
अन्नातिथिर्तिरुपतिर्जयति प्रकामम् ''[91]

संस्कृतभाषा की महिमा का वर्णन करते हुए महाकवि कहते हैं कि भगवान् की कृपा से तिरुपति तीर्थ से विद्वानों द्वारा संस्कृतभाषा की सरिता प्रवाहित की जा रही है। इस सुरगी का परिरक्षण करना विद्वानों एवं सन्तों के साथ ही हम सभी संस्कृतानुरागियों का कर्त्तव्य है। संस्कृतभाषा के बिना भारत की पूर्ण प्रगति सम्भव नही हैं यह सुरभारती 'संस्कृतभाषा' भारत की आत्मा है जो आदिकाल से ही गंगाजल के समान प्रवाहित होती हुई इस भारतभूमि को अध्यात्म एवं ज्ञानविज्ञान से अलङ्कृत कर रही है। समस्त भाषाओं की जननी संस्कृतभाषा वेद, पुराण, दर्शन आदि शास्त्रों में मण्डित है। इस सुन्दर कान्ता स्वरूपिणी देववाणी–'संस्कृतभाषा' का मूल समस्त वेद है, वेदांग इसकी दिव्य 'देह', काव्य इसके 'केश', ज्ञानविज्ञान 'नेत्र', एवं काव्यरस इसका 'हृदय' है। संस्कृतभाषा देवनदी गंगा के समान पवित्र है। यथा –

"अस्माकमेव विदुषाञ्च सतां समेषां ,
कर्त्तव्यमस्ति सुरगीः परिरक्षणार्थम् ।
नोचेच्च पूर्णप्रगतिः प्रियभारतस्य ,
नैवं हि संभवति संस्कृतमन्तरेण ।।"[92]

सर्गान्त में महाकवि आत्मनिवेदन प्रस्तुत करते हुए कहते हैं कि यह मेरा सौभाग्य है जो मुझे भगवान वेङ्कटेश के चरणों में रहकर संस्कृतभाषा की सेवा करने का अवसर प्राप्त हुआ। संस्कृतभाषा की सेवा करना हमारा कर्तव्य है। चाहे कितनी भी बाधाएं आयें किन्तु हमें अपने कर्त्तव्य से विमुख नही होना चाहिए। विद्वानों के साथ काव्यशास्त्रविनोद करते हुए, प्रभु वेङ्कटेश के चरणों की सेवा करते हुए, निखिल संस्कृतशास्त्रों का सेवन एवं संरक्षण करते हुए, सविनयपूर्वक मेरा जीवन व्यतीत होता रहे। यथा –

''सकललोकविनोदबर्द्धने ,
निखिलसंस्कृतशास्त्रसुरक्षणे ।
अविरतं प्रविधाय च साधनां ,
सविनयं चलातान्मम जीवनम् ।।''[93]

---

91 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, १०/२५
92 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, १०/३६
93 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, १०/५४

इस प्रकार संस्कृतभाषा के चितेरे महाकवि आचार्य हरेकृष्णशतपथी ने दश–सर्गात्मक "भारतायनम्" महाकाव्य के कुल ६५६ पद्यों में भारतभूमि के ऐश्वर्य, औदार्य एवं गौरव का गुणगान किया है।

.....इति द्वितीयोऽध्यायः.....

"आचार्यहरेकृष्णशतपथी कृत 'भारतायनम्' महाकाव्य का समीक्षात्मक अध्ययन"

तृतीय अध्याय

संस्कृतकाव्यशास्त्रीयपरम्परा में 'भारतायनम्' महाकाव्य का महाकाव्यत्व।

अ. संस्कृत की आर्ष काव्यशास्त्रीय परम्परा।

आ. संस्कृत की अर्वाचीन काव्यशास्त्रीय परम्परा।

इ. 'भारतायनम्' महाकाव्य का स्वरूपविवेचन।

ई. 'भारतायनम्' महाकाव्य का महाकाव्यत्व।

काव्यशास्त्रीय परम्परा में महाकाव्यस्वरुप :–

किसी भी राष्ट्र, समाज अथवा जाति का साहित्य उस राष्ट्र, समाज अथवा जाति यथार्थ प्रतिबिम्ब होता है। साहित्य ही किसी समाज के चिन्तनों, भावनाओं, आकांक्षाओं एवं आदर्शों का समुचित प्रतिबिम्ब स्थापित करता है। उपर्युक्त दृष्टि से संस्कृतसाहित्य हमारे गौरवपूर्ण अतीत का रत्नखचित, मणिमय, मुकुट है। संस्कृतसाहित्य विश्व का अलौकिक एवं श्रेष्ठतम साहित्य है, जो अन्य भाषासाहित्यों की तुलना में अधिक समृद्ध है। हमारे ऋषिकल्प, श्रेष्ठाचार्यों ने संस्कृत साहित्य में सारगर्भित तत्वों का प्रतिपादन किया है।

काव्याचार्यों द्वारा संस्कृतसाहित्य के :–१. वैदिक साहित्य; एवं २. लौकिक साहित्य दो भेद है। वेद, सहिता, ब्राह्मण, उपनिषद्, स्मृतियाँ, वेदांग आदि 'वैदिकसाहित्य' के अन्तर्गत आते हैं। लौकिक संस्कृतसाहित्य को काव्यशास्त्रियों द्वारा 'दृश्य एवं श्रव्य' दो मुख्य भागों में विभक्त किया

जाता है। जिस काव्य को देखकर रसास्वादन किया जाता है उन्हें दृश्य काव्य कहते है।[94] रुपक एवं उपरूपक दृश्यकाव्य के अंतर्गत आते है। जिस काव्य के श्रवणमात्र से रसानुभूति प्राप्त हो उसे श्रव्यकाव्य कहते है। इसके तीन उपभेद गद्य (छन्दरहित), पद्य (छन्दबद्ध) एकं चम्पू (मिश्र)। गद्यकाव्य के पुनः कथा एवं आख्यायिका के रूप में दो उपभेद कहे गयें है।[95] इसी प्रकार पद्यकाव्य के भी महाकाव्य, खण्डकाव्य, गीतिकाव्य नामक तीन उपभेद कहे गये है। आचार्य बलदेव उपाध्याय ने काव्य के भेद–प्रभेदों को रेखाचित्र के माध्यम से इस प्रकार प्रस्तुत किया है:–

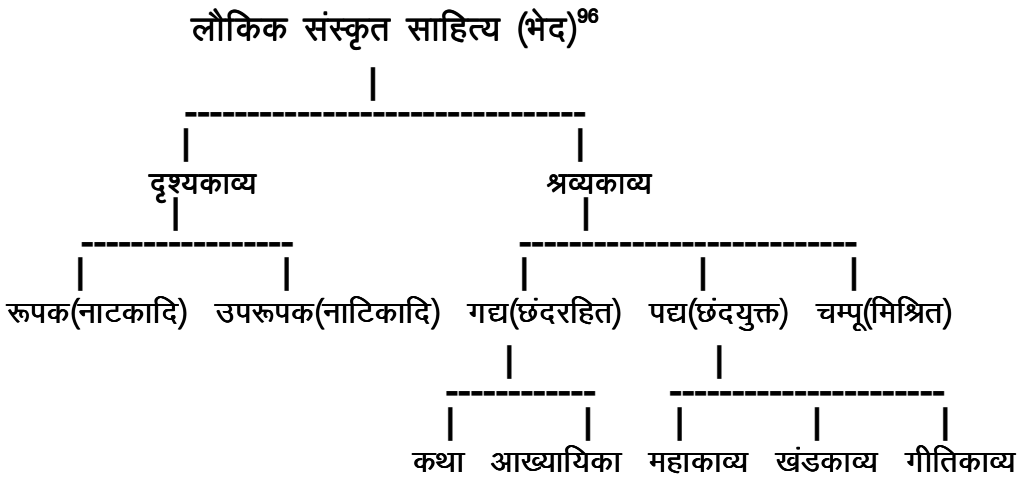

कविनिर्मित, शब्दार्थ–उभयनिष्ठ,[97] रसात्मकवाक्य एवं रमणीयार्थप्रतिपादक[98] वस्तु को विभिन्न काव्यशास्त्रियों ने 'काव्य' कहा है। कवि किसी भी वस्तु को आधार बनाकर गद्य, पद्य अथवा मिश्रित स्वरुप में अपने काव्य को, कव्यरसज्ञों के चित्तानन्द अथवा सद्यपरनिवृत्ति हेतु समाज के समक्ष प्रस्तुत करता है।

उपर्युक्त काव्यभेदप्रभेदों में 'पद्य काव्यविधा' के अन्तर्गत आने वाली 'सर्गबद्ध रचना' को काव्यशास्त्रियों ने 'महाकाव्य' की संज्ञा दी है। 'महाकाव्य' शब्द 'महत्+काव्य' इन दो पदों से मिलकर बना है। स्वरुप एवं आकर की दृष्टि से विशिष्ट काव्य 'महाकाव्य' कहलाता है। साहित्य की सभी विधाओं में 'महाकाव्य' श्रेष्ठतम काव्यरूप है। यह काव्य का एक ऐसा उत्कृष्ट प्रबन्ध है, जो किसी जाति, समाज, प्रदेश और देश की सांस्कृतिक धरोहर से युक्त जीवन के सर्वांगस्वरुप को अभिव्यञ्जित करता है। महाकाव्य के अन्तर्गत काव्यविधा की प्राय सम्पूर्ण घटनाएँ घटित होती हैं। प्राचीन एवं आर्वाचीन काव्यलक्षणशास्त्रियों ने अपने–२ काव्यलक्षणग्रन्थों में

---

94 कविराजविश्वनाथविरचित साहित्यदर्पणम् शालिग्रामशास्त्री,मो०ब०वारा०प्र०२००४, ५/५
95 कविराजविश्वनाथविरचित साहित्यदर्पणम् शालिग्रामशास्त्री,मो०ब०वारा०प्र०२००४, षड–परि०,पृ.सं. १७०, ३३२, एवं २२६
96 संस्कृतसाहित्य का इतिहास– बलदेव उपध्याय हिन्दू विवि०प्र० काशी,१९६३, पृ.सं.३४५
97 "ननु शब्दर्थौ काव्यम्'–आ०भा०वि० 'काव्यालंकार'– डॉ.रामानंदशर्मा, चौ०प्र.वारा०२०१४, २/१
98 "रमणीयार्थप्रतिपादकं काव्यम्"– पं०जगन्नाथकृत'रसगंगाधर'–(पीडीएफ) राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम् न०दिल्ली,पृ०१

महाकाव्यस्वरुप का विस्तृत विवेचन किया है, जिसको आर्ष एवं अर्वाचीन काव्यशास्त्रीयपरम्परा शीर्षक' दो भागों यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है।

अ. आर्ष काव्यशास्त्रीयपरम्परा :–

प्राचीन काव्यलक्षणग्रन्थों में से 'अग्निपुराण'; आचार्य भामह कृत 'काव्यालङ्कार'; आचार्य दण्डी कृत 'काव्यादर्श'; आचार्य रुद्रट कृत 'काव्यालङ्कारसूत्र'; तथा आचार्य विश्वनाथ कृत "साहित्यदर्पण" में वर्णित महाकाव्य लक्षणस्वरुपविमर्श क्रमशः यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है।

१ अग्निपुराण :–

सर्वप्राचीन काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ के रूप में मान्यताप्राप्त 'अग्निपुराण' में महाकाव्य स्वरुप का विवेचन इस प्रकार किया गया है :–

"सर्गबन्धो महाकाव्यमारन्धं संस्कृतेन यत् ।।
तादात्म्यमजतत् तत्र तत्समं नास्ति दुःष्यति ।
"इतिहासकथोद्भूतमितरदु वा सदाश्रयम् ।।
मन्त्रदूतप्रयाणाजिनियतं नातिविस्तरम् ।
"शक्वर्य्यातिजगत्यातिशक्वर्य्या त्रिष्टुभा तथा ।।
पुष्पिताग्रादिभिर्वक्त्राभिर्जनैश्चारुभिः समैः ।
"मुक्ता तु भिन्नवृत्तान्ता नातिसंक्षिप्तसर्गकम् ।।
अतिशर्करिकाष्टिभ्यामेकसंकीर्णकैः परः ।
"मात्रयाप्यपरः सर्गः प्राशस्त्येषु च पश्चिमः ।।
कल्पोऽतिनिन्दितस्तस्मिन् विशेषानादरः सताम् ।
"नगरार्णवशैलर्तुचन्द्रार्काश्रमपादपैः ।।
उद्यानसलिलक्रीड़ामधुपानरतोत्सवैः ।
"दूतीवचनविन्यासैरसतीचरिताद्भुतैः ।।
तमसा मरुताप्यन्यैर्विभावैरतिनिर्भरैः ।
सर्ववृत्तिप्रवृतञ्च सर्वभावप्रभावितम् ।।
सर्वरीतिरसैः पुष्टं पुष्टं गुणविभूषणैः ।
अत एव महाकाव्यं तत् कर्ता च महाकवि ।।"[99]

२ आचार्य भामह :–

---

[99] अग्निपुराण– डॉ.घनश्यामत्रिपाठी, हिंदीसाहित्यसम्मलेन प्र०प्रयाग२०१४, ३३७/२५–३३

आचार्य भामह ने स्वरचित काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ 'काव्यालंकार' में महाकाव्य का स्वरुप विवेचन इस प्रकार किया है :–

"सर्गबन्धो महाकाव्यं महतांश्च महच्चयत् ।
अग्राम्यशब्दमर्थ्यञ्च सालंङ्कार सदाश्रयम् ।।"
"मन्त्रदूतप्रयाणाजिनायकाभ्युदयैश्च यत् ।
पञ्चभिः संधिभिर्युक्तं नातिव्याख्येयमृद्धिमत् ।।"
"चतुर्वर्गाभिधानेऽपि भूयसार्थोपदेशकृत् ।
युक्तं लोकस्वभावेन रसैश्च सकलैः पृथक् ।।
नायकं प्रागुपन्यस्य वंशवीर्यश्रुतादिभिः ।
न तस्यैव वधं ब्रूयादन्योत्कर्षाभिर्धित्सया ।।"
"यदि काव्यशरीरस्य न स व्यापितयेष्यते ।
न चाभ्युदयभाक्तस्य मुधादौ गृहणं स्तवे ।।"[100]

३ आचार्य दण्डी :–

आचार्य दण्डी ने स्वरचित 'काव्यादर्श' में महाकाव्यस्वरुप इस प्रकार से विवेचित किया है :–

"सर्गबद्धो महाकाव्यमुच्यते तस्य लक्षणम् ।
आशीर्नमस्क्रिया वस्तुनिर्देशो वापि तन्मुखम् ।।"
"इतिहासकथोद्भूतमितरद्वा सदाश्रयम् ।
चतुर्वर्गफलोपेतं चतुरोदात्तनायकम् ।।"
"नगरार्णवशैलर्तुचंद्रार्कोदयवर्णनैः ।
उद्यानसलिलक्रीड़ाः मधुपानरतोत्सवैः ।।"
"विप्रलम्भैर्विवाहैश्च कुमारोदयवर्णनैः ।
मन्त्रदूतप्रयाणाजिनायकाभ्युदयैरपि ।।"
"अलंकृतमसंक्षिप्तं रसभावनिरंतरम् ।
सर्गैश्चनातिविस्तीर्णैः श्रव्यवृत्तैः सुसंधिभिः ।।"
"सर्वत्र भिन्नवृत्तान्तैरुपेतं लोकरञ्जकम् ।
काव्यं कल्पान्तरस्थायि जायेत सदलंकृति ।।"[101]

४ आचार्य रुद्रट :–

महाकाव्य स्वरुप के विषय काव्यालंकारसूत्रकार आचार्य रुद्रट का मत अपने पूर्ववर्ती आचार्यों से भिन्न है। उन्होंने महाकाव्य–स्वरुप इस प्रकार से विवेचित किया है :–

---

[100] आचार्यभामहप्रणीत 'काव्यालंकार'–डॉ.रामानंदशर्मा,चौ०प्र.वारा०२०१४, प्र०परि०, १६–२३
[101] महाकविदण्डीविरचित 'काव्यादर्शः'– आ.रामचंद्रमिश्र चौ०प्र०वाराणसी२०१४, १/१४–१६

"तत्रोत्पाद्ये पूर्वं सन्नगरीवर्णनं महाकाव्ये ।
कुर्वीत तदनु तस्यां नायकवंशप्रशंसां च ।।"
"तत्र त्रिवर्गसक्तं समिध्दशक्तित्रयं च सर्वगुणम् ।
रक्तसमस्तप्रकृतिं विजिगीषुं नायकं न्यस्येत् ।।"
"विधिवत्परिपालयतः सकलं राज्यं च राजवृत्तं च ।
तस्य कदाचिदुपेतं शरदादिं वर्णयेत्समयम् ।।"
"स्वार्थं मित्रार्थं वा धर्मादिं साधिष्यतस्तस्य ।
कुल्यादिष्वन्यतमं प्रतिपक्षं वर्णयेद्गुणिनम् ।।"
"स्वचरात् तद्दूताद्वा कुतोऽपि वा श्रृवतोऽरिकार्याणि ।
कुर्वीत सदसि राज्ञां क्षोभं क्रोधेध्दचित्तगिराम् ।।"
"समन्त्र्य समं सचिवैर्निश्चित्य च दंडसाध्यतां शत्रोः ।
तं दांपत्येत्प्रयाणं दूतं वा प्रेषयेन्मुखरम् ।।"
"अथ नायकप्रयाणे नागरिकाक्षोभजनपदादिनदीः ।
अटवीकाननसरसीमरुजलौघद्वीपभुवनानि ।।"
"स्कन्धावारनिवेशं क्रीड़ां यूनां यथायथं तेषु ।
रव्यस्तमयं संध्यां संतमसमथोदयं शाशिनः ।।
"रजनीं च तत्र यूनां समाजसंगीतपानश्रृंगारान् ।
इति वर्णयेत्प्रसंगात्कथां च भूयो निबध्नीयात् ।।"
"प्रतिनायकमपि तद्वत्तदभिमुखममृष्यमाणमायान्तम् ।
अभिदध्यात्कार्यवशान्नगरीरोधस्थितं वापि ।।"
"योध्दव्यं प्रातरिति प्रबन्धमधुपीति निशि कलत्त्रेभ्यः ।
स्ववधं विशंकमानान् सन्देशान् दापयेत् सुभटान् ।।"
"सनह्य कृतव्यूहं सविस्मयं युध्द्यमानयोरुभयोः ।
कृच्छ्रेण साधू कुर्यादभुदयं नायकस्यान्ते ।।"
"सर्गाभिधानि चास्मिन्नवान्तरप्रकरणानि कुर्वीत् ।
संधीनपि संश्लिष्टांस्तेषामन्योन्यसंबन्धात् ।।"[102]

इस प्रकार अन्य आचार्यों से भिन्न आचार्य रुद्रट कथन "महाकाव्य में सर्वप्रथम किसी श्रेष्ठ नगरी का वर्णन किया जाना चाहिए" विशेष महत्त्व रखता है। किन्तु महाकाव्य के सर्गसंख्या, गुण, रीति, अलंकार आदि कलापक्ष के विषय में आचार्य रुद्रट प्रायः मौन ही रहे है।

५ कविराज आचार्य विश्वनाथ :–

---

[102] रुद्रटकृत 'काव्यालंकार'–डॉ०कपिलदेवद्विवेदी,न्यू भा०बुक कॉर्पो०दिल्ली,२००६, १६/७–१६

सत्रहवीं शताब्दी में साहित्यदर्पणकार कविराज 'विश्वनाथ' ने अपने पूर्ववर्ती आचार्यों द्वारा निर्धारित महाकाव्य स्वरुप को समुचितरूपेण समन्वित एवं व्यवस्थित करके महाकाव्य का सर्वमान्य स्वरुप इस प्रकार प्रस्तुत किया; जो इस प्रकार है :–

"सर्गबन्धो महाकाव्यं तत्रैको नायको सुरः ।।"
"सद्वंशः क्षत्रियो वापि धीरोदात्तगुणान्वितः ।
एकवंशभवाः भूपाः कुलजा बहवोऽपि वा ।।
"श्रृंगारवीरशान्तानामेकोऽङ्गी रस इष्यते ।
अङ्गानि सर्वेऽपि रसाः सर्वे नाटकसन्धयः ।।"
"इतिहासोद्भवं वृत्तमन्यद्वा सज्जनाश्रयम् ।
चत्वारस्तस्य वर्गाः स्युस्तेष्वेकं च फलं भवेत् ।।"
"आदौ नमस्क्रियाशीर्वा वस्तुनिर्देश एव वा ।
क्वचिन्निन्दा खलादीनां सतां च गुणकीर्तनम् ।।"
"एकवृत्तमयैः पद्यैरवसानेऽन्यवृत्तकैः ।
नातिस्वल्पा नातिदीर्घाः सर्गा अष्टाधिका इह ।।"
"नानावृत्तमयः क्वापि सर्गः कश्चन दृष्यते ।
सर्गान्ते भाविसर्गस्य कथायाः सूचनं भवेत् ।।
"संध्यासूर्येन्दुरजनीप्रदोषध्वान्तवासराः ।
प्रातर्मध्याह्नमृगयाशैलर्तुवनसागराः ।।"
"सम्भोगविप्रलम्भौ च मुनिस्वर्गपुराध्वाराः ।
रणप्रयाणोपयममन्त्रपुत्रोदयादयः ।।"
"वर्णनीया यथायोगं सांगोपांगा अमी इह ।
कवेर्वृत्तस्य वा नाम्ना नायकस्येतरस्य वा ।।"
"नामास्य सर्गोपादेयकथया सर्गनाम तु ।"[103]

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि साहित्यदर्पणकार ने अपने पूर्ववर्ती आचार्यों के महाकाव्यलक्षण को समुचितरूपेण समन्वित एवं सुव्यवस्थित करके महाकाव्य का सर्वमान्य स्वरुप प्रस्तुत किया है। कविराज विश्वनाथ द्वारा प्रस्तुत महाकाव्य स्वरुप में दृष्टव्य स्पष्टता एवं पूर्णता अन्यत्र दुर्लभ है।

इस प्रकार अग्निपुराण से आचार्य विश्वनाथ तक महाकाव्य स्वरुप एवं लक्षण की एक वृहद् परम्परा रही है। प्राचीन महाकाव्य परम्परा के उपर्युक्त आचार्यों के द्वारा प्रस्तुत किये गए महाकाव्य–लक्षण किंचिद्न्यून परिवर्तनों के अतिरिक्त समान ही है। कुछ आचार्यों ने कुछ विशेष लक्षणों को स्पष्टतया उद्घाटित किया है। वास्तव में उपर्युक्त लक्षणग्रन्थों में तत्कालीन

---

[103] कविराजविश्वनाथविरचित साहित्यदर्पणम् शालिग्रामशास्त्री,मो०ब०वारा०प्र०२००४, ६/३१५–३२५

परिस्थितियों, मानदण्डों एवं मान्यताओं के आधार पर महाकाव्यस्वरुप पर विचार किया गया है। वस्तुतः महाकाव्य की परिधि के रूप में सम्पूर्ण लोक के आधिदैविक, आधिभौतिक एवं आध्यात्मिक जीवन का समावेश हो जाता है। प्राचीन महाकाव्यों में आदिकाव्य रामायण, महाभारत (जो कि परवर्ती महाकाव्यों के उपजीव्य है।) एवं कुमारसंभवम्, किरातार्जुनीयम्, शिशुपालावधम् रघुवंशमादि प्रमुख है।

आ. अर्वाचीन काव्यशास्त्रीयपरम्परा :–

यद्यपि आधुनिक महाकाव्यों का स्वरूपावलोकन कर उनको परिभाषा में बांधना सरलकार्य नही है; फिर भी पूर्वकालीन काव्याचार्यों के महाकाव्य लक्षणों का अनुसरण कर जिन–२ आधुनिक काव्याचार्यों ने आधुनिक महाकाव्य के स्वरुप का विवेचन अपने–२ काव्यलक्षणग्रन्थों में किया है, उन अर्वाचीन काव्यलक्षणग्रन्थों में से अभिराजराजेन्द्रमिश्र कृत 'अभिराजयशोभूषणम्', प्रो. राधावल्लभत्रिपाठी रचित 'अभिनवकाव्यालंकारसूत्र', प्रो0 रहसविहारी द्विवेदी एवं डॉ० बाबूराम त्रिपाठी द्वारा प्रस्तुत महाकाव्य स्वरुप का विवेचन यहाँ किया जा रहा है।

१ प्रो०(डॉ०)'अभिराज' राजेंद्रमिश्र :–

प्रो० अभिराज' राजेंद्रमिश्र ने अपने काव्यलक्षणग्रन्थ 'अभिराजयशोभूषणम्' में महाकाव्य स्वरुप का विवेचन इस प्रकार किया है :–

"सर्गबन्धो महाकाव्यं लोकवन्द्यजनाश्रयम् ।
ख्यापयद्विश्वबंधुत्वं स्थापयद्विश्वमंगलम् ।।"
"नायकस्तत्रदेवः स्यात्प्रजाबन्धुरथो नृपः ।
चारुचर्योऽथवा कोऽपि सज्जनश्चरितोज्ज्वलः ।।"
"प्रातस्संध्यानिशीथेन्दुभास्करोदयतारकाः ।
वनोद्याननदीसिंधुप्रपाताद्रिबलाहकाः ।।"
"ग्रामाश्रमपुराऽरामदुर्गसैन्यरणोद्यमाः ।
पुत्रजन्मादिवृत्तान्ताः पामरावाससङ्कथाः ।।"
"इतिहासवृत्तानुरोधात्तु वर्णनीया न चान्यथा ।
प्रसह्य वर्णने तेषां न च तृप्तिर्न वा यशः ।।"
"यच्छिवं यच्च सत्यं स्यादथवा लोकमंगलम् ।
वर्णनीयं प्रकल्प्याऽपि कथावंशीकृत्य सादरम् ।।"
"सर्गा अष्टाधिकाः सन्तु कथाविस्तृतिसम्मताः ।
अष्टत्रिगुणनां यावत्सर्गसंख्या प्रथीयसी ।।"
"नोद्वेगः कविना कार्यः पाठकानां रसात्मनाम् ।

सर्गसंख्यादिविस्तारैर्वर्णनैर्वाऽनपेक्षितैः ।।"

"लोकवृत्तं न हातव्यं मूलवृत्तोपकारकम् ।

लोकाचित्रणगर्भं हि महाकाव्यं महीयते ।।"[104]

इस प्रकार साहित्यदर्पणकार कविराज विश्वनाथ के समान, पद्मश्री विभूषित प्रो0 अभिराज राजेंद्रमिश्र' को भी आधुनिक काव्यलक्षणशास्त्रियों में आदर्श के रूप में स्वीकार किया जाता है।

२ प्रो०(डॉ०) राधावल्लभत्रिपाठी :–

'अभिनवकाव्यालंकारसूत्र' के रचियता प्रो. (डॉ.) राधावल्लभत्रिपाठी ने आधुनिक महाकाव्य स्वरुप का विवेचन करते हुए लिखते हैं :–

"पद्यात्मकं समग्रजीवननिरुपणं महाकाव्यम् ।

गीतैतिहापुराणलोककथाभेदास्य नानात्वम् ।।"[105]

समग्रजीवन का निरुपण करनेवाला पद्यमयकाव्य 'महाकाव्य' कहलाता है। गीता, इतिहास, पुराण, लोककथा आदि के भेद से यह अनेक प्रकार का होता है। प्रो. त्रिपाठी महाकाव्य का स्वरुप विवेचन करते हुए आगे लिखते हैंः–

"इदमेव क्वचिन्महाकाव्यायमानं कवित्त्वस्य परां काष्ठां प्रकटीकरोति । यथा– रामायणं महाभारतं वा । यथा वा कालिदासस्य रघुवंशम्। ग्रीकभाषायां होमरकवेरोडिसी इलियड् चेती महाकाव्यद्वयी । अत्र जीवनस्य समग्रं रूपं निरूपणीयम्, तेनैव महावाक्यता सैव चालंकारःद्य जीवनं तु प्राग् लक्षितम् एतेषां त्रयाणामपि आधिभौतिकाधिदैविकाध्यात्मिक.

–लोकानां सकलः समुल्लासो जीवनमितिद्य भवन्ति भेदा बहवः महाकाव्यस्य ।"

"संघर्षे तुमुले द्वन्दे युगीने समुपस्थिते ।

देशजातिसमाजानामवस्थां निर्दिशत् क्रमात् ।।"

"वर्णयत् तत्प्रसंगेन महापुरुषजीवनम् ।

विश्वरूपं वैश्विकं वाऽपि दर्शनं कर्मणां गतिम् ।।"

"कर्मयोगस्य तत्त्वं च सकलं समुदाहरत् ।

गीता नाम महाकाव्यभेदो ज्ञेयो बुधैरसौ ।।"

"सर्गा अष्टादशप्रायाः भवन्त्यध्यायसंज्ञकाः ।"[106]

"यथा 'श्रीमद्भगवद्गीता' वेदव्यासकृता; यथा वा क्षमारावपंडितायाः 'सत्याग्रहगीता'; अथवा 'उत्तरसत्याग्रहगीता'; अथवा ममैव 'सत्यानन्दगीता' ।"[107]

---

104 'अभिराजयशोभूषणम्' अभिराजराजेन्द्रमिश्र, वैजयन्त प्र०इलाहाबाद,२००७, ४/६६–८०

105 अभिनवकाव्यालंकारसूत्र– प्रो.राधावल्लभत्रिपाठी,सम्पूर्णानन्दसंस्कृतविवि0, वाराणसी, २००५, ३/१/३

106 अभिनवकाव्यालंकारसूत्र– प्रो.राधावल्लभत्रिपाठी,सम्पूर्णानन्दसंस्कृतविवि0, वाराणसी, २००५, ३२६

107 अभिनवकाव्यालंकारसूत्र– प्रो.राधावल्लभत्रिपाठी,सम्पूर्णानन्दसंस्कृतविवि0, वाराणसी, २००५, ३२७

"इतिहासाश्रितमैतिहासिकं महाकाव्यं यथा रघुवंशं लेनिनामृतं वा । पौराणिकवृत्तमाश्रित्य रचितं पुराणिकं यथा किरातार्जुनीयं शिशुपालवधं वा। लोककथाश्रितं यथा वृहत्कथा कथासरित्सागरो वा ।"[108]

इस प्रकार प्रो. (डॉ.) राधावल्लभत्रिपाठी ने वृहत्कथा एवं कथासरित्सागर को भी महाकाव्यों की श्रेणी में समाविष्ट किया है।

३ डॉ. रहसविहारी द्विवेदी :–

पूर्वकालीन आचार्यों को पदचिह्नों पर चलते हुए डॉ0 रहसविहारी द्विवेदी ने महाकाव्य के अर्वाचीन स्वरूप को 'दूर्वा पत्रिका' में प्रकाशित एक लेख में संक्षिप्तरूप में इस प्रकार प्रस्तुत किया है :–

"सर्गैर्वृत्तैश्च बद्धं सहृदयहृदयाह्लादिशब्दार्थरम्यम् ,
संवादैश्चोच्यशिल्पैः सततरसमयं ग्रंथिमुक्तं समृद्धम् ।
पात्रं स्याद् यस्य मुख्यं परमगुणयुतं लोकविख्यातवृत्तं ,
भव्यं लोकस्वभावं महदपि महतां तन्महाकाव्यमास्ते ।।"[109]

डॉ. रहसविहारी द्विवेदी के अनुसार महाकाव्य का नायक परमगुणों से युक्त आदर्श होना चाहिए। महाकाव्य की कथावस्तु लोकविख्यात होनी चाहिए। महाकाव्य में शिल्पविधान उच्चस्तरीय होना चाहिए। महाकाव्य का उद्देश्य महान् लोकमंगलकारी होना चाहिए।

४ डॉ० बाबूराम त्रिपाठी :–

डॉ० बाबूराम त्रिपाठी के अनुसार **"महाकाव्य की कथावस्तु का आधार जीवजगत् के विभिन्न अंगों से युक्त एवं व्यापक होता है। महाकाव्यों में अवान्तर कथाओं का विकास भी अत्यावश्यक है। ये अवान्तर कथाएं महाकाव्य की जीवन्तता एवं संपृक्तता को निर्देशित करती है। महाकाव्य की भाषा अर्थगूढ़ एवं व्याख्यात्मक न होकर सरल हो जिससे पाठकों को अनुशीलन एवं अर्थग्रहण में काठिन्य न हो। महाकाव्य की शैली प्रसादगुण युक्त होनी चाहिए। महाकाव्य में सभी रसों को यथावसर स्थान मिलना चाहिए।"**[110]

उपर्युक्त अर्वाचीन काव्यशास्त्रियों के महाकाव्यस्वरुपविवेचन से स्पष्ट है कि अर्वाचीन महाकवियों ने श्रृंगार रस के प्रति शैथिल्य प्रदर्शित कर, वीररस तथा शान्तरस द्वारा राष्ट्रभक्ति, विश्वबन्धुत्व, वसुधैवकुटुम्बकम्, एवं 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' की भावनाओं को प्रदर्शित करने का प्रयास किया है। उन्होंने आदर्श–चरित्रवान् महापुरुषों–'जिन्होंने सामाजिक उत्थान में आत्म–जीवन समर्पित कर दिया'–को अपने लेखन का विषय बनाया है। अर्वाचीन आचार्यों ने

---

[108] अभिनवकाव्यालंकारसूत्र– प्रो.राधावल्लभत्रिपाठी,सम्पूर्णानन्दसंस्कृतविवि0, वाराणसी, २००५, पृ०सं० ३२७
[109] दूर्वा'–कालिदाससंस्कृत अकादमी, उज्जैन, अप्रे.–जून २००५ पृ.सं. ६३
[110] आधुनिकसंस्कृतसाहित्य का इतिहास'–डॉ. बाबूरामत्रिपाठी, महालक्ष्मी प्र०,आगरा, पृ.सं.२४३

पूर्ववर्ती काव्याचार्यों के महाकाव्य स्वरुप के अनुशरण में किञ्चित् शैथिल्य तो प्रदर्शित किया है; किन्तु वर्णनसंक्षिप्तता के साथ ही मौलिकता का भी शुभागमन हुआ है। 'आधुनिकसंस्कृतमहाकाव्य' समाज एवं मानव जीवन का श्रेष्ठ प्रतिबिम्ब है। इनमें राष्ट्र की संस्कृति, सामाजिक एवं राष्ट्रीय समष्टि एवं मानवता को संरक्षित किया गया है। आधुनिक महाकाव्यों ने भारतीयसंस्कृति के चारों स्तम्भों– धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष– के द्वारा श्रेष्ठ एवं आदर्श जीवन की स्थापना की है।

उपर्युक्त परम्परागत एवं अर्वाचीन महाकाव्यलक्षणों के अनुशीलन से यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि महाकाव्यलक्षण से सम्बन्धित पैमाने समयानुसार परिवर्तनशील रहे हैं। २१वीं सदी के महाकाव्यों ने पूर्ववर्ती महाकाव्यों से प्रेरणा तो गृहण की है किन्तु नवोन्मेषप्रतिभा का प्रदर्शन करते हुए पूर्ववर्ती प्रबन्धों का अन्धानुकरण नही किया है। आधुनिक महाकाव्यों में शिल्पगतचेतना के साथ–२ राष्ट्रीय, सामजिक, राजनैतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, पर्यावरणचेतना आदि को अधिक स्थान दिया गया हैं। अर्वाचीन महाकाव्यों में मातृभूमि के प्रति आदर एवं प्रेम का प्रतिपद दर्शन होता है।

स्वतन्त्रता के उपरान्त संस्कृत महाकाव्यों का स्वर्णयुग प्रारम्भ हुआ। तब से लेकर अब तक ३०० से अधिक संस्कृत महाकाव्यों का प्रणयन हो चुका है। २०वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में जनचेतना एवं राष्ट्रीयचेतना का स्पष्ट प्रभाव संस्कृत महाकाव्यों पर देखा जा सकता है। आधुनिक महाकवियों ने सामजिक एवं राष्ट्रीयचेतना को विशेषरूप से परिसिंचित किया है।

वर्तमान महाकाव्यों में देवता, राजा, अथवा उच्चकुलीन क्षत्रिय नायक का स्थान समाजसेवकों, सज्जन–व्यक्तियों, दानदाताओं अदि ने ले लिया है। राजाओं का स्थान राजनीतिज्ञों ने बलात् हरण हर लिया है। वर्तमान महाकाव्यों में नायक के लिये पुरुष होना भी अनिवार्य नही है। एक स्त्री का भी नायिका के रूप में चित्रण आधुनिक महाकाव्यों की महत्त्वपूर्ण विशेषता है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि महाकाव्यस्वरुप के विषय में प्राचीन एवं अर्वाचीन दोनों कव्याचार्यों में प्रायः मतैक्य दृष्टिगत होता है; किन्तु परिवर्तनशील जीवनशैली एवं आधुनिकता के प्रभाव से महाकाव्यों में नायकादि का जो सन्दर्भ बदला है उस विषय में प्रो0 अभिराज राजेंद्रमिश्र ने आधुनिक महाकाव्य का अत्यन्त सार्थक स्वरुप निर्धारित किया है। उनके द्वारा प्रस्तुत लक्षण आधुनिक महाकाव्यों में लगभग पूर्ण घटित होतें हैं।

आधुनिक महाकाव्य के भेदः–

आधुनिक महाकाव्य के भेदों को डॉ.शंभूनाथ सिंह ने 'महाकाव्यों का मूल स्वरूप एवं विकास' शीर्षक स्वरचित ग्रन्थ में इस प्रकार प्रस्तुत किया है। यथा :–

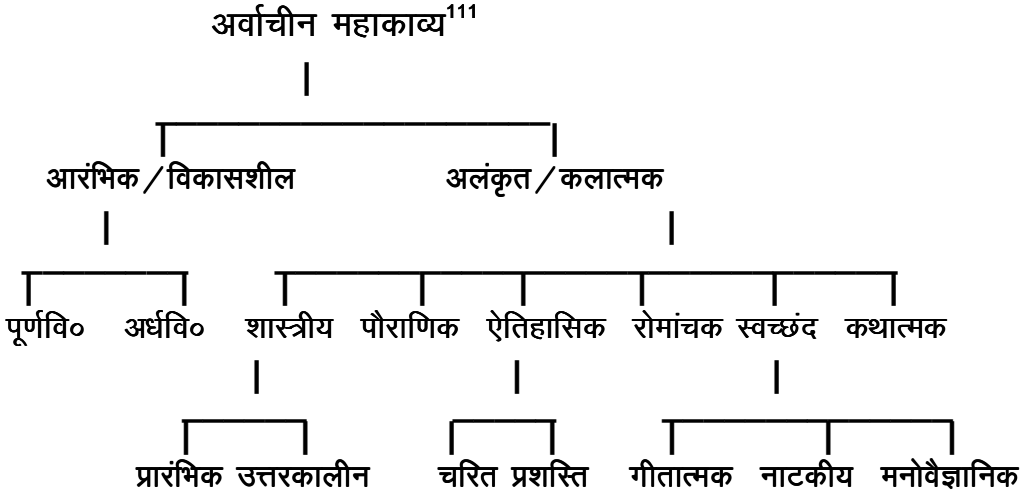

प्रमुख अर्वाचीन महाकाव्यों में डॉ० हरेकृष्णमेहत्तर कृत "श्रीदयानन्दचरितम्", डॉ० बालकृष्ण भारद्वाज रचित "रामकृष्ण–परमहंसदिव्यचरितम्", डॉ० हरिनारायण दीक्षित कृत "श्रीराधाचारितम्", "श्रीवल्लभदेवचरितम्", "भारतमाता ब्रूतेः"; डॉ० कु०नरेन्द्रप्रतापसिंह रचित "पूर्वसावरकरचरितम्", डॉ० धर्मवीरसिंह कुंडू कृत "श्रीभक्तफूलसिंहचरितम्", डॉ० अशोक कुमार डबराल प्रणीत "क्षुधते हा धरित्री", "देवात्मा हिमालय"; डॉ० पूर्णचन्द्रशास्त्री रचित "अपराजितावधु" डॉ० गिरिजाशंकरमिश्र कृत "प्रसन्नभारतम्", डॉ० राधामोहन उपाध्याय रचित "भारतविजयम्", डॉ० हरेकृष्णमेहत्तर कृत "मातृगीताञ्जली" इत्यादि महाकाव्य अपनी वर्ण्यवस्तु एवं निबन्धन हेतु प्रसिद्द है।

इ. भारतायनम्' महाकाव्य का संक्षिप्त विवेचन :–

"भारतायनम्" महाकाव्य में महाकवि ने भारतमाता के ऐश्वर्य, औदार्य, वैभव, गौरवादि के शान्तकान्तचित्रण द्वारा सरससुन्दरपद्यावलियों के माध्यम से वर्णित किया है। "**जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी**"[112] इस प्रसिद्द आभाणक के अनुसार हमारी जन्मभूमि ही हमारी जननी है। यह भारतभूमि स्वर्ग से भी बढ़कर है। हम सब भारतीय इस भारतजननी की सन्तति है। इसके आशीर्वाद वात्सल्य एवं स्नेह से ही हम सब सुखी एवं समृद्ध है। अतः सर्वदा भारतभूमि का गौरवगान एवं चरणयुगलवन्दन हम भारतीयों का कर्त्तव्य है। जननी एवं जन्मभूमि पवित्र भावान्वित, सन्तति को जीवन देने वाली, सन्तति के सन्तापों को हरनेवाली, स्वयंप्रभा देवनदी गंगा स्वरूपा है। सूर्य की सहस्त्र रश्मियों से प्रतप्त होकर एवं अपना वक्षस्थल विदीर्ण करके सन्तान के पोषण हेतु खाद्यान प्रदान करने वाली यह पृथ्वी भी जननी स्वरूपा है। आदिशंकराचार्य की जननी आर्याम्बा; भगवान् श्रीकृष्ण की जननी यशोदा; कौरवों की जननी गान्धारी; जगत्हितार्थ कठोर तपस्या करने वाली पार्वती; हरिप्रियालक्ष्मी; 'निरंतर चलने का

---

[111] 'महाकाव्यों का मूल स्वरूप एवं विकास'– डॉ.शंभूनाथ सिंह, युगमंदिर प्र०,उन्नाव, १.१३

[112] वाल्मीकि रामायण – हिंदी प्रचार प्रेस मद्रास प्र0, युद्धकाण्ड ६–१२४–१७,

जीवनमंत्र देने वाली तटिनी, भी जननी के ही स्वरूपा है। यह भारतभूमि शिक्षा, साहित्य, संस्कृति, राजनीति, पर्यटन, आध्यात्मिकता, शान्ति, मैत्री इत्यादि विभिन्न क्षेत्रों में गुरुरूप में विवेचित है। यह भारतभूमि एवं इसकी भाषा–'संस्कृत' भी हमारी जननी है। अतः प्रस्तुत महाकाव्य के प्रारम्भिकसर्ग में महाकवि ने जननी की परिकल्पना की है, तत्पश्चात् भारतभूमि एवं शिशु की परिकल्पना की है। वह शिशु आनन्द एवं शान्ति की प्रतिमूर्ति एवं ईश्वर का अवतार है। उसका विकास ही सृष्टि का प्रकाश है। ये दोनों कौन हैं? माता और शिशु? अथवा आत्मा और परमात्मा? सानन्द इस भारतभूमि पर विचरण करते हुए वे दोनों भारतवर्ष के महनीय गौरव के दर्शन करते हुए कदाचित् स्वयं को भी विस्मृत कर देते हैं। द्वितीयसर्ग में कवि ने मातृ–शिशु के शाश्वत् संपर्क से स्वहृदयान्तर्भावों की कोमल अभिव्यंजना की है। वे दोनों– जननि एवं शिशु; सृष्टि तथा सृष्टा; आत्मा तथा परमात्मा अथवा प्रकृति तथा पुरुष भारतभूमि के अलौकिक रूपलावण्य का आस्वादन करने हेतु पृथ्वी पर अवतरित होते हैं।

'भारतायनम्' महाकाव्य के तृतीय–चतुर्थ–पञ्चम–एवं षष्ठसर्गों में 'श्रीजगन्नाथचेतना' एवं 'श्रीजगन्नाथसंस्कृति' का महात्म्य वर्णित है। तृतीयसर्ग में महाकवि ने पवित्र नीलाञ्चलक्षेत्र का भव्य वर्णन किया हैं। भगवान् विष्णु के नीलमाधव अवतार के लिये प्रसिद्ध पुरी क्षेत्र को 'नीलांचलक्षेत्र' के रूप में जाना जाता है। भूलोक के समस्त देवता इस परमपुरुषोत्तमक्षेत्र में ही निवास करते हैं। समस्ततीर्थों में प्रसिद्ध, परमपवित्रतीर्थ–'पुरी' में संसारभयार्तिहारक प्रभुजगन्नाथ स्वयं विराजते है। भारत का यह पवित्र स्थल समस्त पृथ्वी पर पुण्यतम है। यज्ञों एवं तपों की इस पवित्रभूमि पर जन्म लेना हमारा सौभाग्य है।

चतुर्थसर्ग में महोदधि का वर्णन है। पुरी क्षेत्र के समुद्र को 'महोदधि' कहा जाता है। महाकवि ने राजा इन्द्रद्युम्न के मुख से, सुप्रभात स्त्रोत द्वारा महोदधिमहात्म्य वर्णित किया है। यह 'महोदधि' समस्ततीर्थों का स्वामी है। पञ्चमसर्ग में महाकवि सांसारिक जीवन के दुःखों को पत्र में लिखकर जलधि को समर्पित करते हुए; जलधि को दूत बनाकर उस पत्र को असमय 'दिवंगता 'स्वसहोदरी' को पहुँचाने की प्रार्थना करते हैं। करुण एवं शान्तरस से आप्लावित पञ्चमसर्ग में महाकवि द्वारा कृत भावुकतापूर्ण वर्णन पाठकों के हृदयों को करुणा से भर देता है। षष्ठसर्ग में महाकवि ने पवित्र दारुखण्ड से प्रभुविग्रहनिर्माण; पुरी मन्दिरनिर्माण; मूर्तिस्थापना एवं जगन्नाथरथयात्रा की कथा का वर्णन किया है।

सप्तमसर्ग में महाकवि ने प्रसिद्ध चारधामों में अन्यतमधामों–"द्वारिका" एवं "बद्रीनाथ"–के भक्तिमय वर्णन के साथ–साथ 'साधना' के महात्म्य का वर्णन किया गया है। "द्वारिका" में प्रभु 'सोमनाथ' ज्योतिर्लिंग के रूप में विराजते हैं। धरातल के धामों में धन्या एवं धार्मिक नगरियों में अनन्या, 'द्वारिकानगरी' अरबसागर के जल में तपस्या में संलग्न योगी के सामान शोभायमान है। भगवान विष्णु के अवतार, शान्ताकृति एवं कमनीयमूर्ति– प्रभुबद्रीनाथ; हिमालय पर लोकहितार्थ तपस्या करते हैं।

अष्टमसर्ग में महाकवि ने पवित्र–'काशीनगरी' का भक्तिमय वर्णन करने के साथ ही गंगा नदी की दुर्दशा, पर्यावरणप्रदूषण, साम्प्रदायिकता, क्षेत्रवाद, आतंकवाद, नक्सलवाद, भ्रष्टाचार, राष्ट्रद्रोह आदि ज्वलन्त समस्याओं पर चिन्ता व्यक्त करते हुए इन समस्याओं के कारण एवं समाधान भी प्रस्तुत किये हैं। महाकवि देश में व्याप्त साम्प्रदायिकता, क्षेत्रवाद, आतंकवाद, नक्सलवाद, भ्रष्टाचार, राष्ट्रविरोधी गतिविधियों आदि समस्याओं के पर दुःख व्यक्त करते हुए कहते हैं कि आज हम भारतीय ही आपस में विभाजित हैं; इस अवस्था में 'वसुधैव–कुटुम्बकम्' एवं 'विश्वबन्धुत्वम्' कैसे संभव है? अपना अंग–भंग होने की आशंका से भारत–मातृभूमि क्रन्दन कर रही है। यदि हम अपनी जन्मभूमि के अश्रु भी नही पोंछ सकते तो हमारा इस भूमि पर जन्म लेना धिक्कार है। हमारा यह शरीर पृथ्वी, अग्नि, जल, वायु, और आकाश इन पञ्च महाभूतों से मिलकर बना है। प्रदूषण के कारण यदि अगर वायु, पृथ्वी, जलादि तत्त्व दूचित हो जायेंगें तो फिर मनुष्य शरीर जीवन धारण कैसे करेगा?

नवमसर्ग में महाकवि ने दक्षिण के प्रसिद्ध तीर्थ–'काञ्चीपुरम' एवं जगद्गुरु आदिशंकराचार्य का संक्षिप्त तथा कामकोटिपीठ के ६८वें शंकराचार्य–"चन्द्रशेखरेंद्र सरस्वती–" का विस्तृत रूप से वर्णन किया है। दशमसर्ग में महाकवि ने महाकाव्य के पूर्व सर्गों में वर्णित तीर्थस्थलों के अतिरिक्त शेष दक्षिणभारतीयतीर्थस्थलों– कर्णाटक, रामेश्वरम्, मदुरै, तिरुपति आदि प्रसिद्ध तीर्थों का वर्णन किया है।

इस प्रकार आचार्य हरेकृष्ण शतपथी ने "भारतायनम्" महाकाव्य में भारतभूमि की महिमा का वर्णन किया है। मनोरम भारतभूमि को आधार बनाकर रचित समीक्ष्य महाकाव्य में भारतमाता का रमणीय एवं विश्ववन्द्य स्वरूप महाकवि ने प्रस्तुत किया है।

ई. 'भारतायनम्' महाकाव्य का महाकाव्यत्व :–

प्राचीन एवं अर्वाचीन काव्यशास्त्रियों द्वारा निरुपित महाकाव्यस्वरुपनिर्णय के आधार पर महाकवि आचार्यहरेकृष्णशतपथी कृत सर्वलक्षणसमन्वित "भारतायनम्" महाकाव्य का सभी परीक्षित कसौटियों पर महाकाव्यत्व सिद्ध होता है। प्रस्तुत महाकाव्य के महाकाव्यत्व को सिद्ध करने वाले तत्त्वों का विवेचन यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है :–

१. सर्गबद्धता :–

सभी प्राचीन एवं अर्वाचीन महाकाव्यलक्षणकार महाकाव्य की 'सर्गबन्धता' पर एक मत है। यथा–

"सर्गबन्धो महाकाव्यं तत्रैको..।"[113] "सर्गैर्वृत्तैश्च बद्धं..।"[114]

---

113 कविराजविश्वनाथविरचित साहित्यदर्पणम् शालिग्रामशास्त्री,मो०ब०वारा०प्र०२००४, पृ.सं.२२५

114 दूर्वा'–कालिदाससंस्कृत अकादमी, उज्जैन, अप्रे.–जून २००५ पृ.सं. ६३

'भारतायनम्' महाकाव्य दशसर्गों में निबद्ध महाकाव्य है। अतः 'सर्गबद्ध" होने से 'भारतायनतम्' का महाकाव्यत्व सिद्ध होता है।

२. मंगलाचरण :–

प्रायः सभी ग्रन्थकारों के ग्रन्थलेखन का मूलोद्देश्य लोकमङ्गल एवं लोककल्याण होता है। ग्रन्थकार का स्वकार्यसम्पादन विघ्नरहित हो, इसीलिए प्रायशः ग्रन्थ के आरम्भ में और कभी–कभी मध्य अथवा अन्त में भी मंगलाचरण किया जाता है। यथा–

"**आदौ नमस्क्रियाशीर्वा वस्तुनिर्देश एव वा––।।**"

"**आशीर्नमस्क्रिया वस्तुनिर्देशो वापि तन्मुखम्––।।**"[115]

मंगलाचरण– नमस्कारात्मक; आशीर्वादात्मक एवं वस्तुनिर्देशात्मक– तीन प्रकार का होता है। यथा महाकवि कालिदास कृत 'रघुवंशम्' महाकाव्य में – "**वागर्थाविव संपृक्तौ....।।**"[116]; आचार्य आनन्दवर्धन कृत ध्वन्यालोक में – "**स्वेच्छाकेसरिणः...।।**"[117] तथा महाकवि भारवि कृत 'किरातार्जुनीयम्' महाकाव्य में – "**श्रियः कुरुणामधिपस्य....।।**"[118] किया है।

आचार्य हरेकृष्णशतपथी ने 'भारतायनम्' महाकाव्य में "श्रीगुरुःशरणम्" शीर्षक से आदिकवि व्यासदेव की स्तुति में मङ्गलाचरण की 'सप्तपदी' को महाकाव्य के आरम्भ में प्रस्तुत किया है। यथा–

"**विषयाकुलसंकुलसृष्टितले,**
सततं पतिते विजयेऽस्तमिते ।
अयि ! बुद्धिविवेकविचारविभो !
गुरुदेव ! दयामय ! देहि पदम् ।।"[119]

महाकवि ने उक्त सप्तपदी के अतिरिक्त महाकाव्य के प्रथमसर्ग के प्रथम पद्य में वस्तुनिर्देशात्मक मंगलाचरण प्रस्तुत किया है; जो भारतायनम्' महाकाव्य के महाकाव्यत्व को सिद्ध करता है। यथा –

"**असीमसौन्दर्य्यर्विशेषसौरभं ,**
हिमालयादन्यदिगन्तवैभवम् ।
यदा नमामि प्रियभारतं मम ,
तदा स्वरूपं प्रतिभाति तेऽम्बिके ।।"[120]

३. सर्गसंख्या :–

---

115 कविराजविश्वनाथविरचित साहित्यदर्पणम् शालिग्रामशास्त्री,मो०ब०वारा०प्र०२००४, ६/३१६
116 महाकवि कालिदास कृत 'रघुवंशम्'– देविरत्न अवस्थी, सा०अका०दिल्ली,प्र०२००५, १/१
117 आ0 आनन्दवर्धन कृत् 'ध्वन्यालोक'– डॉ.श्रध्दासिंह, जगदीशसंकृतपुस्तकालय जयपुर, २००५ प्र.उ., पृ.सं.१,
118 महाकवि भारवि कृत 'किरातार्जूनीयम'–् डॉ.श्रीकृष्ण ओझा अभिनव प्र.जयपुरए २००५, १/१
119 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, भूमिका पृ.सं. viii-ix
120 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, १/१

आचार्य विश्वनाथ एवं प्रो0 (डॉ0) अभिराजराजेन्द्रमिश्र ने सर्गों की संख्या के विषय में स्पष्ट निर्देश प्रस्तुत करते हुए कहा है कि महाकाव्य में न्यूनतम ८ एवं अधिकतम २४ सर्ग होने चाहिए। यथा –

"नातिस्वल्पा नातिदीर्घाः सर्गा अष्टाधिका इह ।।"[121]

"सर्गा अष्टाधिकाः सन्तु कथाविस्तृतिसम्मताः ।
अष्टत्रिगुणनां यावत्सर्गसंख्या प्रथीयसी ।।"[122]

महाकवि आचार्य हरेकृष्णशतपथी ने सर्वलक्षणसमन्वित 'भारतायनम्' महाकाव्य को दशसर्गों में निबद्ध किया है; जो कि एक आदर्श सर्गसंख्या है। अतः सर्गसंख्या के आधार पर भी 'भारतायनम्' महाकाव्य के महाकाव्यत्व का सिद्ध होता है।

४. सर्गविस्तार :–

सर्गों के आकार के विषय में प्रो0 (डॉ0) अभिराजराजेन्द्रमिश्र ने 'अभिराजयशोभूषणम्' में निर्दिष्ट किया है। यथा –

"नोद्वेगः कविना कार्यः पाठकानां रसात्मनाम् ।
सर्गसंख्यादिविस्तारैर्वर्णनैर्वाऽनपेक्षितैः ।।"[123]

समीक्ष्य महाकाव्य में कुल ६५६ पद्यों को दशसर्गों में निबद्ध किया गया है। महाकाव्य के प्रत्येक सर्ग में औसत ६६ पद्य है। महाकाव्य के सर्गों में न्यूनतम ३७ एवं अधिकतम १२० पद्य हैं। महाकाव्य में कथावस्तु का अनपेक्षित विस्तार नही होने से पाठक उत्साहित बने रहते हैं।

भारतायनम्' महाकाव्य में सर्गवार पद्य संख्या-

सर्ग-क्रम	कुलपद्य-संख्या	सर्ग-क्रम	कुलपद्य-संख्या
प्रथम	१२०	षष्ठ	४०
द्वितीय	५३	सप्तम	३७
तृतीय	३७	अष्टम	७६
चतुर्थ	४९	नवम	१११
पञ्चम	८१	दशम	५५

इस प्रकार सर्गविस्तार के आधार पर 'भारतायनम्' महाकाव्य का महाकाव्यत्व का सिद्ध होता है।

५. छन्दप्रयोग :–

---

[121] कविराजविश्वनाथविरचित साहित्यदर्पणम् शालिग्रामशास्त्री,मो०ब०वारा०प्र०२००४, ६/३२०
[122] 'अभिराजयशोभूषणम्' अभिराजराजेन्द्रमिश्र, वैजयन्त प्र०इलाहाबाद,२००७, ४/७२
[123] 'अभिराजयशोभूषणम्' अभिराजराजेन्द्रमिश्र, वैजयन्त प्र०इलाहाबाद,२००७, ४/७३

महाकाव्य में छन्द्प्रयोग के विषय में काव्याचार्यों ने कहा है कि महाकाव्य के सर्गों को एक अथवा अनेक छन्दों में बद्ध होना चाहिए; अथवा सर्गों में छंदप्रयोग विविधतापूर्ण होना चाहिए। यथा–

"एकवृत्तमयैः पद्यैरवसानेऽन्यवृत्तकैः—— ।"[124]

"नानावृत्तमयः क्वापि सर्गः कश्चन दृष्यते—— ।"[125]

"छंदोऽलंकारसंदर्भा भूरिवैविध्यमंडिता—— ।"[126] आदि।

भारतायनम्' महाकाव्य में ६५६ पद्यों में कुल १३ छंदों का प्रयोग हुआ है जिनमें वंशस्थ, वसन्ततिलका, शार्दुलविक्रीडित, उपजाति, अनुष्टुप, द्रुतविलम्बित, मन्दाक्रान्ता, इन्द्रवज्रा आदि प्रमुख हैं। सर्गान्त में छन्दपरिवर्तन किया गया है। इस प्रकार छंदप्रयोग की दृष्टि से भी 'भारतायनम्' महाकाव्य का महाकाव्यत्व का सिद्ध होता है।

६. सर्गान्त में भावि कथा की सूचना :–

प्राचीन एवं अर्वाचीन काव्यशास्त्रियों ने सर्गान्त में भावि कथा की सूचना को महाकाव्य की महत्त्वपूर्ण विशेषता के रूप में इंगित किया है। यथा–

"सर्गान्ते भाविसर्गस्य कथायाः सूचनं भवेत् ।।"[127]

'भारतायनम्' महाकाव्य के प्रत्येक सर्ग का अन्तिम पद्य भाविसर्ग के वस्तुसूचक के रूप में स्थापित है। उदहारण स्वरुप 'षड्सर्ग' के अन्तिम पद्य में "द्वारिकाराधाना" शीर्षक सप्तमसर्ग की कथा का निर्देशन महाकवि द्वारा प्रस्तुत किया गया है। यथा –

"पूर्वाम्नायपवित्रधाम हि जगन्नाथाख्यमेतत्प्रिये ,
वारम्बारमपारपुण्यसुभगं नत्वा च मोक्षप्रदम् ।
यास्यावः भवतापहारि भगवल्लीलास्थलीं साम्प्रतं ,
साक्षान्मोक्षविधायिकां कलिदशासंहारिकां द्वारिकाम् ।।"[128]

इस प्रकार सर्गान्त में भाविकथासंसूचनपद्धति का अनुसरण करने वाले 'भारतायनम्' महाकाव्य का महाकाव्यत्व का सिद्ध होता है।

७. सर्गों का नामकरण :–

आचार्य विश्वनाथ के अनुसार सर्गों के नाम सर्गों में वर्णित कथा के आधार पर रखे जाने चाहिए। यथा –

"नामास्य सर्गोपादेयकथया सर्गनाम तु ।"[129]

---

124 कविराजविश्वनाथविरचित साहित्यदर्पणम् शालिग्रामशास्त्री,मो०ब०वारा०प्र०२००४, ६/३२०
125 'अभिराजयशोभूषणम्' अभिराजराजेन्द्रमिश्र, वैजयन्त प्र०इलाहाबाद,२००७, ४/७७ पूर्वार्द्ध
126 कविराजविश्वनाथविरचित साहित्यदर्पणम् शालिग्रामशास्त्री,मो०ब०वारा०प्र०२००४, ६/३२१
127 कविराजविश्वनाथविरचित साहित्यदर्पणम् शालिग्रामशास्त्री,मो०ब०वारा०प्र०२००४, ६/३२१
128 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ६/४०
129 कविराजविश्वनाथविरचित साहित्यदर्पणम् शालिग्रामशास्त्री,मो०ब०वारा०प्र०२००४, ६/३२५

प्रस्तुत उक्ति 'भारतायनम्' महाकाव्य का महाकाव्यत्व सिद्ध करती है; यथा प्रथमसर्ग से दशमसर्ग पर्यन्त क्रमशः "भारत–जननी–वात्सल्यम्", "मातृगौरवशिशुस्पन्दनम्", "भारतनीलाञ्चलमहिमवर्णनम्", "महोदधिमहिमवर्णनम्", "सागरसमर्पणम्", "दारुमहोत्सवमन्दिरनिर्माणम्", "द्वारिकाराधना", "काशीविलास", "कांचीवैभवम्" एवं ''तीर्थवसति'' रूपों में सर्गकथान्वित सर्गनाम उपस्थापित किया गया है। यथा –

"इति श्रीकात्यायनगोत्रोद्भवाचार्यहरेकृष्ण–शतपथि–शर्मविरचिते 'भारतायनम' इति महाकाव्ये "भारत–जननी–वात्सल्यमम्" नाम प्रथमस्सर्गः इति।"[130]

८. नामकरण के आधार पर :–

काव्याचार्यों के अनुसार महाकाव्य का नामकरण कवि, कथावृत्त, नायक अथवा पात्रों के नाम पर किया जाना चाहिए। यथा –

"कवेर्वृत्तस्य वा नाम्ना नायकस्येतरस्य वा––।"[131] **इति।**

समीक्ष्य महाकाव्य में भी महाकवि ने भारतमातृभूमि के ऐश्वर्य, औदार्य, वैभव, एवं गौरवपूर्ण शान्त–कान्त चित्र का वर्णन किया है। अतः प्रस्तुत महाकाव्य में वर्णित भारतभूमि की महिमात्मक कथावस्तु के आधार पर महाकाव्य का 'भारतायनम्' नामकरण किये जाने से उक्त महाकाव्य का महाकाव्यत्व का सिद्ध होता है।

६. अंगीरस के आधार पर :–

महाकाव्य में वर्णित अंगीरस के विषय में प्राचीन एवं आधुनिक सभी काव्याचार्यों ने एक मत से कहा है कि महाकाव्य में श्रृगार, वीर, अथवा शान्त रसों में से किसी एक रस को अंगीरस के रूप में एवं अन्य रसों को अंगभूत रसों के रूप में वर्णित किया जाना चाहिए। यथा–

"श्रृंगारवीरशान्तानामेकोंऽङ्गी रस इष्यते––।।"[132]

"श्रृंगारवीरशान्तानां कश्चिदन्यतमो रसः–––।।"[133] इत्यादि।

भारतायनम्' महाकाव्य का मुख्यरस 'शान्तरस' है; तथा अन्य सभी रसों का भी विवेचन यथावसर महाकवि ने किया है। यथा–

"अहो जगद्दृश्यमतीवविचित्रकं ,
सुखस्य हेतुः परिवर्तनप्रियम् ।
ते एव मन्ये नितरां प्रमोदिताः ,
वनालया वृक्षफलाशिनो जनाः ।।"[134]

अतः रसविवेचन के आधार पर भी 'भारतायनम्' महाकाव्य का महाकाव्यत्व का सिद्ध होता है।

१०. कथावस्तु के आधार पर :–

---

[130] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, पृष्ट संख्या २७
[131] कविराजविश्वनाथविरचित साहित्यदर्पणम् शालिग्रामशास्त्री,मो०ब०वारा०प्र०२००४, ६/३२४
[132] कविराजविश्वनाथविरचित साहित्यदर्पणम् शालिग्रामशास्त्री,मो०ब०वारा०प्र०२००४, ६/३१८
[133] 'अभिराजयशोभूषणम्' अभिराजराजेन्द्रमिश्र, वैजयन्त प्र०इलाहाबाद,२००७, ४/६६ पूर्वार्द्ध
[134] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ५/२३

महाकाव्य की कथावस्तु के विषय में प्राचीन एवं अर्वाचीन सभी काव्याचार्यों तात्कालिक परिस्थितियों के अनुसार अपने–अपने विचारों को प्रस्तुत करते हुए कहा है कि महाकाव्य की कथा ऐतिहासिक, पौराणिक या लोकप्रसिद्ध, सज्जनसम्बन्धिनी या लोकवन्द्यजनाश्रित हो जो विश्वबन्धुत्व की ख्यापक हो एवं विश्वमंगल–स्थापक हो तथा आधिभौतिक, आधिदैविक एवं आध्यात्मिक जीवन सहित समग्रजीवन का निरूपण करने वाली हो। जैसे–

"इतिहासोद्भवं वृत्तमन्यद्वा सज्जनाश्रयम्–– ।"[135] **"––लोकवन्द्यजनाश्रयम् ख्यापयद्विश्वबंधुत्वं स्थापयद्विश्वमंगलम् ।।"**[136]**"**; **"लोकविख्यातवृत्तम् ।"**[137]; **"पद्यात्मकं समग्रजीवननिरुपणं महाकाव्यम् ।"**[138] इत्यादि।

प्रस्तुत महाकाव्य की कथावस्तु 'मिश्रित कथावस्तु' है। महाकाव्य की कथावस्तु ब्रह्मपुराण एवं स्कंधपुराण से ली गयी है; जिनमें भारतवर्ष एवं भारतवर्ष के तीर्थों का माहात्म्य वर्णित है। कवि ने अपनी कल्पना का भी यथास्थान समावेश किया है; जिससे नवीन उद्भावनाएँ सम्भव हो सकी है। भारतभूमि का सम्पूर्ण चरित्र वर्णित होने के साथ–साथ विश्वबंधुत्त्वम्, वसुधैवकुटुम्बकम् की भावना, एवं सर्वे भवन्तु सुखिनः, की विश्वमंगलकामना निहित होने के साथ–साथ सज्जनों एवं लोकवन्द्य चरित्रों का विवेचन किया गया है। अतः कथावस्तुविवेचन के आधार पर भी 'भारतायनम्' महाकाव्य का महाकाव्यत्व का सिद्ध होता है।

११. नायकत्व के आधार पर :–

काव्यशास्त्रियों में महाकाव्य के नायकत्व के विषय में मतैक्य नहीं है। प्राचीन काव्याचार्यों ने जहाँ देवता, सद्वंश–क्षत्रिय अथवा किसी उदात्तचरित सज्जन पुरुष को महाकाव्य का नायक होना बताया है; वहीं अर्वाचीन काव्यशास्त्रियों में सर्वसम्मति प्राप्त पद्मश्री प्रो० (डॉ०) अभिराज राजेन्द्रमिश्र के अनुसार महाकाव्य के नायकत्व के सन्दर्भ में स्त्रीत्व–पुरुषत्व पर विचार नहीं करना चाहिए।[139] नायक को समुज्ज्वल चरित्र, लोकविख्यात एवं श्रेष्ठ–गुणान्वित होना चाहिए। यथा –

"सद्वंशः क्षत्रियो वापि धीरोदात्तगुणान्वितः ।
एकवंशभवाः भूपाः कुलजा बहवोऽपि वा ।।"[140]
"नायकस्तत्रदेवः स्यात्प्रजाबन्धुरथो नृपः ।
चारुचर्योऽथवा कोऽपि सज्जनश्चरितोज्ज्वलः ।।"[141]
"पात्रं स्याद् यस्य मुख्यं परमगुणयुतं लोकविख्यातवृत्तं ।।"[142] इत्यादि।

---

135 'दूर्वा'–कालिदाससंस्कृत अकादमी, उज्जैन, अप्रे.–जून २००५ पृ.सं. ६३
136 अभिनवकाव्यालंकारसूत्र– प्रो.राधावल्लभत्रिपाठी,सम्पूर्णानन्दसंस्कृतविवि0, वाराणसी, २००५, ३/१३
137 कविराजविश्वनाथविरचित साहित्यदर्पणम् शालिग्रामशास्त्री,मो०ब०वारा०प्र०२००४, ६/३१६
138 'अभिराजयशोभूषणम्' अभिराजराजेन्द्रमिश्र, वैजयन्त प्र०इलाहाबाद,२००७, ४/६७
139 'अभिराजयशोभूषणम्' अभिराजराजेन्द्रमिश्र, वैजयन्त प्र०इलाहाबाद,२००७, ४/७८
140 कविराजविश्वनाथविरचित साहित्यदर्पणम् शालिग्रामशास्त्री,मो०ब०वारा०प्र०२००४, ६/३१६
141 'अभिराजयशोभूषणम्' अभिराजराजेन्द्रमिश्र, वैजयन्त प्र०इलाहाबाद,२००७, ४/६७
142 'दूर्वा'–कालिदाससंस्कृत अकादमी, उज्जैन, अप्रे.–जून २००५ पृ.सं. ६३

'भारतभूमि' समीक्ष्य महाकाव्य में प्रधानपात्र के रूप में विवेचित है। समग्ररूप से भारतायनम्' महाकाव्य के प्रधाननायक की दृष्टि से विचार करे तो प्रस्तुत महाकाव्य के अनुशीलन से हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि महाकवि ने मानवीयकरण द्वारा देवतुल्य, विश्वगुरुत्त्व को प्राप्त, महान्, उदात्त चरित्र युक्त, सज्जनचरित्र, समुज्ज्वलचरित्र, विश्वविख्यात, श्रेष्ठगुणान्वित अपनी मातृभूमि, भारतभूमि को ही नायक के रूप में चित्रित किया है; जो प्राचीन एवं अर्वाचीन काव्यशास्त्रियों के मतानुसार ही है। वस्तुतः भारतभूमि के नाम पर ही महाकवि आचार्य हरेकृष्णशतपथी ने प्रस्तुत महाकाव्य का 'भारतायनम्' नामकरण किया है। उन्होंने प्रथमसर्ग में भी इस विषय में संकेत करते हुए लिखा है :–

"इदं पवित्र भुवि भारतायनं
तवैव मातः करुणैकसम्भवम्
शिशुत्वबालत्वयुवत्वसौरभं
विभातु तद्भारतभाग्यवैभवम् " ।।"[143]

अतः नायकत्त्व के आधारपर भी 'भारतायनम्' महाकाव्य का महाकाव्यत्व सिद्ध होता है।

१२. वर्ण्यविषयों के आधार पर :–

महाकाव्य के वर्ण्यविषयों के सन्दर्भ में प्रायः आधुनिक एवं प्राचीन काव्याचार्यों में मतैक्य दिखाई देता है। आचार्य विश्वनाथ के अनुसार महाकाव्य में यथासंभव संध्या, सूर्य, चन्द्र, रात्रि, प्रदोष, अन्धकार, दिन, प्रातःकाल, नगर, सागर, गिरि, ऋतु, शशि, रवि, वनाश्रय, उपवन, जलक्रीडा, मधुपान, सुरतोत्सव, विवाह, पुत्रोत्पत्ति, दूत्प्रेषण, राजनैतिकमंत्रणा, युद्धप्रयाण, युद्ध, नायकविजय आदि का सांगोपांग वर्णन होना चाहिए। इसी प्रकार प्रो0 अभिराज' राजेंद्रमिश्र के अनुसार महाकाव्य में यथावसर संध्या, सूर्य, चन्द्र, रात्रि, प्रदोष, अन्धकार, दिन, प्रातःकाल, नगर, सागर, गिरि, ऋतु, शशि, रवि, वनाश्रय, उपवन, जलक्रीडा, मधुपान, सुरतोत्सव, विवाह, पुत्रोत्पत्ति, दूत्प्रेषण, राजनैतिकमंत्रणा, युद्धप्रयाण, झुग्गीझोपड़ियों के वृतान्त को इतिवृत्त के प्रसंगानुकूल वर्णित किया जाना चाहिए। यथा–

"संध्यासूर्येन्दुरजनीप्रदोषध्वान्तवासराः ।
प्रातर्मध्याह्नमृगयाशैलर्तुवनसागराः ।।"
"सम्भोगविप्रलम्भौ च मुनिस्वर्गपुराध्वाराः ।
रणप्रयाणोपयममन्त्रपुत्रोदयादयः ।।"[144]
"प्रातस्संध्यानिशीथेंदुभास्करोदयतारकाः ।
वनोद्याननदीसिंधुप्रपाताद्रिबलाहकाः ।।"
"ग्रामाश्रमपुराऽरामदुर्गसैन्यरणोद्यमाः ।
पुत्रजन्मादिवृत्तान्ताः पामरावाससङ्कथाः ।।"[145]

---

[143] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, १/११७
[144] कविराजविश्वनाथविरचित साहित्यदर्पणम् शालिग्रामशास्त्री,मो०ब०वारा०प्र०२००४, ६/३२२–२३

उपर्युक्त महाकव्यवर्ण्य–विषय सम्बंधित लक्षणों के आधार पर भारतायनम्' महाकाव्य के महाकाव्यत्व के समर्थन में कुछ उदहारण 'भारतायनम्' महाकाव्य से बिन्दुवार नीचे प्रस्तुत किये जा रहे है :–

नगर वर्णन :–

"विराजते भारतमेखलेव या ,
सदा समाकर्षति भक्तदर्शकान् ।
पुराणशास्त्रेषु सुवर्णिता पुरी ,
विभाति कांचीनगरी गरीयसी ।।"[146]

सागर वर्णन :–

"कल्पान्तकालकान्ताय ,
कलिकल्मषहारिणे ।
धारिणे सर्व रत्नानाम् ,
सागराय नमो नमः ।।"[147]

पर्वत वर्णन :–

"जाने **हिमाद्रि**महनीयशुभप्रदेशे ,
श्रीशैलमानसजनाञ्जननं तवाभूत् **।।"**[148]

नागरिक समुदाय वर्णन :–

"हैदरावदाख्यनगरं च ततः समेत्य ,
पौरेश्च तत्र नितरामभिनन्द्यमानः ।**"**[149]

नदी/सरोवर वर्णन :–

"तुंगातरंगायितजलधिजलपुण्यप्रवाहपुण्या , कावेरीवारिधारा.....।।"[150]

रात्रि–वर्णन :–

"गतं दिनं चिंतनतो न निर्णयो, बभूव रात्रिश्च समागता ।"[151]

वन/उपवन वर्णन :–

"पपात् वा पादपवृन्दतो हठादतीव तत्कोमलपल्लवोच्चयः ।"[152]

पुत्रोत्पत्ति वर्णन :–

---

145 'अभिराजयशोभूषणम्' अभिराजराजेन्द्रमिश्र, वैजयन्त प्र०इलाहाबाद,२००७, ४/६६–६७
146 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ६/१२
147 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ४/३७
148 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ३/३
149 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ६/६३
150 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, १०/८
151 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ५/१७
152 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ५/७

" ....स एव परमाचार्यो जातोऽभूद्ब्राह्मणालये ।।"[153]

राजनितिक मंत्रणा :–

"ततश्च मार्गे बहुदेशभक्तैः ,
स्वाधीनतार्थं विहितप्रयत्नैः ।
स्वयं मिलित्वा निजजन्मभूमेः ,
स्वतन्त्रतार्थं कृतवान् विचारम् ।।"[154]

रणक्षेत्र वर्णन :–

"तथाविधानां क्षय एव वैरिणाम् ,
अवश्यकार्यो हि विलम्बनं विना ।
तदर्थमेकस्तु भवेत्सुसज्जितः ,
स्वजीवनस्यैव महारणाङ्गणे ।।"[155]

राष्ट्रवर्णन :–

"असीमसौन्दर्य्यर्विशेषसौरभं ,
हिमालयादन्यदिगन्तवैभवम् ।
यदा नमामि प्रियभारतं मम ,
तदा स्वरूपं प्रतिभाति तेऽम्बिके ।।"[156]

अध्वर (यज्ञ) वर्णन :–

"निमंत्रिताः ब्राह्मणदेववृंदाः ,
तद्यज्ञभागं बहवश्च विज्ञाः ।
तेषां पवित्रैः खिलवेदमन्त्रैः ,
सम्पूरितं तद्गगनं समग्रम् ।।"[157]

तप वर्णन :–

"विहाय भीतिं भवकाननान्तरे ,
सहायताभावविभिन्नमानसा ।
तपश्च तेपे भूवि यापि निश्चला ,
विभाति सा में जननी ; न पार्वती ।।"[158]

खल–निन्दा :–

"कामेन जर्जरितजीर्णविदग्धदेहः ,
क्रोधस्य नर्कवलयेन विशीर्ण्णचित्तः ।

---

153 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ६/१८
154 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ६/५०
155 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, १/११०
156 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, १/१
157 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ६/४
158 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, १/७७

संसारजालपतितः प्रथितो मनुष्यो ,

मोहान्धकारकुहरे भ्रमति प्रकामम् ।।"[159]

इस प्रकार वर्ण्य–विषयों के आधार पर महाकवि आचार्यहरेकृष्णशतपथी विरचित 'भारतायनम्' महाकाव्य का महाकाव्यत्व का सिद्ध होता है।

१३. महाकवि की आत्म–स्वीकृति के आधार पर :–

स्वयं महाकवि आचार्यहरेकृष्णशतपथी ने 'भारतायनम्' महाकाव्य के प्रत्येक सर्ग के अन्त में यह आत्म–स्वीकृति विद्वज्जनमान्य एवं महाकाव्य–लक्षणकारों के मनोऽनुकूल आत्म–स्वीकृति प्रस्तुत करते हुए 'भारतायनम्' के महाकाव्यत्व की पुष्टि की है। यथा–

"इति श्रीकात्यायनगोत्रोद्भवाचार्यहरेकृष्ण–शतपथि–शर्मविरचिते 'भारतायनम' इति महाकाव्ये "भारत–जननी–वात्सल्यमम्" नाम प्रथमस्सर्गः इति।"[160]

इस प्रकार से महाकाव्य लक्षणों के निर्धारण में सर्गबद्धता, मङ्गलाचरण, सर्गविस्तार, नायकत्व, कथावस्तु, अंगीरस, नामकरण, छन्दालंकारप्रयोग आदि वर्णनों के आधार पर "भारतायनम्" महाकाव्य का महाकाव्यत्व सिद्ध होता है।

.....इति द्वितीयोऽध्यायः.....

[159] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, २/२४

[160] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, पृ0संख्या २७

चतुर्थ अध्याय

'भारतायनम्' महाकाव्य का काव्यशास्त्रीय विवेचन।

अ. इतिवृत्त

आ. पात्रानुलोचन

इ. छन्दयोजना

ई. अलंकारयोजना

उ. रसयोजना

ऊ. भाषासौष्ठव

ऋ. काव्यगुणनिरूपण

ए. काव्यदोषनिरूपण

'भारतायनम्' महाकाव्य का काव्यशास्त्रीय विवेचन :

'महाकाव्य' साहित्य का सर्वश्रेष्ठ एवं अद्वितीय काव्यरूप है। 'महाकाव्य' शब्द में 'काव्य' के साथ 'महा' शब्द का विशेषण काव्य की महत्ता के लिये ही वेष्ठित किया गया है। 'महाकाव्य' किसी भी देश, जाति, समाज, राष्ट्र, भाषा अथवा व्यक्ति के जीवन की चरम उपलब्धि है। समग्र जीवन, समाज, संस्कृति आदि के व्यापक चित्रण के साथ–२ कलापक्ष का चित्रण भी महाकाव्य की विशेषता है, जैसा की प्रो० (डॉ०) राधावल्लभत्रिपाठी ने कहा है– "**इनमें (महाकाव्य में) जीवन के समग्ररूप का निरूपण होता है। समग्रजीवनरूप– निरूपण से ही काव्य में महाकाव्यता आती है।**"[161] प्रस्तुत महाकाव्य के "काव्यशास्त्रीय विवेचन" विषयान्तर्गत क्रमशः महाकाव्य के इतिवृत्त, पात्रविवेचन, छन्दयोजना, अलङ्कारयोजना, रसनिरूपण, भाषासौष्ठव तथा गुण–दोष विवेचन यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है।

अ. इतिवृत्त–विवेचन :–

संस्कृत काव्याचार्यों ने 'दृश्य–श्रव्य' द्विविध काव्यों में महाकाव्य का प्रामुख्य स्वीकार किया है। महाकाव्य में इतिवृत्त का अपना एक विशिष्ट स्थान होता है। महाकाव्य के 'इत्तिवृत्त' से अभिप्राय 'कथात्मक काव्य' से ही है।[162] पाश्चात्य समालोचकों ने महाकाव्य को 'कथाकाव्य' का पर्याय कहा है।[163] कथावस्तु अथवा इत्तिवृत्त की व्यापकता, प्रसिद्धि एवं सुगठित स्वरूप के कारण ही कोई काव्य 'महाकाव्य' की गरिमामय उपलब्धि को प्राप्त करता है। प्राचीन काव्यशास्त्रियों के मतानुसार जहाँ महाकाव्य के इतिवृत्त को '**पौराणिक, ऐतिहासिक, अथवा सज्जनाश्रित,** होना चाहिए;[164] वहीं अर्वाचीन काव्यशास्त्रियों के अनुसार महाकाव्य का इतिवृत्त **'लोकवन्द्यजनाश्रित'**[165] होना चाहिए; जो विश्वमङ्गल का स्थापक एवं विश्वबन्धुत्व का ख्यापक हो। महाकाव्य का इतिवृत्त देश, जाति, तथा समाज की समस्या का निर्देश करने वाला, महापुरुषों के जीवनचरित्र को वर्णित करने वाला, कर्ममार्ग का निर्देशन करने वाला तथा "कर्मयोगतत्त्व" को उद्धृत करने वाला होना चाहिए।[166]

काव्य के इत्तिवृत्त को कथा, वस्तु, कथावस्तु आदि नामों से अभिहित किया जाता है। काव्य का इत्तिवृत्त –आधिकारिक एवं प्रासंगिक– दो प्रकार का होता है। आधिकारिक कथावस्तु काव्य

---

161 अभिनवकाव्यालंकारसूत्र– प्रो.राधावल्लभत्रिपाठी,सम्पूर्णानन्दसंस्कृतविवि0, वाराणसी, २००५, पृ०सं० ३२६

162 'सं0 सा0का आलो0 इति0'– डॉ.रामजी उपाध्याय, रामनारायणलालविजयकुमार प्र०इलाहाबाद ,१९७३, पृ०सं० १०६

163 सं०सा०का इतिहास–डॉ०सत्यनारायणपाण्डेय,चौ०,प्र०वारा०,२०१२, पृ०सं० २७५

164 "इतिहासोद्भवं वृत्तमन्यद्वा सज्जनाश्रयम्।''कवि0वि0वि0साहि0द0 शालिग्रामशास्त्री,मो०ब०वारा०प्र०२००४,६/३१८

165 "लोकवन्द्यजनाश्रयम् ।ख्यापयद्विश्वबंधुत्वं स्थापयद्विश्वमंगलम्।।''अभि0यशो0'अभि0रा0मिश्र,वैज0प्र०इला0,२००७, ४/६६

166 "देशजातिसमाजानामवस्थां निर्दिशत् क्रमात्।
वर्णयत् तत्प्रसंगेन महापुरुषजीवनम् ।।
विश्वरूपं वैश्विकं वाऽपि दर्शनं कर्मणां गतिम्।
कर्मयोगस्य तत्त्वं च सकलं समुदाहरत् ।।"–अ0का0सूत्र'–प्रो.रा0व0त्रिपाठी,सम्पू0सं0विवि0,वा0,२००५, पृ०३२६

की मूल वस्तु होती है। कथाप्रधान आख्यान प्रासंगिक कथावस्तु कहलाते हैं। महाकाव्य के इतिवृत्त के विकास में प्रासंगिक आख्यान अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान रखते हैं क्योंकि महाकाव्य का विकास कथाप्रधान आख्यानों से ही माना जाता है।[167]

काव्याचार्यों द्वारा प्रस्तुत उक्त इत्तिवृत्तविशेषताओं के आधार पर हमने 'भारतायनम्' महाकाव्य के इत्तिवृत्त कसौटी पर परखने का प्रयास किया है। समीक्ष्य महाकाव्य के प्रणेता महाकवि आचार्यहरेकृष्णशतपथी की दीर्घ सांसारिक अनुभूतियाँ; राष्ट्र, धर्म एवं संस्कृति के प्रति अनुराग एवं लोकव्यवहार में सिद्धहस्तता आदि गुणों का परिचय हमें उनकी कृतियों के अनुशीलन से प्राप्त होता है। भारतायनम्' महाकाव्य में उन्होंने मानवहृदय की उदयमान परिस्थितियों एवं भारतभूमि के गौरव का चित्रण वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अत्यन्त मनोवैज्ञानिकता से किया है।

प्रस्तुत महाकाव्य की प्रधान कथावस्तु, दशसर्गों में, कुल ६५६ पद्यों में विस्तृत है, जिसमें अनेक प्रासंगिक कथायें समाहित है, जो भारतभूमि के महिमामण्डनरुपी महासरिता को प्रवाह देने वाली लघुसरिताओं के समान एक अथवा एकाधिक सर्गों में विस्तृत है। उत्तर में देवात्मा हिमालय से दक्षिण में हिन्दमहासागर तक एवं पूर्व में अरुणाचल से पश्चिम में अरबसागर तक विषमचतुर्भुजाकार में सुविस्तृत यह सम्पूर्ण भारतभूमि हमारी 'जननी' है। हम सब भारतीय इसकी सन्तति हैं। दशसर्गों में सुविस्तृत 'भारतायनम्' महाकाव्य की कथावस्तु आदिकाल से ही विश्ववन्दिता एवं विश्वगुरु के रूप में पूजिता, 'भारतभूमि' पर आधारित है। भारतभूमि का जननी के रूप में विवेचन, जननी एवं जन्मभूमि के महात्म्य का वर्णन, भारतभूमि के भूदृश्यों, धार्मिक एवं सांस्कृतिक स्थलों के वर्णन के साथ–२ आतंकवाद, क्षेत्रवाद, साम्प्रदायिकता, पर्यावरण–प्रदुषण, भ्रष्टाचार आदि के कारण खिन्नहृदया भारतभूमि का मार्मिकचित्रण महाकवि ने प्रस्तुत किया है। महाकाव्य के इत्तिवृत्त के विकास में 'भारत–जननी–वात्सल्यम्'; 'मातृगौरवशिशुस्पन्दनम्'; 'भारत–नीलाञ्चल –महिमवर्णनम्'; 'महोदधिमहिमवर्णनम्'; 'सागरसमर्पणम्'; 'नृप इन्द्रदयुम्नप्रकरण, द्वारिकावद्रिनाथमहिमा'; काशीमहात्म्य'; गंगाव्यथा', काञ्चीवैभव'; आदिशंकर'; चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वती'; आदि प्रासंगिक कथाओं के माध्यम से महाकवि ने भारतभूमि के महान स्वरूप को प्रस्तुत किया है। 'भारतायनम्' महाकाव्य की कथावस्तु अर्वाचीन कव्यलक्षणशास्त्रियों द्वारा प्रस्तुत महाकाव्यस्वरूप के अनुरूप 'कविकल्पित एवं सज्जनचरिताश्रित है। समस्त संसार में पवित्रतमा यह भारतभूमि हम सब की माता है; और हम सब भारतीय इसकी सन्तति हैं। महाकवि ने भारतभूमि की जननी के स्वरुप में परिकल्पना की है। यथा–

''माता हि नो जगती भारतभूमिरेषा ,
तस्याः वयं हि नियतं शिशुपुत्रकल्पाः ।
स्तन्यामृतं मधुमयं समवाप्य तस्याः ,
सर्वे भवन्तु सुखिनः शिशवः तदङ्के ।।"[168]

---

[167] 'सं.सा.का इतिहास'– प्रो.कैलाशनाथ द्विवेदी – रा०सं०सा०केंद्र जयपुर भूमिका पृ०सं० ५

''धन्यं तत् शाश्वतं पुण्यं ज्ञानदीप्तं हि भारतम् ।

यत्रैव शिशवः सर्वे वन्दिता भारतायने ।।''[169]

महाकवि देश में व्याप्त साम्प्रदायिकता, क्षेत्रवाद, आतंकवाद, नक्सलवाद, भ्रष्टाचार, राष्ट्रद्रोह आदि समस्याओं पर दुःख व्यक्त करते हुए कहते हैं कि आज हम भारतीय ही आपस में विभाजित हैं। इस अवस्था में 'वसुधैवकुटुम्बकम्' एवं 'विश्वबन्धुत्तवम्' कैसे सम्भव है? यह भारतभूमि कहीं पाकिस्तान प्रायोजित आतंक से पीड़ित है, तो कही खालिस्तान, गुर्खालैंड जैसे कलुषित मानसिकताओं वाले लोग भारतभूमि पर आतंक मचा रहें हैं। अपना अंग–भंग होने की आशंका से भारतमातृभूमि निरन्तर विलाप कर रही है। यदि हम अपनी जन्मभूमि के अश्रु भी नही पोंछ सकते तो हमारा इस भूमि पर जन्म लेना धिक्कार है। यथा–

"विज्ञानस्य परे युगे सुरनदीतीरेऽधुना नूतना,

व्यामोहात् किमपि प्रसाधनधिया शिल्पाञ्चलाः निर्मिताः ।

तेभ्यः किन्तु विनिर्गतैश्च वाष्पादिभिर्दुषणैः,

नष्टं भारतजीवनं भवति चेद् विज्ञानदानेन किम् ? ।।"[170]

"का वा विश्वकथाव्यथा ! श्रुणु सखे ! माता स्वयं क्रन्दति ,

तस्या अश्रुजलं वहत्यविरतं ह्युष्णं सदा जाह्नवी ।

संतानाश्च तथापि भारतभुवि व्यामोहतः नीरवाः '

धिक् तत्जन्म यतो न नेत्रसलिलं सम्प्रोञ्छितुं शक्यते ।।"[171]

स्वयं भगवान् के श्रीमुख से उद्धृत देववाणी 'संस्कृत' की अमृतधारा प्रभुकृपा से सम्पूर्ण विश्व में प्रवाहित हो रही है। ऋषिमुनियों से वन्दित, आध्यात्म, एवं वैज्ञानिकनीतियुक्त, इस देववाणी का प्रचारप्रसार प्रियभारत के भाग्योदय के लिये अत्यावश्यक है। सभी भाषाओं की जननी यह भाषा 'सर्वे भवन्तु सुखिनः; 'विश्वबधुत्वम्' एवं 'वसुधैवकुटुम्बकम्' की भावनाओं की पोषिका है। इस देवभाषा की उन्नति, सेवा एवं संवर्धन करना ऋषियों एवं विद्वानों के साथ ही हम सब भारतीयों का परम कर्त्तव्य है। क्योंकि संस्कृतभाषा की उन्नति में ही राष्ट्र की उन्नति है। यथा–

"अस्माकमेव विदुषाञ्च सतां समेषां ,

कर्त्तव्यमस्ति सुरगीः परिरक्षणार्थम् ।

नोचेच्च पूर्णप्रगतिः प्रियभारतस्य ,

नैवं हि संभवति संस्कृतमन्तरेण ।।"[172]

इस प्रकार "भारतायन' महाकाव्य के इतिवृत्तविवेचन के आधार पर हम यह सकते हैं कि समीक्ष्य महाकाव्य की कथावस्तु काव्यरसज्ञों के लिए हृदयानुरञ्जक एवं प्रेरणादायक है।

---

[168] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, १/१२०

[169] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ३/५

[170] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ८/२६

[171] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ८/५८

[172] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, १०/३६

आ. पात्रानुलोचन :–

महाकवि आचार्य हरेकृष्ण शतपथी की अमरकृति 'भारतायनम्' महाकाव्य आधुनिक महाकाव्यों में अन्यतम है। इस महाकाव्य में अर्वाचीन महाकाव्य के वे सभी लक्षण प्राप्त होते हैं जिनमें नायकत्व अथवा पात्रत्व के नए प्रतिमानों की स्थापना की गयी है। पात्रों के चित्रण में महाकवि पूर्णतः सफल हुए है। जिस प्रकार आदिकाव्य 'महाभारतम्', 'रघुवंशम्' 'स्वतन्त्रतोदयम्', 'स्वराजविजयम्', 'स्वतन्त्रयसम्भवम्' आदि महाकाव्यों में विभिन्न प्रसंगों में विभिन्न पात्रों का चित्रण हुआ है। तदैव महाकवि आचार्य हरेकृष्ण शतपथी ने अपनी उदात्त कल्पनाओं का साधिकार उपयोग करते हुए, मानवीकरण द्वारा भारतमातृभूमि के प्राधान्य सहित अनेक पात्रों का चित्रण किया है। भारतभूमि की महिमा से मण्डित इस महाकाव्य में 'शिशु', 'प्रभुजगन्नाथ', 'नृप–इन्द्रद्युम्न', 'महोदधि, 'काशीविश्वनाथ', 'आदिशंकराचार्य', 'कामकोटि मठाधीश–चन्द्रशेखरेन्द्रसरस्वती (अष्टम)', 'प्रभुवेंकटेश्वर', 'श्रीकृष्ण', 'द्वारिकाधीश' 'प्रभु बद्रीनाथ', 'अर्जुन', 'बालक ध्रुव', 'भगवान विष्णु', 'प्रभु सोमनाथ', 'महात्मा गाँधी', भगवान एकाम्बरनाथ', 'मध्वाचार्य', 'चालुक्य राजा सोमेश्वर' 'रामानन्दाचार्य', 'महामना पण्डित मदनमोहनमालवीय' 'विश्वावसु' आदि पुरुषपात्रों के रूप में गणित हैं। स्त्रीपात्रों में 'जननी', 'माता पार्वती', 'गान्धारी' 'यशोदा', 'देवी लक्ष्मी' 'देवी मीनाक्षी', 'रानी गुण्डिचा', 'देवी मल्लिका' 'देवी सुभद्रा' आदि उपस्थित हैं। साथ ही मानवीयकरण द्वारा 'नीलाञ्चलक्षेत्र', 'सुदर्शनचक्र', 'महोदधि', 'सागर', 'पुरीतीर्थ', 'द्वारिकातीर्थ', 'रामेश्वरम्', 'पृथ्वी', 'देवनदी गंगा', सभी सिद्धियों की मूल 'साधना', 'सौराष्ट्र', 'काशीतीर्थ', 'काञ्चीपुरम्, 'तिरुपतितीर्थ', 'स्वर्णभूमि–कर्णाटक' आदि पात्रों का चित्रण आधुनिकरीति से किया गया है। महाकाव्य के प्रमुख पात्रों का पात्रानुगुण संक्षिप्त परिचय यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है :–

१. भारतमातृभूमि :–

'भारतायनम्, महाकाव्य में महाकवि ने मानवीयकरण द्वारा देवतुल्य, विश्वगुरुत्त्व को प्राप्त, महान्, उदात्तचरित्रयुक्त, सज्जनचरित्र, समुज्ज्वलचरित्र, विश्वविख्यात, श्रेष्ठगुणान्वित अपनी मातृभूमि, 'भारतभूमि' को नायक अथवा प्रमुख विवेच्यपात्र के रूप को चित्रित किया है जो प्राचीन एवं अर्वाचीन काव्यशास्त्रियों के मतानुसार ही है। यथा :–

"नेता विनीतो मधुरस्त्यागी दक्षः प्रियंवदः ।
रक्तलोकः शुचिवाग्मी रूढवंशः स्थिरो युवा ।।
बुद्धयुत्साहःस्मृतिप्रज्ञाकलामानसमन्वितः ।
शूरो दृढश्च तेजस्वी शास्त्रचक्षुश्च धार्मिकः ।।"[173]
"त्यागी कृती कुलीनः सुश्रीको रूपयौवनोत्साही ।
दक्षोनुरक्तलोकस्तेजोवैदग्ध्यशील्वान्नेता ।।"[174]

---

[173] आ० धनञ्जय कृत 'दशरूपकम्'– डॉ०भोलाशंकरव्यास, चौ०प्र०,वारा०२०१०, २/१–२

"नायकस्तत्रदेवः स्यात्प्रजाबन्धुरथो नृपः ।

चारुचर्योऽथवा कोऽपि सज्जनश्चरितोज्ज्वलः ।।"

"लोकोत्तरगुणादर्शः पुरुषो नायको भवेत् ।

महीयसी पुरंध्री वा नाऽत्र कार्या विचारणा ।।"[175]

अर्थात् विनीत, मधुर, त्यागी, दक्ष, पवित्र, धैर्यवान्, दानशील, कुशल, उच्चकुलप्रसूत, सुश्रीक, लोकानुरक्त, लोकोत्तरगुणादर्श, नायक के विषय में पुरुषत्व अथवा स्त्रीत्व के विषय में विचार नहीं किया जाना चाहिये।

जम्बूद्वीप के रूप में भारतभूमि के समुज्ज्वल एवं उदात्तचरित्र के विषय में स्वयं भगवान् बोधिसत्त्व की उक्ति को महाकवि शतपथी ने महाकाव्य की भूमिका में उद्धृत किया है। यथा –

"चित्रं जम्बूद्वीपः मनोरमं जीवितं मनुष्याणाम् ।।"[176]

''विश्वविख्यातमभूत् स्वसौरभवशात् रम्यस्थलं भारतं

जम्बूद्वीपमिदञ्च चित्रमपि तद् बुद्धः स्वयं प्रोक्त्वान् ।

नानाकाननपर्वतप्रियनदीवेलाविशालं महत्

तीर्थस्थानमिदं न कस्य ह्रदयं कर्तुं प्रसन्नः क्षमम् ।।"[177]

ऐश्वर्य–औदार्य–वैभव–गौरवपरिपूर्ण, शान्त–कान्तस्वरूपा, स्वर्ग से भी सुन्दर, विविधतीर्थ –पवित्रा, शिक्षा–साहित्य–संस्कृति–राजनीति–पर्यटन–आध्यात्मिकता–शान्ति–मैत्री आदि की दृष्टि से विश्वगुरुस्वरूपा, असीमसौन्दर्य से विभूषिता, हिमालय से अन्य दिशाओं में विस्तृतवैभवा, जननीस्वरूपा, धन्या, शाश्वतपुण्यज्ञानदीप्ता, दलितमानवरक्षणतत्परा, कलितकोटिकमलाकरा, चालितकालकरालकृपाकरा, ऋष्याश्रितशान्ततपोवना, निजयशोज्ज्वला, सकललोकविश्रुता, कविकीर्तिता, ऋषिमुनिदानवदेवताओं की तपस्याओं से परिमण्डिता, गुरुपरम्परापरिदीपिता, मनोरमा, सुरम्या, मोक्षदायिनी, सुरार्चिता, जगद्गुरुनामविभूषिता, सत्य–शिव–सुन्दरगुणों से परिचित, शाश्वत एवं पुण्यज्ञानदीपिका, इस भारतभूमि पर जन्म लेना हमारा सौभाग्य है। यथा–

"इदं हि सौभाग्यमहो महत्तपः ,

कृतं मया प्राक्तजन्मजन्मनि ।

यतोऽत्र लब्धं जननं हि पावनं ,

पवित्रिते भारतभूमिमण्डले ।।"[178]

भारतभूमि तीर्थों एवं तपोवनों की भूमि है। इस पवित्रभूमि पर स्थित द्वारका, काशी, काञ्चीपुरम, बद्रीनाथ, पुरी, रामेश्वरम्, श्रृङ्गेरी, बोधगया, मदुरै, चिदम्वरम्, तिरुपति, श्रीशैल,

---

[174] कविराजविश्वनाथविरचित साहित्यदर्पणम् शालिग्रामशास्त्री,मो०ब०वारा०प्र०२००४, ३/३०

[175] 'अभिराजयशोभूषणम्' अभिराजराजेन्द्रमिश्र, वैजयन्त प्र०इलाहाबाद,२००७, ४/६७एवं४/७८

[176] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, भूमिका पृष्ठ सं० i

[177] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ८/४५

[178] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ३/२३

कुम्भकोणम्, आदि तीर्थ इसके गौरव हैं। यहाँ के तीर्थों में धर्म एवं दर्शन का समन्वय दिखाई देता है। इस प्रकार भारतभूमि 'भारतायनम्' महाकाव्य की नायिका है। यथा :–

''विस्तीर्णरम्यतमभारतभूमिरेषा ।
या जन्मभूमिरतुला जननी समेषाम्।।''[179]
"असंशयं या विजयस्य कुंजिका ,
परं रिपून्मूलनकौशलात्मिका ।
अलोकसामान्यसुशक्तिदायिका ,
त्वमेव तस्या जननीह नायिका ।।"[180]

२. जननी :–

वात्सल्य, दया, त्याग, तपस्या, धैर्य, क्षमा, शान्ति, मति, चेतना, रहस्य एवं रोमाञ्च की प्रतिमूर्ति, अखिलशक्तिशालिनी, सृष्टिसौरभा, महनीयमानसा, गंगा–पृथ्वी–आर्यम्बा–गान्धारी–सावित्री–गार्गी–पार्वती–हरिप्रियालक्ष्मी–सरस्वतिस्वरूपा, सृष्टिपालिका, अनन्तमाधुर्यविभूषिता, दयामयहृदया, सुपूजिता, जन्मजन्मान्तरदुःखहारिणी, भवभद्रकारिणी, विजयकुञ्चिका, भवसागरतारिणी, जन्मवेदिका, 'जननी' की कृपा से ही हम सब विभिन्न कष्टों को सहने में समर्थ है। मूलप्रकृतिरूपिणी, जगत्हितार्थ–विधाता–निर्मिता–'जननी' ने पृथ्वी पर ईश्वरीय सृष्टि को संरक्षित किया है। जननी आत्मसुख एवं समस्त वैभवों को छोड़कर सदैव अपनी सन्तति के लिए तप करती है। यथा –

''धृतं हि गर्भं नवमासमञ्जसा
तया च सोढाऽखिलगर्भवेदना।
न चास्ति कालो दिवसोऽथवा निशा
कदा प्रसूते जननी स्वसन्ततिम्।।''[181]
"समस्तवस्तूनि समस्तबांधवान् ,
समस्तसौन्दर्यमनन्तवैभवम् ।
विहाय मातस्तवसन्ततेः कृते ,
कृतं तपः केवलमेव जीवने ।।"[182]

जननी एवं जन्मभूमि को स्वर्ग से भी महान बताते हुए कवि ने प्रस्तुत महाकाव्य में जननी के उदात्त चरित्र को प्रस्तुत करते हुए कवि ने जन्मभूमि को भी जननी के रूप में ही वर्णित किया है

---

[179] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, २/१
[180] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, १/११२
[181] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, १/१२
[182] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, १/५२

:– **"अस्माकं या जननी, सा एव जन्मभूमिः ; या च जन्मभूमि सा अपि जननी । अतः भारतम् एव अस्माकं जननी ; जन्मभूमिश्च ।"**[183]

३. भारतभूमि के पुत्र ('शिशु') :–

यहाँ 'शिशु' से अभिप्राय एक शिशु से न होकर भारतसन्तति के लिए समष्टि रूप में प्रयुक्त, भारतभूमि पर जन्म लेने वाले सभी मनुष्यों से है। आत्मगौरव–'शिशु' को जननी को नवमाह तक अपने गर्भनिलय में धारण कर अनेक असहनीय पीडाओं को सहती है। तदुपरान्त निश्छल, निर्मल वह 'शिशु' ईश्वर के दिव्यरूप को धारण कर, माँ के गर्भ से पृथ्वी पर अवतरित होता है। ईश्वरीय रूप वह शिशु समस्त सांसारिक राग, द्वेषादि से रहित होता है। शत्रुरहित उस शिशु के लिए लाभ–हानि, सुख–दुःख सब सामान होते है। वह पूर्णतया जननी पर आश्रित होकर रहता है। यथा –

"यद्दीयते शिशुरहोऽत्र तदेव भुंक्ते ,
नो दीयते यदि कदा स तथैव शेते ।
पित्रोरथान्यपरिवारसदस्यकानाम् ,
स्नेहं ह्यवाप्य विमलं परिवर्धतेऽसौ ।।"
"यच्चिन्तयत्यपि मनोनिलये तदेव ,
व्यक्तं करोति सरलत्वगुणोपयोगात् ।
मानं कदाचिदपमानपीह लब्ध्वा ,
सर्वत्र वै शिशुरहो सुतरामसक्तः ।।"[184]

शैशवावस्था व्यतीत हो जाने के साथ ही मनुष्य के स्वभाव में चातुर्य, दुष्टता, दंभ, दर्प आदि अनेक कलुषित मनोवृत्तियां मनुष्य में प्रविष्ट होती जाती है। उसकी कथनी और करनी में अन्तर आने लगता है; एवं स्वार्थ, काम, क्रोध, लोभ, मोहादि सांसारिक मलिन मनोवृत्तियों के जंजाल में फ़सकर; उस मधुमय शैशवावस्था के स्वभाव को पूर्णतया त्याग कर विश्वासघात एवं छलयुक्त होकर अनेक योनियों में भटकता रहता है। मिथ्या गर्व से गर्वित मनुष्य अपने कटुवचनों से स्वजनों का अपमान करने लगता है। सांसारिक बन्धनों में परिबद्ध वह अपने निश्छल निर्मल शिशुस्वरुप का पूर्णतया विस्मरण कर कामवासनाओं से जर्जरित होकर अन्धकार में भटकता रहता है। यथा –

"तं शैशवं मधुमयं रसभावपूर्णं ,
त्यक्त्वाऽधुनाऽस्म्यहमहो भुवि नर्कयात्री ।
विश्वासहीनहृदयश्छलनाभ्युपेतः ,
स्वार्थे निबद्धनयनः खलु सञ्चरामि ।।"[185]

---

[183] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, आत्मनिवेदनम् पृष्ठ सं० v

[184] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, २/१६, एवं २/२६

४. प्रभुजगन्नाथ :–

नीलमाधव, पुरुषोत्तम आदि नामों से प्रसिद्ध; 'प्रभु जगन्नाथ' जगत्पालक विष्णु के अवतार हैं। समस्त कष्टों के हर्ता, नीलमाधव, जगदीश, मङ्गलमात्रकारण, विशालसंसार–कृपापरायण, दारुमूर्ति, रहस्यमूर्ति, कालकल्मषनाशदक्ष, नीलाम्बुदश्यामलकान्तिकान्त, नीलसरोजनेत्र, संसारधाता, अनन्तरूप, वेदान्तवेद्य, ह्रतपापताप, अनाथनाथ,दीनार्तिनाश, करुणाविलास, सत्यप्रकाश, जगद्वरेण्य, मोहान्धकारविनाशसूर्य, अपाणिपाद, भवभयहर, कान्तवपुष, जैनों के जिन, बौद्धों की परमशरण, कृष्णरूप, आनन्दाधार, संसारसार एवं भयनाशक 'प्रभुजगन्नाथ' दिव्य दारुमयशरीर को धारण कर, धर्म एवं दर्शन के समन्वित रूप में पुरीतीर्थ में विराजते हैं। यथा –

"रहस्यमूर्त्तिर्भुवि दारुविग्रहः ,
मनुष्यकल्याणविधानतत्परः ।
स एव विश्वोद्गतधर्मदर्शन–
समन्वयः श्रीपुरुषोत्तमो महान् ।।"[186]

नीलगगन के समान कान्तिमय काया से युक्त; कमल के समान सुन्दर नेत्र वाले, संसार के पालक, समस्त पापों के नाशक, दीनहीनों के नाथ, सत्यप्रकाश, करुणाविलास, 'प्रभुजगन्नाथ' ने भक्त 'प्रहलाद' की रक्षा हेतु नृसिंह का अवतार धारण कर हिरण्यकशिपु का संहार किया। त्रेतायुग में रावण के विनाश हेतु साक्षात् धर्म के अवतार पुरुषोत्तम 'श्रीराम' के रूप में जन्म लेने वाले प्रभुजगन्नाथ सृष्टा एवं नियन्ता के रूप में पूजित हैं। अपाणिपाद होने पर भी सर्वत्रविचरण एवं सर्ववस्तुग्रहण में समर्थ हैं। यथा –

"अपाणिपादोऽपि समस्तवस्तु–
ग्रहेऽसि शक्तश्चलने समर्थः ।
त्वमेव साकारकलानिधानः
त्वं वै निराकारनिरन्त्यनित्यः ।।"[187]

५. राजा इन्द्रद्युम्न :–

अवन्तिकापुरी के राजा, बहुभाग्यभाजन, नृपों में अनन्य, अतुलभक्तिचेतन, भक्तिप्रचोदितमन, पुरुषोत्तम, भक्तराज, राजा इन्द्रद्युम्न प्रजावत्सल सम्राट हैं। राजा इन्द्रद्युम्न प्रभु नीलमाधव के दर्शनार्थ अवन्तिकापुरी का राजपाट त्यागकर महोदधि तट पर पवित्र पुरुषोत्तमक्षेत्र में पहुँच जाते हैं। किन्तु अपनी पदवी के गर्व से गर्वित राजा, प्रभु के दर्शन प्राप्त करने में समर्थ नहीं हो पाता है। अत्यन्त विनम्र राजा इन्द्रद्युम्न को भगवान् स्वप्न में दर्शन देकर
महोदधि से पवित्र दारुखण्ड लाने से पूर्व वह सागर से उसे ले जाने की अनुमति मांगते

---

[185] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, २/३६
[186] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ३/१८
[187] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ६/२१

हैं। यथा –

"देहि प्रभो ! जलानिधेऽनुमतिं हि मह्यं ,
त्वन्मूर्तिनिर्मितययेव नयामि दारु ।।"[188]

वैदिक संस्कृति में अटूट आस्थावान् राजा इन्द्रद्युम्न किसी भी शुभकार्य को करने से पूर्व यज्ञानुष्ठान करवाते हैं। राजा अथितिसेवा को अपना धर्म समझकर, यज्ञानुष्ठान के उपरान्त मनोवाञ्छित दान करने वाला महान धार्मिक एवं दानी है। वह समर्पितात्मा होकर वृद्ध शिल्पी को विग्रहनिर्माण का कार्य सौंप तो देता है। किन्तु अत्युत्सुकता एवं धैर्यहीनता का परिचय देते हुए नियतावधि से पूर्व बन्द प्रकोष्ठ के द्वार उद्घाटित कर पुनः दुःख का भागी होता है। यथा–

"कृतं हि किं दुष्कृतमेव जीवने
यतो न लब्धं हि ममेष्टदर्शनम् ।
न वा स्वधर्मो विहितस्ततः फलं
न लब्धमित्येव नृपो व्यचिन्तयत् ।।"[189]

श्रीजगन्नाथ मंदिर पर प्रदर्शित अत्युत्कृष्ट स्थापत्यकला से राजा इन्द्रद्युम्न के स्थापत्यकलानुरागी होने का पता चलता है।

६. महोदधि :–

महोदधि समस्ततीर्थों का सार, समस्ततीर्थों का स्वामी, अनेक प्राणियों के जीवन का रक्षक, श्रीहरि एवं लक्ष्मी का पुण्य निवास, रम्यनायक, संसार का पोषक, भीमरूप, अत्यन्त गम्भीर, शान्तस्वरूप, मुक्तिदायक, दिव्यदेह, समुद्रमंथन के समय अमृत आदि अनेक शुभकारी वस्तुओं के दाता, भक्तवत्सल, सर्वरत्नों के निधि, 'पुरुषार्थ–चतुष्टय'– (धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष) के दाता है; जो कभी–कभी तटलङ्घन करके 'सुनामी' आदि के स्वरुप में अपना भयङ्कर रूप लोगों को दिखता है। सागर ने अनेक कष्टों को सहकर देवों के लिये अमृत का सृजन कर, द्वेष त्यागकर सब की तृषा को शान्त कर, श्रीराम की नगरी अयोध्या एवं रावन की लंका के मध्य सेतु का कार्य करके, जगत का कल्याण किया है। यथा–

"विश्वस्य मङ्गलविधाननिमित्तमेव ,
मन्थाचलेन महता परिपीड़ितस्सन् ।
नित्यं ददासि सकलं सुभकारिवस्तु ,
हे लोकपोषक ! महार्णव ! तव सुप्रभातम् ।।"[190]

७. द्वारिकाधीश 'श्रीकृष्ण' :–

महाकाव्य के प्रथम, द्वितीय, चतुर्थ एवं सप्तमसर्ग में भगवान् श्रीकृष्ण का चित्रण हुआ है। प्रथम एवं द्वितीयसर्ग में कवि ने उनकी बाललीलाओं का चित्रण किया है। प्रथमसर्ग में जहाँ

---

[188] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ६/२
[189] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ३/३१
[190] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ४/१८

मक्खनचौर, नटखट, चञ्चल कान्हा का चित्रण महाकवि ने किया है; वहीं द्वितीयसर्ग में शिशुरूप कान्हा की दिव्य लीलाओं का चित्रण महाकवि ने प्रस्तुत किया है। यथा–

"संप्रेक्ष्य विस्मृतमना वसुदेव आसीत् ,
सा देवकी चकितचेतसि तं वहन्ती ।
जातावुभावपि भियापि विमुर्च्छितौ तौ–
वेवं पुराणपटलेऽस्ति शिशोः प्रभावः ।।"[191]

योगेश्वर, अभीष्टसिद्धिप्रदमादिवीज, संसारसृष्ट्यनादितत्व, श्रीरुक्मणी–मानसपद्मसूर्य, रम्याकृति, प्रजास्थितिकर्महेतु, रसेश्वर, सुमधुर, वंशीधर, वसुदेवपुत्र, भगवान श्रीकृष्ण द्वारिकाधीश रूप में विराजतें हैं। जगत के अनादितत्व जगदीश्वर प्रभु द्वारिकाधीश के दर्शन मात्र से ही मोक्ष की प्राप्ति हो जाती है।

८. द्वारिका :–

भारतभूमि के पश्चिम में विराजित, प्रसिद्द तीर्थ, प्रभु श्रीकृष्ण की प्रिय राजधानी, 'द्वारावतीतीर्थ' नाम से प्रसिद्द, दिव्यदिप्ति, पृथ्वी के धामों में धन्या, सुपुण्या, नगरों में अनन्या, विश्वविभाग्रगण्या, धर्मप्रदा, लावण्यपूर्णा, पुण्यधाम–'द्वारिका' का मानवीकरण द्वारा विशद् वर्णन हुआ है। द्वारिकाधीश, प्रभु सोमनाथ एवं राष्ट्रपिता महात्मागान्धी की पुण्यभूमि 'द्वारिका' अपनी विशाल मन्दिरमेंखलाओं के लिये विश्वप्रसिद्ध है। चारधामों में अनन्य द्वारिकानगरी के विशाल द्वार मन की विशालता के प्रतीक हैं। भगवान् द्वारिकाधीश की प्रधानपुरी 'द्वारिका' सुरम्य सागरतटों से युक्त धर्मप्रदा नगरी है; जो सागर के जल में साधु के समान योगलग्ना रहती है। यथा–

"सौराष्ट्रसंशोभितसागरस्य ,
तीरेऽपि नीरे स्मरणीयशोभा ।
आभाति वेलावलयाभिलग्ना ,
सा द्वारिका सम्प्रति योगलग्ना ।।"[192]

९. प्रभु बद्रीनाथ :–

हिमालय पर, भारतमाता के आंचल में, भव्य द्वारों से युक्त सुन्दर मन्दिर में, तपस्विवेश में समाधिमग्न, शान्ताकृति, कमनीयरूप, साधना के प्रत्यक्ष रूप, प्रभु बद्रीनाथ हिमालय पर लोकहितार्थ निरन्तर तपस्या करते हुए, संसार को प्रेम एवं तपस्या का सन्देश देते हैं। यथा–

"तपस्विवेशेन समाधिमग्नः ,
निसर्गरम्येऽत्र हिमाद्रिहर्म्ये ।
प्रकासितः विश्वहिताय साक्षात् ,
ददाति वार्तां तपसः प्रसिद्धाम् ।।"[193]

---

[191] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, २/३४
[192] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ७/६
[193] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ७/२२

१०. साधना :–

समस्त सिद्धियों को दात्री–'साधना' इस दुस्तर संसार में जीवन जीने का साधन है; जिसका आचरण जगत के पालनार्थ भगवान् विष्णु भी करते हैं। वस्तुतः साधना के द्वारा सबकुछ संभव है।

"विधीयते येन शुभस्य कामना '
विराजते यस्य च विश्वभावना ।
व्यवस्थिते चेतसि यस्य धारणा ,
न तेन किं वा क्रियतेऽत्र साधना ?।।"[194]

११. प्रभुविश्वनाथ :–

"काशीविलास" शीर्षक अष्टमसर्ग एवं "कांचीवैभवम्" शीर्षक नवम सर्ग में काशीनाथ 'विश्वनाथ' का अत्युत्कृष्ट चित्रण पाठकों के समक्ष उपस्थित होता है। 'भगवान् विश्वनाथ' काशी के पालक है। उन्होंने अकाल के समय माँ अन्नपूर्णा से जगात्पोषणार्थ भिक्षा याचना की थी। शिव की कृपा से काशीनगरी अनन्त वैभव एवं गौरव को प्राप्त है। यथा–

"श्रीशङ्करः शिवमहोमहिमावतारो,
ज्ञानाब्धिसन्तरणलब्धविचारसारः ।
आगत्य यत्र भगवत्यतुलान्नपूर्णा–
सेवां विधाय खलु याचितवान्स भिक्षाम् ।।"[195]

१२. काशी (वाराणसी) :–

'तीर्थराज' 'काशी' आदि नामों से प्रसिद्द, विश्वनाथनगरी–'वाराणसी', विद्या, विनोद, एवं वैभवयुक्ता, गंगातरंगों से पवित्रा, विश्ववरेण्या, सभी की शरणागति, अतिपवित्रदेहा, धन्या नगरी है। सांसारिक दुःखों के नाश में दक्ष, शिव के पवित्र धाम, कुम्भनगरी, अनेक पवित्र मन्दिरों से युक्त, गंगा के सुरम्य तटों से युक्त, पशुपतिनगरी, प्रयागराजकाशी, तीर्थराज है। जहाँ गंगा, यमुना के साथ ही सरस्वती नदी भी आदिकाल से ही गुप्त रूप से प्रवाहित हो रही है। यहाँ पर सभी लोग माँ अन्नपूर्णा का पुण्य प्रसाद ग्रहणकर आनन्दित रहते हैं। यथा–

"श्रीविश्वनाथनगरी च गरीयसी सा,
विद्याविनोदविभवाऽतिपवित्रदेहा ।
गङ्गातरङ्गशुभङ्गतिधन्यधन्या ,
वाराणसी विजयतां विवुधैर्वरेण्या ।।"[196]

१३. देवनदी–'गंगा' :–

---

[194] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ७/२८
[195] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ८/३
[196] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ८/१

सकलमङ्गलभूता, हमारी महनीय सनातनपरम्परा एवं उदात्त भारतीयसंस्कृति की पोषिका, स्वर्ग में देवों की नदी के रूप में सुशोभिता, जह्नुसुता, काल–कल्मषनाशक्षमा, भगीरथसाधना, पुण्यजला, स्वकीर्तिधवला, विष्णुश्रीचरणाम्बुजविमला, श्रीशम्भुशीर्षस्थला, विश्वप्राणकला, वन्द्या, मातृजीवनधरा, देवाङ्गनाचञ्चला, सर्वाङ्ग–मधुरा, महासुरनदी, रत्नाकरप्लाविता, मन्दाकिनीमाधुरी, देवनदी–'गंगा' दिव्यदेहरूप में भगवान शिव के शिर पर सुशोभित है। किन्तु आज प्रदुषण के कारण गंगा की स्थिति शोचनीय हो गयी है। यथा–

''गंगा पुण्यजला स्वकीर्तिधवला नित्यं तरंगोज्ज्वला
विष्णुश्रीचरणाब्जरेणुविमला श्रीशम्भुशीर्षस्थला।
विश्वप्राणकला भागीरथतपःसम्पूतवेलाकुला
वन्द्या भारतमातृजीवनधरा देवांगनाचंचला ।।'' [197]

"गंगाऽस्मदीयमहनीयपरम्परायाः ,
प्राणप्रदा सकलमङ्गलहेतुभूता ।
प्रक्षाल्य विष्णुपद्मयुगं सदा सा,
शम्भोः शिरसि राजति दिव्यदेहा ।।"[198]

"मनसि किन्तु महत्यनुशोचना ,
स्मृतिपथे प्रतिभाति यदाऽधुना ।
भुवि भगीरथसाधनयार्जिता ,
क्व नु गता ननु गांग पवित्रता ।।"[199]

गंगा नदी देवनदी है, पृथ्वी पर किसी ने उसका खनन नही किया है। वह तो भागीरथ की साधना से धरती पर अवतरित, जाह्नुसुता 'जाह्नवी' स्वयं अपना परिष्कार कर, आत्मशुद्धि करने में समर्थ है।

१४. काञ्चीनगरी :–

समीक्ष्य महाकाव्य के "काञ्चीवैभवम्" शीर्षक नवमसर्ग में मानवीकरण द्वारा कांचीनगरी का सुरम्य चित्रण उपस्थित होता है। भारत के दक्षिण भाग में स्थिता, एकाम्बरनाथ के पुण्यपवित्रधाम के रूप में पुराणों में वन्दिता, आदिशंकराचार्य की दिव्यधानी, सुरम्य नगरी, मंदिरों की पुरी के रूप में आदिकाल से ही विश्वविख्यात 'काञ्चीनगरी' भक्तों को आकर्षित करती है। यथा –

"विराजते भारतमेखलेव या ,
सदा समाकर्षति भक्तदर्शकान् ।
समादृता सा त्वितिहासविश्रुता ,
यशस्विनी मन्दिरमालिनी पुरी ।।"[200]

---

[197] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ८/१६
[198] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ८/६
[199] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ८/१८

१५. जगद्गुरु आदिशंकराचार्य :–

भगवान् शंकर के साक्षात्रूप, आत्मरूप, परमप्रकाश, प्रज्ञानपार, भवसारविवेकाधार, आनन्दरूप, लोकोत्तरसाधक, नित्यपरिव्राजक, महाप्रभु, जगद्गुरु 'आदिशंकर' सांसारिक माया–मोह से मुक्त होने पर भी अपनी जननी की सेवार्थ पुनः कालड़ीगृह में उपस्थित हुए। समस्त वेदान्त तत्वों के ज्ञाता, वेदों, उपनिषदों, एवं ब्रह्मसूत्रों के भाष्यकर्ता, "ब्रह्मसत्यं जगन्मिथ्या" के उद्घोषकर्ता, "कामकोटिपीठ" के संस्थापक एवं प्रथम शंकराचार्य– 'जगद्गुरु आदिशंकर'– सनातन धर्म के प्रचार प्रसारार्थ सम्पूर्ण भारतभूमि का पैदल भ्रमण करके चारों दिशाओं चार मठों की स्थापन की। यथा –

"भ्रमन् स्वकीयप्रियभारतान्तरे ,
विलोकयन् तस्य विभाववैभवम् ।
विधातुमैक्यं समधर्मचिन्तने ,
मठ प्रतिष्ठापितवान् चतुष्टयम् ।।"[201]

१६. शंकराचार्य चन्द्रशेखरेन्द्रसरस्वती (अष्टम) :–

कामकोटि पीठ के ६८वें शंकराचार्य चन्द्रशेखरेन्द्रसरस्वती को "कांचीवैभवम्" शीर्षक नवमसर्ग का नायक कहें तो अतिशयोक्ति नही होगी। बचपन में 'स्वामिनाथ' नाम से सम्बोधित चन्द्रशेखरेन्द्रसरस्वती अत्यन्त प्रतिभावान्, सर्ववेदनिष्णान्त, सर्वविद्याविशारद, वेदाङ्ग, पुराण आदि समस्तशास्त्रों के ज्ञाता, गणित एवं संगीत शास्त्र में प्रवीण, इतिहासकार एवं व्याख्याकार, महान प्रशासक, सनातन धर्म, भारतीय संस्कृति एवं संस्कृत भाषा के अनन्य उपासक, अध्यात्म के चितेरे, भारतभूमि के अनन्य भक्त, स्थितप्रज्ञ, महादानी, महान भाष्यकार आदि अनेक चारित्रिक विशेषताएं समीक्ष्य महाकाव्य में प्रकट हुई है। यथा–

"समस्तवेदेषु च शास्त्रराशिषु,
कृतश्रमः भारतसंस्कृतौ हि यः ।
अभूत्स विश्वश्रुतचन्द्रशेखर–
सरस्वती तत्र स्वयं हि शङ्करः ।।"[202]

समाजसेवा को ही अपना धर्म समझने वाले "चन्द्रशेखरेन्द्रसरस्वती 'अष्टम' स्व प्रजारञ्जनकार्यों से समाज में "महा–पेरियावा" "महास्वामी", "परमाचार्य" आदि नामों से प्रसिद्ध हुए। उन्होंने सम्पूर्ण भारत की दो बार पैदल यात्राएँ कर देश को धार्मिक, सांस्कृतिक एवं राजनितिक रूप से एकता के सूत्र में बांधने का कार्य किया।

१७. रामेश्वरम् :–

---

[200] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ६/१२
[201] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ६/६
[202] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ६/१५

मानवीकरण द्वारा भगवान श्रीराम के चरणों से पवित्र, रामेश्वरम् तीर्थ का सुरम्य चित्रण उपस्थित हुआ है। भारत के परिपूर्णतीर्थ के रूप में प्रसिद्ध स्थल–'रामेस्वरम्' में सम्पूर्ण देश से लोग अपने पितरों के तृपणार्थ आते हैं। यथा–

"अत्रत्यसागरजलं भगवत्पदाब्ज–
पूतं ततोऽस्ति चरणोदकमप्रमेयम् ।
अत्रैव तर्पणविधाननिविष्चित्ताः,
आयान्ति साधुपुरुषाः बहुदूरदेशात् ।।"[203]

१८. कर्णाटकप्रदेश :–

स्वर्णभूमि के रूप में प्रसिद्द कर्णाटकप्रदेश, तुङ्गभद्रा, कृष्णा, कावेरी आदि पवित्र नदियों की भूमि, गोकाकतीर्थ, सिद्धगंगा, उड्डुपी, श्रृंगेरी, वृन्दावन, श्रीरंगपट्टम् आदि तीर्थों की भूमि, रन्न–पोन्न–कुवेम्पू–पम्पा आदि महाकवियों की कर्मस्थली, साहित्य, संगीत, नृत्य की स्थली, प्राकृतिकसौन्दर्य से विभूषित, रामानुज एवं मध्वाचार्य की जन्मभूमि, ऐतिहासिक स्थलों, सोमेश्वरतृतीय आदि चौल राजाओं के कार्यों, साहित्यों, कलाओं, संगीतोत्सवों, दर्शनों आदि से परिमण्डित है। यथा–

''संगीतं रमणीयताललयसम्भारादिसंशोभितं
नृत्यं कुन्तललोलकान्तललनानुपूरझंकारितम् ।
मन्त्रो यत्र च वेदविद्यवदनैरुच्चारितः शाश्वतः
सोऽयं भातु हि शान्तकान्तनिलयः कर्णाटदेवालयः।।''[204]

"साहित्ये यत्र धन्याः सुविदितकवयो–रन्न–पोन्न–कुवेम्पु–
पम्पा–निःसारमुर्ख्याः स्वमधुरजनुषाऽभूषयन् यं प्रदेशम् ।
यस्मिंश्च ज्ञानपीठोज्ज्वलमणिमहसोनन्तमूर्त्तिश्च गोकाक्–
वेन्द्रे–सिद्धाः विभान्तीह स जयतु सदा स्वर्णकन्नड्प्रदेशः ।।"[205]

१९. तिरुपति नगरी :–

सप्ताद्रिभूषणविभूषित, शिक्षा, दीक्षा, वैराग्य, भक्ति, विश्वातिथि, अन्नातिथि, सोम्यातिथि, ब्रह्मातिथि, प्रज्ञातिथि, धर्मार्थकाममोक्ष की नगरी, तिरुपति के समान पावनतीर्थ भूतल पर अन्यत्र कहीं भी नहीं है। शेषनाग के स्वामी विष्णु–अवतार प्रभु वेंकटेश की कृपा से यहाँ कोई दीनहीन नहीं हैं। तिरुपतितीर्थ से संस्कृत वाङ्मय की पुण्यधारा निरन्तर प्रवाहित हो रही है। यथा–

"शिक्षाप्रचारविषये नियतञ्च दीक्षा–
कुक्षीकृता सुमहता तपसा च यत्र ।
विद्याविनोदनगरी च गरीयसी सा ,

---

[203] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, १०/२
[204] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, १०/१४
[205] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, १०/६

प्रज्ञातिथिस्तिरुपतिर्जयति प्रकामम् ।।"[206]

२०. तिरुमलस्वामी–'प्रभु वेंकटेश' :–

सौम्यमूर्ति, जगत्पति, पद्मजाप्रिय, समस्तमहासुखदायक, गिरिनायक, कलियुग के पापों के नाशक, पद्मावती के स्वामी, विष्णु के अवतार, संसारसागर तारण के हेतु, मोक्ष के दाता, संसाररक्षणपरायण, दिव्यशक्तियों के स्वामी, भक्तों के कष्टों के नाशक, दीनबंधु, करुणा के सागर, जगत को ऐश्वर्य के दाता, गिरिनायक, गोविन्दराज, भगवान् वेंकटेश्वर है। यथा–

"अयि समस्तमहासुखदायक ! ,
कलिविनाशनवेंकटनायक ! ।
नियतमस्मि भावद्गुणगायकः ,
जगति तारय मां गिरिनायक ! ।।"[207]

२१. संस्कृतभाषा :–

सुरगी, गीर्वाणी, देववाणी, अमृतवाणी आदि नामों से प्रसिद्ध यह भाषा समस्त भाषाओं की जननी है। वेदों में चर्चित एवं स्मृतियों में वन्दित यह भाषा अध्यात्म, दर्शन, एवं ज्ञान–विज्ञान का भंडार एवं राष्ट्रभाषा के रूप में सम्माननीया है। भारतीय संस्कृति की संरक्षिका यह भारतभारती भारत की संजीवनी है। शान्ति की पोषिका यह भाषा एवं सत्यं–शिवं–सुन्दरम्, विश्वबंधुत्त्व, वसुधैवकुटुम्बकंम् आदि उदात्त भावनाओं की रक्षिका एवं विश्वमङ्गलभूता है। इस सुन्दर कान्तारुपी देववाणी संस्कृतभाषा के मूल में समस्त वेद एवं स्मृतियाँ इसके चरण हैं। वेदांग इसकी दिव्य देह है। काव्य इसके केश है। ज्ञान–विज्ञान नेत्र एवं काव्यरस इसका हृदय है। यह संस्कृत भाषा देवनदी गंगा के सामान पवित्र है। यथा–

"या नित्या वेदमूला स्मृतिचयचरणा दिव्यवेदांगदेहा ,
या कान्ता काव्यकेशाऽगणितगुणकरा ज्ञानविज्ञाननेत्रा ।
तन्त्रे यन्त्रे प्रसिद्धा रसभरहृदया या च गंगेव पूता ,
सा माता वन्दनीया जगति विजयतां संस्कृता राष्ट्रभाषा ।।"[208]

पात्रानुलोचन के इसी क्रम में 'अर्जुन', 'बालकध्रुव', 'भगवान विष्णु', 'प्रभु सोमनाथ', 'महात्मा गाँधी', ' भगवान एकाम्बरनाथ', 'मध्वाचार्य', 'चालुक्य राजा सोमेश्वरतृतीय' 'रामानन्दाचार्य', 'महामना पण्डितमदनमोहनमालवीय' 'विश्वावसु' 'माता पार्वती', 'गान्धारी' 'यशोदा', 'देवी लक्ष्मी' 'देवी मीनाक्षी', 'रानी गुण्डिचा', 'देवी मल्लिका' 'देवी सुभद्रा' 'नीलाञ्चलक्षेत्र', 'सुदर्शनचक्र', 'पुरीतीर्थ', 'पृथ्वी', 'अंतरिक्ष' 'श्रीशैल' आदि पात्रों की सहायता के बिना से महाकाव्य की काव्यकथा अग्रसर होती है।

---

[206] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, १०/२६
[207] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, १०/४६
[208] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, १०/४६

इस प्रकार समीक्ष्य महाकाव्य में काव्यरीति के अनुगुण पात्रों का प्रयोग किया गया है। इतना कहकर अब और अधिक विस्तार से विराम करता हूँ।

इ. छन्दयोजना :–

काव्याचार्यों ने 'छन्दबद्धरचना' को ही काव्य के रूप में स्वीकार किया है। आचार्यभामह ने जहाँ "**छन्दो बद्धं पद्यं पद्यम्**"[209] कहकर काव्य में छन्द की अनिवार्यता सिद्ध की है; वहीं आचार्य भरतमुनि के अनुसार "छन्दबद्ध, उदार और मधुर शब्द नाट्यार्थ को उसी प्रकार सुशोभित करते हैं, जिस प्रकार कमलराशि सरोवर को सुशोभित करती है।"[210]

१. छन्दः– अर्थ एवं परिभाषा –

'छन्द' शब्द 'चदि' धातु से "**आह्लादे दीप्तौ च**"[211] अर्थ में 'असुन्' प्रत्यय के योग से; अथवा 'छदि' धातु से "**छादेरादैश्च**"[212] सूत्र से 'असुन्' प्रत्यय के योग से व्युत्पन्न होता है। निरुक्तकार यास्काचार्य ने "**छदि संवरणे**"[213] धातु से "छान्दांसि छादनात्" 'आच्छादन्' अर्थ में छन्द शब्द की निरुक्ति की है। आचार्य भरत तो छन्दरहित रचना को काव्य के रूप में अस्वीकार करते हुए कहते हैं :–

"**छन्दहीनो न शब्दोऽस्ति नच्छंन्दश्शब्दवर्जितम् ।**
तस्मातुभयसंयोगो नाट्यस्य द्योतकः स्मृतः ।।"[214]

२. काव्य में छन्दों का प्रयोग –

आचार्य क्षेमेन्द्र ने 'सुवृत्ततिलकम्' में विषय एवं रस के अनुकूल वृत्तप्रयोग को निर्देशित किया है। यथा–

"**प्रबंन्धः सुतरां भाति यथास्थानं विवेकचः ।**
निर्दोषर्गुणैः संयुक्तैः सुवृत्तैर्मौक्तिकैरिव ।।"[215]

३. छन्दों की आवश्याकता –

'छन्दशास्त्र' के प्रणेता आचार्य 'पिंगल' के अनुसार वैदिक एवं लौकिक दोनों शास्त्रों के समुचितरूपेण उच्चारणार्थ एवं उनके अर्थाभिज्ञानार्थ 'छन्दशास्त्र' का ज्ञान अत्यावश्यक हैं। यथा–

"**छन्दः शब्देनाक्षरसंख्यावाच्छन्दोऽभिधीयते।**"[216]

---

209 आचार्य भामहकृत 'काव्यालंकार'– डॉ.रामानंदशर्मा, चौ०प्र.वारा०२०१४, भू०पृ०सं०३
210 भरतमुनिप्रणीतम् 'नाट्यशास्त्रम्',–पुष्पेन्द्र कुमार',न्यू भा०बु०कोर्पो०दिल्ली,२०१५, १४/४३
211 'वृहद्धातुकुसुमाकरः'– पं०हरेकान्तमिश्रा, चौ०प्र०,वारा०,२०१६, भ्वा०, पृ०सं० ५१
212 रा०का०दे०बहादुर निर्मित 'शब्दकल्पद्रुम्' द्वि० का०, चौ०प्र०, वारा०,२०१५ पृ० सं० ४६१
213 यास्कप्रणीतं 'निरुक्तम्'– डॉ० कपिलदेव शास्त्री साहित्यभण्डार, मेरठ प्र० २०११, ७.३१
214 भरतमुनिप्रणीतम् 'नाट्यशास्त्रम्',–पुष्पेन्द्र कुमार',न्यू भा०बु०कोर्पो०दिल्ली,२०१५, १४/४७
215 क्षेमेन्द्रकृत 'सुवृत्ततिलकम्' – डॉ० रबीन्द्र कुमार पांडा, परममित्रा प्र० दिल्ली,१९९८, ३/२
216 आचार्य पिंगलकृत'छन्दःसूत्राणि'–डॉ०कपिलदेवद्विवेदी,डॉ०श्यामलाल, बनारस हिन्दू विवि०प्र०,वारा०२०१३, भू०पृ०४

जिस प्रकार बिना पैरों की कोई कहीं भी गमन करने में समर्थ नही होता उसी प्रकार वैदिक साहित्य में प्रवेश हेतु 'छन्दशास्त्र' का ज्ञान होना आवश्यक है।" अतः 'वेदांगसूत्र' में छन्द को वेद पुरुष के चरणों की संज्ञा दी गई है। यथा–

छंद पादौ तु वेदस्य।"[217] "

आचार्य भरतमुनि ने 'नाट्यशास्त्र' में छन्दशास्त्र का विस्तृत वर्णन करते हुए लिखा है :–

"छन्दसां तु भावेदेषां भेदोऽनेकविधः पृथकः ।

असंख्यपरिमाणानि वृत्तान्याहुरतो बुधाः ।।"[218]

४. छन्दों का विकासक्रम –

छन्दों का उद्भव वेदों से माना जाता है। सर्वप्रथम 'गायत्री', 'उष्णिक', 'अनुष्टुप', 'त्रिष्टुप' आदि वैदिक छन्दों का आविर्भाव हुआ। तदुपरान्त अन्य वैदिकछन्दों एवं उसके बाद लौकिक छन्दों का। वैदिकछन्दों में स्वीकृत 'पाद' एवं 'अक्षर' गणना यथावत् लौकिकछन्दों में स्वीकृत है।

५. छन्दों के प्रकार –

डॉ0 राधामोहन ने स्वरचित ग्रन्थ 'छन्दकौमुदी' में छन्दों को दो प्रकार से विभाजित किया है। प्रथम– वैदिक एवं लौकिक; तथा द्वितीय– मात्रिक एवं वर्णिक। उपर्युक्त छन्दभेदों को निम्न प्रकार से समझा जा सकता है :–

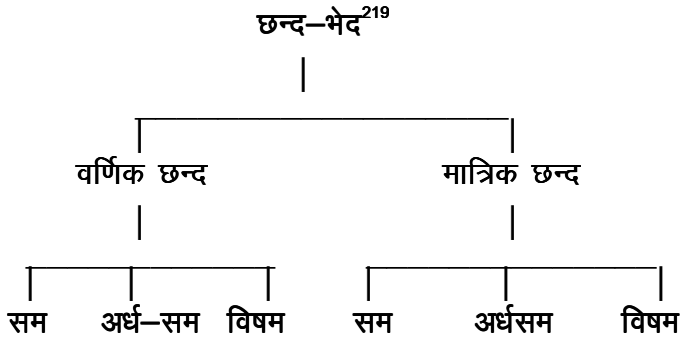

'वृत्तरत्नाकरकार' 'छन्द' को 'वृत्त' की संज्ञा से अभिहित करते हुए वृत्त के तीन भेद– समवृत्त, अर्ध–समवृत्त और विषमवृत्त– बताते हुए लिखते हैं कि 'समवृत्त के चारों चरणों में सामान अक्षर होते हैं; अर्ध–समवृत्त के प्रथम–तृतीय एवं द्वितीय–चतुर्थ चरणों में अक्षरों की संख्या सामान होती है; तथा विषमवृत्त के सभी चरणों में अक्षरों की संख्या असमान होती है।'[220]

६. छन्दों में गणमात्रादि विधान –

---

[217] वैदिक साहित्य और संस्कृति– आचार्य बलदेव उपाध्याय, शारदामन्दिर प्र० वाराणसी ,पृ०सं० ३६५

[218] भरतमुनिप्रणीतम् 'नाट्यशास्त्रम्',–पुष्पेन्द्र कुमार',न्यू भा०बु०कोर्पो०दिल्ली,२०१५, १५/५५

[219] 'छन्दकौमुदी' –डॉ० राधामोहन, प्रणव, प्र०,दिल्ली, २०१२, पृ० सं० ७

[220] श्रीकेदारविरचितम् 'वृत्तरत्नाकरम्'– श्रीधरानन्शास्त्री, मोती०बना०प्र०वारा०, २०१२, पृ० १३

गणों को छन्दों का आधार माना जाता है। लघु–गुरु मात्राओं के समूहों से गण बनते हैं; इसलिए गणविधान को समझने से पूर्व मात्राविधान का अनुशीलन करना आवश्यक एवं अपरिहार्य है।

मात्राओं के दो भेद होते हैं– लघु/हृश्व और दीर्घ/गुरु।

अ. **लघु मात्राविधान–**

अ, इ, उ, ऋ स्वर अथवा इनकी मात्रा से युक्त व्यंजन 'हृश्व' या 'लघु' कहलाते हैं। लघु मात्रा के लिये "।" चिन्ह प्रयोग किया जाता है।

आ. दीर्घ मात्राविधान –

"आ, ई, ऊ, ॠ, ए, ऐ, ओ, एवं औ" इन स्वरों अथवा इनकी मात्राओं से युक्त व्यंजन 'गुरु' या 'दीर्घ' कहलाते हैं। दीर्घ मात्रा के लिये ''S'' चिन्ह प्रयोग किया जाता है।[221] गुरुवर्ण विधान को श्रुतबोधकार ने इस प्रकार निर्देशित किया है :–

"संयुक्ताद्यं दीर्घं सानुस्वारं विसर्ग–समिश्रणं ।
विज्ञेयमक्षरं गुरुः पादान्तस्थं विकल्पेन ।।"[222]

इ. गणविधान –

लघु या गुरु मात्राओं से मिलकर 'गण' बनाते हैं। छन्दशास्त्र में तीन वर्णों के समूह को गण कहा गया है। यथा–

"त्रिभिस्त्रिभिरक्षरैरेको गणः।"[223]

आदिकाव्यशास्त्रलक्षणग्रन्थ–'अग्निपुराण' में छन्दों का गणविधान इस प्रकार वर्णित हैः–

"छन्दो लक्ष्ये मूलजैस्त पिंगलोक्तं यथाक्रमम् ।
स्वादिमध्यान्तगणौम्नौ भयौ, ज्रौ, स्तौ, त्रिगणा ।।"[224]

ई. गणों का लक्षण –

लघु–गुरु के क्रमानुसार छन्दशास्त्रियों ने गणों की संख्या 'अष्ट' निर्धारित की है। यथा–

"आदिमध्यावसानेशु भजसा यान्ति गौरवम् ।
यरता लाघवं यान्ति मनौ तु गुरुलाघवम् ।।"[225]

छंदशास्त्र के गण विधान को निम्न प्रकार से सुष्ठुतया समझ सकतें हैं :–

छन्दों में गण विधान –		
क्र	**गण-नाम**	**चिन्ह**
१	भगण	SII

---

221 श्रीगंगादासप्रणीता 'छन्दोमञ्जरी'– डॉ० ब्रह्मानन्दत्रिपाठी, चौ०प्र०, वारा०, २०१३, १/१२

222 महाकविकालिदासप्रणीतः'श्रुतबोधः'–पं०कनकलालठक्कुर, चौखम्बाविद्याभवन प्र०,वाराणसी०,२००४, पृ० २

223 महाकविकालिदासप्रणीतः'श्रुतबोधः'–पं०कनकलालठक्कुर, चौखम्बाविद्याभवन प्र०,वाराणसी०,२००४, १/७–८

224 'अग्निपुराणम्'– डॉ०घनश्यामत्रिपाठी, हिंदीसाहित्यसम्मलेन प्र० प्रयाग २०१४, पृ० ३२८

225 महाकविकालिदासप्रणीतः'श्रुतबोधः'–पं०कनकलालठक्कुर, चौखम्बाविद्याभवन प्र०,वाराणसी०,२००४, पृ० ३

२	जगन	ISI
३	सगण	SSI
४	यगण	ISS
५	रगण	SIS
६	तगण	SSI
७	मगण	SSS
८	नगण	III

उ. यतिविधान –

पद्य के पठन अथवा गायन के समय छन्द के नियमानुसार जहाँ पर अल्प समय के लिये 'विराम' या 'ठहराव' किया जाता है; उसे 'यति' कहते हैं।"[226]

७. 'भारतायनम्' महाकाव्य में छन्दप्रयोग :–

कविश्रेष्ठ आचार्य हरेकृष्ण शतपथी ने समीक्ष्य महाकाव्य के कुल ६५६ पद्यों में १३ छन्दों का प्रयोग किया है। महाकाव्य की कथावस्तु के विभिन्न विषयों के प्रतिपादन में उन्होंने प्रमुखतया वंशस्थ, वसन्ततिलका, शार्दूविक्रीडित, उपजाति, अनुष्टुप, द्रुतविलम्बित, मन्दाक्रान्ता, इन्द्रवज्रा, शिखरिणी आदि छन्दों का प्रमुखता से प्रयोग किया है। समीक्ष्य महाकाव्य में छन्दप्रयोग को अधोलिखित तालिका से सरलता से समझ सकते हैं।

'भारतायनम्' महाकाव्य में छन्दप्रयोग -

क्र० सं०	**छन्द-नाम**	**सर्ग-क्रम**										**कुल पद्य**
		१	**२**	**३**	**४**	**५**	**६**	**७**	**८**	**९**	**१०**	
१	वंशस्थ	११८	-	२६	-	४५	९	१०	-	१४	२	**२२४**
२	वसन्ततिलका	२	५१	११	२९	१४	२	-	११	२४	२५	**१६९**
३	शर्दुलविक्रीडित	·	१	·	·	·	१	३	५	५	१	**८१**

[226] "यतिर्जिह्वेष्टविश्रामस्थानं कविभिरुच्यते । सा विच्छेदविरामादि पदैर्वाच्या निजेच्छया।।"
– क्षेमेन्द्रकृत 'सुवृत्ततिलकम्'– डॉ० रबीन्द्रकुमार पांडा, परममित्रा प्र० दिल्ली,१९९८, १/१२

									७		४	
४	उपजाति	·	·	·	२	·	१३	१६	·	३८	२	**७१**
५	अनुष्टुप	·	१	·	३	·	·	·	·	२१	·	**२५**
६	द्रुतविलंबित	·	·	·	१०	·	·	·	८	·	७	**२५**
७	मन्दाक्रान्ता	·	·	·	·	२२	·	·	·	·	·	**२२**
८	इन्द्रवज्रा	·	·	·	·	·	७	५	·	६	·	**१८**
९	शिखरिणी	·	·	·	·	·	८	·	·	३	२	**१३**
१०	त्रोटक	·	·	·	५	·	·	·	·	·	·	**०५**
११	स्रग्धरा	·	·	·	·	·	·	·	·	·	३	**०३**
१२	उपेन्द्रवज्रा	·	·	·	·	·	·	२	·	·	·	**०२**
१३	मालिनी	·	·	·	·	·	·	१	·	·	·	**०१**
प्रतिसर्ग कुल पद्यों की संख्या =		**१२०**	**५३**	**३७**	**४९**	**८१**	**४०**	**३७**	**७६**	**१११**	**५५**	**कुलपद्य= ६५९**

उपर्युक्त तालिका से निम्न तथ्य सामने आते हैं :–

१. वंशस्थछन्द महाकवि को सर्वाधिक प्रिय है। उन्होंने महाकाव्य के ६५६ पद्यों में से २२४ पद्यों को वंशस्थछन्द में बद्ध किया गया है।

२. वंशस्थ के उपरान्त 'वसन्ततिलका' छन्द का कुल '१६६' पद्यों में प्रयोग हुआ है।

३. मालिनी छंद का प्रयोग सबसे कम (केवल १ पद्य में) हुआ है।

४. सबसे कम वर्णयुक्त (लघुत्तम) छन्द 'अनुष्टुप' का प्रयोग २५ पद्यों में हुआ है।

५. सर्वाधिक मात्रा युक्त (वृहत्तम) छन्द 'स्रग्धरा' का प्रयोग ३ पद्यों में किया गया है।

६. प्रथम, द्वित्तीय एवं तृतीय सर्गों के अतिरिक्त अन्य सर्ग अनेक वृत्तों में बद्ध है।

७. सर्वाधिक छन्दविविधता दशमसर्ग में दृष्टिगोचर होती है; दशमसर्ग में ७ प्रकार के छन्दों का प्रयोग हुआ है।

८. अनुष्टुप' एकमात्र 'मात्रिक' एवं 'वैदिक' छंद है; अन्य सभी छन्द वर्णिकछन्द हैं।

१. अनुष्टुप –

कर्णप्रिय, श्रुतिमधुर, अनुष्टुप छन्द को 'वक्त्र' के नाम से भी जाना जाता है। अनुष्टुप का प्रयोग 'उपदेशात्मक' कथन में अधिक किया जाता है। अनुष्टुप छंद का लक्षण इस प्रकार है:–

"श्लोके षष्ठं गुरुर्ज्ञेयं सर्वत्र लघु पञ्चमम् ।
द्विचतुश्पादयोर्ह्रस्वं सप्तमं दीर्घमन्ययोः ।।"[227]

उदहारण :–

प्रस्तुत महाकाव्य के द्वितीय, चतुर्थ एवं नवम सर्ग में आहत्य २५ पद्यों को अनुष्टुप छन्दबद्ध किया गया है। यथा–

। ऽ ऽ
"धन्यं तत् शाश्वतं पुण्यं , = ८ वर्ण
। ऽ ।
ज्ञानदीप्तं हि भारतम् । = ८ वर्ण
। ऽ ऽ
यत्रैव शिशवः सर्वे , = ८ वर्ण
। ऽ।
वन्दिताः भारतायने ।।"[228] = ८ वर्ण

और भी –

"कल्पान्तकालकान्ताय,
कलिकल्मषः हारिणे ।
धारिणे सर्व रत्नानां,
सागराय नमोनमः ।।"[229]

२. इन्द्रवज्रा –

छन्दशास्त्रियों ने इन्द्रवज्रा का स्वरुप इस प्रकार बताया हैं –

"स्यादिन्द्रवज्रा यदि तौ जगौ गः ।।"[230]

उदहारण :–

समीक्ष्य महाकाव्य में कुल १८ पद्यों को इन्द्रवज्रा छन्द में निबद्ध किया गया है। उनमें से कुछ पद्य उदहारणस्वरूप यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं :–

तगण तगण जगण गु.गु.
ऽ ऽ । ऽ ऽ । । ऽ । ऽ ऽ
"राजेन्द्रधुम्नः जलधे सकाशात् ,
आनीय तच्छाश्वतदारुखण्डम् ।
संस्थाप्य सम्पूतनृसिंहपुर्यां ,
सम्पादयामास च यज्ञकार्यम् ।।"[231]

---

[227] महाकविकालिदासप्रणीतः 'श्रुतबोधः'–पं०कनकलालठक्कुर, चौखम्बाविद्याभवन प्र०,वाराणसी०,२००४, पृ०४
[228] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, २/५३
[229] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ४/३७
[230] श्रीगंगादासप्रणीता 'छन्दोमञ्जरी'– डॉ० ब्रह्मानन्दत्रिपाठी, चौ०प्र०, वारा०, २०१३, २/४१

और भी :–

"द्वारावतीसुन्दरमन्दिरे यः,
क्रोड़े जनन्याः स्थितवान् ददाति ।
वात्सल्यवार्तां भुवने स एव,
श्रीवद्रिनाथोऽत्र विराजमानः ।।"[232]

३. उपेन्द्रवज्रा –

उपेन्द्रवज्रा भी इन्द्रवज्रा के समान प्रतिपद एकादश वर्णात्मक वृत्त है। इसका स्वरूप छन्दोमञ्जरी में इस प्रकार प्रस्तुत किया गया है :–

"उपेन्द्रवज्राजतजास्ततौ गः।।"[233]

उदहारण–

समालोच्य कृति 'भारतायनम्' महाकाव्य में मात्र दो पद्य उपेन्द्रवज्रावृत्त में निबद्ध हैं; उन्हें उदहारण स्वरुप यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है । यथा–

जगण तगण जगण गु.गु.
। ऽ । ऽऽ। । ऽ । ऽ ऽ
"तपस्विवेशेन समाधिमग्नः ,
निसर्गरम्येऽत्र हिमाद्रिहर्म्ये ।
प्रकासिता विश्वहिताय साक्षात् ,
ददाति वार्तां तपसः प्रसिद्धाम् ।।"[234]

४. उपजाति –

उपजातिवृत्त स्वतंत्र न होकर एक ही जाति के दो वृत्तों का मेल है।[235] इन्द्रवज्रा तथा उपेन्द्रवज्रा का अन्योन्यपादोन्मीलन को 'उपजाति' कहा जाता है। यथा–

"इन्द्रवज्रोपेन्द्रवज्रयोः सम्मेलनमुपजातिः ।।"[236]

उदहारण–

समीक्ष्य महाकाव्य में उपजाति छन्द का प्रयोग प्रचुरता से हुआ है। सर्ग संख्या ५, ६, ७, ६ एवं १० में आहत्य ७१ पद्यों को उपजातिछन्दमाला में गुन्थित किया गया है। यथा–

तगण तगण जगण गु.गु. = इन्द्रवज्रा
ऽ ऽ । ऽ ऽ । । ऽ । ऽ ऽ
"अद्यापि सांसारिकमंगलार्थं , = ११ वर्ण

---

[231] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ६/३
[232] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ७/२१
[233] श्रीगंगादासप्रणीता 'छन्दोमञ्जरी'– डॉ० ब्रह्मानन्दत्रिपाठी, चौ०प्र०, वारा०, २०१३, २/४२
[234] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ७/२२
[235] श्रीकेदारविरचितम् 'वृत्तरत्नाकरम्'– श्रीधरानन्शास्त्री, मोती०बना०प्र०वारा०, २०१२, २/३०
[236] श्रीगंगादासप्रणीता 'छन्दोमञ्जरी'– डॉ० ब्रह्मानन्दत्रिपाठी, चौ०प्र०, वारा०, २०१३, २/४३

जगण तगणजगण गु.गु. = उपेन्द्रवज्रा

। ऽ । ऽऽ ।। ऽ। ऽऽ

स साधनामाचरतीह विष्णुः । = ११ वण्झ

ऽ ऽ । ऽ ऽ ।। ऽ । ऽ ऽ

नूनं जगत्पालनसिद्धिमाप्तुं , = इन्द्रवज्रा

ऽ ऽ । ऽ ऽ । । ऽ। ऽ ऽ

आवश्यकी सन्ततसाधना सा ।।"[237] = इन्द्रवज्रा

और भी –

"मार्गस्य मध्ये च कदा गणेशं ,
कदा जगत्याः जननीं कदाचित् ।
हरिं हरं वा परमेश्वरं तं ,
पीठाधिदेवं परिपूज्य यातः ।।"[238]

५. द्रुतविलम्बित :–

प्रतिपद द्वादश वर्णात्मक 'द्रुतविलम्बितछन्द' का शाब्दिक अर्थ होता हैः– "द्रुत एवं विलम्ब से गमन करने वाला।" काव्य में सुकोमल भावों की अभिव्यञ्जना हेतु इस छन्द का उपयोग किया जाता है। यथा–

"द्रुतविलम्बितमाह नभौ भरौ ।।"[239]

उदहारण –

प्रस्तुत महाकाव्य के सर्ग संख्या ५, ८ एवं १० में कुल २५ पद्यों को द्रुतविलम्बित छन्द में निबद्ध किया गया है। यथा–

नगण भगण भगण रगण

।। ।ऽ।। ऽ ।। ऽ।ऽ

"हृदि विराजति ते मुरलीधरः = १२ वर्ण
कमलया सहितं चिरसुन्दरः ।
वद तथापि कथं हृदयात्तथा
क्षरति सम्प्रति दानवभावना ।।"[240]

और भी–

"इयमिहास्ति भवत्पदपंकज–
रजसि काशत एव हि काशिका ।
इति च विश्रुतिमाप्य हि राजते ,

---

237 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ७/२३
238 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ६/४५
239 श्रीकेदारविरचितम् 'वृत्तरत्नाकरम्'– श्रीधरानन्शास्त्री, मोती०बना०प्र०वारा०, २०१२, २/४५
240 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ४/४२

विवुधगौरववैभवभूषिता ।।"[241]

६. वंशस्थ –

प्रतिपद द्वादश अक्षरात्मक 'वंशस्थछन्द' का प्रयोग अधिकतया नीतिपरक उपदेशों में, काव्य की चारुता अभिवृद्धि हेतु, किया जाता है। इस वृत्त का स्वरुप छन्दशास्त्रियों ने इस प्रकार प्रस्तुत किया है:–

"जतौ तु वंशस्थमुदीरितं जरौ ।।"[242]

उदहारण :–

महाकवि आचार्य हरेकृष्ण शतपथी को वंशस्थछन्द अतिप्रिय है। उन्होंने प्रस्तुत महाकाव्य के प्रथम एवं अष्टमसर्ग के अतिरिक्त, शेष सर्गों में कुल २२४ पद्यों को वंशस्थ वृत्त में बद्ध किया है। वंशस्थ छंदबद्ध कुछ पद्य यहाँ उदहारण स्वरूप प्रस्तुत किये जा रहे हैं। यथा–

जगण तगण जगण रगण

। ऽ । ऽऽ ।। ऽ । ऽ । ऽ

"यदाहमासं चलचञ्चलः शिशुः , = १२ वर्ण
विचारसञ्चारविहीनमानसः ।
तदाम्ब ! ते वक्षसि दोलमाश्रितः ,
कृतं मया मूत्रपुरीषवर्जनम् ।।"[243]

और भी –

"चकास्ति यस्या जननी वसुन्धरा,
पिता पुनर्नीलनभो मनोहरम् ।
सहोदरास्तारकराजयः पुनः,
गृहं न तस्य त्रिदिवं किमु प्रियम् ।।"[244]

७. त्रोटक/तोटक :–

प्रतिपद द्वादशवर्णीय तोटक अथवा त्रोटक छन्द का स्वरुप छन्दशास्त्रियों ने इस प्रकार बताया है :–

"यदि वै लघुयुग्मं गुरुक्रमतः ,
रविसम्मितवर्णः इह प्रमितः ।
अहिभूपतिना फनिना भवन्ति ,

---

[241] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ८/१५
[242] श्रीकेदारविरचितम् 'वृत्तरत्नाकरम्'– श्रीधरानन्शास्त्री, मोती०बना०प्र०वारा०, २०१२, २/४६
[243] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, १/२४
[244] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ५/५३

सखी तोटकंवृत्तमिदं गवितम् ।।"[245]

उदहारण–

लयमधुर 'त्रोटकछन्द' में समीक्ष्य महाकाव्य के कुल ५ पद्य निबद्ध हैं। उनमें से कुछ पद्य यहाँ उदहारण स्वरूप प्रस्तुत है–

सगण सगण सगण सगण

।। ऽ ।। ऽ ।। ऽ ।। ऽ

"महनीयकृपाकणिकाम्बुपते , = १२ वर्ण

नृपते ! पुरुषोत्तमधामगते ! ।

अयि तोयनिधे ! भवपुण्यविधे ! ,

सविधे तव नम्रनतिर्जलधे ! ।।"[246]

और भी –

''बहवः भवतापविदग्धह्रदः ,

हृदयार्चितमाधवमादारतः ।

प्रणिपत्य तव प्रबलाम्बुजले ,

स्नपनेन भवन्ति शुचा रहिताः ।।"[247]

८. वसन्ततिलका –

प्रतिचरण चतुर्दशवर्णात्मक वसन्ततिलका छन्द, वसन्त के तिलक के समान प्रसिद्ध है। यह महाकवि के प्रिय छन्दों में से एक है। वृत्तरत्नाकर में प्रस्तुत छन्द का स्वरुप इस प्रकार बताया गया है:–

"ज्ञेयाः वसन्ततिलका तभजा जगौ गः ।।"[248]

उदहारण –

समीक्ष्य महाकाव्य में वंशस्थ छन्द के बाद सर्वाधिक पद्य वसन्ततिलकाछन्द में निबद्ध किये गए हैं। महाकाव्य के सर्वाधिक सर्गों में विस्तार इसी छन्द का है। सप्तमसर्ग के अतिरिक्त सभी सर्गों के कुल १६९ पद्य वसन्ततिलका वृत्त में बद्ध है। उनमें से कुछ पद्य यहाँ उदहारण स्वरूप प्रस्तुत है :–

तगण भगण जगण जगण गु.गु.

ऽ ऽ । ऽ ।। । ऽ ।। ऽ । ऽ ऽ

"हा हन्त सम्प्रति विशीर्णतनुः स वृद्धः , = १४ वर्ण

वृद्धाऽथवा नयनयोः विषमातनोति ।

दृष्टिं न नन्दयति चात्मपितामहोऽपि

---

[245] भट्टचन्द्रशेखरविरचित'वृत्तमौक्तिकम्'दराजस्थान प्राच्यविद्याप्रतिष्ठान,जोधपुर, २०११, पृ०सं० १४२

[246] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ४/३०

[247] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ४/३२

[248] श्रीकेदारविरचितम् 'वृत्तरत्नाकरम्'– श्रीधरानन्शास्त्री, मोती०बना०प्र०वारा०, २०१२, ३/७९

दृष्टिर्यतः कलुषिता विषयैर्विभिन्यैः ।।"[249]

और भी –

"दुःखं विभातु हृदये ननु नास्ति चिन्ता ,
बन्धो ! स्मरिष्यति भवान् यदि मादृशान् भोः ! ।
ग्रीष्मे सुतीक्ष्णकिरणोऽस्तु दिवाकरस्य ,
किं तेन चेद् वहति शीतलगन्धवायुः ।।"[250]

६. मालिनी –

प्रतिपाद पञ्चदशवर्णात्मक, मधुरताललयात्मक, मालिनीछन्द का प्रयोग सर्गान्त में चमत्कारोत्पादक होता है। छन्दशास्त्रियों ने मालिनी वृत्त का स्वरुप इस प्रकार विवेचित किया है:–

"न न म ययुत्तेयं मालिनी भोगिलोके ।।"[251]

मालिनी छन्द में प्रत्येक चरण में **८** वें एवं **७** वें वर्ण पर यति होती है।

उदहारण–

समीक्ष्य महाकाव्य में सप्तम सर्ग के अंतिम (केवल एक) पद्य को कवि ने चारुता उत्पादन हेतु मालिनी वृत्त में निबद्ध किया है; वह एकमात्र पद्य उदहारण स्वरुप यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है:–

नगण नगण मगण यगण यगण
I III II S S S I S S I S S
"स जयति हिममेरू,स्वर्गभूमिप्रकाशः , = १५ वर्ण
चरति भुवि तपस्यां, लोककल्याणहेतोः ।
प्रणम तरुणि ! मूर्ध्नैं,तस्य पादाब्जयुग्मं ,
चल चल महनीयं, विश्वनाथप्रदेशम् ।।"[252]

१०. शिखरिणी –

प्रतिपाद सप्तदशाक्षरीय शिखरिणीछन्द का लक्षण छन्दशास्त्रियों ने इस प्रकार प्रस्तुत किया है:–

"रसैः रुद्रैश्छिन्ना यमनसभलागः शिखरिणी ।।"[253]

शिखरिणीछन्द में प्रत्येक चरण में ६वें एवं ११वें वर्ण पर यति होती है।

उदहारण –

---

[249] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, २/४२
[250] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ५/४२
[251] श्रीकेदारविरचितम् 'वृत्तरत्नाकरम्'– श्रीधरानन्शास्त्री, मोती०बना०प्र०वारा०, २०१२, ३/८६
[252] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ७/३७
[253] श्रीकेदारविरचितम् 'वृत्तरत्नाकरम्'– श्रीधरानन्शास्त्री, मोती०बना०प्र०वारा०, २०१२, ३/६३

प्रस्तुत महाकाव्य में सर्ग संख्या ६, ६ एवं १० में कुल १३ पद्य शिखरिणीछन्द में निबद्ध हैं। उनमें से निम्न पद्य यहाँ उदहारण स्वरूप प्रस्तुत है :–

यगण मगण नगण सगण भगण ल.गु.

। ऽ ऽ ऽ ऽऽ । । । ।। ऽ ऽ ।। । ऽ

"कदा नीले चक्रे विलसतिपताका सपदि या , = १७ वर्ण

तयाऽऽक्षिप्तप्राणः विवुधशरणः क्लान्तकरणः ।

पुरीं गत्वा स्थित्वा गहनगरुड़स्तम्भनिकटे ,

जगन्नाथं दृष्ट्वा जननमिह मन्ये मधुमयम् ।।"[254]

११. मन्दाक्रान्ता –

प्रतिपाद सप्तदशाक्षारीय 'मन्दाक्रान्ताछन्द' का छंदशास्त्रियों ने लक्षण इस प्रकार निर्दिष्ट किया है :–

"मन्दाक्रान्ताजलधिषडगैर्भौ नतौ ताद् गुरुचेत् ।।"[255]

मन्दाक्रान्ता के ४, ६ एवं ७वें वर्ण पर यति होती हैं।

उदहारण –

समीक्ष्य महाकाव्य में पञ्चमसर्ग के २२ पद्य मन्दाक्रान्तावृत्त में बद्ध हैं। उनमें से निम्न पद्य यहाँ उदहारण स्वरूप प्रस्तुत है :–

मगण भगण नगण तगण तगण गु.गु.

ऽ ऽ ऽ ऽ ।।।। । ऽ ऽ। ऽ ऽ । ऽ ऽ

"दत्त्वा बन्धो,! मधुमयसुधां देवतायै पयोधे ! , = १७ वर्ण

सोढ्वा कष्टं रसयुतह्रदाऽकारयस्तः प्रसन्नाः ।

उत्पाद्यैवञ्च कुमुदपतिं प्राणिनां जीवभूतं ,

शं सर्वेषामकृत च भवान् किं न जीवोऽस्म्यहं भो ! ।।"[256]

१२. शार्दूलाविक्रीड़ित –

प्रति चरण नवदशवर्णात्मक शार्दुलविक्रीड़ितछन्द का स्वरुप छन्दशास्त्रियों ने इस प्रकार बताया है–

"सूर्याश्वैर्यदिर्मः सजौसततगाः शार्दूविक्रीड़ितम् ।।"[257]

इसके तथा १२वें एवं ७वें वर्ण पर यति होती है।

उदहारण –

---

[254] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ६/३३

[255] श्रीकेदारविरचितम् 'वृत्तरत्नाकरम्'– श्रीधरानन्शास्त्री, मोती०बना०प्र०वारा०, २०१२, ३/६७

[256] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ५/६१

[257] श्रीगंगादासप्रणीता 'छन्दोमञ्जरी'– डॉ० ब्रह्मानन्दत्रिपाठी, चौ०प्र०, वारा०, २०१३, ३/६३

प्रस्तुत महाकाव्य में वंशस्थ एवं वसन्ततिलका के उपरान्त शार्दुलविक्रीड़ितछन्द में ही सर्वाधिक पद्यों को निबद्ध किया गया हैं। इस महाकाव्य के सर्ग संख्या २, ६, ७, ८, ६, तथा १० में कुल ८१ पद्यों को इस वृत्त में गुन्थित किया गया है। उनमें से निम्न पद्य यहाँ उदहारण स्वरूप प्रस्तुत है :–

मगण सगण जगण सगण तगण तगण गु.

ऽ ऽ ऽ । ।ऽ । ऽ ।।। ऽ ऽ ऽ ।ऽ ऽ। ऽ

"विज्ञानस्य परे युगे सुरनदीतीरेऽधुना नूतना , = १६ वर्ण

व्यामोहात् किमपि प्रसाधनधिया शिल्पाञ्चलाः निर्मिताः ।

तेभ्यः किन्तु विनिर्गतैश्च मलिनैः वाष्पादिभिर्दूषणैः ,

नष्टं भारतजीवनं भवति चेद् विज्ञानदानेन किम् ? ।।"[258]

और भी –

"अस्माकं जननी सदा मधुमयी पूर्णा च सर्वैः गुणैः ,

सौन्दर्येण पुनश्च विश्वरमणीशीर्षस्थले तिष्ठति ।

सेयं चेद्विकला विवर्णवदना वीताश्रया स्थास्यति ,

कस्यास्तर्हि मुखं विलोक्य सरसं लोकोच्चयो नृत्यति ? ।।"[259]

१३. स्रग्धरा –

प्रतिपाद एकविंशत्यक्षरीय 'स्रग्धराछन्द' का स्वरुप छन्दशास्त्रियों ने इस प्रकार से विवेचित किया है :–

"म्रभ्नैर्यानां त्रयेण त्रिमुनियतियुता स्रग्धरा कीर्तितेयम् ।।"[260]

स्रग्धरा छन्द के ७–७–७ वर्ण पर यति होती है।

उदहारण –

समीक्ष्य महाकाव्य में प्रयुक्त छन्दों में दीर्घतम, 'स्रग्धराछन्द' में महाकाव्य के दशमसर्ग के तीन पद्य निबद्ध है। उनमें से एक पद्य यहाँ उदहारण स्वरूप यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है :–

मगण रगण भगण नगण यगण यगण यगण

ऽऽ ऽ ऽ । ऽ ऽ ।। । ।।। ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ ऽ

"यत्र प्राचीनकालादृषि–मुनिकविभिश्चर्च्चिता नित्यसिक्ता , = २१ वर्ण

गङ्गायाः पुण्यतोया प्रवहति बहुधा संस्कृताध्यायधारा ।

वाङ्गालोर्–सिद्धगङ्गोडुपिप्रभृतिमहातीर्थदेशाः प्रमाणं ,

सोऽयं श्रीभूतिभव्योऽत्र भुवि विजयतां स्वर्णकर्णाटदेशः ।।"[261]

---

[258] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ८/२६

[259] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ८/६०

[260] 'छन्दप्रभाकरः'– भानुकवि जगन्नाथशर्मा' जगन्नाथप्रेस बिलासपुर २००१, ३/६६

इस प्रकार समीक्ष्य महाकाव्य–'भारतायनम्' में बहुविध छन्दों के प्रयोग द्वारा महाकवि आचार्य हरेकृष्ण शतपथी ने स्वकवित्व प्रतिभा का निदर्शन प्रस्तुत किया है। वंशस्थ एवं वसन्ततिलका छन्दों के प्रयोग में महाकवि सिद्धहस्त हैं, अतएव दोनों छन्दों का समीक्ष्य महाकाव्य में आधिक्य प्राप्त होता है। आचार्य हरेकृष्णशतपथी ने अपनी काव्यसृजनप्रवीणता के अनुरूप प्रस्तुत महाकाव्य के दशों सर्गों के ६५६ पद्यों में कुल १३ छन्दों का प्रयोग अत्यन्त विद्वता से किया है। महाकाव्य के प्रथमसर्ग के प्रारंभिक ११८ पद्यों को वंशस्थ छन्द में निबद्ध किया गया है; तथा महाकाव्य के लक्षणानुरूप अंतिम दो पद्यों में छन्द परिवर्तन करते हुए वसन्ततिलका छन्द का प्रयोग किया गया है। द्वितीयसर्ग में पद्य संख्या १ से ५१ पर्यन्त (५१ पद्यों को) वसन्ततिलका छन्द में बद्ध किया गया है; एवं अन्तिम दो पद्यों को पुनः छन्द परिवर्तन करते हुए क्रमशः शार्दूलविक्रीड़ित एवं अनुष्टुप छन्द में बद्ध किया है। तृतीयसर्ग के पद्य संख्या १ से ३ एवं ३५ से ३८ को वसन्ततिलका तथा पद्य संख्या ४ से २७ एवं ३६, ३७ को वंशस्थ छन्द में बद्ध किया गया है। चतुर्थसर्ग में पद्य संख्या १ से २६ तक वसन्ततिलका; ३० से ३४ तक त्रोटक; ३५ से ३७ तक अनुष्टुप; ३८ से ४७ तक द्रुतविलम्बित; एवं ४८, ४६ को उपजाति छन्द से गुम्फित किया है।

पञ्चमसर्ग में पद्य संख्या १ से ३६ एवं ५१ से ५६ तक वंशस्थ; ३७ से ५० तक वसन्ततिलका; एवं ६० से ८१ तक मन्दाक्रान्ता छन्द में निबद्ध किया गया है। षष्ठमसर्ग में पद्य संख्या १ से २ तक वसन्ततिलका; ३, १२ से १५, १७ से १६ तक इन्द्रवज्रा; ४ से ११, १६, १८, २० से २२ तक उपजाति; २३ से ३१ तक वन्सस्थ; ३२ से ३६ तक शिखरिणी एवं अन्तिम पद्य संख्या ४० में शार्दूलविक्रीड़ित छन्द का प्रयोग किया गया है। सप्तमसर्ग में पद्य संख्या १, १८, ३४ में शार्दूलविक्रीड़ित; २, ३, ५, ७ से १३, १६, १६, २६, २३, ३५, ३६ में उपजाति; ४, ६, १४, १५, २१ में इन्द्रवज्रा; २४ से ३३ तक वंशस्थ तथा अन्तिम पद्य संख्या ३७ में शार्दूलविक्रीड़ित छन्द का प्रयोग हुआ है। अष्टमसर्ग में पद्य संख्या १ से १०, एवं ७६ में वसन्ततिलका; ११ से १८ में द्रुतविलम्बित एवं १६ से ७५ में शार्दुलविक्रीड़ित छन्द की छठा दृष्टव्य है। नवमसर्ग में पद्य संख्या १,२, ६ से १७, ५१ से ५३ में वंशस्थ; ३, से ७ तक शार्दुलविक्रीड़ित; ८, ७१ से ८१, ८६ से ६६, १०६ से १०६ में वसन्ततिलका; १८ से ३८ तक अनुष्टुप;; ४० से ४७, ४६, ५०, ५४, ५६ से ६७, ६० से ७०, ८२, ८४, ८६ से ८८, ६७, ६६ से १०४ में उपजाति; ५५, ६८, ८३, ८५, ६८, १०५ में इन्द्रवज्रा; पद्य संख्या ४८ में उपेन्द्रवज्रा एवं पद्य संख्या ३६, ११०, १११ में शिखरिणी छन्द का प्रयोग हुआ है।

अन्तिमसर्ग में पद्य संख्या १ से ५, २० से ३६ में वसन्ततिलका; ६, ७, में शिखरिणी; ८ से १० में स्रग्धरा; ११से १७, ४२ से ४८ में शार्दूलविक्रीड़ित; १८, १६ में वंशस्थ; ४०, ४१ में उपजाति तथा पद्य संख्या ४६ से ५४ को द्रुतविलम्बित वृत्त में निबद्ध किया गया है। यद्यपि यत्र कुत्र क्वचिद् त्रुटि टङ्कण के समय भी सम्भव हो सकती है। किन्तु महाकवि कालिदास की उक्ति –"**एको हि**

---

[261] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, १०/१०

दोषो गुणसन्निपाते निमज्जतीन्दो किरणेष्विता ।।"[262] के आधार पर इस प्रकार के दोष कविकाव्यप्रतिभा में बाधक नहीं होते हैं।

ई. अलंकारयोजना :–

काव्यतत्वविवेचकों ने काव्य में अलंकारों का महत्त्वपूर्ण स्थान स्वीकृत किया है। विभिन्न काव्यशास्त्रियों ने अलंकार शब्द का निर्वचन निम्न दो प्रकार से किया है :–

१. "अलङ्कृतिरलङ्कारः"[263] **और २. "अलङ्क्रियते इति अलङ्कारः"**[264] **।**

इनमें प्रथम व्युत्पत्ति "अलङ्कृतिरलङ्कारः" का अर्थ अति–व्यापक है। इस अर्थ में रसादि विभिन्न काव्यांगों का भी समावेश कर लिया जाता है। 'अलङ्कार' शब्द 'अलं' उपपद पुरस्सर 'कृ' धातु से भावार्थ में 'घञ्' प्रत्यय द्वारा निष्पादित होता है। जिसका शाब्दिक अर्थ–'गहना', 'आभूषण' आदि होता है। 'अलंकार' शब्द का सर्वप्रथम विवेचन आचार्य भरत ने 'नाट्यशास्त्र' में इस प्रकार किया है :–

"उपमा दीपकं चैव रुपकं यमकं तथा ।
काव्यस्यैते ह्यलंकाराश्चत्वारः परिकीर्तिताः ।।"[265]

१. अलंकार का अर्थ, स्वरुप एवं परिभाषाएं –

'अलंकार' शब्द की विभिन्न अलंकारशास्त्रियों ने अनेक प्रकार से विवेचना प्रस्तुत की है। यथा– **आचार्य दंडी :–**

"काव्यशोभाकरान् धर्मान् अलंकारान् प्रचक्षते ।।"[266]

आचार्य वामन :–

"काव्यं ग्राह्यमलंकारात् सौन्दर्यमलंकारः ।"
"काव्यशोभायाः कर्तारो गुणाः तदतिशयहेतवस्त्वलंकाराः ।।"[267]

आचार्य 'रुद्रट':–

"रचयेत तमेव शब्दं रचानायाः यः करोति चारुत्त्वम् ।"[268]

मम्मटाचार्य :–

"उपकुर्वन्ति तं सन्तं येऽङ्गद्वारेण जातुचित् ।
हारादिवदलंकारास्तेऽनुप्रसोपमादयः ।।"[269]

---

262 महाकविकालिदासकृत 'कुमारसम्भवम्'– काशीनाथपांडुरंग, साहित्य अकादमी दिल्ली, २००७, १/२
263 'रस–छन्द–अलंकार तथा अन्य काव्यांग'– डॉ.वेंकटशर्मा, चौ०प्र०वारा०, पृ०,२१३
264 'साहित्यसार'– अचुतानंद, चौ०प्र०वारा०,२०१५ पृ. सं. १०७
265 'अलंकारकौमुदी'– रामशंकरशुक्ल, ओंकारप्रेस प्रयाग,२०१५, २/६/१०१
266 भरतमुनिप्रणीतम् 'नाट्यशास्त्रम्',–पुष्पेन्द्र कुमार',न्यू भा०बु०कोर्पो०दिल्ली,२०१५, पृ०६०७
267 महाकविदण्डीविरचित 'काव्यादर्शः'– आ.रामचंद्रमिश्र चौ०प्र०वाराणसी, २०१४, २/१
268 आ०वामनविरचित 'काव्यालंकारसूत्रवृत्तिः'– डॉ०नरेश झा, चौ०प्र०वारा० २०१२, १/१/१–२
269 आ०मम्मटविरचित 'काव्यप्रकाश'–डॉ०श्रीनिवासशास्त्री, साहित्यभण्डार, प्र०,मेरठ,२००३, ८/६७

साहित्यदर्पणकार कहते हैं कि काव्यशोभा में वृद्धि करने वाले; रस, भावादि के उपकारक; जो शब्दार्थ के अस्थिर धर्म है; वे अंगद (बाजूबन्ध) आदि के सामान अलंकार कहलाते हैं। यथा–

"शब्दार्थयोरस्थिरा ये धर्माः शोभातिशायिनः ।
रसादीनुपकुर्वान्तोऽलंकारास्तेऽङ्गदादिवत् ।।"[270]

प्रो0 (डॉ0) अभिराजराजेन्द्रमिश्र :–

"शब्दार्थसंश्रिताः ये वै काव्यशोभां प्रवतन्ते ।
हारादिवदलंकारास्तेऽनुप्रसोपमादयः ।।"[271]

इस प्रकार 'अलंकार' काव्य के शब्दार्थरूपी शरीर की शोभा को बढ़ाने में सहायक होते हैं।

२. अलंकारभेद–

अलंकारों के अलंकारशास्त्रियों ने निम्न तीन भेद बताये हैंः–

1. शब्दालंकार – जो शब्दसौन्दर्यवर्धक हो; अनुप्रास, यमक, वीप्सा, वक्रोक्ति आदि ।
2. अर्थालंकार – जो अर्थसौन्दर्यवर्धक हो; उपमा, रूपक, दीपक, विभावना, उत्प्रेक्षा आदि।
3. उभयालंकार – जो शब्दार्थसौंदर्यवर्धक हो; संसृष्टि, संकर आदि ।

३. भारतायनम् महाकाव्य में अलंकारयोजना –

महाकवि आचार्य हरेकृष्ण शतपथी ने अपनी वैलक्षण्यप्रतिभा द्वारा रसाभिव्यक्ति में अलंकारों की स्वाभाविक रूप से सुन्दर योजना की है, जिससे महाकाव्य की कथावस्तु हृदयावर्जक हो गयी है। महाकवि ने शब्दार्थसौन्दर्यवृद्धि हेतु अनुप्रास, यमक, वीप्सादि शब्दालंकारों; उपमा, रूपक, दीपक, विभावना, उत्प्रेक्षा आदि अर्थालंकारों एवं संसृष्टि, संकर आदि उभयालंकारों का अत्यन्त सुन्दरता से प्रयोग किया है। समीक्ष्य महाकाव्य में स्वाभाविकरूपेण आगत कतिपय शब्दालंकारों, अर्थालंकारों एवं उभयालंकारों का यथाशक्ति सोदाहरण विवेचन क्रमशः प्रस्तुत है।

1. शब्दालंकारयोजना :–

शब्दों पर आश्रित होकर काव्य की शोभा को बढ़ाने वाले अलंकार 'शब्दालंकार' कहलाते हैं। यदि काव्य में किसी शब्द के स्थान पर पर्यायभूत शब्दान्तर का प्रयोग करने से चारुत्व उत्पन्न होता है तो यह शब्द का ही चमत्कार है। यथा –

"यत्पदानि व्यजन्त्येव परिवृत्तिसहिष्णुताम् ।।"[272]

'भारतायनम्' महाकाव्य में शब्दालंकार स्वाभाविकरुपेण प्रचुरता से उपस्थित है। समीक्ष्य महाकाव्य में आगत शब्दालंकारों का यथाशक्ति सोदाहरण संक्षिप्तविवेचन यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है।

---

[270] कविराजविश्वनाथविरचित साहित्यदर्पणम् शालिग्रामशास्त्री,मो०ब०वारा०प्र०२००४, १०/१

[271] अभिराजयशोभूषणम्' अभिराजराजेन्द्रमिश्र, वैजयन्त प्र०इलाहाबाद,२००७, २/२

[272] आ०आनन्दवर्धनकृत–'ध्वन्यालोक'–डॉ०श्रद्धासिंह,जगदीश संस्कृत पुस्तकालय,प्र०जयपुर,२००५, पृ०५२८

क. अनुप्रास अलंकार –

काव्य में स्वरों की विषमता होने पर भी केवल व्यञ्जनों की आवृत्ति चमत्कारोत्पादक प्रतीत हो तो, 'उस वर्णों की आवृत्ति को' 'अनुप्रास' कहते है। वस्तुतः रस की अनुगामी, प्रकृष्ट रचना का नाम ही 'अनुप्रास' है। व्यञ्जनों की सामानक्रम में आवृत्ति से जहां चमत्कार उत्पन्न हो, उसे अनुप्रास कहते है। यथा–

"अनुप्रासः शब्दसाम्यं वैषम्येऽपि स्वरस्य यत् ।।"[273]

उदहारण –

भारतायनम् महाकाव्य में प्रतिपद अनुप्रास की छठा स्वाभाविक रूप से विलसित होती है। यथा–

"तुङ्गागङ्गातरङ्गायितजलधिजलप्राणपुण्यप्रवाहः ,
कावेरीवारिधारासुरभितवपुषा भूषितः नित्यपूतः ।
याऽसौ सौन्दर्यसम्पत्सकलविधमहामण्डनैर्मण्डिताङ्गः ,
सोऽसौ कालीप्रसन्नो जगति विजयतां स्वर्णकर्णाटदेशः ।।"[274]

प्रस्तुत पद्य के प्रथम चरण में 'ङ्ग, ङ्ग, ङ्ग, ज्, ल्, एवं प् वर्णों; द्वितीय चरण में 'वेरी–वारि'; तृतीय चरण में स्, म्, ण्, ड्, आदि वर्णों के समूहों की आवृत्ति हुई है। यहाँ 'ङ्ग, ङ्ग, ङ्ग आदि अनेक व्यञ्जनसमूहों की अनेक बार आवृत्तिदृ **"एकस्यप्यसकृत्परः"**[275] होने से **'वृत्त्यानुप्रास'** अलंकार है; तथा ज्, ल्, स्, म्, ण्, एवं ड् व्यञ्जन की एक बार आवृत्तिदृ **"सोऽनेकस्य सकृतपूर्वः"**[276] से **'छेकानुप्रास'** अलंकार है।

और भी–

"बहुरङ्गतरङ्गविभङ्गयुते ! ,
सुरसङ्गमपुण्यपयः परिधे ! ।
भवदुःखविमोचनकारण हे ! ,
प्रणतिस्त्वदपारपदाब्जयुगे ।।"[277]

प्रस्तुत पद्य के प्रथम चरण में रङ्ग, रङ्ग, भङ्ग एवं द्वितीय चरण में प्, य्, एवं अंतिम चरण में प् वर्ण की आवृत्ति से उत्पन्न शाब्दिक चमत्कार दृष्टव्य है।

और भी–

"तीर्थेषु धन्या नितरां सुपुण्या ,
करालवन्याकुलकालकन्या ।
सा द्वारिकामन्दिरमालमान्या ,

---

[273] कविराजविश्वनाथविरचित साहित्यदर्पणम् शालिग्रामशास्त्री,मो०ब०वारा०प्र०२००४, ६/१०४
[274] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, १०/८
[275] आ०मम्मटविरचित 'काव्यप्रकाश'–डॉ० श्रीनिवासशास्त्री,साहित्यभण्डार प्र०,मेरठ,२००३, ६/१०७
[276] आ०मम्मटविरचित 'काव्यप्रकाश'–डॉ० श्रीनिवासशास्त्री,साहित्यभण्डार प्र०,मेरठ,२००३,, ६/१०६
[277] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ४/३१

विराजते विश्वविभाग्रगण्या ।।"[278]

प्रस्तुत श्लोक के प्रथम चरण में य् वर्ण; द्वितीय चरण में क् एवं ल् वर्ण; तृतीय चरण में म् वर्ण एवं अंतिम चरण में व् एवं ग् वर्णों की आवृत्ति से उत्पन्न चारुता दर्शनीय है। प्रस्तुत पद्य के द्वितीय चरण– "**करालवन्याकुलकालकन्या"–**को बारम्बार पढ़ने एवं सुनने को मन करता है।

और भी –

"सृजामि खादामि ददामि नौमि वा ,
शृणोमि पश्यामि पठामि यामि वा ।
तदेव सर्वं हि तदीयरूपभाक् ,
क्रियावती सा जननीह विश्रुता ।।"[279]

उपर्युक्त पद्य में केवल एक ही व्यंजन 'म्' की प्रथम एवं द्वितीय चरण में अनेक बार आवृत्ति होने से यह 'वृत्त्यानुप्रास' अलंकार का अत्युत्तम उदहारण है।

और भी –

"कल्पान्तकालकान्ताय ,
कलिकल्मषहारिणे ।
धारिणे सर्वरत्नानां
सागराय नमो नमः ।।"[280]
"दालितमानवरक्षणतत्परां ,
कलितकोटिकलाकमलाकराम् ।
चलितकालकरालकृपाकरां ,
नमत भारतमातरमादरात् ।।"[281]

अन्य :–

'भारतायनम्' महाकाव्य में अनुप्रास अलंकर प्रयोग -				
क्र०	**सर्ग क्रम**	**कु० श्लो०**	**प्रतिसर्ग अनुक्रम अनुप्रास युक्त पद्यों का क्रम/संख्या-**	**कुल**
१	I	१२०	३, १०, २२-२३,३०, ३३, ४०, ४५-४६, ५५, ७१, ७४, ७८, ८४-८६, ८९, ९५, ९७, १०२ एवं ११६-११७.	**२२**
२	II	५३	२-५, १५, १९, २५-२६, एवं ४५-४६.	**११**
३	III	३७	१-५, १३, ३२, एवं ४८.	**०७**

[278] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ७/८
[279] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, १/८६
[280] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ४/३७
[281] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ३/४

४	IV	३९	११, १९, २९, ३१, एवं ३५-३८.	०८
५	V	८१	३, ६-७, २४, २७, २९, एवं ३२.	०९
६	VI	४०	१४, १८, २०-२१, २८, ३६-३७,एवं ४०	०८
७	VII	३७	४-५, ७-८, १८ एवं २६.	०६
८	VIII	७६	१-२, ९, ११, १३, १५, २०-२१, २४, ३०, ६५ एवं ७०.	१२
९	IX	१११	३-४, ६, ४५, ६५ एवं ९३.	०६
१०	X	५५	४, ६-९, १४, २१, २७, २९, ४०, ४३-४४ एवं ५१.	१३
			अनुप्रास अलंकार युक्त कुल पद्य= १०२	

इस प्रकार समीक्ष्य महाकाव्य के कुल ६५६ पद्यों में से लगभग १०२ पद्यों में 'अनुप्रास' अलंकार की उपस्थिति महाकवि के शब्दों के चितेरे एवं काव्यकौशलमूर्धन्य होने का परिचायक है।

ख. यमक अलंकार –

जहाँ पर समान वर्णसमुदाय (शब्दों) की एक ही क्रम में आवृत्ति हो तो उसे 'यमक' कहा जाता है। आचार्य विश्वनाथ ने अर्थवान अथवा अर्थरहित अथवा भिन्न अर्थवाले स्वरव्यंजनसमुदाय की एक ही क्रम में आवृत्ति को यमक कहा है। यथा–

"सत्यर्थे प्रथगर्थायाः स्वरव्यंजनसंहतेः ।
क्रमेण तेनैवावृत्तिर्यमकं विनिगद्यते ।।"[282]

उदहारण –

'भारतायनम्' महाकाव्य के सभी सर्गों में, 'यमक' अलंकर की उपस्थिति दृष्टिगत होती है। यथा –

"सुतासुतानां विधिनाऽपि निर्मितां ,
अनन्तकालादनुमर्मवेदनाम् ।
निशम्य दुःखेन विदारितं हि यत् ,
तदेव मातुर्हृदयं दयामयम् ।।"[283]

प्रस्तुत पद्य में प्रथम चरण में–"**सुतासुतानां"**– पद में 'सुत' एवं अंतिम चरण में –"**मातुर्हृदयं दयामयम्"** में 'दय' स्वर–व्यञ्जनसमूह की एक ही क्रम में आवृत्ति होने से यहाँ 'यमक अलंकार' है।

और भी –

"संसारधातारमनन्तरूपं ,

---

[282] कविराजविश्वनाथविरचित साहित्यदर्पणम् शालिग्रामशास्त्री,मो०ब०वारा०प्र०२००४, १०/८
[283] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, १/६१

वेदान्तवेद्यं हृतपापतापम् ।

प्रातश्च सायश्च तमेकनाथं ,

वन्दे जगन्नाथमनाथनाथम् ।।[284]

प्रस्तुत श्लोक के अन्तिम चरण में –"**जगन्नाथमनाथनाथम्"** पद में 'नाथ' वर्णसमुदाय की एक ही क्रम में आवृत्ति से जो शब्दगत चमत्कार दृष्टिगत हो रहा है; वह 'यमक' अलंकार के कारण ही है।

और भी –

''गते वसन्ते भविता पिकः पिकः ,

पुनश्च शुष्के सलिले सरः सरः ।

गतेऽपि तेले नितरां दशा दशा ,

जरावतीर्णे च पुनर्जनो जनः ।।"[285]

प्रस्तुत पद्य में महाकवि ने अपने हृदय की भावनाओं को अभिव्यक्त करने के क्रम में क्रमशः 'पिकः पिकः'; 'सरः सरः' एवं 'दशा दशा' आदि समान शब्दसमूहों की एक ही क्रम में आवृत्ति की है।

उपर्युक्त उदाहरणों के अतिरिक्त समीक्ष्य महाकाव्य के प्रथमसर्ग में पद्य–संख्या २१, ४२, ४७, ६३, ६६, ६८, ७५, ८१ एवं ८२ में; द्वितीयसर्ग में पद्य–संख्या ४ में; तृतीयसर्ग में पद्य–संख्या ५, १३ एवं २६ में; चतुर्थसर्ग में पद्य–संख्या १३, २५, ३३ एवं ४६ में; पञ्चमसर्ग में पद्य–संख्या १, ५, ८, १२, २४, २७ एवं ४७ में; षष्ठसर्ग में पद्य–संख्या १, १३, १४,१५, २२, ३६, ३७ एवं ४० में; सप्तमसर्ग में पद्य–संख्या ७, २७ एवं ३७ में; अष्टमसर्ग में पद्य–संख्या १ एवं १३ में; नवमसर्ग में पद्य–संख्या १, ३ एवं ५ में तथा दशमसर्ग में पद्य–संख्या ७, २६, ३१ एवं ४४ में यमक अलंकार की शोभा दृष्टिगोचर होती है।

ग. वीप्सा अलंकार –

यह नवीन शब्दालंकार है। श्रद्धा, आदर अथवा भावातिरेकवश, अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त करने की उत्कण्ठा में, 'समान शब्दों की आवृत्ति' को 'वीप्सा' कहतें हैं। आधुनिक काव्याचार्य 'ओमप्रकाश शास्त्री' अपनी काव्यशास्त्रीय कृति 'काव्यालोचनम्' में वीप्सा अलंकार का स्वरुप विवेचन करते हुए लिखा है :–

"श्रद्धादरघृणादिभावेषु प्रभावोत्पदानाय समानशब्दसमूहानामावृत्तिर्वीप्सा" इति।।"[286]

उदहारण–

---

[284] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ६/१४

[285] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ५/२७

[286] काव्यालोचनम्– ओमप्रकाश शास्त्री, आर्य बुक डिपो, दिल्ली,२०१३, पृ०सं० ६

प्रस्तुत महाकाव्य में जननी एवं जन्मभूमि के महात्म्य वर्णन, आत्महृदयान्तर्भावनाओं के प्रकटन, स्वेष्टदेव के महिमावर्णन एवं गुणज्ञों के गुणकथन में अनेक स्थलों पर स्वाभाविक रूप से वीप्सा की उपस्थिति दृष्टव्य है। उदहारणस्वरूप कुछ पद्य उपस्थित है। यथा–

"गृहं गृहं नो विपिनं गृहं यतः '
सखा सखा नो हरिणा हि बान्धवाः ।
पिता पिता नो हि पिताऽम्बरः परं ,
न साऽस्ति माता जननी वसुन्धरा ।।"[287]

प्रस्तुत पद्य में महाकवि ने अपने हृदय की भावनाओं को अभिव्यक्त करने के क्रम में क्रमशः 'गृहं गृहं'; 'सखा सखा' एवं 'पिता पिता' समान शब्द समूहों की आवृत्ति या वीप्सा की है। और भी –

"नमो नमस्ते प्रभुचन्द्रशेखर ! ,
नमो नमस्ते गुरुचन्द्रशेखर ! ।
नमो नमः शंकरमूर्तिधारण ! ,
त्वमेव साक्षान्मम मोक्षकारण ! ।।"[288]

प्रस्तुत पद्य में कवि ने गुरु चंद्रशेखर के गुण कथन में 'नमः' पद की आवृत्ति है।

उपर्युक्त पद्यों के अतिरिक्त प्रस्तुत महाकाव्य के श्लोक संख्या ४/४६, ५/८, ५/१२, एवं ७/७ में वीप्सा अलंकार की चमत्कारिता दर्शनीय है।

2. अर्थालंकारयोजना :–

'अर्थालंकार' काव्य के अर्थादि के लिये सौन्दर्यजनक होते हैं। 'शब्दवृत्तिसहत्व' अर्थालंकारों का मूल है। अर्थालंकार काव्य के अर्थरूपी शरीर की शोभा बढ़ाते हैं। प्रस्तुत महाकाव्य में आगत अर्थालंकारों का संक्षिप्त वर्णन आगे प्रस्तुत है।

क. उपमा अलंकार –

'उपमा' का शाब्दिक अर्थ होता है 'तुलना'। 'सादृश्यगर्भभेदाभेदप्रधान' 'उपमा' अलंकार को सादृश्यमूलक अलंकारों का 'उपजीव्य' कहा जाता है। साहित्यदर्पणकार कविराज विश्वनाथ ने दो पदार्थों के 'वैधर्म्यरहित वाच्यसादृश्य' को उपमा कहा है। यथा–

"साम्यं वाच्यमवैधर्म्यं वाक्यैक्य उपमा द्वयोः ।।"[289]

उपमा–कथन के अंग– अलंकारशास्त्रियों ने उपमा के निम्न चार अंग बताये हैं:–

1. उपमेय – जिसकी तुलना 'चन्द्रादि' (उपमान) से की जाती है; जैसे मुखादि।
2. उपमान – जिनसे मुखादि (उपमेय) की समानता कही जताई है; जैसे चन्द्र ।

---

[287] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ५/२४
[288] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ६/१७
[289] कविराजविश्वनाथविरचित साहित्यदर्पणम् शालिग्रामशास्त्री,मो०ब०वारा०प्र०२००४, १०/१४

3. साधारणधर्म – जो धर्म उपमेय एवं उपमान दोनों में उपस्थित रहता है; जैसे–सुन्दरता आदि । और
4. वाचकशब्द – जो उपमानोपमेय के साधारण धर्म का बोध करातें हैं; जैसे– इव, यथा, वत्, तुल्य, सदृश्य, सम्मतम् आदि ।

उदहारण–

समीक्ष्य महाकाव्य से उपमा अलंकार के उदहारणस्वरूप निम्न पद्य उपस्थित है। यथा–

"इयं प्रसिद्धा सुरभारती सा ,
ह्यात्मरूपा खलु भारतस्य ।
प्रवाहिताजह्नुसुतैव कालात् ,
ज्ञानेन विज्ञानमलङ्करोति।।"[290]

यहाँ पर "जह्नुसुतैव" पद उपमा का द्योतक है। सुरभारती (संस्कृतभाषा) की उपमा देवनदी गंगा से दी गयी है। यहाँ पर उपमेय–'सुरभारती'; उपमान–'जुह्नुसुता'; साधारण धर्म– 'अलंकृत करना' एवं वाचक शब्द 'इव' चारों की उपस्थिति होने से पूर्णोपमा अलंकार की छठा दृष्टव्य है।

और भी –

"यथा महत्कष्टचयेन सञ्चितं ,
हरत्यहो तन्मधुहा समं मधु ।
तथा हि मातश्च तव स्तनद्वयाद् ,
बलान्मया कर्षितमम्बुजामृतम् ।।"[291]

यहाँ शिशु की उपमा मधुहा से की गयी है। प्रस्तुत पद्य में उपमान– 'शिशु'; उपमेय– 'मधुहा'; साधारणधर्म–'कर्षितं' एवं वाचक शब्द–'समं' उपमा के चारों धर्मों की उपस्थिति होने से पूर्णोपमा अलंकार है।

उपर्युक्त उदाहरणों के अतिरिक्त समीक्ष्य महाकाव्य के द्शालोक संख्या १/६२, १/८५, १/१०७, एवं १०/४५ आदि में पूर्णोपमा अलंकार की सुन्दरता दृष्टव्य है।

ख. रूपक अलंकार –

यह 'सादृश्यगर्भ–अभेदप्रधान आरोपमूलक' अर्थालंकार है। अर्थात् उपमान तथा उपमेय के अतिसाम्य प्रदर्शन हेतु काल्पनिक अभेद आरोप रूपक है। यथा–

"तद्रूपकमभेदो यः उपमानोपमेययो" ।।"[292]

उदहारण–

"अध्यात्मविद्या ऋषिवृन्दवन्द्या ,
विज्ञानसम्भारविशेषयुक्ता ।

---

[290] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, १०/४१
[291] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, १/२७
[292] आ०मम्मटविरचित 'काव्यप्रकाश'–डॉ० श्रीनिवासशास्त्री,साहित्यभण्डार प्र०,मेरठ,२००३, १०/६

आवश्यकी भारतभाग्यभानो ,

विकाशनार्थं ह्याधुनाऽपि काले ।।"[293]

प्रस्तुत पद्य में उपमेय–'भारतभाग्य' का उपमान–'भानु' पर कवि द्वारा कलिपित अभेद–आरोप होने से यहाँ रूपक अलंकार से उत्पन्न अर्थगत सौन्दर्य दृष्टव्य है।

और भी –

"कामेन जर्जरितजीर्णविदग्धदेहः ,

क्रोधस्य नर्कवलयेन विशीर्ण्णचित्तः ।

संसारजालपतितः प्रथितो मनुष्यः ,

मोहान्धकारकुहरे भ्रमति प्रकामम् ।।"[294]

प्रस्तुत पद्य में उपमेय–'मोह–जाल' का उपमान–'अन्धकार आदि' पर कविकल्पित अभेद आरोप होने से रूपक अलंकार है।

उपर्युक्त पद्यों के अतिरिक्त प्रस्तुत महाकाव्य के श्लोक संख्या १/४, २/२४, ६/१३ आदि पद्यों में रूपक अलंकार की चमत्कारिता दृष्टव्य है।

ग. उत्प्रेक्षा अलंकार –

'उत्प्रेक्षा' का शाब्दिक अर्थ 'अनुमान' होता है। यह सम्भावनामूलक अलंकार है; जहाँ पर उपमान में उपमेय की 'कविकल्पित' संभावना की जाती है। जैसा कि आचार्य मम्मट ने कहा हैः–

"सम्भावनमथोत्प्रेक्षा प्रकृतस्य समेन यत् ।।"[295]

अर्थात् जब उपमेय की, उपमान के साथ (एकात्मकभाव) सम्भावना व्यक्त की जाती है; तब उपमानोपमय की वह एकीभाव की सम्भावना 'उत्प्रेक्षा' कहलाती है। यह संभावना उत्पेक्षा बोधक शब्दों– मन्ये, शंके, ध्रुवं, प्रायः, इव, नूनं इत्यादि के द्वारा, कविप्रतिभा से प्रकट की जाती है।

उदहारण–

"प्राणप्रिये ! जगति जीवनदानधन्ये ! ,

मन्ये तवाङ्कवलये हिममेरूकन्ये ! ।

अद्य भ्रमामि प्रियाभारतभूमिभागे ,

भाग्येन सम्भवति केवलमेतदेव ।।"[296]

प्रस्तुत पद्य के द्वितीय चरण में उपमेय–'प्राणप्रिये' में उपमान–'हिममेरूकन्या' की कविकल्पित सम्भावना होने से यहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार है। 'मन्ये' शब्द यहाँ उत्प्रेक्षा का बोधक है। और भी –

"कदा शंखक्षेत्रे कलिकलितगंगाविलसिते ,

कदा वंगम्बोधेः स्वरसुललिते तीरपुलिने ।

सुभद्रामध्यस्थं स्वजनबलभद्रेण सहितं ,

---

[293] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, १०/४०

[294] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, २/२४

[295] आ०मम्मटविरचित 'काव्यप्रकाश'–डॉ० श्रीनिवासशास्त्री,साहित्यभण्डार प्र०,मेरठ,२००३, १०/१३७

[296] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ३/१

जगन्नाथं दृष्ट्वा जननमिह मन्ये मधुमयम् ।।"[297]

घ. अर्थान्तरन्यास अलंकार –

अर्थान्तरन्यास अलंकार में पूर्व में कथित बात को परिपुष्ट करने हेतु, उसके समर्थन में, जन–सामान्य में स्वीकार्य अन्य बात रखी जाती है, जिससे जनसामान्य उस बात का भाव–बोधन सरलता से कर सके। यथा–

"सामान्यं वा विशेषो वा तदन्येन समर्थ्यते ।
यत्तु सोऽर्थान्तर्न्यासः साधर्म्येणेतरेण वा ।।"[298]

अर्थात् अर्थान्तरन्यास अलंकार में निम्न स्थितियां होती हैं:–

1. सामान्य कथन का विशेष से समर्थन; अथवा
2. विशेष कथन का सामान्य से समर्थन; अथवा
3. कार्य का कारण से समर्थन; अथवा
4. कारण का कार्य से समर्थन किया जाता है।

उदहारण–

"तेषां बुधानां महती हि सेवा ,
कृता च राज्ञा महतादरेण ।
दानं प्रदत्तञ्च मनोऽनुरूपं ,
सतां हि पूजा मनुजस्य धर्मः ।।"[299]

प्रस्तुत पद्य में विशेष कथन–'राजा इन्द्रधुम्न ने यज्ञ संपादनार्थ आये हुए विद्वानों की महती सेवा की एवं उनको मनोवाञ्छित दान दिए' का सामान्य कथन–'सज्जनों की सेवा करना मनुष्य का धर्म है'; से समर्थन किया गया है। अतः विशेष का समान्य से समर्थन किये जाने से इस पद्य में अर्थान्तरन्यास अलंकार है।

और भी –

"स्वकीयमातुः परलोकवार्तां ,
श्रुत्त्वाऽपि नासौ व्यथितान्तरोऽभूत् ।
सुखं च दुःखं च सकलं समानं ,
यस्यास्ति नूनं स्थितधीः स विद्वान् ।।"[300]

प्रस्तुत पद्य में विशेष कथन–"स्वकीय मातुः परलोकवार्तां श्रुत्त्वाऽपिनासौ व्यथितान्तरोभूत् " का सामान्य कथन– "सुखं च दुःखं च सकलं समानं , यस्यास्ति नूनं स्थितधीः स विद्वान्'; से समर्थन

---

[297] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ६/३२
[298] आ०मम्मटविरचित 'काव्यप्रकाश'–डॉ० श्रीनिवासशास्त्री,साहित्यभण्डार प्र०,मेरठ,२००३, १०/१६५
[299] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ६/५
[300] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ६/६५

किया गया है। अतः विशेष का समान्य से समर्थन किये जाने से इस पद्य में अर्थान्तरन्यास अलंकार है।

और भी –

"शिल्पेभ्यो ह्युपलभ्यते बहुपरिश्रान्त्या च वित्तव्ययात् ,
सत्यं तद् व्यवहार्यवस्तुसकलं साक्षाद्विलासप्रियम् ।
तत्किं क्रेतुमहो दरिद्रजनताद्वारा सदा शक्यते ?
दीनानां श्रमशोषणाय धनिनां लाभाय च शिल्पं मतम् ।।"[301]

प्रतुत पद्य में विशेष कथन– ''उधोगों में अत्यधिक परिश्रम एवं धन के निवेश के अपव्यय के उपरान्त उत्पादित होने वाली विलासतापूर्ण वास्तूओं से भारत की दरिद्र जनता का कोई सरोकार नही है'' का विशेष कथन– ''वस्तुतः दरिद्रों का शोषण एवं धनार्जन ही आधुनिक उद्यमियों का मुख्य उद्देश्य है'' से समर्थन किया गया है। अतः विशेष का समान्य से समर्थन किये जाने से इस पद्य में अर्थान्तरन्यास अलंकार है।

ङ. विभावना अलंकार–

विभावना विरोधमूलक अलंकार है। 'जिसका सहज समाधान हो जाए; उस 'कारण' का निषेध करके; 'कार्य' का वर्णन'; अर्थात 'बिना कारण के कार्य की उत्पत्ति' का वर्णन विभावना कहलाता है। यथा–

"विभावना विना हेतुं कार्योत्पत्तिर्यदुच्यते ।।"[302]

उदहारण–

प्रस्तुत महाकाव्य में प्रकृतिविपर्ययवर्णन एवं प्रभुमहात्म्यवर्णन में महाकवि ने अनेक विभावनाओं का प्रयोग किया है। यथा–

"अपाणिपादोऽपि समस्तवस्तु–
गृहेऽसि शक्तश्चलने समर्थः ।
त्वमेव साकारकलानिधानः ,
त्वं वै निराकारनिरन्तनित्यः ।।"[303]

प्रस्तुत पद्य में कारण (हस्त, पाद आदि के) बिना कार्य (ग्रहण, गमन आदि) की का कथन है। अतः बिना कारण के; कार्य की उत्पति का कथन होने से यहाँ पर विभावना अलंकार है।

च. विशेषोक्ति अलंकार –

साहित्यदर्पणकार के अनुसार 'जहाँ पर 'कारण' के उपस्थित होने पर भी 'कार्य' की उपस्थिति का कथन न हो'; उसे 'विशेषोक्ति' कहते है। यथा–

"सति हेतौ फलाभावे विशेषोक्तिः।।"[304]

---

[301] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ८/२७
[302] कविराजविश्वनाथविरचित साहित्यदर्पणम् शालिग्रामशास्त्री,मो०ब०वारा०प्र०२००४, १०/६६
[303] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ६/२१

उदहारण–

"मनोहरैर्मौकुलपंक्तिकूजितैः ,
अतीवकारुण्यवहैर्विरावितै ।
प्रभातकालेऽपि समागते कथं'
तमोभिन्दन् मिहिरो न काशते ।।"[305]

प्रस्तुत पद्य में, हेतुरूप–'पक्षीसमूह के कलरव' (कारण) के उपस्थित होने पर भी कार्य– 'सूर्योदय' का कथन न होने से; विशेषोक्ति अलंकार है।

और भी –

"सुरैः कियद्भिः महती स्तुतिः कृता ,
सुतैरनेकैः प्रणतिर्निवेदिता ।
तथाऽपि माताऽवगता न संस्थिता ,
रहस्यरोमाञ्चरसप्रभान्विता ।।"[306]

छ. दृष्टान्त अलंकार–

दृष्टान्त अलंकार में, दो वाक्यों में, दो भिन्न बातें, 'बिम्बप्रतिबिम्बभाव' से प्रकट की जाती है। अर्थात् उपमेय रूप में कही गयी बात से मिलती–जुलती बात, उपमान रूप में दूसरे वाक्य में कही जाती है। साहित्यदर्पणकार ने 'दो पदार्थो (उपमानोपमेय) में 'बिम्बप्रतितिबिम्ब' के भाव को दृष्टान्त कहा है। **यथा–**

"दृष्टान्तस्तुसधर्मस्य वस्तुनः प्रतिबिम्बनम् ।।"[307]

'दृष्टान्त' को उदाहरण अलंकार भी कहते हैं। इसमें उपमानोपमेय के साधारण धर्मों में बिम्ब–प्रतिबिम्ब का भाव उपस्थित रहता है।

उदहारण–

"तस्माद्गते सुहृदि कस्य न दुःखमस्ति ,
चन्द्रे गते कुमुदिनी न हि दुःखिता किम् ? ।
त्यक्त्वाद्य दुःस्तरवने भगिनीं मदीयां ,
जातोऽस्मि निर्ममममना हृतधैर्यराशिः ।।"[308]

प्रस्तुत पद्य में उपमेय–'भगिनी'; तथा उपमान–'कुमुदिनी'; में बिम्ब–प्रतिबिम्ब का भाव होने से यहाँ दृष्टान्त अलंकार है।

ज. काव्यलिङ्ग अलंकार–

---

[304] कविराजविश्वनाथविरचित साहित्यदर्पणम् शालिग्रामशास्त्री,मो०ब०वारा०प्र०२००४, १०/६७
[305] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ५/२
[306] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, १/६
[307] कविराजविश्वनाथविरचित साहित्यदर्पणम् शालिग्रामशास्त्री,मो०ब०वारा०प्र०२००४, द०परि० पृ०सं० ३२६
[308] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ५/४१

यहाँ लिङ्ग का अर्थ है– 'हेतु'। कविकल्पित अर्थ के प्रतिपादन के लिये, हेतु का कथन ही काव्यलिङ्ग अलंकार है। इसे 'हेतु अलंकार' अथवा 'काव्य हेतु अलंकार' भी कहते **यथा–**

"काव्यलिङ्ग हेतोर्वाक्यपदार्थता ।।"[309]

उदहारण–

"इदं हि सौभाग्यमहो महत्तपः ,
कृतं मया प्राक्तजन्मजन्मनि ।
यतोऽत्र लब्धं जननं हि पावनं ,
पवित्रिते भारतभूमिमण्डले ।।"[310]

प्रस्तुत पद्य में पूर्व जन्म के पुण्य कर्म; 'भारतभूमि पर जन्म लेने के हेतु के रूप में वर्णित होने से यहाँ काव्यलिङ्ग अलंकार है।

और भी –

"कृतं हि किं दुष्कृतमेव जीवने ,
यतो न लब्धं हि ममेष्टदर्शनम् ।
न वा स्वधर्मो विहितस्ततः फलं ,
न लब्धमित्येव नृपो व्यचिन्तयत् ।।"[311]

प्रस्तुत पद्य में 'इष्टदेव के दर्शन प्राप्त न होने; के हेतु के रूप में पूर्व जन्म के दुष्कर्मों' का कथन किये जाने से यहाँ काव्यलिङ्ग अलंकार है।

झ. स्वभावोक्ति अलंकार–

'स्वभावोक्ति' को 'जाति' अलंकार भी कहा जाता हैं। आधुनिक काव्यशास्त्री डॉ० हर्षदेव 'माधव' स्वरचित ग्रन्थ 'वागीश्वरीकण्ठसूत्रम्' में स्वभावोक्ति अलंकार का लक्षण 'जाति अलंकार' के नाम से प्रस्तुत करते हुए कहते हैं कि '**कवि प्रतिभा से बालकादि की स्वाभाविक क्रियाओं का उद्घाटन ही 'जाति' है।**[312] प्रो०(डॉ०) अभिराज राजेन्द्रमिश्र स्वभावोक्ति अलंकार का स्वरुप विवेचन करते हुए कहतें हैं कि "जो वस्तु जैसी है उसका वैसा ही वर्णन स्वभावोक्ति कहलाता है। यथा–

"स्वभावोक्तिरसौचारुयथावद्वस्तुवर्णनम् ।।"[313]

उदहारण–

प्रस्तुत महाकाव्य के "मातृगौरवशिशुस्पन्दनम्" नामक द्वितीयसर्ग में शिशु के 'स्वाभाव' एवं 'स्वभाविक क्रियाओं' के वर्णन में प्रतिपद्य स्वभावोक्ति से अभिलसित होता है। यथा–

"मातुस्स्तनौ चलशिशुः करपल्लवाभ्यां ,

---

309 आ०मम्मटविरचित 'काव्यप्रकाश'–डॉ० श्रीनिवासशास्त्री,साहित्यभण्डार प्र०,मेरठ,२००३, १०/१७४
310 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ३/२३
311 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ३/३१
312 आ०हर्षदेवकृत 'वागीश्वरीकण्ठसूत्रम्'–डॉ०प्रवीणपंड्या,रा०सं०सं०दि०,२०११ तृ०अ०,पृ०सं० ३८३
313 अभिराजयशोभूषणम्–अभिराजराजेन्द्रमिश्र, वैजयन्त प्र०इलाह०,२००७, २/१०८

किं कन्दुकाविति विचिन्त्य विदारयंस्तौ ।

क्रीड़ाभिराममुखभङ्गीमलोभनीयः ,

विश्रब्धमेव पिबति प्रतिवारमेषः ।।"[314]

ञ. स्मरण अलंकार–

'स्मरण अलंकार' का स्वरुपविवेचन करते हुए मम्मटाचार्य लिखते हैं कि पूर्वानुभूत के समान कोई परिचित व्यक्ति अथवा वस्तु किसी के समक्ष उपस्थित हो; जिससे अनुभूत वस्तु की स्मृति हो आये; तो उसे 'स्मरण अलंकार' कहते हैं। यथा–

"यथाऽनुभवमर्थस्य दृष्टे तत्सदृशेः स्मृतिः स्मरणम् ।।"[315]

उदहारण–

"वृद्धोऽथवाऽस्तु तरुणी युवकोऽथ वृद्धा ,

यो वाऽस्तु कोऽपि मनुजो ह्यथवान्यजन्तुः ।

दृष्ट्वा शिशुं विधिविनिर्मितवन्यपुष्पं ,

दुःखेन संस्मरति तां निजबाल्यलीलाम् ।।"[316]

ट. दीपक अलंकार–

जहाँ पर 'उपमेय और उपमानरूप वस्तुओं के धर्म का, बार–बार ग्रहण हो; अथवा अनेक क्रियाओं के उपस्थित होने पर भी करक का एक बार ही कथन किया जाता है'; वहाँ 'दीपक' अलंकार होता है। यथा–

"अप्रस्तुतप्रस्तुतयोः दीपकं तु निगद्यते ।

अथ कारकमेकं स्यात् अनेकासु क्रियासु चेत् ।।"[317]

उदहारण–

"किं पंकजं स्फुटितमस्ति हि पुष्करिण्यां ,

किं वा तरौ किसलयो ह्युदितौ वसन्ते ।

आकाशवक्षसि किमु प्रतिभाति चन्द्रः

क्रोड़े विभाति नवजातशिशुर्जननन्याः ।।"[318]

प्रस्तुत उदहारण में 'शिशु' (एकमात्रकर्ता) का अनेक उपमानो द्वारा, अनेक क्रियाओं से सम्बन्ध होने के कारण, यहाँ दीपक अलंकार है।

ठ. परिकर अलंकार–

'परिकर' का शाब्दिक अर्थ होता है–"विशेषणों द्वारा उक्ति।" परिकर अलंकार के आदि प्रवर्तक–आचार्य 'रूद्रट' ने इसका स्वरुप इस प्रकार प्रस्तुत किया हैः–

---

[314] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, २/१६

[315] आ०मम्मटविरचित 'काव्यप्रकाश'–डॉ० श्रीनिवासशास्त्री,साहित्यभण्डार प्र०,मेरठ,२००३, १०/१६६

[316] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, २/२०

[317] कविराजविश्वनाथविरचित साहित्यदर्पणम् शालिग्रामशास्त्री,मो०ब०वारा०प्र०२००४, १०/४६

[318] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, २/१०

"साऽभिप्रायैः सम्यक् विशेषणैर्वस्तु यत् विशिष्यते ।

द्रव्यादिभेद्भन्नं चतुर्विधः परिकरः ।।"[319]

उदहारण–

प्रस्तुत महाकाव्य के "महोदधिमहिमवर्णनम्" शीर्षक चतुर्थसर्ग के प्रत्येक पद्य में परिकर अलंकार की उपस्थिति दृष्टिगत है। यथा–

"हे भीमरूप ! बहुभिस्जलजन्तुभिस्तैः ,

हे कान्तकम्रतानुधारितरङ्गभङ्ग ! ।

गम्भीरभावपरिपूरितसुद्धचित्त ! ,

वङ्गोपसागरविभो ! तव सुप्रभातम् ।।"[320]

और भी –

"हे आत्मरूप ! भगवन् ! परमप्रकाश ! ,

प्रज्ञानपार ! भवसागरविवेकधार ! ।

आनन्दरूप ! सततं विभु चित्स्वरूप ! ,

आचार्यशङ्करः ! महेश ! नमो नमस्ते ।।"[321]

यह पद्य समीक्ष्य महाकाव्य में परिकर अलंकर का सर्वश्रेष्ठ उदहारण कहा जा सकता है। यहाँ आदि शंकराचार्य का अनेक विशेषणों के द्वारा उपस्थापन किया गया है।

ड. उदात्त अलंकार–

साहित्यदर्पणकार विश्वनाथ के अनुसार 'उदात्त अलंकार' में अलौकिकवैभव अथवा महापुरुषों के महनीय चरित्र का वर्णन होता है। यथा–

"लोकाऽतिशयसम्पत्तिवर्णनोदात्तमुच्यते ।

यद्वापि प्रस्तुतस्यांगं महतां चरितं भवेत् ।।"[322]

उदहारण–

प्रस्तुत महाकाव्य में भारतभूमि, तीर्थों, देवताओं, देवियों, देवनदी–गंगा, संस्कृतभाषा, जननी, शंकराचार्यों, आदि के वैभव एवं महात्म्यवर्णन के प्रसंग में अनेक पद्यों में 'उदात्त अलंकार' का की छठा दृष्टव्य है। यथा–

"त्वमेव शान्तिश्च मतिश्च चेतना ,

त्वमेव साक्षात् ह्रदयस्य भावना ।

क्षमा रमा वा सुषमान्विता ,

त्वमेव मातः ! महिमाद्रिमण्डिता ।।"[323]

---

[319] रुद्रटकृत 'काव्यालंकार'– डॉ० कपिलदेव द्विवेदी,न्यू भा०बुक कॉर्पो०दिल्ली,२००६, २/७२

[320] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ४/१०

[321] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ६/८

[322] कविराजविश्वनाथविरचित साहित्यदर्पणम् शालिग्रामशास्त्री,मो०ब०वारा०प्र०२००४, १०/६४

[323] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, १/२२

प्रस्तुत पद्य में जननी के महनीय चरित्र; एवं अलौकिकवैभव का वर्णन हुआ है। अतः प्रस्तुत पद्य में उदात्त अलंकार है।

3. उभयालंकारयोजना :–

उभयालंकार से युक्त पद्य में, एक से अधिक अलंकारों की सहैव उपस्थिति होती है। समाज में पाजेब, कंगन, नथनी, बाली, हार आदि अलंकारों के मिश्रण से यथा सौन्दर्य और अधिक चारुता तो प्राप्त होता है; तथैव किसी काव्य में एक से अधिक अलंकारों की उपस्थिति होने से काव्य–सौन्दर्य और अधिक प्रकृष्ट हो जाता है। साहित्यदर्पणकार आचार्य विश्वनाथ ने उभयालङ्कारों की संख्या दो बताते हुए उनका नामोल्लेख इस प्रकार प्रस्तुत किया हैः–

"यद्येत एवालंकाराः परस्परविमिश्रिताः ।
तदा प्रथगलंकारौ संसृष्टिः संकरस्तथा ।।"[324]

'भारतायनम्' महाकाव्य में भी इस प्रकार के अनेक पद्य दृष्टव्य है जिनमे स्वाभाविक– रूपेण एक से अधिक अलङ्कारों की उपस्थिति है। 'भारतायनम्' महाकाव्य में प्राप्त उभयालङ्कारों को सोदाहरण आगे प्रस्तुत किया जा रहा है।

क. संसृष्टि अलंकार–

काव्य में एक से अधिक अलंकारों की स्वतंत्र रूप से 'तिल–तण्डुलवत्' उपस्थित को 'संसृष्टि' कहते हैं। आचार्य विश्वनाथ के अनुसार 'पूर्वोक्त शब्दालंकारों अथवा अर्थालंकारों या दोनों की निरपेक्ष (स्वतंत्र) रूप से एक ही स्थान पर उपस्थित को संसृष्टि कहते हैं। यथा–

"मिथोऽनपेक्षयैतेषां स्थितिः संसृष्टिरुच्यते।।"[325]

उदहारण–

"यस्माद्बन्धोऽद्य भवजविषादाग्निना दग्धचित्तो ,
नानामान्द्यादिकलिततनुस्ताड़ितस्ताडनाद्यैः ।
तस्मात् किञ्चिन्मम विषयकं दुःखवृन्दं वदामि ,
प्रोक्ते दुःखे भवति हि लघु प्राणबन्धोः समीपे ।।"[326]

प्रस्तुत पद्य में विशेष का समान्य से समर्थन किये जाने से अर्थान्तरन्यास अलंकार की उपस्थिति है। साथ ही द्वितीय पंक्ति में एक ही क्रम में त्, द्, द्, आदि वर्णों की आवृति होने से अनुप्रास अलंकार भी है। इस प्रकार अर्थान्तरन्यास अलंकार एवं अनुप्रास अलंकार की एक ही पद्य में 'तिलताण्डुलवत्' उपस्थिति होने से यहाँ संसृष्टि अलंकार है।

ख. 'संकर' अलंकार–

---

[324] कविराजविश्वनाथविरचित साहित्यदर्पणम् शालिग्रामशास्त्री,मो०ब०वारा०प्र०२००४, द० परि० पृ०सं० ३६८
[325] कविराजविश्वनाथविरचित साहित्यदर्पणम् शालिग्रामशास्त्री,मो०ब०वारा०प्र०२००४, १०/६८
[326] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ५/७६

मम्मटाचार्य के अनुसार जहाँ पर एक से अधिक 'शब्दालंकार' अथवा 'अर्थालंकार' या दोनों अलंकारों की निरपेक्ष (स्वतन्त्र) उपस्थिति न होकर अन्योन्याश्रित (अङ्गाङ्गित्व) स्थिति हो। इस प्रकार स्वरुप के संकीर्ण होने की स्थिति को 'संकर' कहते हैं। यथा–

"अविश्रान्तिजुषामात्मन्यङ्गाङ्गितत्वं तु संकरः ।।"[327]

उदाहरण–

"अध्यात्मविद्या ऋषिवृन्दवन्द्या ,
विज्ञानसम्भारविशेषयुक्ता ।
आवश्यकी भारतभाग्यभानो ,
विकाशनार्थं ह्याधुनाऽपि काले ।।"[328]

प्रस्तुत पद्य में द्वितीय चरण में रेखांकित शब्द– "भारतभाग्यभानो" में रूपक एवं अनुप्रास अलंकार की एक ही आश्रय (शब्द या अर्थ) में रूपक एवं अनुप्रास अलंकारों अन्योन्याश्रित (अङ्गाङ्गित्व) की स्थिति होने से प्रस्तुत पद्य में संकर अलंकार है।

इस प्रकार समीक्ष्य महाकाव्य के अलंकार विवेचन के आधार पर निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि काव्य में चारुता के हेतुभूततत्व–'अलंकार', प्रस्तुत महाकाव्य में स्वाभाविक रूप से प्रकट होकर इसकी शोभा में अत्यधिक वृद्धि करने में पूर्णतया सफल हुए हैं। अलंकारप्रयोगवैविध्य के कारण उपर्युक्त अलंकारों का 'संक्षितविवेचन, परिस्थितिवश करना पड़ा है। वस्तुतः प्रस्तुत महाकाव्य अलंकारप्रयोगदृष्टि से इतना समृद्ध है कि इसके प्रत्येकसर्ग पर पृथक रूप से अलंकारप्रयोग पर आधारित 'लघुशोध' लिखे जा सकते हैं।

उ. भारतायनम् महाकाव्य में रसयोजना :–

सभी काव्यशास्त्रियों ने काव्य में 'रस' का विशिष्ट महत्व प्रतिपादित किया है। रसाचार्यों ने रस परिपोषण रहित किसी भी वाग्व्यवहार को काव्यरूप में स्वीकार ही नहीं किया हैं। आचार्य मम्मट ने रस का स्वरुप विवेचित करते हुए 'रति' आदि स्थायिभावों को ही रस की संज्ञा से अभिहित किया है। यथा–

"कारणान्यथ कार्याणि सहकरीणि यानि च ,
रत्यादेः स्थायिनो लोके तानि चेन्नाट्यकाव्ययोः ।
विभावा अनुभावास्तत् कथ्यन्ते व्यभिचारिणः '
व्यक्तः स तैर्विभावाद्यैः स्थायिभावो रसः स्मृतः ।।"[329]

रसनिष्पत्ति :–

---

[327] आ०मम्मटविरचित 'काव्यप्रकाश'–डॉ० श्रीनिवासशास्त्री,साहित्यभण्डार प्र०,मेरठ,२००३, १०/२०८
[328] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, १०/४०
[329] आ०मम्मटविरचित 'काव्यप्रकाश'–डॉ० श्रीनिवासशास्त्री,साहित्यभण्डार प्र०,मेरठ,२००३, ४/२७–२८

'रसनिष्पत्ति' के विषय में आचार्य भरत कहते हैं कि "लोक में रत्यादि स्थायिभावों के जो कारण, कार्य एवं सहकार्य हैं; वे यदि नाट्य अथवा काव्य में प्रयुक्त होकर क्रमशः विभाव, अनुभाव तथा संचारीभाव कहाते हैं, विभावानुभावव्यभिचारिभावसंयोग से 'रसनिष्पत्ति' होती हैं।" यथा–

"विभावानुभावव्यभिचारिभावसंयोगाद्रसनिष्पत्तिः ।।"[330]

पंडितराज जगन्नाथ ने रसगंगाधर ने 'रसनिष्पत्ति' की विस्तृत व्याख्या करते हुए "रसगंगाधर" में लिखा हैः– **"गुणालंकारों के औचित्य द्वारा एवं लालित्यपूर्ण रचना द्वारा सुशोभित; काव्य द्वारा समर्पित; सहृदयों के हृदयों में प्रविष्ट; अपनी सहृदयता के बल से; काव्य की महिमा द्वारा; जब दुष्यंत, शकुन्तला आदि (कारण, कार्य एवं सहकार्य) काव्य में वर्णित होते हैं; तब वे (दुष्यंत, शकुन्तला आदि) विभाव, अनुभाव तथा व्यभिचारिभाव की संज्ञा प्राप्त कर लेते हैं; तब नायाकादि आलंबन, चन्द्रिकादि उद्दीपन, अश्रुपातादि कार्य, तथा चिन्तादि सहकारण; ये सब व्यंजना शक्ति के द्वारा अलौकिक परिवेश को प्राप्त करते हैं; फिर ये विभाव, अनुभाव तथा संचारीभाव हो जाते हैं। इन तीनों के संयोग से उत्पन्न व्यञ्जना–व्यापार द्वारा सहृदयों के अंतःकारण में विद्यमान अज्ञानरूप आवरण जो आनन्द से आच्छादित रहता है; का विगलन हो जाता है। तब आनन्द वासनादि के रूप में विद्यमान रत्यादि स्थायिभावों को ग्रहण करता है। इस प्रकार रति आदि स्थायिभावों को ही रस कहतें हैं.....।"**[331]

१. **विभाव–** जो भाव रस को विशेष रूप से उत्पन्न करते हैं; 'विभाव' कहलाते हैं। यथा–

"वागसत्वाभिनय इति विभावः ।।"[332]

२. **अनुभाव–**नायिकादि के भ्रूक्षेपादि विकार; जिनसे सहृदयों को रस की चर्वणा होती है; 'अनुभाव' कहलाते हैं। यथा–

"उद्बुदं कारणैः स्वैः स्वैर्बहिर्भावं प्रकाशयन् ।
लोके यः कार्यरूपः सोऽनुभावः काव्यनाट्ययोः ।।"[333]

३. **सात्विकभाव–** सात्विकभाव भी विभाव के बाद उत्पन्न होने वाले विकार ही है। यदि अनुभाव शारीरिक विकार है; तो सात्विकभाव मन में उत्पन्न होने वाले मानसिक विकार है। यथा–

"प्रथग्भावाभवन्त्येऽनुभावत्वेऽपि सात्विकाः ।
सत्त्वादेव समुत्पन्तेस्तश्च तद्भावभावनम् ।।"[334]

४. **व्यभिचारीभाव–** कुछेक क्षण उपस्थित रहने वाले 'स्थायीभाव'; व्यभिचारीभाव कहलाते है। इन्हें संचारी अथवा सहकारीभाव भी कहते हैं। यथा–

"विविधमभिमुख्येन रसेषु चरन्तीति व्यभिचारिणः ।।"[335]

---

330 भरतमुनिप्रणीतं'ना०शा०'–पुष्पे०कुमार,न्यू भा०बु०कोर्पो०दिल्ली,२०१५,ष०अ०,पृ० ८२

331 "समुचितललितसन्निवेशचारुणा०....रत्यादिरेव रसः स्मृतः।''पं०जगन्नाथकृत 'रसगंगाधर'(पीडीएफ)रा0स0सं0दिल्ली, पृ०१

332 भरतमुनिप्रणीतं'ना०शा०'–पुष्पे०कुमार,न्यू भा०बु०कोर्पो०दिल्ली,२०१५,ष०अ०,पृ० ८२

333 कविराजविश्वनाथविरचित साहित्यदर्पणम् शालिग्रामशास्त्री,मो०ब०वारा०प्र०२००४, ३/१३२

334 धनञ्जयकृत 'दशरुपकम्'–डॉ०भोलानाथव्यास,चौ०प्र०,२०१०, ४/४–५

"विशेषादभिमुख्येन चरन्तो व्यभिचारिणः ।

स्थान्युन्मग्नः निर्मग्नाः कल्लोला इव वरिधौ ।।"[336]

रसशास्त्रियों ने संचारीभावों के निर्वेदग्लानिशंकाश्रमादि ३३ भेद बतायें हैं।

५. स्थायीभाव– स्थायीभावों की संख्या के विषय में रसशास्त्रियों में मतैक्य नहीं हैं। आचार्य भरत के मतानुसार रसों की संख्या आठ है–

''श्रृंगार–हास्य–कररुण–रौद्र–वीर–भयानकाः ।

वीभत्साद्भुत्संज्ञो चेत्यष्टौ नाट्य रसा स्मृतः ।।"[337]

आचार्य मम्मट ने 'शान्त' नामक नवमरस की स्थापना करते हुए काव्यप्रकाश में लिखा हैः–

"निर्वेदस्थायिभावोऽस्ति शान्तोऽपि नवमो रसः ।।"[338]

६. स्थायिभाव– पंडितराज जगन्नाथ ने नौ रसों एवं उनके स्थायिभावों का उल्लेख रसगंगाधर में इस प्रकार किया हैः–

''श्रृंगार–करुण–शान्तो–रौद्रो–वीरोऽद्भुतस्तथा ।

हास्यभयानकश्चैव वीभत्सश्चेते ते नव ।।"

''रतिः शोकः निर्वेदः क्रोधोत्साहाश्च विस्मयः ।

हासो–भयं–जुगुप्सा च स्थायिभावाः क्रमादयी ।।"[339]

कालान्तर में आचार्य विश्वनाथ ने "वात्सल्य" नामक दशमरस तथा आचार्य रूपगोस्वामी ने "भक्ति" नामक एकादशमरस की स्थापना की। वात्सल्य रस का स्थायीभाव "वत्सलता" तथा भक्ति रस का स्थायीभाव "भक्ति" को माना जाता है।

काव्यरस एवं स्थायीभाव–		
क्र. स.	रस	स्थायीभाव
१	श्रृंगार	रति
२	करुण	शोक
३	शान्त	शम
४	रौद्र	क्रोध
५	वीर	उत्साह

---

[335] भरतमुनिप्रणीतं'ना०शा०'–पुष्पे०कुमार,न्यू भा०बु०कोर्पो०दिल्ली,२०१५, स०अ० पृ०सं० ८१

[336] धनञ्जयकृत 'दशरुपकम्'–डॉ०भोलानाथव्यास,चौ०प्र०,२०१०, ४/८

[337] भरतमुनिप्रणीतं'ना०शा०'–पुष्पे०कुमार,न्यू भा०बु०कोर्पो०दिल्ली,२०१५, ६/५

[338] आ०मम्मटविरचित 'काव्यप्रकाश'–डॉ० श्रीनिवासशास्त्री,साहित्यभण्डार प्र०,मेरठ,२००३, ४/४७

[339] पं०जगन्नाथकृत 'रसगंगाधर'(पीडीएफ)रा0स0सं0दिल्ली, पृ० १७

६	अद्भुद	विस्मय
७	हास्य	हास
८	भयानक	भय
९	वीभत्स	जुगुप्सा
१०	वत्सल	वत्सलता
११	भक्ति	देवादिविषयक रति

इस प्रकार वर्तमान में कुल ११ काव्यरस स्वीकार किये जाते हैं।

ग. 'भारतायनम्' महाकाव्य में अंगीरसविवेचन :–

अंगीरस के विषय में सभी काव्याचार्यों ने एकमत से कहा है कि महाकाव्य में श्रृंगार, वीर, अथवा शान्तरसों में से किसी एक रस को अंगीरसरूप में एवं अन्य रसों को अंगभूत रसों के रूप में वर्णित किया जाना चाहिए। यथा–

''श्रृंगारवीरशान्तानामेकोंऽङ्गी रस इष्यते ।।"[340]

भारतायनम्' महाकाव्य अंगीरस अथवा प्रधानरस "शान्तरस" है; तथा अन्य सभी रसों का अंगभूतरसों के रूप में यथावसर महाकवि ने विवेचन किया है। समीक्ष्य महाकाव्य में प्राधान्यरूपेण प्रत्येक सर्ग में शान्तरस की भावना अन्तर्निहित है।

१. शान्तरस –

प्राचीन काव्याचार्यों ने अभिनेयता के अभाव में शान्तरस को काव्यरस के रूप में स्वीकार नही किया, किन्तु परवर्ती आचार्यों ने प्राचीन आचार्यों के मतों का खण्डन करते हुए 'शान्तरस' की सत्ता को स्थापित किया। अभिनवगुप्त एवं पण्डितराज जगन्नाथ ने प्राचीन आचार्यों के मतों का प्रतिकार करते हुए शान्तरस एवं उसके स्थायीभाव का गम्भीरतापूर्वक विस्तृत विवेचन करके स्वतंत्रमत की स्थापना की। पण्डितराज जगन्नाथ ने महाभारत आदि महाकाव्यों में शान्तरस की प्रधानता बताकर शान्तरस को 'अखिललोकानुभवसिद्ध' भी घोषित किया है। आचार्य भरत का 'नाट्यशास्त्र' शान्तरस का आदि स्त्रोत्र माना जाता है। उन्होंने अष्ट नाट्यरसों के निरूपण के पश्चात्; नवमरस के रूप में शान्तरस की सम्भावना का निर्देश करते हुए कहा है :–

"अतः शान्तानां मोक्षाध्यात्मसमुत्थ शान्तो नाम सम्भवति ।।"[341]

---

[340] कविराजविश्वनाथविरचित साहित्यदर्पणम् शालिग्रामशास्त्री,मो०ब०वारा०प्र०२००४, ६/३१७

[341] सं०सा०का इतिहास– डॉ०कन्हैयालालपौद्दार, श्रीरामवि०प्र०,बम्बई,२०१०, पृ० १८४

शान्तरस के विषय में आचार्य विश्वनाथ कहते हैं कि जिस स्थिति में न सुख; न दुःख; न चिन्ता; न राग; न द्वेष और न ही किसी इच्छा की अवस्थिति हो। वह स्थिति शान्तरस की स्थिति है। सभी भावों में प्रधान "शम" शान्तरस का स्थायीभाव होता है। यथा–

"न यत्र दुःखं न सुखं चिन्ता न द्वेषरागौ न च काचिदिच्छा ।
रसः सः शान्तः कथितो मुनीन्द्रैः सर्वेषु भावेषु शमप्रधानः ।।"[342]

शान्तरस का स्थायी भाव 'निर्वेद' होता है। तत्वज्ञान, ईर्ष्या, आपत्ति, आदि के कारण स्वयं को धिक्कारने का नाम 'निर्वेद' है। इसमें दीनता, चिन्ता, अश्रु, दीर्घश्वास, विवर्णता, उच्छ्वास आदि क्रियाएँ होती है। शान्त रस के विषय में आधुनिक नवरसवादी मधुसूदन शास्त्री कहते हैंः–

"अध्यात्मध्यानसमुत्थस्तत्त्वज्ञानार्थहेतुसंयुक्तः .....शान्तरसो नाम सम्भवति ।।"[343]

आचार्य विश्वनाथ ने शान्तरस को उत्तम प्रकृति के रस की संज्ञा देते हुए साहित्यदर्पण में इसका स्वरुप–विवेचन इस प्रकार किया हैः–

"शान्तं शमस्थायिभाव उत्तमप्रकृतिर्मतः ।।"
कुन्देन्दुसुन्दरच्छायः श्रीनारायणदैवतः ।
अनित्यत्वादिनोऽशेषवस्तुनिःसारता तु या ।।"
परमात्मस्वरूपं वा तस्यालम्बमिष्यते ।
पुण्याश्रमहरिक्षेत्रतीर्थरम्यवनादयः ।।"
महापुरुषसंगाद्यास्तस्योद्दीपनरूपिणः ।
रोमाञ्चाद्याश्चानुभावास्तथा स्युर्व्याभिचारिणः ।।"
निर्वेदहर्षस्मरणमतिभूतदयादयः ।"[344]

उदहारण–

समीक्ष्य महाकाव्य 'भारतायनम्' में शान्तरस अंगीरस के रूप में विवेचित है। महाकाव्य के प्रत्येकसर्ग में शान्तरस की बहुमत से उपस्थिति दृष्टिगत होती है। यथा–

"अहो जगद्दृश्यमतीवविचित्रकं ,
सुखस्य हेतुः परिवर्तनप्रियम् ।
त एव मन्ये नितरां प्रमोदिताः ,
वनालया वृक्षफलाशिनो जनाः ।।"[345]

प्रस्तुत पद्य में :–

विभाव– 'संसार की निस्सारता' (आलम्बन), 'सन्यासी जीवन की' श्रेष्ठता (उद्दीपन); **अनुभाव–** 'वृक्षफलाशिनो जनाः' (सन्यासी), **सात्विकभाव–** 'वैराग्य', **संचारीभाव–** 'निर्वेदादि' की उपस्थिति से शम स्थायीभाव, 'शान्तरस' उपस्थिति दृष्टिगत है।

---

[342] कविराजविश्वनाथविरचित साहित्यदर्पणम् शालिग्रामशास्त्री,मो०ब०वारा०प्र०२००४, तृ० परि० पृ० १२२
[343] भरतमुनिप्रणीतं'ना०शा०'–पुष्पे०कुमार,न्यू भा०बु०कोर्पो०दिल्ली,२०१५, ष०अ० पृ० ६६५
[344] कविराजविश्वनाथविरचित साहित्यदर्पणम् शालिग्रामशास्त्री,मो०ब०वारा०प्र०२००४, ३/२४५उ०,३/२४८पू०
[345] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ५/२३

और भी –

"समस्ततीर्थेषु तदेव साम्प्रतं ,
प्रसिद्धमास्ते हि च तत्र राजते ।
अनन्तसंसारभयार्तिहारकः ,
स्वयं जगन्नाथमहाप्रभुर्महान् ।।"[346]

"धन्यं तत् शाश्वतं पुण्यं ,
ज्ञान्दीप्तं हि भारतम् ।
यत्रैव शिशवः सर्वे,
वन्दिता भारतायने ।।"[347]

"अयि समस्तमहासुखदायक ! ,
कलिविनाशनवेंकटनायक ! ।
नियतस्मि भवद्गुणगायकः ,
जगति तारय मां गिरिनायक ! ।।"[348]

"जगदीशमहाविभुपूततनो !,
महनीयमहोदधिनामधर ! ।
भववारिनिधौ पतितं भुवि मां ,
कृपयात्र समुद्धर हे जलधे ! ।।"[349]

"हर्तुं नराणामिह पापतापं ,
कलौ धृतं यें हरेः स्वरूपम् ।
प्रातश्च सायंच तमेकनाथं
देवं जगन्नाथमहं नमामि ।।"[350]

"संसारदुःखमयबन्धननाशदक्षे '
वक्षोविहारिणी ! शिवप्रियजह्नुजायाः ।
वाराणसि ! त्वमसि विश्ववरेण्यकाशी
स्थानं प्रदेहि कृपया तव गाङ्गनीरे ।।"[351]

"सत्यं ब्रह्मा सनातनं जगदिदं मिथ्याप्रसूतं श्रुतं ,
मायामोहमदैः सदैव भरितं जानीहि तन्नश्वरम् ।
तस्मान्मदमते ! विहाय निखिलं द्वंद्वं ततः शाश्वतं ,
गोविन्दं भज नन्दवृन्दमधुरं सत्यं शिवं सुन्दरम् ।।"[352]

---

[346] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ३/१७
[347] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, २/५३
[348] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, १०/४६
[349] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ४/३४
[350] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ६/१८
[351] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ८/७

"कलेवरं रक्तपलादिनिर्मितां ,

विभाति यावत् रुचिरं मनोहरम् ।

भवन्ति तावत्सुहृदः समे भवे ,

वयोगते पृच्छति को जरातुरे ।।"[353]

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि समाजकल्याण की प्रवृत्ति, वैराग्य, तत्त्वज्ञान, परमात्माविषयनिष्ठा इत्यादि तत्व प्रस्तुत महाकाव्य के मूलभूत तत्वों के रूप में उपस्थित हुए है। काशी, द्वारिका, बद्रीनाथ, जगन्नाथपुरी, रामेश्वर, तिरुपति इत्यादि विभिन्न तीर्थों के महात्म्य वर्णन में; प्रभु जगन्नाथ, भगवान् श्रीराम, श्रीकृष्ण, गंगा, विश्वनाथ, आदिशंकराचार्य, शंकराचार्य चन्द्रशेखरेन्द्रसरस्वती, महोदधि, आदि की स्तुतियों में एवं जननी एवं जन्मभूमि के महात्म्य वर्णन, शिशु के स्वभाव, आत्मनिवेदनादि वर्णन में "शम" भाव का ही प्राधान्य है। अतः महाकाव्य का अंगीरस अथवा प्रधानरस 'शान्तरस' ही है।

घ. 'भारतायनम्' महाकाव्य में अंगभूतरसविवेचन :–

प्रस्तुत महाकाव्य में महाकवि ने शान्तरस को प्रधानरस के रूप में विवेचित करने के साथ ही भक्ति, वत्सल, करुण, अद्भुद, वीभत्स, वीर, भयानक, रोद्र, शृंगार आदि रसों का अंगभूत रस के रूप में वर्णन किया है। यथा–

१. भक्तिरस –

ईश्वरविस्मरण की व्याकुलता; अथवा 'देवादि' आलम्बन के प्रति प्रेम, श्रद्धा आदि भावों की अनुभूति; को 'भक्ति' कहते हैं। आचार्यरूपगोस्वामी 'भक्तिरस' के प्रवर्तक माने जाते हैं। रसों में मात्र भक्तिरस की सत्ता को स्वीकार करते हुए, आचार्य रूपगोस्वामी ने स्वरचित ग्रन्थ "भक्तिरसामृतसिन्धु" में लिखा हैः–

"अन्याभिलषिताशून्यं ज्ञानकर्मधनावृत्तम् ।

अनुकूल्येन कृष्णानुशीलनं भक्तिरुत्तमाः ।।" [354]

'भक्तिरसामृतसिन्धु' के टीकाकार डॉ. नागेन्द्र के मतानुसार भक्तिरसः–

"स्वाद्यत्वं हृदि भक्तानामानीता श्रवणादिभिः ।

एषां कृष्णरति स्थायिभावो भक्तिरसो भवेत् ।।"[355]

उदहारण–

समीक्ष्य महाकाव्य में शान्तरस के उपरान्त अंगभूत रस के रूप में भक्तिरस प्रधानता से विवेचित है। यथा–

---

[352] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ६/४

[353] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ५/२६

[354] श्रीरूपगोस्वामी रचित 'भक्तिरसामृतसिन्धु'– डॉ०नागेन्द्र, दिल्ली विवि०प्र०,२००६, १/१

[355] 'हिंदीभक्तिरसामृतसिन्धु'– डॉ. नागेन्द्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, २०१४, पृ० ३६

"अन्तर्यामी त्वमसि भगवन् भास्करः विश्वखेत्त्वं ,
आधारस्त्वं सकलजगतां योगिनां तोयदाता ।
वन्दे मात्रं तदनुकृपया वीचिहस्तप्रसार्य ,
तस्यायैतल्लिखितमधुना शान्तचित्तो गृहाण ।।"[356]

"संसाररक्षणपरायणसौम्यमूर्ते ! ,
दिव्यातिदिव्यपरिनिष्ठितपूर्णशक्ते ! ।
किं वा ददामि भगवन् जगत्पते ! ते ,
हे वेंकटेश ! भगवन् ! प्रणतिं गृहाण ।।[357]

"विलसितातव वक्षसि तत्सुधा–
मधुरताप्रथिताखिलसौरभम् ।
जय जय प्रियजैत्रपथातिथे !
भूवि च बर्द्धय भारतगौरवम् ।।"[358]

"अभीष्टसिद्धिप्रदमादिवीजं ,
संसारसृष्टेस्तमनादितत्वम् ।
श्रीरुक्मिणीमानसपद्मसूर्यं ,
श्रीद्वारिकाधीशमिहानमावः ।।"[359]

२. वत्सलरस –

काव्याचार्यों में अनन्य आचार्य विश्वनाथ ने न केवल प्राचीन आचार्यों के वत्सलरस विरोधी विचारों का सप्रमाण खण्डन किया, अपितु उन्होंने वत्सलरस को दशम काव्यरस के रूप में प्रतिष्ठापित भी किया। यथा–

''स्फुटं चमत्कारितया वत्सलं च रसं विदुः ।''[360]

उदहारण–

समीक्ष्य महाकाव्य के प्रथम एवं द्वितीय सर्ग में वत्सलरस विस्तार से वर्णित हुआ है। जैसे–

"क्व मेऽस्ति पुत्रः क्व गतः न चागतः ,
क्व मेऽस्ति कन्या मम जीवसाधना ।
इतीहया व्याकुलितं यदीक्षयते ,
तदेव मातुर्हृदयं दयामयम् ।।"[361]

"मातामही वयसि जातु गृहीतयष्टिः ,

---

[356] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ५/६७
[357] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, १०/३१
[358] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ४/४६
[359] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ७/१२
[360] कविराजविश्वनाथविरचित साहित्यदर्पणम् शालिग्रामशास्त्री,मो०ब०वारा०प्र०२००४, ३/२५१–२५४
[361] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, १/६४

नित्यं स्खलद्वचनशोभितपक्वकेशा ।

आश्लिष्य चुम्बति यदा निजपौत्ररत्नं ,

बालस्तदा प्रकृतविश्वविनोदमेति ।।"[362]

३. करुणरस –

करुणरस का स्वरुप एवं इसके अंगों का वर्णन आचार्य विश्वनाथ ने साहित्यदर्पण में इस प्रकार प्रस्तुत किया हैः–

"इष्टनाशादनिष्टाप्तेः करूणाख्यो रसो भवेत् ।।"[363]

उदहारण–

महाकवि आचार्य हरेकृष्णसतपथी ने प्रस्तुत महाकाव्य के पञ्चमसर्ग में अंगभूतरस के रूप में करुणरस की योजना अत्यन्त करुणता से की है। जैसे–

"यदाह्यश्रृण्वं भगिनी दिवंगता ,

प्रभञ्जनैः सम्पतिता यथा लता ।

तथा तदा भूमितले कलेवरं ,

लता मदीयान्वपतत्वहो विधिः ।।"[364]

"तस्माद्गते सुहृदि कस्य न दुःखमस्ति,

चन्द्रे गते कुमुदिनी न हि दुःखिता किम् ? ।

त्यक्त्वाद्य दुःस्तरवने भगिनीं मदीयां,

जातोऽस्मि निर्ममना हृतधैर्यराशिः ।।"[365]

"अहो विधे ! किं करुणा गता तव,

विनष्टतां वा जयकेतनं गतम् ।

व्यनक्ति मूर्तिः किमु तेऽश्मसञ्चयं ,

किमु स्वनामनाऽसि कठोरहन्तकः ।।"[366]

४. अद्भुद्रस –

अद्भुद्–रस के विभावानुभावादि अंगों के विषय में साहित्यदर्पणकार विश्वनाथ लिखते हैं–

"अद्भुतो विस्मयस्थायिभावो गन्दर्वदैवतः ।।"[367]

उदहारण–

"आकाशवाणीञ्च निशम्य राजा ,

स्वस्थो बभूवात्मनिविष्टचित्तः ।

---

[362] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, २/४१

[363] कविराजविश्वनाथविरचित साहित्यदर्पणम् शालिग्रामशास्त्री,मो०ब०वारा०प्र०२००४, ३/२२२–२२५

[364] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ५/२१

[365] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ५/४१

[366] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ५/२२

[367] कविराजविश्वनाथविरचित साहित्यदर्पणम् शालिग्रामशास्त्री,मो०ब०वारा०प्र०२००४, ३/२४२–२४५

तन्माधवस्यैव रहस्यरूपं ,

सम्प्रार्थयामास निबद्धहस्तः ।।" [368]

५. वीभत्सरस –

वीभत्सरस के विभावानुभावादि के विषय में साहित्यदर्पणकार कविराज आचार्य विश्वनाथ कहते हैं–

"जुगुप्सास्थायिभावस्तु वीभत्सः कथ्यते रसः ।"[369]

उदहारण–

"गङ्गास्रोतसि नित्यमेवमधुना नानाविधानां शवाः ,

जन्तूनां विनिपातिताः विलुलिताः दुर्गन्धतः व्यापृताः ।

गङ्गास्नानमहो पवित्रमनसा वाञ्छन्ति ये मानवाः ,

किम्भूतं सलिलं निधाय भूवि ते स्तुत्यन्ति कं भास्करम् ।।"[370]

६. वीररस –

कविराज विश्वनाथ ने 'वीररस' को उत्तम प्रकृति का रस बताते हुए उसके अंगों का वर्णन इस प्रकार किया हैः–

"उत्तमप्रकृतिवीरं उत्साहस्थायिभावकः ।।"[371]

उदहारण–

"तथाविधानां क्षय एव वैरिणा– ,

मवश्यकार्यो हि विलम्बनं विना ।

तदर्थमेकस्तु भवेत्सुसज्जितः ,

स्वजीवनस्यैव महारणाङ्गणे ।।"[372]

"निमंत्रिताः ब्राह्मण देववृन्दाः ,

तद्यज्ञभागं बहवश्च विज्ञा ।

तेषां पवित्रैः खिलवेदमन्त्रैः ,

सम्पूरितं तद्गनं समग्रं ।।

"तेषां बुधानां महती हि सेवा ,

कृता च राज्ञा महतादरेण ।

दानं प्रदत्तञ्च मनोऽनुरूपं ,

सतां हि पूजा मनुजस्य धर्मः ।।"[373]

---

[368] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ६/१२

[369] कविराजविश्वनाथविरचित साहित्यदर्पणम् शालिग्रामशास्त्री,मो०ब०वारा०प्र०२००४, ३/२३६–२४२

[370] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ८/४६

[371] कविराजविश्वनाथविरचित साहित्यदर्पणम् शालिग्रामशास्त्री,मो०ब०वारा०प्र०२००४, ३/२३२–२३४

[372] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, १/११०

"आचार्यपादैरुपहारदानैः ,
संतोषितास्तत्र समस्त भक्ताः ।
भवन्ति पूताः जगदग्रजाताः ,
अन्यान् स्वदानैः परितोषयन्तः ।।"[374]

७. भयानकरस –

भयानक रस के लक्षण, अंगों आदि का उपस्थापन करते हुए कविराज आचार्य विश्वनाथ लिखते हैंः–

"भयानको भय स्थायिभावः कालादिदैवतः।।"[375]

उदहारण–

"स्त्रगाकृतिं व्योमनि गृधपक्षिणः ,
विधाय विध्वंशविकानाशयाः ।
करालनादौघविधानचञ्चला ,
बभूविरे स्रष्टुमचिन्त्यचिन्तनम् ।।"[376]

८ . रौद्ररस –

काव्यरसों में रौद्ररस का महत्त्वपूर्ण स्थान है। आचार्य विश्वनाथ ने प्रस्तुत रस का स्वरूप इस प्रकार प्रस्तुत किया हैः–

"रौद्रः क्रोधस्थायिभावो रक्तो रुद्रादिदैवतः ।।"[377]

उदहारण–

"हा हन्त सम्प्रति विशीर्णतनुः स वृद्धः ,
वृद्धाऽथवा नयनयोः विषमातनोति ।
दृष्टि न नन्दयति चात्मपितामहोऽपि ,
दृष्टिर्यतः कलुषिताः विषयैर्विभिन्नैः ।।"[378]

९. शृंगाररस –

काव्यशास्त्रियों ने शृंगाररस को "रसराज" की संज्ञा से अभिहित किया है। आचार्य भरत ने शृंगाररस, वीर, वीभत्स, एवं रौद्ररसों से अन्य रसों की उत्पत्ति कही है।[379] आचार्य 'भोजराज' ने तो शृंगाररस को सभी रसों का मूल कहा है। आचार्य विश्वनाथ ने शृंगाररस के स्वरुप इस प्रकार प्रस्तुत किया है :–

---

373 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ६/४–५
374 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ६/६४
375 कविराजविश्वनाथविरचित साहित्यदर्पणम् शालिग्रामशास्त्री,मो०ब०वारा०प्र०२००४, ३/२३५–२३८
376 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ५/१३
377 कविराजविश्वनाथविरचित साहित्यदर्पणम् शालिग्रामशास्त्री,मो०ब०वारा०प्र०२००४, ३/२२७–२३१
378 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, २/४२
379 भरतमुनिप्रणीतं'ना०शा०'–पुष्पे०कुमार,न्यू भा०बु०कोर्पो०दिल्ली,२०१५,–६/४०

"शृंङ्गं हि मन्मथोद्भेदस्तदागमनहेतुकः ।

उत्तमप्रकृतिप्रायो रस शृंगार इष्यते ।।"[380]

उदहारण–

प्रस्तुत महाकाव्य में 'रसराज' की अत्यल्प उपस्थिति काव्यसमालोचकों के लिये आश्चर्य का विषय हो सकता है। इसका कारण यह है कि समीक्ष्य महाकाव्य जननी एवं जन्मभूमि की भक्ति से परिपूर्ण महाकाव्य है। महाकवि ने शृंगाररस के 'स्थायीभाव "रति" को 'वत्सलता' एवं 'भगवद्विषयक 'रति' में ही अन्तर्निहित कर लिया है। समीक्ष्य महाकाव्य से शृंगाररसयुक्त पद्य उदाहरणस्वरूप प्रस्तुत है :–

"साक्षाद्दृष्ट्वा विरहविधुरा नायिकादुःखचित्ता ,
तुष्टा स्याच्च प्रमुदितमना नायकं तं स्वकीयं ।
शीघ्रं कर्णे कथयति समं भूतपूर्वं रहस्यं ,
मोदोऽशेषो भवति हि सतां वान्धवे संप्रदिष्टे ।।"[381]

"भवतु पुष्पित एव भवत्पथः ,
स विदधातु विभुस्तवमङ्गलम् ।
मिलनस्तु हि दिग्वलयेऽचिराद्–
उदयदीप्तरवेः प्रभया सह ।।"[382]

"प्रियेऽत्र किञ्चित् क्षणमावसावः ,
पुण्ये पयोधेः हि तटप्रदेशे ।
एकं हि पत्रं लिखितं कदाचित् ,
स्मरामि तज्जीवनदुःखदग्धम् ।।[383]

१० . हास्यरस –

विकृताकार, वाणी, वेशभूषा, चेष्टा आदि से हास्य उत्पन्न होता है। जैसा कि साहित्यदर्पणकार ने कहा है:–

"विकृताकारवाग्वेषचेष्टादेः कुहकाद्भवेत् ।
हास्यो हास स्थायिभावः श्वैः प्रमथदेवतः।। "[384]

उदहारण–

"गान्धी हि हिन्दीमधिकृत्य चोक्तवान्,
आचार्यवर्यस्तु तदेव संस्कृतम् ।
ततो महात्मा च भवन्महीयसा,

---

[380] कविराजविश्वनाथविरचित साहित्यदर्पणम् शालिग्रामशास्त्री,मो०ब०वारा०प्र०२००४, ३/१८२–१८७
[381] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ५/७८
[382] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ४/४७
[383] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ४/४८
[384] कविराजविश्वनाथविरचित साहित्यदर्पणम् शालिग्रामशास्त्री,मो०ब०वारा०प्र०२००४, ३/२१४–२१७

मुग्धो मुदा विस्मृतवान् स्वभोजनम् ।।"[385]

"अरे कलामणिककाङ्क्षुचञ्चल ! ,

मुखं त्वदीयं नवनीतलोलितम् ।

क्व यासि किं चोरयितुं तवेप्सीतं ,

न सा यसशोदा ; जननी तु भाषते ।।"[386]

इस प्रकार समीक्ष्य महाकाव्य के अंगीभूत 'शान्तरस' के साथ ही अंगरूप में न्यूनाधिक्य सहित क्रमशः भक्ति, वत्सल, करुण, रौद्र, वीर, भयानक, अद्‌भुद, विविध रसों का वर्णन रसयोजना को परिपुष्ट करता है तथा महाकाव्य को अलौकिकत्व प्रदान करता है।

ऊ. 'भारतायनम्' महाकाव्य का 'भाषासौष्ठवविवेचन :–

समीक्ष्य महाकाव्य के इतिवृत्त, पात्र, छन्द, अलंकार, रस, गुण, दोष आदि के विवेचन के साथ ही भाषागत पक्ष का विवेचन भी अत्यावश्यक है। भाषा हृदयगत भावों की अभिव्यक्ति का साधन है। कोई भी जागरुक पाठक काव्य के भाषासौष्ठव का अनुशीलन करके, महाकवि के काव्यकौशल के विषय में ज्ञान प्राप्त कर सकता है। वस्तुतः भाषासौष्ठव तत्कवि के रचनाकौशल का दर्पण होता है। कवि के काव्यकौशल के अभिज्ञान हेतु भाषासौष्ठव एक साधन का कार्य करता हैं। अगर कवि की भाषा में सम्प्रेषणीयता का गुण हो तो उसकी रचनाएँ साहित्य और समाज में आदर से देखी जाती हैं। भावानुकूलभाषा के प्रयोग से कोई भी काव्य सहृदयजनों द्वारा 'सहृदयहृदयाह्लादकारी' काव्य की पदवी को प्राप्त करने में सफल हो पाता है। सर्वगुण, अङ्‌लकार, रीति, रस, हेतु, वर्णनवैचित्र्य, सुभाषित, गुण, दोष, लोकभाषा, लोककल्याण, सुभाषित, देशजशब्दप्रयोग, व्यंग्य, विशेषण भावादि से समन्विता, पदपदांशयुक्ता, अर्थान्विता, कविकर्म की साक्षात् परिचायिका 'भाषाशैली' 'काव्य की आत्मा होती है। किसी भी काव्य के भाषा–सौष्ठव के अन्तर्गत काव्यरीति का विवेचन किया जाता है।

महाकवि आचार्य हरेकृष्ण शतपथी रचित समीक्ष्य महाकाव्य 'भारतायनम्' की भाषा काव्यकीर्तिवर्धयित्री, 'सा विद्या या विमुक्तये' भाव की जनयित्री, भारतमातृभूमिचरणयुगल की सेवा करने वाली, दुर्गुणों को दूर करने वाली, भक्तिभाव द्वारा मोक्षमार्ग को प्रदर्शित करने वाली, पुरुषार्थचतुष्टय की प्रदायक, काव्यरसज्ञों के हृदय को आह्लादित करने वाली, सरस, सरल, प्राञ्‌जल, परिमार्जित एवं परिष्कृत है। महाकवि ने स्वप्रतिभा से जन्मभूमि– 'भारतभूमि' की प्रशंसा अथवा भक्ति में जो भी वर्णन किया है, उसकी भाषा वर्णन के अनुरूप, पात्रों के अनुरूप तथा भावानुकूल है। शान्तवत्सलभक्ति आदि रसों से युक्त समीक्ष्य महाकाव्य में अनेक भाषागत विशिष्टताएँ दृष्टिगत होती हैं। इस महाकाव्य में वैदर्भी–रीति –प्रयोग में, विविध अलंकारों के पांडित्यपूर्ण दर्शन में, प्रसादमाधुर्यगुणान्वित पदों के प्रबन्धन में, शान्तादि रसों की योजना में,

---

[385] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ६/५३
[386] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, १/७०

स्वप्रतिभाप्रदर्शन में, दीर्घसमासरहित पदयोजना में, सागरसदृश गहन एवं विस्तृत कथा का परिपाक सार रूप में प्रस्तुत करने में महाकवि का भाषासौष्ठव दर्शनीय है। समीक्ष्य महाकाव्य में महाकवि द्वारा इतना उत्तम भाषाप्रबन्ध किया गया है कि काव्यरसास्वादन में कहीं पर भी विरक्ति नहीं होती है। भाषा पर महाकवि का अत्यन्त सशक्त अधिकार दृष्टिगोचर होता है। यथा –

नृत्यन्ति येषां रसनातले ये,
शब्दाः विशिष्ठा उपमाप्रयुक्ताः ।
राराजमाना सुगले च वाणी
तान् वाग्मिकृष्णान् हि वयं नमामः ।।।।"[387]

महाकवि आचार्यहरेकृष्णशतपथी 'भारतायनम्' महाकाव्य को सर्वगुणसंपन्नकाव्यरीति – 'वैदर्भीरीति' में गुम्फित किया है। समस्त काव्य रीतियों में 'वैदर्भीरीति' सर्वोत्कृष्ट मानी जाती है। महाकवि ने माधुर्यव्यञ्जक वर्णों, लघुसमासों एवं कहीं–कहीं समासरहित पदों की संघटना का प्रयोग किया है। महाकवि का शब्दचयन अत्यन्त श्लाघनीय है। भावोचित पदयोजना की दृष्टि से महाकवि का भाषा पर एकाधिकार दृष्टिगत होता है। प्रस्तुत महाकाव्य का पदलालित्य, अलंकारयोजना द्वारा अत्यन्त हृदयहारी प्रतीत होता है। प्रस्तुत महाकाव्य की भाषाशैली की प्रतिपुष्टि में उदहारण स्वरुप कुछ पद्य प्रस्तुत हैः–

"तुङ्गागङ्गातरङ्गायितजलधिजलप्राणपुण्यप्रवाहः ,
कावेरीवारिधारासुरभितवपुषा भूषितः नित्यपूतः ।
योऽसौ सौन्दर्यसम्पत्सकलविधमहामण्डनैर्मण्डिताङ्गः ,
सोऽसौ कालीप्रसन्नो जगति विजयतां स्वर्णकर्णाटदेशः ।।"[388]

"बहुरङ्गतरङ्गविभङ्गयुते ! ,
सुरसङ्गमपुण्यपयः परिधे ! ।
भवदुःखविमोचनकारण हे ! ,
प्रणतिस्तवदपारपदाब्जयुगे ।।"[389]

"श्रीविश्वनाथनगरी च गरीयसी सा ,
विद्याविनोदविभवाऽतिपवित्रदेहा ।
गङ्गातरङ्गशुभसङ्गतिधन्यधन्या ,
वाराणसी विजयतां विवुधैर्वरेण्या ।।"[390]

"तीर्थेषु धन्या नितरां सुपुण्या ,
करालवन्याकुलकालकन्या ।
सा द्वारिकामन्दिरमालमान्या ,

---

[387] आगरा विवि०के संस्कृतविभाग में सहायकाचार्य, एवं महाकवि के शिष्य श्रीछगन्लालशर्मा द्वारा कृत प्रशंसा
[388] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, १०/८
[389] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ४/३१
[390] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ८/१

विराजते विश्वविभाग्रगण्या ।।"[391]

"सुतासुतानां विधिनाऽपि निर्मितां ,
अनन्तकालादनुमर्मवेदनाम् ।
निषम्य दुःखेन विदारितं हि यत् ,
तदेव मातुर्हृदयं दयामयम् ।।"[392]

"शान्तः प्रशान्तविपिने सुरलोकतुल्य ,
छायाप्रदायितरुराजिविराजिते च ।
कश्चित्तपस्यति मुनिर्यदि तत्र काले ,
जागर्ति दुर्जनरवः कथमस्ति योगी ।।"[393]

"संसारधातारमनन्तरूपं ,
वेदान्तवेद्यं हृतपापतापम् ।
प्रातश्च सायश्च तमेकनाथं ,
वन्दे जगन्नाथमनाथनाथम् ।।"[394]

उपर्युक्त पद्यों में रीत्यलङ्कारयुक्त पदलालित्य दृष्टव्य है। एवमेव –

''गृहं गृहं नो विपिनो गृहं यतः
सखा सखा नो हरिणा हि बान्धवाः ।
पिता पिता नो पिताऽम्बरः परं ,
न साऽस्ति माता जननी वसुन्धरा ।।"[395]

गते वसन्ते भविता पिकः पिकः ,
पुनश्च शुष्के सलिले सरः सरः ।
गतेऽपि तेले नितरां दशा दशा ,
जरावतीर्णे च पुनर्जनो जनः ।।"[396]

"इदं कुरुक्षेत्रसमं रणाङ्गणम् ,
भयङ्करैर्व्याकुलितं हि शत्रुभिः ।
अहर्निशं विक्षतदेहमानसं ,
कदा कदा दुर्विसहं हि जीवनम् ।।"[397]

"कलेवरं रक्तपलादिनिर्मितां ,
विभाति यावत् रुचिरं मनोहरम् ।

---

[391] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ७/८
[392] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, १/६१
[393] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ५/४७
[394] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ६/१४
[395] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ५/२४
[396] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ५/२७
[397] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, १/१०७

भवन्ति तावत्सुहृदः समे भवे ,

वयोगते पृच्छति को जरातुरे ।।"[398]

"यस्माद्बन्धोऽद्य भवजविषादाग्निना दग्धचित्तो ,

नानामान्द्यादिकलिततनुस्ताड़ितस्ताडनाद्यैः ।

तस्मात् किञ्चिन्मम विषयकं दुःखवृन्दं वदामि ,

प्रोक्ते दुःखे भवति हि लघु प्राणबन्धोः समीपे ।।"[399]

"तेषां बुधानां महती हि सेवा ,

कृता च राज्ञा महतादरेण ।

दानं प्रदत्तञ्च मनोऽनुरूपं ,

सतां हि पूजा मनुजस्य धर्मः ।।"[400]

"अहो सुरम्यं फलपुष्पपल्लव–

वधौतवृक्षैर्लसितं वनं पुनः ।

सुचारूदृश्यं प्रकृतेर्निरंतरं ,

जनस्य काम्यं जगदग्निदाहिनः ।।"[401]

"का वा विश्वकथाव्यथा ! श्रुणु सखे ! माता स्वयं क्रन्दति ,

तस्याः अश्रुजलं वहत्यविरतं ह्युष्णं सदा जाह्नवी ।

सन्तानाश्च तथाऽपि भारतभूवि व्यामोहतः नीरवाः ,

धिक् तज्जन्म, यतो न नेत्रसलिलं सम्प्रोच्छितुं शक्यते ।।"[402]

"वेदे श्रीसंहिता सतां हितरता रामायणे चर्च्चिता ,

काव्ये नृत्यरता कलासु लसिता नृत्याङ्गनाभूषिता ।

देवानां कविता कवीन्द्रवनिता या भरते पूजिता ,

सेऽयं भारतभारती कथय भोः कस्याद्य नास्तीप्सिता ।।"[403]

"तेजोवीर्ययुतः परात्परसुतः सच्चिन्मयो मानवः ,

दक्षोऽभून्निजकार्यसाधनविधौ दुःखं यतो वश्यता ।

विज्ञानोद्भवयन्त्रचालितकलैः क्लान्तोऽनुतप्तोऽपि सः ,

विस्मृत्य स्वपरम्परां परवशः पंगुर्हि जातोऽधुना ।।"[404]

महाकवि बालभावों के स्वभाविकचित्रण में महाकवि सिद्धहस्त है। यथा–

"लाभं न वाञ्छति कदा न कदापि हानि– ,

---

[398] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ५/२६
[399] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ५/७६
[400] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ६/५
[401] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ५/३१
[402] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ८/५८
[403] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, १०/४४
[404] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ८/२८

मेतद्वयं भवति तस्य कृते समानम् ।
निष्कारणं हसति रोदिति वा तथैव ,
दुःखं सुखं द्वयमहोऽस्ति शिशोर्न भिन्नम् ।।"[405]

"मातुस्स्तनौ चलाशिशुः करपल्लवाभ्यां ,
किं कन्दुकाविति विचिन्त्य विदारयंस्तौ ।
क्रीड़ाभिराममुखभङ्गिमलोभनीयः ,
विश्रब्धमेव पिबति प्रतिवारमेषः ।।"[406]

"उचारणं स्खलितमप्यतिशोभनीयं ,
म्लानं मृदाऽपि च वपुर्ह्यतिलोभनीयम् ।
बालस्य कार्यमखिलं खलु योजनीयं ,
दिव्येन साकमपि सन्ततमर्च्चनीयम् ।।"[407]

इसी प्रकार भारतभूमि के वर्णन में भावानुकूल सरल एवं सरस भाषा का सौन्दर्य देखा जा सकता है। यथा–

"माता हि नो जगति भारतभूमिरेषा ,
तस्या वयं हि नियतं शिशुपुत्रकल्पाः ।
स्तन्यामृतं मधुमयं समवाप्य तस्याः ,
सर्वे भवन्तु सुखिनः शिशवः तदङ्के ।।"[408]

"दलितमानवरक्षणतत्परां ,
कलितकोटिकलाकमलाकराम् ।
चलितकालकरालकृपाकरां ,
नमत भारतमातरमादरात् ।।"

"गुरुपराम्परया परिदीपितं ,
भूवि जगद्गुरुनामविभूषितम् ।
परिचितं शिवसुन्दरसत्यता– ,
गुणगणैर्जयतात् प्रियभारतम् ।।"[409]

"हिमालयस्योपरि राजमानः ,
तपश्चरन् लोकहिताय नित्यम् ।
वन्दावहे वहे श्रीविभुबद्रिनाथं ,
प्रत्यक्षरूपं खलु साधानायाः ।।"[410]

---

[405] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, २/१३
[406] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, २/१६
[407] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, २/३०
[408] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, १/१२०
[409] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ३/४ एवं ३/११

"रामानुजोऽनुपमभक्तगणाग्रगण्यः ,
प्रज्ञावतार इति ते शरणं प्रपन्नः ।
ख्यातोऽभवत् हि शरणागतितत्ववेत्ता ,
श्रीवेंकटेश! भगवन् शरणं प्रपद्ये ।।"[411]

"सहस्ररश्मिप्रभया प्रतापिता,
ह्युदासभावैरपि या प्रभाविता।
करोति सन्तानकृते हि मङ्गलं,
महीतले सा जननी; न मेदिनी।।"[412] आदि।

महाकवि आचार्य हरेकृष्णसतपथी अर्वाचीन कवियों में लब्धप्रतिष्ठित है। उनकी भाषाशैली अतीव मनोहरा है। वे स्वकीय माधुर्य एवं 'प्रसादगुणगुम्फनशैली' से पाठकों के मन को मोहित करने में समर्थ है। सम्पूर्ण महाकाव्य में महाकवि की शब्दयोजना कथावस्तु एवं रस के अनुकूल है। काव्य में प्रयुक्त सूक्तियाँ काव्यार्थगौरवपरिचयात्मक होती हैं। समीक्ष्य महाकाव्य में महाकवि ने विभिन्नप्रसंगों में लगभग ५० से अधिक सूक्तियों का प्रयोग किया है। प्रस्तुत महाकाव्य में प्रयुक्त सूक्तियाँ इस महाकाव्य के अर्थगौरव की पुष्टि करती हैं। जैसे–

१ **"कदापि माता भविता न विस्मृता ।।" – १–१०**
२ **"पृथिव्याः जननी गरीयसी ।।" – १–४५**
३ **"मातुर्हदयं दयामयम् ।।" – १–६१**
४ **"पिता मदीयः गगनोपमो महान् ,**
वसुन्धरा में जननी धुरन्धरा ।।" – १–८५
५ **"कदा कदा दुर्विसहं हि जीवनम् ।।" – १–१०७**
६ **"दुःखं सुखं द्वयमहोऽस्ति शिशोर्नभिन्नम् ।।" – २–१३**
७ **"सा चारुता भवति या निजभावसिद्धा ।।" – २–२८**
८ **"हा हन्त ! हन्त ! मनुजस्य वयः प्रभावः ।।" – २–४६**
९ **"ईर्ष्यादिदग्धहृदयस्तपतीह लोकः ।।" – २–४६**
१० **"विहाय को वा सहधर्मचारिणीं।**
स्वधर्मसंरक्षणतत्परो भवेत् ।।" ३–२१
११ **अर्थो हि नाम जनजीवनमुख्यलक्ष्यम् । ४–२७**
१२ **अर्थेन सञ्चलति संसृतिधर्मचक्रम् । ४–२७**
१३ **चलादतीतो नियमो निरन्तरम् । ५–६**
१४ **विना निदानं न हि कार्यदर्शनम् । ५–६**

---

[410] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ७/३५
[411] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, १०/३४
[412] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, १/३६

१५ "न कः सहायो जगदद्भुदं परं ।
सदा जनो यत्र समेति यंत्रणाम् ।।" ५–२५

१६ "जरावतीर्णे च पुनर्जनो जनः ।।" ५–२७

१७ "यथा पुष्करपत्रसम्पुटे जलं तथा जीवनमस्तु निर्जनम् ।।" –५–२६

१८ "विचित्रञ्च सदाऽस्तु जीवनम् ।।' ५–३०

१६ "जनस्य काम्यं जगदग्निदाहिनः।" ५–३१

२० "जनस्य मृत्युर्भविता ध्रुवो भवे ।।'' ५–३३

२१ "न भाति मृत्युः पुरुषस्य कहिर्चित् ।।'' ५–३४

२२ "सधैर्यं कुरु कार्यसाधनम् ।।'' ३–३५

२३ "दुश्छेद्य एव नितरामनुरागबन्धः ।
दुःखस्य कारणमहोऽस्ति तदेव तत्वम् ।।'' ५–३८

२४ "संसारमोहममताकवलेन् बद्धा ।
अस्मादृशाः कथमहो न हि दुःखभाजः ।।'' ५–३६

२५ "बन्धोर्वचः सुमधुरं सुधया विधौतं ।
सञ्जीवनं भवति नोनलदग्धकानाम् ।।'' ५–४०

२६ "पंकजपवित्रसुवासराशिः, दुर्गन्धदेहमलराजिमपाकरोति ।।'' ५–४०

२७ "कस्य न दुःखमस्ति ।।'' ५–४१

२८ "ग्रीष्मे सुतीक्ष्णकिरणास्तु दिवाकरस्य ।
किं तेन चेद् वहति शीतलगन्धवायुः ।।" ५–४२

२६ "जगदिदं न कदाऽपि तेऽस्ति ।।" ५–४४

३० "तोयं यथा कमलपत्रे तथैव ।
वासं विधाय जगति स्वगृहं गताऽसि ।।" ५–४५

३१ "स्मरन्ति नाथं हि विषादबान्धवाः ।।" ५–५६

३२ "न पंकजं पंकमपाकरोति ।।" ५–५६

३३ "प्रायो दुःखं सकलसमये कारणं मंगलस्य ।।" ५–७५

३४ "मेघं दृष्ट्वा श्रयति गगने नृत्यमेवं मयूरः ।।" ५–७७

३५ "मोदोऽशेषो भवति हि सतां बान्धवे संप्रदिष्टे ।।" ५–७८

३६ "प्रोक्ते दुःखे भवति हि लघु प्राणबन्धोः समीपे ।।" ५–७६

३७ "सतां हि पूजा मनुजस्य धर्मः ।।" ६–५

३८ "विधिः स्वयं प्रमेयः ।।" ६–६

३६ "न तेन किं वा क्रियतेऽत्र साधना? ।।" ७–२८

४० "सदा च सिद्धिं वितनोति साधना ।।" ७–३०

४१ "लोकाः भवन्तु सुखिनः करुणाद्रचित्ताः ।।" ८–४

४२ "विस्मृत्य स्वपरम्परां परवशः पंगुर्हि जातोऽधुना ।।" ८–२८

४३ "व्याप्ते रोगसमुच्चये जगति तत् सौख्यं कथं देहिनाम् ? ।।" ८–५३

४४ "धन्या मृताः ये नराः ।।" ८–५६

४५ "धिक् तज्जन्म, यतो न नेत्रसलिलं सम्प्रोञ्छितुं शक्यते ।।" ८–५८

४६ "सन्तानस्तु कदा समर्थयति स्वमातृदेहक्षयम् ।।" ५–५६

४७ "को व जगत्याः पितरौ न पूजयेत् ।।" ६–५६

४८ "सुखं दुःखं च सकलं समानम् ।
यस्यास्ति नूनं स्थितधीः स विद्वान् ।।" ६–६५

४६ पूर्णप्रगतिः प्रियभारतस्य नैवं हि सम्भवति संस्कृतमन्तरेण ।।" १०–३६

५० "सेयं संस्कृतभारती कथय भोः कस्याद्य नास्तीप्सिता ।।" १०–४४

५१ "कर्त्तव्यं करणीयमेव ।।" १०–४८

५२ "सविनयं चलतान्मम जीवनम् ।।" १०–५१

इस प्रकार से भाषा प्रयोग में महाकवि आचार्य हरेकृष्णशतपथी, श्रेष्ठ कवित्व को प्रदर्शित करते है। यद्यपि महाकवि कालिदासवत् प्राञ्जलत्व एवं महाकवि भारवि, माघ, हर्ष आदि के समान कलापूर्णत्व महाकवि के भाषाप्रयोग में दृष्टिगत नही होता है; तथापि उनके द्वारा योजित भावानुसारिणी 'भाषाशैली' सहजाभिवादन करती हुई सी प्रतीत होती है। महाकवि जो भी लिखने की कल्पना करते हैं, वही विषय स्वभाषासौष्ठव के बल से काव्य रूप धारण कर लेता है। भावोचित पदयोजना में दक्ष महाकवि द्वारा जैसी पदयोजना समीक्ष्य महाकाव्य में प्रस्तुत की गई है, वैसा ही काव्यार्थ प्रतीत होता है। महाकवि का काव्यकलाकौशल देखकर कोई भी पाठक अथवा समालोचक यह कह सकता है कि वे शब्दों के जादूगर हैं। अक्षरों के योग में, शब्दशक्तियों के सुनियोग में, गुणाधान एवं औचित्यनिरूपण में महाकवि अत्यन्त निपुण है। उन्होंने अभिधा का सर्वाधिक एवं लक्षणा एवं व्यञ्जना का अत्यल्प प्रयोग किया हैं। उनका अलंकारविधान एवं छन्दयोजना, अत्यन्त प्रौढ़तर एवं परिमार्जित है; जिससे अलंकारविधान में सर्वत्र कलात्मकता एवं चमत्कारिता दृष्टिगत होती है। माधुर्यगुण की प्राञ्जलता एवं वैदर्भीरीति की विशुद्धता समीक्ष्य महाकाव्य की महत्त्वपूर्ण विशेषता है। उपर्युक्त उदाहरणों में वैदर्भी रीतियुक्त पदयोजना से उत्पन्न पदलालित्य अति चर्वणीय है। पदों की मधुरता, भावों की गंभीरता एवं कल्पना की विचित्रता इस महाकाव्य में सर्वत्र सुशोभित है।

अतः निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि महाकवि आचार्य हरेकृष्ण शतपथी की अत्यन्त हृदयहारिणी भाषाशैली के कारण महाकाव्य का रसास्वादन प्रत्यक्षरूप से पाठकों के समक्ष स्वतः उपस्थित हो जाता है। महाकाव्य में प्रयुक्त सूक्तियाँ इसके भाषासौष्ठव में चमत्कारिता की उत्पादक है। प्रस्तुत महाकाव्य में भावपक्ष एवं कलापक्ष का अद्भुद सामञ्जस्य है। इस प्रकार भाषासौष्ठव की दृष्टि से समीक्ष्य महाकाव्य सफल एवं उत्तम काव्य है।

ऋ. 'भारतायनम्' महाकाव्य–काव्यगुणनिरूपण :–

काव्यशास्त्रीय तत्वों में काव्यगुणों का अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान है। काव्यशास्त्रीय आचार्य काव्य में गुणों की स्थिति एवं संख्या के विषय में एकमत नहीं हैं। गुण को काव्य का अत्यावश्यक अंग स्वीकार करते हुए आचार्य भोज कहते हैं कि अलंकारों से युक्त होने पर भी, गुणरहित पदरचना को काव्य नही कहा जा सकता है। यथा–

"अलंकृतमपिश्रव्यं न काव्यं गुणवर्जितम् ।।" [413]

आचार्य मम्मट गुण का स्वरुप निर्देशन करते हुए कहते हैं कि जिस प्रकार शरीर में जीवात्मा की प्रधानता है, एवं शौर्यादि गुण जीवात्मा के धर्म है; उसी प्रकार रस काव्य की आत्मा है, तो गुण भी रस रुपी काव्यात्मा के धर्म है। यथा–

"ये रसस्यऽङ्गिनो धर्माः शौर्यादय इवात्मनः ।
उत्कर्षहेतवस्ते स्युरचलस्थितयो गुणाः ।।"[414]

साहित्यदर्पणकार आचार्य विश्वनाथ गुणों का स्वरुप बताते हुए, लिखते हैं कि देह में प्रधानता को प्राप्त जीवात्मा के शौर्यादि गुणों के सामान काव्य की आत्म "रस" के धर्म 'माधुर्यादि" गुण कहते है। यथा–

"रसस्याङ्गित्वमाप्तस्य धर्माः शौर्यादयो यथा ।। गुणाः ।।"[415]

गुण के भेद–

समस्त काव्यशास्त्रीय आचार्य केवल निम्न तीन काव्यगुणों को ही स्वीकार करते है। यथा–

"माधुर्यमौजोऽथ प्रसाद इति ते त्रिधा ।।"[416]

'भारतायनम्, में काव्यगुण–विवेचन :–

प्रस्तुत महाकाव्य में प्रयुक्त काव्यगुणों का विवेचन आचार्य मम्मट एवं कविराज आचार्य विश्वनाथ की दृष्टि से आगे प्रस्तुत किया जा रहा है।

१–माधुर्यगुण –

माधुर्य गुण का स्वरुप उपस्थापित करते हुए साहित्यदर्पणकार कविराज विश्वनाथ कहते हैं कि जिससे अंतःकरण आह्लादित हो जाये; वह आनन्दविशेष 'माधुर्य' कहलाता है। यथा–

"चित्तद्रवीभावमयो ह्लादो माधुर्यमुच्यते ।
सम्भोगे करुणे विप्रलम्भे शान्तेऽधिकं क्रमात् ।।"[417]

---

[413] श्री भोजराजप्रणीत 'सरस्वतिकण्ठाभरणम्'–विश्वनाथशास्त्री, चौ०प्र०वारा०,२०११, १/६
[414] आ०मम्मटविरचित 'काव्यप्रकाश'–डॉ० श्रीनिवासशास्त्री,साहित्यभण्डार प्र०,मेरठ,२००३, ८/६६
[415] कविराजविश्वनाथविरचित साहित्यदर्पणम् शालिग्रामशास्त्री,मो०ब०वारा०प्र०२००४, अष्ट०परि०,पृ० २६४
[416] कविराजविश्वनाथविरचित साहित्यदर्पणम् शालिग्रामशास्त्री,मो०ब०वारा०प्र०२००४, ८/१

माधुर्यगुण के व्यञ्जकवर्ण–

साहित्यदर्पणकार आचार्य विश्वनाथ के अनुसार माधुर्यगुण के व्यंजक वर्ण इस प्रकार हैः–

"मूर्ध्नि वर्गान्त्यवर्णेन युक्ताष्टठडढान्विना ।
रणौ लघू च तद्व्यक्तौ वर्णा; कारणतां गताः ।।
अवृत्तिरल्पवृत्तिर्वा मधुरा रचना तथा ।[418]

अर्थात जहाँ पर ट, ठ, ड, ढ वर्णों से भिन्न वर्ण आदि में हो एवं स्पर्श (क से म) अपने वर्गों (कु,चु,टु,तु,पु) के अंतिम वर्णों (ङ,ञ,ण,न,म) से युक्त होने; अर्थात् अपने वर्ग के स्पर्शवर्ण के साथ उसी वर्ग का पञ्चमवर्ण के संयुक्त होने पर; माधुर्य की व्यञ्जकता होती है। इसी प्रकार हलन्त 'र' एवं 'ण' वर्ण तथा 'अवृत्ति'–'समासरहित' एवं 'अल्पवृत्ति'– 'छोटे–2 समस्तपदों से युक्त रचना' भी माधुर्य की व्यंजक होती है।

उदहारण–

शान्तरसप्रधान समीक्ष्य महाकाव्य में माधुर्यगुण की उपस्थिति प्राचुर्यता से प्राप्त होती है। जैसे–

"बहुरङ्गतरङ्गविभङ्गयुते ! ,
सुरसङ्गमपुण्यपयः परिधे ! ।
भवदुःखविमोचनकारण हे ! ,
प्रणतिस्तवदपारपदाब्जयुगे ।।"[419]

प्रस्तुत पद्य में 'ट, ठ, ड, ढ' वर्णों का अभाव है। स्पर्श वर्ण 'क' आदि स्ववर्गान्त वर्ण 'ङ् से युक्त वर्ण का प्रयोग हुआ है। तथा लघुसमासयुक्त माधुर्यगुण की छठा दृष्टव्य है।

और भी–

"श्रीविश्वनाथनगरी च गरीयसी सा ,
विद्याविनोदविभवाऽतिपवित्र देहा ।
गङ्गातरङ्गशुभङ्गतिधन्यधन्या ,
वाराणसी विजयतां विवुधैर्वरेण्या ।।"[420]
"त्वदीय सम्पर्कमवाप्य शङ्करः ,
भयङ्करो वा कमनीय किङ्करः ।
ऋतेऽम्बिके ! त्वत् स शवो शिवः भवेत् ,
कदा च पुनः स्पन्दितुमेव न क्षमः।।"[421]
"नीलाम्बुदश्यामल कन्तिकान्तं ,
नीलाम्बुधेर्नीलगिरौ वसन्तम् ।

---

[417] कविराजविश्वनाथविरचित साहित्यदर्पणम् शालिग्रामशास्त्री,मो०ब०वारा०प्र०२००४, ८/२
[418] कविराजविश्वनाथविरचित साहित्यदर्पणम् शालिग्रामशास्त्री,मो०ब०वारा०प्र०२००४, ८/३–४
[419] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ४/३१
[420] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ८/१
[421] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, १/२३

लीलामयं नीलसरोजनेत्रं ,

देवं जगन्नाथमहं भजामि ।।[422]"

"रुग्णा शिल्पगणास्ततः स तु परं शिल्पाधिकारी ऋणी ,

सम्प्राप्य क्षतिपूरणं बहुविधैर्मिथ्याप्रकारैः पुनः ।

किञ्चिद्वञ्चकचञ्चकत्वपटुतामिष्टक्षणे दर्शयन् ,

कृत्वा वित्तचयं स, मौलिक ऋणान्मुक्तो भवेल्लीलया ।।"[423]

साहित्ये यत्र धन्याः सुविदितकवयो–रन्न–पोन्न–कुवेम्पू–

पम्पा–निःसारमुख्याः स्वमधुरजनुषाऽभूषयन् यं प्रदेशम् ।

यस्मिँश्च ज्ञानपीठोज्ज्वलमणिमहसाऽनन्तमूर्त्तिश्च गोकाक्–

वेन्द्रे–सिद्धाः विभान्तीह स जयतु सदा स्वर्णकन्नड्प्रदेशः ।।"[424]

२– औजगुण –

साहित्यदर्पणकार आचार्य विश्वनाथ के मतानुसार 'चित्त के विस्ताररुप दीप्ति का हेतु' (कारण) औजगुण है। वीर, वीभत्स एवं रौद्ररस में यह क्रमशः अधिक दीप्तता को प्राप्त करता है। यथा–

"ओजश्चित्तस्य विस्ताररूपं दीपत्वमुच्यते ।

वीरबीभत्सरौद्रेषु क्रमेणाधिक्यमस्य तु ।।"[425]

ओजगुण के व्यञ्जकवर्ण–

"वर्गस्याद्यतृतीयाभ्यां युक्तौ वर्णौ तदन्तिमौ ।।

उपर्यधो द्वयोर्वा सरेफाष्टठडढैः सह ।

शकारश्च षकारश्च तस्य व्यञ्जकतां गताः ।।

तथा समासो बहुलो घटनौद्धत्यशालिनी ।"[426]

अर्थात् वर्ग का प्रथमवर्ण (क, च, ट, त, प), उसी वर्ग के द्वितीयवर्ण (ख, छ, ठ, फ) से तथा तृतीयवर्ण(ग, ज, ड, ब), चतुर्थवर्ण (घ, झ, ढ, भ) से युक्त; उपर–नीचे अथवा दोनों ओर से, रेफ वर्णों से युक्त; 'ट, ठ, ड, ढ, श' एवं 'ष' वर्णों का प्रयोगयुक्त; तथा दीर्घ समासयुक्त कलिष्ट रचना ओज गुण की व्यञ्जक होती है।

उदहारण –

---

[422] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ६/१३
[423] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ८/३०
[424] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, १०/६
[425] कविराजविश्वनाथविरचित साहित्यदर्पणम् शालिग्रामशास्त्री,मो०ब०वारा०प्र०२००४, ८/४ उत्तरार्ध एवं ८/५ पूर्वार्ध
[426] कविराजविश्वनाथविरचित साहित्यदर्पणम् शालिग्रामशास्त्री,मो०ब०वारा०प्र०२००४, ८/५ उत्तरार्ध से ८/७ पूर्वार्ध

प्रस्तुत महाकाव्य में वीर, वीभत्स एवं रौद्र रस की अत्यल्प उपस्थिति है। अतः ओजगुण युक्त पद्यों की भी उपलब्धता भी अति न्यून है। प्राय किसी पद्य के किसी एक चरण आदि में ही प्रस्तुत गुण की उपस्थिति मिलती है। जैसे–

"तस्माच्छान्तिरहो न कस्य हृदये विभ्राजते तत्वतः,
युद्धानां भयतः समग्रपृथिवी ह्युद्वेगतः कम्पते ।
कश्चिद् भाययते सदा स्वयमपि त्रस्तः निजैः कर्मभिः ,
शक्तिं दर्शयितुं दृढेन मनसाह्यन्योऽधुना प्रस्तुतः ।।"[427]

"तथाविधानां क्षय एव वैरिणाम्–
अवश्यकार्यो हि विलम्बनं विना ।
तदर्थमेकस्तु भवेत्सुसज्जितः
स्वजीवनस्यैव महारणाङ्गणे ।।"[428]

३– प्रसादगुण –

प्रसाद गुण का स्वरुप प्रस्तुत करते हुए आचार्य मम्मट लिखते हैं कि जिस प्रकार शुष्क लकड़ी में अग्नि एवं स्वच्छ वस्त्र में जल शीघ्र ही व्याप्त हो जाता है; उसी प्रकार जिस पद्य में प्रसादगुण की उपस्थिति रहती है; वह शीघ्र ही हृदय में व्याप्त हो जाता है। प्रसादगुण उपस्थिति प्राय समस्त रसों एवं रचनाओं में रहती है। यथा–

"शुष्केन्धनाग्निवत् स्वच्छजलवत्सहसैव यः ।
व्याप्नोत्यन्यत्प्रसादोऽसौ सर्वत्र विहितस्थितिः ।।"[429]

प्रसादगुण के व्यञ्जकवर्ण –

प्रसादगुण के व्यंजक वर्णों के विषय में माधुर्यगुण अथवा ओजगुण के समान काव्यशास्त्रियों ने कोई स्पष्ट नियम प्रस्तुत नहीं किया है। आचार्य विश्वनाथ ने सिर्फ इतना कहा है कि सुनते ही जिनका अर्थ समझ में आ जाये; वह सरल एवं सुबोध पद प्रसादगुण के व्यंजक होते हैं। यथा–

''सः प्रसादः समस्तेषु रसेषु रचनासु च।
शब्दास्तद्व्यंजक अर्थबोधकाः श्रुतिमात्रतः।।"[430]

उदहारण –

"त्वदीयपादाब्जयुगं हि सेवितुं,
सः शङ्करः धर्मविचारतत्परः ।
जगद्गुरुः संसृतिवाङ्पराङ्मुखः,
तथापि कलाड़िगृहं जगाम स ।।"[431]

---

[427] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ८/५४
[428] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, १/११०
[429] आ०मम्मटविरचित 'काव्यप्रकाश'–डॉ० श्रीनिवासशास्त्री,साहित्यभण्डार प्र०,मेरठ,२००३, ८/७०उ0, ८/७१ पू0
[430] आ०मम्मटविरचित 'काव्यप्रकाश'–डॉ० श्रीनिवासशास्त्री,साहित्यभण्डार प्र०,मेरठ,२००३, ८/८ उ0

"बहूनि पुष्पाणि फलानि तानि च ,
सुमिष्टमूलानि च पल्लवानि वा ।
यया निज वक्षसि सञ्चितानि नो ,
हिताय सा में जननी ; न मेदिनी ।।"[432]

"अभीष्टसिद्धिप्रदमादिवीजं ,
संसारसृष्टेस्तमनादितत्वम् ।
श्रीरुक्मिणीमानसपद्मसूर्यं ,
श्रीद्वारिकाधीशमिहानमावः ।।"[433]

''गते वसन्ते भविता पिकः पिकः ,
पुनश्च शुष्के सलिले सरः सरः ।
गतेऽपि तेले नितरां दशा दशा ,
जरावतीर्णे च पुनर्जनो जनः ।।"[434]

"प्रिये प्रयावः प्रथमं हि तत्स्थलं ,
वसन्ति यत्रैव समस्त देवताः ।
तदेव साक्षात् पुरुषोत्तमाभिधं ,
विराजते भारतधामगौरवम् ।।"[435]

"वेदे तथा वैदिकधर्मतत्त्वे ,
सचेतनाः सन्तु समस्त लोकाः ।
इत्येव मत्वा शिवरात्रिकाले ,
जयस्य यात्रां कृतवन्त एते ।।"[436]

"ततश्च मार्गे बहुदेशभक्तैः ,
स्वाधीनतार्थं विहितप्रयत्नैः ।
स्वयं मिलित्वा निजजन्मभूमेः ,
स्वन्त्रतार्थं कृतवान् विचारम् ।।"[437]

अयि समस्तमहासुखदायक ! ,
कलिविनाशनवेंकटनायक ! ।
नियतमस्मि भावद्गुणगायकः ,
जगति तारय मां गिरिनायक ! ।।"[438]

---

[431] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, १/६०
[432] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, १/४०
[433] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ७/१२
[434] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ५/२७
[435] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ५/८
[436] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ३/१६
[437] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ६/४१

"विलसितात्तव वक्षसि तत्सुधा–
मधुरताप्रथिताखिलसौरभम् ।
जय जय प्रियजैत्रपथातिथे !
भुवि च बर्द्धय भारतगौरवम् ।।"[439]
"तपस्विवेशेन समाधिमग्नः ,
निसर्गरम्येऽत्र हिमाद्रिहर्म्ये ।
प्रकासिता विश्वहिताय साक्षात् ,
ददाति वार्तां तपसः प्रसिदधाम् ।।"[440]

ए. काव्यदोषसमीक्षणम् :–

काव्यदोष रसप्राप्ति में बाधक होते हैं। यथा–

"रसापकर्षकाः दोषाः ।"[441]

यद्यपि समीक्ष्य महाकाव्य–भारतायनम्', संस्कृत काव्यशास्त्रीय मापकों के अनुरूप है; तथापि इसमें यत्र–कुत्र केचन काव्यदोष भी दृष्टिगत होते हैं किन्तु येसे दोष नहीं कि जिनसे दूषित होकर विद्वानों की दृष्टि में यह काव्य त्याज्य की श्रेणी को प्राप्त हो।

काव्यदोषों के प्रकार–

आचार्य विश्वनाथ ने काव्यदोषों के– पद, पदांश, वाक्य एवं रस में अवस्थिति के कारण मुख्यतः– पदगत, पदांशगत, वाक्यगत, अर्थगत एवं रसगत नाम से पञ्चभेद कहे हैं।

'भारतायनम्' महाकाव्य में काव्यदोष :–

समीक्ष्य महाकाव्य–भारतायनम्' के भावपक्ष एवं कलापक्ष के प्रति महाकवि का महान परिश्रम लक्षित होता है। प्रस्तुत महाकाव्य में सभी काव्यशास्त्रीय तत्त्वों का औचित्यपूर्ण निरूपण प्राप्त होता है। काव्यप्रणयन में प्रमाद अथवा आलस्य के कारण कहीं–२ पर स्खलन अथवा त्रुटि हो सकती है। समीक्ष्य महाकाव्य में नकार के स्थान पर तकार, तकार के स्थान पर नकार, बकार के स्थान पर वकार, इसी प्रकार पञ्चमनुनासिकवर्णों के प्रयोग में त्रुटिदृष्टिगत होती है। कहीं पर श्लोक में एक पद अथवा वर्ण की न्यूनता अथवा अधिकता प्राप्त होती है जिससे छन्दभङ्ग एवं काव्यार्थ में हानि सम्भव है। इस प्रकार के दोष टङ्कणकार द्वारा सम्भावित प्रतीत होते हैं। किन्तु यहाँ केवल दोषान्वेक्षणदृष्टि से विवेचन न करके महाकाव्य में स्वभावतः आये हुए पदगत, पदांशगत, वाक्यगत, अर्थगत, रसगत, दुःश्रवत्व अथवा श्रुतिकटुत्वदोष, न्यूनपदत्व, अधिकपदत्व,

---

[438] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, १०/४६
[439] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ४/४६
[440] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ७/२२
[441] कविराजविश्वनाथविरचित साहित्यदर्पणम् शालिग्रामशास्त्री,मो०ब०वारा०प्र०२००४, ७/१

कथितपदत्व अथवा पुनरुक्तिपदत्व, हृत्वृतत्व, अर्थपुनरुक्ति, रसस्य स्वशब्दवाच्यता, प्रकृतिविपर्यत्व आदि दोषों का सामान्य बुद्धि से दिग्दर्शन किया जा रहा है। यथा–

1– निरर्थकत्व दोषः–

"तेषां बुधानां महती हि सेवा ,
कृता च राज्ञा महतादरेण ।
दानं प्रदत्तञ्च मनोऽनुरूपं ,
सतां हि पूजा मनुजस्य धर्मः ।।"[442]

प्रस्तुत पद्य में 'हि', 'च', आदि निरर्थक पद्यों के प्रयोग से यहाँ निरर्थकत्व दोष है।

2– अधिकपदत्ववाक्यदोषः–

"हे आत्मरूप ! भगवन् ! परमप्रकाश ! ,
प्रज्ञानपार ! भवसारविवेकधार ! ।
आनन्दरूप ! सततं विभु चित्स्वरूपम् ,
आचार्यशंकरः ! महेश ! नमो नमस्ते ।।"[443]

प्रस्तुत पद्य में आचार्यआदिशंकर के विषय में आवश्यकता से अधिक विशेषणों का प्रयोग किया गया है। अतः यहाँ अधिकपदत्ववाक्यदोष है।

3– कथितपदत्व दोष अथवा पुनरुक्तिपदत्ववाक्यदोषः–

"गृहं गृहं नो विपिनः गृहं यतः '
सखा सखा नो हरिणा हि बान्धवा ।
पिता पिता नो हि पिताऽम्बरः परं ,
न साऽस्ति माता जननी वसुन्धरा ।।"[444]

प्रस्तुत पद्य में 'गृह', 'सखा' एवं 'पिता' पदों की एक से अधिक बार उक्ति होने से कथितपदत्व दोष अथवा पुनरुक्तिपदत्ववाक्यदोष है।

4– हृत्वृतत्ववाक्यदोषः–

"गान्धी हि हिंदीमधिकृत्य चोक्तवान् ,
आचार्यवर्यस्तु तदेव संस्कृतम् ।
ततो महात्मा स भवन्महीयसा ,
मुग्धो मुदा विस्मृतावान् स्वभोजनम् ।।"[445]

प्रस्तुत पद्य में रेखांकित पदों में लघु के स्थान पर दीर्घ मात्रा के प्रयोग से 'वंशस्थछन्द' भंग होने से यहाँ हृत्–वृतत्ववाक्यदोष है।

---

[442] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ६/५
[443] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ६/८
[444] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ५/२४
[445] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ६/५३

5–'अर्थपुनरुक्तिदोष':–

"नमो नमस्ते प्रभुचन्द्रशेखर ! ,
नमो नमस्ते गुरुचन्द्रशेखर ! ।
नमो नमः शंकरमूर्तिधारण ! ,
त्वमेव साक्षान्मम मोक्षकारण ! ।।"[446]

प्रस्तुत पद्य में 'नमो नम': एवं 'चंद्रशेखर' पदों से अभिधेय अर्थ की बार–२ उक्ति होने से यहाँ 'अर्थपुनरुक्तिदोष' है।

6– रसस्य स्वशब्दवाच्यतादोषः–

"शान्तः प्रशान्तविपिने सुरलोकतुल्य ,
छायाप्रदायितरुराजिविराजिते च ।
कश्चित्तपस्यति मुनिर्यदि तत्र काले ,
जागर्ति दुर्जनरवः कथमस्ति योगी ।।"[447]

प्रस्तुत पद्य में 'शान्त' शब्द की उपस्थिति से यहाँ रस रसस्य स्वशब्दवाच्यता नामक रसदोष है।

7–लुप्तविसर्गत्त्वदोषः–

"ततः स काञ्चीपुरपूज्यपाद ,
आचार्यवर्यः कृतवान् वरेण्य ।
महाप्रभुः शंकर एकविंश– ,
वर्षाणि यावत् विजयस्य यात्राम् ।।" [448]

प्रस्तुत पद्य में रेखांकित स्थानों पर विसर्ग का लोप होने से लुप्त विसर्गत्त्व दोष है।

इस प्रकार आचार्य हरेकृष्णशतपथी कृत समीक्ष्य महाकाव्य में यद्यपि टङ्कणकार्यस्खलन द्वारा यत्र कुत्रचित् केचन काव्यदोष दृष्टिगत हुए हैं तथापि काव्य के माधुर्य, सारल्य, कथापरिपाक, रसरसिकनिष्टवर्णन द्वारा सभी काव्यदोष अपगत हो गये हैं। दोषशून्य यह महाकाव्य विद्वानों एवं काव्यरसज्ञों द्वारा सेवनीय है; इसी आशा में अतिविस्तार को विराम देता हूँ।

.....इति चतुर्थोऽध्यायः.....

---

[446] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ६/१७
[447] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ५/४७
[448] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ६/४०

पंचम अध्याय

भारतायनम्' महाकाव्य में लोकचिन्तनविमर्श –

क. राष्ट्रियचिन्तन

ख. सांस्कृतिकचिन्तन

ग. पौराणिकचिन्तन

घ. सामाजिकचिन्तन

ङ. धार्मिकचिन्तन

च. दार्शनिकचिन्तन

छ. राजनैतिकचिन्तन

ज. स्त्रिविषयकचिन्तन

झ. प्रकृतिचिन्तन

ञ. पर्यावरणचिन्तन

ट. संस्कृतभाषामूलकचिन्तन

ठ. नैतिकचिन्तन

ड. वैश्विकचिन्तन

ढ. आर्थिकचिन्तन

ण. गंगानदिचिन्तन

त. श्रीजगन्नाथसंस्कृतिचिंतन

थ. तीर्थचिन्तन

द. वैदिकचिन्तन

'भारतायनम्' महाकाव्य में लोकचिन्तन :–

समीक्ष्य महाकाव्य में 'लोकचिन्तन' विषय पर दृष्टिपात् करने से पूर्व 'लोकचिंतन' शब्द में प्रयुक्त 'लोक' तथा 'चिन्तन' शब्दों का अभिप्राय जान लेना समुचित होगा।

'लोक्' शब्द से 'घञ्' प्रत्यय से निष्पन्न से 'लोक' शब्द संसार, मानवजाति, मनुष्य, समुदाय, समूह, समन्यजीवन, दृष्टि, दर्शन आदि अर्थों में प्रयुक्त किया जाता है।[449]

'चित्' धातु से 'ल्युट्' प्रत्यय से निष्पन्न 'चिन्तन' शब्द शाब्दिक अर्थ है–'सोचना या विचारना'।[450] किसी विचारणीय विषय पर गम्भीर मनन करना चिन्तन है। 'चिन्तन' अवधारणाओं, संकल्पनाओं, निर्णयों, सिद्धान्तों आदि में वस्तुजगत को परावर्तित करने वाली संक्रिया है, जो विभिन्न समस्याओं के समाधान से जुड़ी हुई है। 'चिन्तन' विशेषरूप से संगठितभूतद्रव्य–'मस्तिष्क' की उच्चतम उपज है। 'चिंतन' का सम्बन्ध केवल जैविक विकासक्रम से ही नहीं अपितु सामजिक विकास से भी है।

'लोक' तथा 'चिन्तन' शब्दों से निष्पादित ''लोकचिन्त'' शब्द में 'लोक' शब्द किसी भी राष्ट्र का जीवन्त रूप है जो वेदों में जनसामान्य के लिये प्रयुक्त हुआ है। यथा–

"पद्भ्यां भूमिः दिशः श्रोतात् तथा लोकानकल्पयन् ।।"[451]

उपनिषदों एवं ब्राह्मणग्रन्थों में भी अनेक स्थलों पर 'जनसामान्य' अर्थ में 'लोक' शब्द का व्यवहार हुआ है। जैसे–

"बहुव्याहितो वा अयं बहुशो लोकः ।।"[452]

' ''स्वसुखनिराभिलाषः खिद्यसे लोकहेतोः।।''[453]

डॉ० वासुदेव के मतानुसार–'लोक' भूत, वर्तमान, और भविष्य का संचित रूप है। यह पृथ्वी लोक को धारण करने वाली है एवं 'मनुष्य' 'लोक' का प्रकट रूप है।[454]

"लोकचिन्तनम्' शब्द के "लोकस्य चिन्तनम्"; "लोके चिन्तनम्; "लोकाय चिन्तनम्" इत्यादि अनेक विग्रह सम्भावित है। पूर्व में विवेचित 'लोक' एवं 'लोकचिन्तनम्' के अभिप्रायों से स्पष्ट है कि इस चराचर जगत् के प्रति संवेदनशीलता को ही "लोकचिन्तन' कहा जाता है। लोकचिन्तन के कारण ही मनुष्य में सुख–दुःख की अनुभूति होती है। वस्तुतः यह मानव मस्तिष्क की प्रवाहमान शक्ति है, जिसके ज्ञानात्मक, भावात्मक, एवं क्रियात्मक त्रिविध रूप है। यह जीवन को परखने की बौद्धिक प्रणाली है, जिसमें 'जीवनबोध' के प्रति आस्था होती है। मनुष्यजीवन का समग्ररूप ही 'लोकचिन्तन' है। मनुष्य के जीवन का कोई भी क्षेत्र लोकचिन्तन की परिधि से

---

449 'संस्कृतहिंदीकोश'– वामन शिवराम आप्टे, न्यू भा० बुक कोर्पो० दिल्ली, २००६, पृ० ८८४

450 'संस्कृतहिंदीकोश'– वामन शिवराम आप्टे, न्यू भा० बुक कोर्पो० दिल्ली, २००६, पृ० ३८३

451 'ऋकसूक्तसंग्रह'–डॉ०हरिदत्तशर्मा एवं डॉ० कृष्णकुमार साहित्यभण्डार प्र० मेरठ, २००२, पुरुषसूक्त–१०/६०/१४

452 जैमिनीयोपनिषद– गीताप्रेस गोरखपुर, २००६, मं०सं० ३/२८

453 महाकविकालिदासप्रणीत् 'रघुवंशम्' महाकाव्य– धरादत्तमिश्र मो०ब०प्र० वाराणसी २०१७, ४/८

454 सम्मेलनपत्रिका–अखि०भा०हिन्दीसाहि०सम्मलेन,प्रयाग, संस्करण २००१ए पृ०६५

बाहर नहीं है। 'लोकचिन्तन' में जनसाधारण के प्रति संवेदना की सत्ता होती है। लोकसंवेदनशील कवि की लेखनी 'आमजन', 'समाज', 'राष्ट्र', 'संस्कृति', 'धर्म' 'स्त्री' आदि को चित्रित करती है।

जिस प्रकार मानव हृदय में प्रेम, साहस, दया, घृणा, ईर्ष्या, द्वेष आदि मनोभाव उत्पन्न एवं विकसित होते हैं; उसी प्रकार 'लोकचिन्तन' भी मानव हृदय में उत्पन्न, विकसित एवं आलोड़ित होने वाली, अंतःकरण की मूल अनुभूति है। यह एक प्रकार का सामूहिक भाव, साहचर्य भावना अथवा पारस्परिक अनुभूति है।

'भारतायनम्' महाकाव्य महाकवि आचार्य हरेकृष्ण शतपथी की अन्तःचेतना का ही प्रतिफल है। समीक्ष्य महाकाव्य में महाकवि ने राष्ट्रीय, सामाजिक, सांस्कृतिकाध्यात्मिक, वैश्विक, राजनैतिकप्रकृति, नैतिक, समसामयिक एवं संस्कृतभाषामूलकचिन्तन के साथ ही पर्यावरण और महिलाओं के प्रति भी 'लोकचिंतन' जागृत करने का महनीय प्रयास किया है। 'भारतायनम्' महाकाव्य में विवेचित 'लोकचिन्तन' का संक्षिप्त दिग्दर्शन यथाशक्ति यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है।

क. राष्ट्रियचिन्तन –

एक निश्चित भूभाग पर रहने वाला जनसमूह जो समान राजनैतिक लक्ष्यों में आबद्ध हो; जिसकी भाषा, साहित्य, सभ्यता, संस्कृति, धर्म, रीति, व्यवहार, परम्परा आदि समान हो; जिनका जीवनमूल्यों के प्रति समान दृष्टिकोण हो और उस भूभाग के प्रति उसका जनसमूह समर्पण, निष्ठा एवं गर्व की भावना से युक्त हो, वह भूभाग जो स्वयं प्रकाशित हो (स्वतंत्र हो), 'राष्ट्र' कहलाता है।" यथा–

"राजते दीप्यते प्रकाशते इति राष्ट्रम् ।" [455]

'राष्ट्र' शब्द का प्रयोग देश, राज्य, मण्डल, प्रान्त, धार्मिक, सामाजिक और राजनैतिक आत्मीयता से परिपूर्ण 'जनसमुदाय' आदि अनेक अर्थों में किया जाता है। प्राचीन संस्कृत–साहित्य में समुद्रपर्यन्त भूमि तथा पशु, धन–धान्य आदि सम्पदाओं से सुशोभित भूभाग को 'राष्ट्र' कहा गया है। यथा–

"पृथिव्यै समुन्द्रपर्यन्तं एकं राष्ट्रम्, पशु–धान्य–हिरण्य–सम्पदा राजते शोभते इति राष्ट्रम् ।।"[456]

"जिस भूभाग के जनसमूह में एकता की एक सहज लहर हो, उसे राष्ट्र कहते हैं।"[457] "वह जनसमुदाय जो किसी निश्चित प्रदेश में स्थायी रूप से निवास करता हो, तथा जो एक सामान्य विधिविधान, आचारव्यवहार, रीतिरिवाज आदि द्वारा एक सुदृढ़ संगठन के रूप में सुगठित हो, जो एक व्यवस्थित सरकार द्वारा उस भूभाग की सीमाओं में निवास करने वाले समस्त मनुष्यों एवं सम्पदाओं पर पूर्ण नियंत्रण रखता हो, जो विश्व में किसी से भी संधिविग्रह करने में समर्थ हो,

---

455 यास्कप्रणीतं 'निरुक्तम् '–डॉ०उमाशंकर ऋषि चौ०प्र०वारा०,२०१२,पृ०१२८

456 राष्ट्रीयता– डॉ०आरिफ नजीर प्रभात प्र०,दिल्ली२०१०, पृ०, १

457 'भारत की राष्ट्रीय संचेतना'– डॉ०मिथिलेशवामनकार,किताबघर,दिल्ली,२००२, भू० पृ०, ३

और अन्य प्रकार के अन्तार्राष्ट्रीय सम्बन्ध स्थापित करने का अधिकारी हो, वह "भूभाग" राष्ट्र कहलाता है।"[458]

'राष्ट्रियचिन्तन' स्वराष्ट्रविशेष से सम्बम्धित भाव है। ऐतिहासिक व्यक्तियों की जीवनगाथाएँ 'राष्ट्रियचिन्तन' को बल प्रदान करने में सहायक होती हैं।"[459] किसी भी राष्ट्र के उन्नति पथ पर अग्रसर होने के लिये किया जाने वाला सामूहिक प्रयास 'राष्ट्रियचिन्तन' कहा जा सकता है।"[460] "देश–प्रेम की भावना" 'राष्ट्रियचिन्तन' का अनिवार्य तत्व है। इस भावना को उन्नत करने में साहित्य अत्यन्त महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करता है। राष्ट्र के समुदायों एवं महान पूर्वजों का साहित्यिक चित्रण हमारे प्रेरणा के स्त्रोत्र है। साहित्य 'सामुदायिक भावना' के विकास में सहायक है और 'सामुदायिक भावना' 'राष्ट्रियचिन्तन' का अभिन्न अंग है। राष्ट्रीयता की भावना मातृभूमि की स्तुति, देवताओं तथा महापुरुषों के यशोगान से प्रकट होती है। कठोपनिषद का "उत्तिष्ठत जाग्रत०"[461] वचन आज भी 'राष्ट्रियचेतना' की जाग्रति हेतु प्रासङ्गिक है।

समीक्ष्य महाकाव्य–'भारतायनम्' में महाकवि आचार्य हरेकृष्ण शतपथी ने भारतभूमि के गौरव, ऐश्वर्य एवं औदार्य के वर्णन के साथ ही भारतवर्ष की विभिन्न विशेषताओं का वर्णन करके समस्त भारतीयों के आत्मनिष्ठ राष्ट्राभिमान के उदात्त भावों को प्रदीप्त करते हुए देशवासियों राष्ट्रीय चिन्तन पर गहरा प्रभाव डालते हुए 'राष्ट्रीय चिन्तन' के उदात्त विचार व्यक्त किये हैं। यथा–

"उत्तरं यत्समुद्रस्य हिमवद्दक्षिणञ्च यत् ।
वर्षं तद्भारतं नाम भारती यत्र सन्ततिः ।।" [462]
"आसतोर्जलधेस्तटात् हिमगिरिं यावन्मुदा विस्तृतं ,
नित्यं प्राकृतिकैश्च वैभवचयैर्नानाविधैर्भूषितम् ।
ब्राह्मीपादपयोजमुग्धमधुपैर्विद्वद्भिरासेवितम्'
अस्माकं प्रियभारतं विजयतां सत्यं शिवं सुन्दरम् ।।"[463]

प्रस्तुत महाकाव्य 'राष्ट्रप्रेम' जैसी उदात्त प्रवृत्तियों के पोषण एवं उन्नयन हेतु, मोहनिद्रा में मग्न समाज को, 'राष्ट्रियचेतना' के गीतगाकर, राष्ट्र के समुत्थान के लिये प्रेरित करता है। जन्मभूमि को जननी का उदात्त स्थान देना राष्ट्रीय चिंतन का निकष है। यथा–

"असीमसौन्दर्य्यविशेषसौरभं ,
हिमालयादन्यदिगन्तवैभवम् ।
यदा नमामि प्रिय भारतं मम,
तदा स्वरूपं प्रतिभाति तेऽम्बिके ।।"[464]

---

[458] International Law- Phillimore. vol.1 pg.no. ८२१
[459] 'राष्ट्रीय उन्नति में जातीय महत्ता' गुलाबराय डायमण्ड प्र० दिल्ली २०११, पृ०१६७
[460] 'राष्ट्रीय जागरण और निराला साहित्य' –डॉ० डी०नागेश्वर राव, मिलिंद प्र.हैदराबाद भू० पृ०,१
[461] "उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधयत् ...."कठोपनिषद–डॉ० बैजनाथपाण्डे मोती०बना०वारा०,२००६, मं०सं०–१.३.१४
[462] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, भूमिका पृ० ५
[463] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, भूमिका पृ.सं.१
[464] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, १/१

जन्मभूमि को माता का उच्च स्थान देने की कल्पना अथर्ववेद के 'पृथ्वीसूक्त' की देन है। जहां पर देवर्षि स्वयं को पृथिवी का पुत्र मानते हुए पृथिवी को जननी कहते हैं।[465] अथर्ववेद के भूमिसूक्त में अंकुरित राष्ट्रियचेतना के बीजमंत्र को स्वराष्ट्रियचिंतन रुपी काव्यजल से सींचित करते हुए महाकवि समीक्ष्य महाकाव्य के प्रथमसर्ग जन्मभूमि को जननी का उदात्त एवं अत्युच्च स्थान देते हुए कहते हैंः–

"पिता मदीयः गगनोपमो महान् ,
वसुन्धरा मे जननी धुरन्धरा ।
सुरक्षितोऽहं धरणीनभोऽन्तरे ,
बिभेषि कस्मादयि ! दिव्यबालकः ! ।।"[466]

यह समस्त भारतभूमि हमारी जननी है, हम सब इसकी सन्तति इसके आँचल सुरक्षित है। यथा–

"माता हि नो जगति भारतभूमिरेषा ,
तस्या वयं हि नियतं शिशुपुत्रकल्पाः ।
स्तन्यामृतं मधुमयं समवाप्य तस्याः ,
सर्वे भवन्तु सुखिनः शिशवः तदङ्के ।।"[467]

मातृभूमि के प्रति चेतनाजागरण में राष्ट्राभिमान प्रमुख प्रेरकतत्त्व है। भारतभूमि विश्व में वन्दनीया भूमि है। मनुष्य ही नहीं देवता भी इस पवित्र भूमि पर जन्म लेने को आतुर रहते हैं। यह भूमि सज्जनों एवं विद्वानों की आश्रयस्थली एवं समस्त प्राणियों के दुःखों को हरने वाली है। समस्तविश्व में सुन्दर, निज महायशों से समुज्ज्वल, कवियों द्वारा अर्चित, ऋषियों द्वारा तपित, अनेक तपोवनों से युक्त, विभिन्न तीर्थों से पवित्र, प्राकृतिक वैभवों से युक्त, गुरुपरम्परा से परिदीप्त, सत्यता, शिवतत्व सुन्दरता आदि गुणों से युक्त यह भारतभूमि जगद्गुरु की उपादि से विभूषित है। देवताओं, दानवों एवं ऋषिमुनियों की तपस्याओं से परिमण्डित यह पवित्र भारतभूमि, समस्त पापों का नाश करने में समर्थ है। हमारी मातृभूमि समस्त विश्व को शान्ति एवं अहिंसा का सन्देश देती है। यथा–

''इदं हि सौभाग्यमहो महत्तपः
कृतं मया प्राक्तजन्मजन्मनि ।
यतोऽत्र लब्धं जननं हि पावनं
पवित्रिते भारतभूमिमण्डले ।।''[468]
"दलितमानवरक्षणतत्परां ,
कलितकोटिकलाकमलाकराम् ।

---

[465] "माता भूमिः पुत्रोहं पृथिव्याः०"–अथर्ववेद 'पृथ्वीसूक्त'–राजबहादुरपांडे,चौ०प्र०वारा०,सं०सं०१२
[466] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, १/८५
[467] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, १/१२०
[468] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ३/२३

चलितकालकरालकृपाकरां ,

नमत भारतमातरमादरात् ।।"[469]

"गुरुपराम्परया परिदीपितं ,

भुवि जगद्गुरुनामविभूषितम् ।

परिचितं शिवसुन्दरसत्यता– ,

गुणगणैर्जयतात् प्रियभारतम् ।।"[470]

"ऋषिमुनीश्वरदानवदेवता–

सुतपसां महसा परिमंडितम् ।[471]

भारतवर्ष एक पूर्ण प्रभुत्त्व सम्पन्न राष्ट्र है। प्रत्येक भारतीय पर राष्ट्र के उत्थान का व्यक्तिगत एवं सामूहिक दायित्व होता है। प्रत्येक व्यक्ति को चाहे वह जिस भी स्थिति में हो, अपने कर्त्तव्य पालन द्वारा राष्ट्र के भौतिक एवं नैतिक समुत्थान में अपना योगदान देना चाहिए। भारतमाता को गुलामी की श्रृंखलाओं से मुक्त करने हेतु राष्ट्रपितामहात्मागाँधी जी ने पवित्र सौराष्ट्रभूमि पर जन्म लेकर, सत्य एवं अहिंसा के व्रत के पालन से समस्त पृथ्वी को सुशोभित किया है। अतः आचारविचारों से पवित्रतमा, प्रशंसनीया, शुभबुद्धिदात्री यह भारतभूमि वन्दनीया है। यथा–

"अस्मिन् प्रदेशे जनको हि जाते ,

गान्धि महात्मा जननं हि लब्ध्वा ।

व्रतेन सत्येन समग्रविश्वं ,

विशोभितं तत्कृतवान्मनस्वी ।।"[472]

"तदर्थमाचारविचारपूता ,

प्रशंसिता भारतभूमिरेषा ।

इयं धरित्री शुभबुद्धिदात्री ,

नमाव एनां मुनिवृन्दमान्याम् ।।"[473]

हमारे महान ऋषिमुनि एवं सन्यासी भी राष्ट्रियचेतना के पुरोधा रहे हैं। किसी भी राष्ट्र के रीतिरिवाज, धार्मिक आस्थाएं, व्रत–उपवास, तीर्थों की धार्मिक यात्राएं आदि राष्ट्र की सत्ता को सुरक्षित रखने में महत्त्वपूर्ण योगदान देते हैं। जगद्गुरु आदिशंकराचार्य ने सम्पूर्ण भारतवर्ष का पैदल भ्रमण कर देश में चारों दिशाओं में चार मठों (धामों) की स्थापना कर राष्ट्रियचेतना का बीजान्कुर कर सम्पूर्ण राष्ट्र को एक सूत्र में बांधने का भगीरथप्रयास किया। यथा–

"एक्यं स्थापितुं शुभं कलयितुं मैत्रीं सदा रक्षितुं ,

प्रीतिं चारयितुं शिवं वितरितुं कर्तुं जगन्मंगलम् ।

---

[469] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ३/४
[470] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ३/११
[471] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ३/१२
[472] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ७/१६
[473] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ७/१७

श्रीश्रीशंकरदिव्यरूपधर ! हे नित्य परिव्राजकः !

पादाभ्यां भ्रमितं विभो ! हि भवता सम्पूर्णतः भारतम् ।।"[474]

भारत कौन है? आप और मैं भारत है। इस समय देश अत्यंत नाजुक एवं संवेदनशील क्षणों से गुजर रहा है। वर्तमान में धार्मिकसौहार्द के खंडित होने से राष्ट्र को जो हानि हो रही है, वह विचारणीय है। वर्तमान में राष्ट्रहित का मुद्दा अत्यावश्यक हैं अनेक महानविभूतियों ने समय–२ पर आध्यात्म, दर्शन एवं साहित्य के माध्यम से नवजागरण अभियान चलाया है। किन्तु अंग्रेजों ने भारतीयों को बांटने की कुचेष्टा से, जो साम्प्रदायिकतारुपी विषबेलें बोयीं थी; वे राष्ट्रियचेतना के अभाव में आज भी फल–फूल रही हैं। वर्तमान में स्वार्थी राजनेता अंग्रजों की 'फूट डालो और राज करो' नीति को पोषण करते हुए दृष्टिगत होते हैं। आज राजनीतिक स्वार्थपूर्ति हेतु राष्ट्रीयता के चिन्तन को भूलकर, व्यक्तिगत विकास को अधिक महत्व दिया जा रहा है। आज हम सभी अपनी महान सनातन परम्पराओं को त्यागकर, सुखसुविधाओं के मोह में परवश होकर पंगुवत् जीवनयापन करने को विवश हैं। यथा–

"तेजोवीर्ययुतः परात्परसुतः सच्चिन्मयो मानवः ,

दक्षोऽभून्निजकार्यसाधनविधौ दुःखं यतो वश्यता ।

विज्ञानोद्भवयन्त्रचालितकलैः क्लान्तोऽनुतप्तोऽपि सः ,

विस्मृत्य स्वपरम्परां परवशः पंगुर्हि जातोऽधुना ।।"[475]

आज हम जिस स्वतन्त्र एवं उन्मुक्त वातावरण में सांस ले पा रहें हैं, यह स्वतन्त्रता हमें दक्षिणा में नही मिली है। यह हमें राष्ट्रियचेतना से सराबोर, देशभक्तों की सहादत के परिणामस्वरुप मिली है। आज हमारे देश में किसी भी चीज की कोई कमी नही है, किन्तु राजनीति के दिग्भ्रांत पहरुए, राष्ट्र की जनता को जाति–धर्मों में बाँटकर क्षेत्रवाद, जातिवाद एवं साम्प्रदायिकता का जहर फैला रहे हैं। आज हमारा देश बाह्य एवं आन्तरिक शत्रुओं की कुत्सित मनोवृत्तियों का शिकार होकर, अपने संगठित स्वरुप को खोने की स्थिति में पहुँच गया है। भारतभूमि पर अनेक विघटनकारी तत्व अपना सिर उठा रहे हैं। उनके द्वारा साम्प्रदायिकता का विषेला जहर राष्ट्र की शिराओं में प्रवाहित कर, राष्ट्रीयता के लहू को विषाक्त करने का प्रयास किया जा रहा है। इस प्रकार की मानसिकता वाले लोग भारतमाता की सन्तति नहीं हो सकते, क्योंकि सुपुत्र कभी अपनी मातृभूमि की देह को हानि नहीं पहुँचा सकता है। आज हमारी 'भारतमातृभूमि' भीतर से नक्सलवाद, क्षेत्रवाद आदि से एवं बाह्यतः से पकिस्तान द्वारा प्रायोजित आतंकवाद से पीड़ित होकर अंग–भंग होने की आशंका से पीड़ित होकर क्रन्दन कर रही है। अगर भारती की सन्तति– हम भारतीय; भारतमातृभूमि के अश्रु भी नही पोंछ पायें; तो हमारा इस भूमि पर जन्म लेना धिक्कार है। यथा–

"पकिस्तानभयं बहिः खलु खलिस्तानप्रकम्पोऽन्तरे ,

---

[474] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ६/६

[475] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ८/२८

गुर्खास्थानधिया धिया कलुषिताः धावन्ति केचित्पुनः ।

तस्मात्क्रन्दति भारतार्त्तजननी स्वाङ्गक्षयाशङ्कया ,

सन्तानस्तु कदा समर्थयति कः स्वमातृदेहक्षयम् ।।"[476]

"का वा विश्वकथाव्यथा ! श्रुणु सखे ! माता स्वयं क्रन्दति ,

तस्या अश्रुजलं वहत्यविरतं ह्युष्णं सदा जाह्नवी ।

सन्तानाश्च तथाऽपि भारतभूवि व्यामोहतः नीरवाः ,

धिक् तज्जन्म, यतो न नेत्रसलिलं सम्प्रोच्छितुं शक्यते ।।"[477]

एतादृशी विनाशक एवं विस्फोटक स्थिति में, राष्ट्र को सही दिशा देना साहित्य का गुरुतर दायित्व एवं कर्त्तव्य है। जब खाद्यान्न के लिये प्रसिद्ध उर्वराभूमि– हमारा भारतदेश, 'कुरुक्षेत्र' जैसे युद्धों के कारण रक्तप्लावित हो जाएगा; तो मातृभूमि के मन की क्या दशा होगी? यथा–

"अस्मिन् संकटपूर्णसन्धिसमये नानासमस्याश्रये ,

काऽवस्था भविता सतां यदि जनाः दुर्भावनादूषिताः ।

खाद्योत्पादनसाधने खलु कुरुक्षेत्रं प्रसिद्धं यदि–

रक्तप्लावितमस्ति तत्कथय भोः !किं स्याज्जनन्याः मनः ।।"[478]

समीक्ष्य महाकाव्य राष्ट्रप्रेम जैसी उदात्त प्रवृत्तियों का पोषण एवं उन्नयन कर, मोहनिद्रा में मग्न भारतवासियों में राष्ट्रियचेतना का संचार करता है। भारतमातृभूमि को परतन्त्रता की बेड़ियों से मुक्त करने वाले देशबन्धु चितरञ्जनदास, महात्मागाँधि, मदनमोहनमालवीय आदि अनेक देशभक्त क्रांतिकारियों के लिये महाकवि के हृदय में अपार भक्ति एवं आदर है। यथा–

"महात्मना नेतृवरेण गान्धिना ,

स्वदेशसम्भारविनिर्मितिक्रमे ।

यया हि सिद्धिः समुपार्जिताऽत्र सा,

स्वयंकृता केवलमेव साधना ।।"[479]

किन्तु यह अत्यन्त दुर्भाग्य का विषय है कि देश आज जातिवाद, सम्प्रदायवाद, क्षेत्रवाद आदि के बढ़ते प्रभाव के कारण आन्तरिक रूप से छोटे–२ राज्यों की सीमाओं में विभाजित सा हो गया है। मानवीयमूल्यों के अभाव में मनुष्य पतनोन्मुख हो स्वार्थसिद्धि हेतु किसी भी सीमा तक गिर सकता है। राष्ट्रियचेतना का यह संकुचन राष्ट्रहित में कतई नही है। इन विषम परिस्थितियों में 'भारतायनम्' महाकाव्य राष्ट्र को एक नई चेतना प्रदान करता है। राष्ट्रीयता की भावना से औतप्रोत प्रस्तुत महाकाव्य राष्ट्रीय उन्नति का मार्ग प्रदर्शित करता है। राष्ट्र की रक्षा हेतु रणभूमि में महान शौर्य का प्रदर्शन कर आत्मबलिदान करने वाले अमर शहीदों को कभी न भूलाने का सन्देश प्रस्तुत महाकाव्य देता है।

---

[476] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ८/५६
[477] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ८/५८
[478] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ८/६१
[479] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ७/२५

ख. सांस्कृतिकचिन्तन –

'संस्कृति' में समाज की सभी रूढ़ियां, परम्पराएँ, रीतिरिवाज तथा आदर्श निहित होते हैं। "मनुष्य द्वारा, सांस्कृतिक प्रवाह में परम्पराओं का मूल्यांकन करके भावनिर्धारण करने तक की प्रक्रिया में हो रहे बदलाओं के साथ अपने सम्बन्धो को पहचानना ही 'सांस्कृतिक चिन्तन' है। यज्ञ, संस्कार, पुरुषार्थचतुष्टय, वर्णाश्रम, ऋण, तीर्थ, आदि सांकृतिकचिन्तन के विभिन्न आयाम हैं।

मनुष्य अपने समस्त जीवनकाल में अनेक ऋणों का ऋणी होता है। अन्य सभी ऋणों से मनुष्य उऋण हो सकता है किन्तु मातृऋण से मुक्ति जन्मजन्मान्तरों में भी सम्भव नहीं है। यथा–

"कदाऽपि मातुः ऋणभारगौरव–
मिहैव तत् शोधयितुं न सम्भवम् ।
तथाऽपि याचे मम जन्मजन्मनि,
विभातु भक्तिर्जननीपदाम्बुजे ।।"[480]

यज्ञ भारतीय संस्कृति का आदि प्रतीक है। सनातनसंस्कृति में कोई भी शुभकार्य करने से पूर्व यज्ञ का विधान है। राजा इन्द्रद्युम्न भी महोदधि से पवित्र 'दिव्यदारुखण्ड' को लाने से पूर्व, प्रभुविग्रहनिर्माण एवं प्रभु जगन्नाथमन्दिरनिर्माण के समय विधिविधान से यज्ञ का सम्पादन करते हैं। यथा–

"क्षेत्रे नृसिंहवसतौ परमे पवित्रे,
सम्पाद्य यज्ञमखिलं नृपतिश्च भक्त्या ।
पुण्यं महोदधितटं प्रविवेश दारु,
चानेतुमेव तदभूद्भगवत्प्रतीकम् ।।"[481]

'भारतायनतम्' महाकाव्य' में पुरुषार्थसिद्धान्त को भारतीयसंस्कृति की आत्मा बताया है। कवि ने चतुर्थसर्ग में "सर्वे भवन्तु सुखिनः" की मंगलकामना के साथ मनुष्यों को धर्मसम्मत कर्म करने का निर्देश दिया गया है। यथा–

"...धर्मेण कर्मनिखिलं परिपालयति .."[482]
"....सतां हि पूजा मनुजस्य धर्मः ।।"[483]

जीवन को सुखमय बनाने के लिये अर्थ का प्रयोजन है। धर्म और काम अर्थ के संयोग से ही सफल होते हैं। अर्थवान के लिये कोई भी वस्तु अप्राप्य नहीं है। इसलिए त्रिवर्ग में अर्थ ही सबसे ज्यादा महत्त्वपूर्ण है। इस जगत की प्रगति अर्थ पर अवलम्बित है। अर्थ मनुष्य जीवन का मुख्य लक्ष्य हो गया है। यथा–

---

[480] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, १/६
[481] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ३/३४
[482] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ४/२६
[483] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ६/५

"अर्थो हि नाम जीवनमुख्यलक्ष्यं ,

अर्थेन संचलति संसृतिधर्मचक्रम् ।"[484]

धर्म के अनुकूल होकर जिस अर्थ का उपार्जन किया जाता है वही शुद्ध अर्थ होता है। उसके सेवन से मनुष्य की मानवता बनी रहती है। यही अर्थ की प्रधानता है। समीक्ष्य मनुष्य को अपरिग्रह की भावना से त्यागपूर्वक अर्थार्जन करना चाहिए। यथा–

"त्यक्तेन तेन कुरुषे सततं हि भोगः ।।"[485]

समीक्ष्य महाकाव्य सांस्कृतिकचेतना की दृष्टि से एक ज्योतिर्मय स्तम्भ है। मनुष्य को सुसंस्कृत बनाने का विज्ञान तथा विधान भारतीयसंस्कृति ही है। अज्ञानी मनुष्य का भी परिष्कार कर देवतुल्य बना देने वाली जीवनमूरी 'भारतीयसंस्कृति' का गुणगान करते हुए प्रस्तुत महाकाव्य तीर्थों, देवालयों, आश्रमों, तीर्थयात्राओं, पारिवारिकसम्बन्धों, परम्पराओं आदि प्रतीकों के माध्यम से हमारी देवतुल्य संस्कृति की व्यष्टिसत्ता एवं समष्टिसत्ता में घनिष्ट तदातम्य स्थापित कर, व्यक्तित्वप्रकाशप्रक्रिया की स्थापना करता है। अपनी जन्मभूमि को जननी के रूप में देखते हुए "सर्वे भवन्तु सुखिनः" की उदात्त मनोकामना; भारतीय संस्कृति में ही सम्भव है। यथा–

"लोकाः सन्तु निरामयाश्च सुखिनो भद्राणि पश्यन्तु ते ,

भद्रं तत्परिकल्पयन्तु सकलं भद्राणि शृण्वन्तु ते ।।"[486]

"माता हि नो जगति भारतभूमिरेषा ,

तस्या वयं हि नियतं शिशुपुत्रकल्पाः ।

स्तन्यामृतं मधुमयं समवाप्य तस्याः ,

सर्वे भवन्तु सुखिनः शिशवः तदङ्के ।।"[487]

व्रत, उपवास, उत्सव, मेले, धार्मिक तीर्थों की यात्राएँ आदि भारतीयसंस्कृति में अपना विशेष महत्त्व रखते हैं। जगद्गुरु आदिशंकराचार्य, कामकोटि पीठाधीश 'चन्द्रशेखरेन्द्र– सरस्वती 'अष्टम' आदि द्वारा कृत धार्मिक यात्राओं ने, सांस्कृतिकचेतना में, अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निर्वहन की है। इन धर्मगुरुओं द्वारा यात्रा के दौरान सम्पादित नवरात्रपूजा, व्यासमहोत्सव, कुम्भस्नान' चातुर्मास, पिण्डदान, तीर्थस्नान, आदि सांस्कृतिक कार्यों ने हमारी संस्कृति के मूलतत्वों से जनसाधारण का परिचय कराया है। कामकोटि पीठाधीश चन्द्रशेखरेन्द्रसरस्वती 'अष्टम' ने सम्पूर्ण भारत की धर्मविजययात्रा के समय अनेक मन्दिरों में पूजा अर्चना कर भारतीय संस्कृति की महत्त्वपूर्ण विशेषता– 'मूर्तिपूजा अथवा प्रतीकवाद' का प्रदर्शन कर, सांस्कृतिक चेतना में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। यथा–

"मार्गस्य मध्ये च कदा गणेशं ,

कदा जगत्याः जननीं कदाचित् ।

---

[484] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ४/२७
[485] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ४/२५
[486] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ८/७१
[487] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, १/१२०

हरिं हरं वा परमेश्वरं तं

पीठाधिदेवं परिपूज्य यातः ।।"[488]

हमारी देवतुल्य संस्कृति अनगढ़ता को मिटने वाला रसायन है। 'सत्यं–शिवं–सुन्दरम्' ये तीनो शाश्वत् मूल्य भारतीय संस्कृति से निकट से जुड़े हुए हैं। हमारी संस्कृति, संसार के मार्गदर्शन हेतु एकमात्र सूर्य है। यथा–

"हे संसारसमस्तसुप्तजनतोत्थानैकसूर्यप्रभ ! ,

सर्वत्र प्रसभं सदा प्रसरतु त्वद्दिव्यशक्तिप्रभा ।

अस्माकं प्रियभारतं विजयतां सत्यं शिवं सुन्दरं ,

लोकास्सन्तु निरामयाश्च सुखिनः दारिद्रयविध्वंशात् ।।"[489]

भारतीय संस्कृति कर्म में अटूट विश्वास करती है। "कर्म करना ही मनुष्य का अधिकार है।"[490] समीक्ष्य महाकाव्य 'भारतायनम्' 'निष्काम कर्म' का महान सन्देश देकर भारतीय संस्कृति की समुन्नत ध्वजा को उत्तरोत्तर समुन्नत करने में अपना अतिमहत्त्वपूर्ण योगदान देता है। यथा–

"कर्त्तव्यं करणीयमेव नियमैराराध्यतां शृंखला।।"[491]

अपने शिशु के लालनपालन में जननी द्वारा कृत निष्काम कर्म, राजा इन्द्रद्युम्न द्वारा धार्मिक आस्था के परिपोषण हेतु कृत निष्काम कर्म, जगद्गुरु आदिशंकराचार्य द्वारा धार्मिक आस्था के केन्द्रों–'पञ्चमठों' की स्थापना एवं कामकोटि पीठाधीश–'चन्द्रशेखरेन्द्रसरस्वती 'अष्टम' द्वारा सनातन धर्म तथा सांस्कृतिक चेतना के प्रसारार्थ कृत निष्कामकर्म आदि हमारी सांस्कृतिक धरोहर एवं सांस्कृतिक चेतना के समुज्ज्वलस्तम्भ है। यथा–

''धर्मप्रचाराय विकाशनाय

वेदस्य वा भारतसंस्कृतेश्च।

आचार्यपादेन सदादरेण

देशस्य सर्वत्र कृताः व्यवस्थाः।।''[492]

भारतीय संस्कृति अवतारवाद में अकाट्य विश्वास करती है। समीक्ष्य महाकाव्य में भगवान विष्णु विष्णु के श्रीकृष्ण, श्रीजगन्नाथ, श्रीवराह, श्रीनृसिंह मर्यादापुरुषोत्तम श्रीराम, प्रभु वेंकटेश्वरस्वामी आदि अवतारों का वर्णन महाकवि ने किया है जो हमें हमारी महान संस्कृति पर गर्व करने का अवसर प्रदान करता है। यथा–

"हिरण्यपूर्वं कशिपुं निहन्तुं ,

सत्ये धृते येन नृसिंहरूपम् ।

---

488 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ६/४५

489 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, १०/४७

490 "कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते संगोऽस्त्वकर्मणि॥" –'भगवद्गीता', गीताप्रेस गोरखपुर, २००५, २/४७

491 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, १०/४८

492 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ६/१०५

त्रेतायुगे रावणमेव हन्तुं,

रामस्वरूपं धृतवन्तमेकम् ।।"[493]

ग. पुराणैतिहासिकचिन्तन–

भारतायनम् महाकाव्य में भारतभूमिमहिमा, प्रभुसोमनाथ, प्रभुविश्वनाथ, प्रभुवेंकटेश्वर, प्रभुश्रीराम, महोदधि, सागर आदि के महिमावर्णन में; राजा इन्द्रद्युम्न कथा, भक्तप्रहलाद, बालकध्रुव, जगदम्बा–पार्वतितपस्या आदि प्रसंगों में कूर्मपुराण श्रीमद्भागवत्पुराण, ब्रह्मपुराण, वायुपुराण, ब्रह्मपुराण, स्कन्धपुराण, विष्णुपुराणादि में विवेचित चिन्तन उपस्थित हुआ है। जम्बूद्वीप–'भारतवर्षमहिमा, जननी एवं जननिस्वरूपा– वीरधनुर्धर–अर्जुन, दानवीरकर्ण, आदिशंकराचार्य, शंकराचार्यचन्द्रशेखरेन्द्रसरस्वती, राष्ट्रपिता–महात्मागाँधी, महामना–मदनमोहनमालवीय, आदि के वर्णनप्रसंग में पुराणैतिहासिकचिन्तन उपस्थित हुआ है।

समीक्ष्य महाकाव्य के तृतीय से षष्ठसर्ग पर्यन्त भक्तशिरोमणिराजा इन्द्रद्युम्नकथा, नीलमाधव–श्रीजगन्नाथ एवं श्रीक्षेत्र, नीलांचलभूमि–श्रीजगन्नाथतीर्थमहिमा, श्रीजगन्नाथादि के विग्रहनिर्माण, रथयात्रा, मन्दिरनिर्माणप्रसंग एवं महोदधिमहिमावर्णन आदि प्रसंगों पर ब्रह्मपुराण, स्कन्दपुराण के वैष्णवखण्ड का चिन्तन उपस्थित हुआ है। यथा–

''स इन्द्रदयुम्नः बहुभाग्यभाजनम् ,
नृपेष्वनन्योऽतुलभक्तिचेतनः ।
मुखाद्बुधानां भुविनीलमाधव–
प्रभोः हि शृण्वन् महिमानमेकदा ।।"[494]

''राजेन्द्रद्युम्नः जलधेः सकाशाद्–
आनीय तच्छाश्वतदारुखण्डम् ।
संस्थाप्य सम्पूतनृसिंहपुर्यां,
सम्पादयामास च यज्ञकार्यम् ।।"[495]

''ततश्च समानीय स दारुविग्रहान्
रथेन रम्येण च गुण्डिचालयात्।
श्रीमन्दिरे स्थापिवान् नरेश्वरः
प्रिये स मार्गः प्रथितः विलोक्यताम्।।''[496]

"समस्ततीर्थेषु तदेव साम्प्रतं ,
प्रसिद्धमास्ते हि तत्र राजते ।
अनन्तसंसारभयार्तिहारकः ,

---

[493] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ६/१६–१७
[494] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ३/२७
[495] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ६/३
[496] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ६/२६

स्वयं जगन्नाथमहाप्रभुमहान् ।।"[497]

"यतो गजो नक्रधृतस्ततः प्रभुं ,
गतिं पतिं न विपत्सु रक्षकम् ।
भवाब्धिमधे पतिताश्च दुःखिता ,
कथं न कुर्मस्तव नाम्कीर्त्तनम् ।।"[498]

''विश्वविख्यतमभूत् स्वसौरभवशात् रम्यस्थलं भारतं
जम्बूद्वीपमिदमञ्च चित्रमपि.....।।''[499]

इसी प्रकार समुद्रमंथन, शिवमहिमा, रामेश्वरमहिमा, गंगामहिमा, काशीमहिमा आदि वर्णनों में बद्रीनाथ, गया, सोमनाथ, उडुपी, मदुरै, गौकात्कीर्थ, तिरुपति, रामेश्वर, द्वारिका, काशी, मथुरा, कांची आदि तीर्थों की महिमा; गंगा, सरस्वती आदि नदियों के माहात्म्य, विष्णु के विभिन्न अवतारों कूर्मपुराण श्रीमद्भागवत्पुराण, ब्रह्मपुराण, मत्स्यपुराण, विष्णुपुराण, स्कन्धपुराण आदि का चिन्तन द्रष्टव्य है। यथा–

"अस्मिन् पवित्रभारतपुण्यखण्डे,
वृन्दावनेन मधुरे मथुराप्रदेशे ।
लेभे यदा जनिमहो जननीसुगर्भात् ,
.....।।"[500]

"तीर्थेषु धन्या नितरा सुपुण्या ,
करालवन्याकुलकालकन्या ।
सा द्वारिका मन्दिरमालमान्या ,
विराजते विश्वविभाग्रगण्या ।।"[501]

"द्वारावतीसुन्दरमन्दिरे यः ,
क्रोड़े जनन्याः स्थितवान् ददाति ।
वात्सल्यवार्तां भुवने स एव ,
श्रीवद्रिनाथोऽत्र विराजमानः ।।"[502]

"बहुपुरातनकालत आगता ,
निवसतीह शिवेन सरस्वती ।
तदनु पण्डितमण्डलमण्डना,
भवती शम्भुपुरी विदुषां प्रिया ।।"[503]

---

[497] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ३/१८
[498] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ५/५६
[499] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ८/४५
[500] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, २/३४
[501] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ७/८
[502] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ७/२१
[503] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ८/१६

"**एकाम्रनाथो भगवान् महेश्वरः,**

विराजते यत्र स मोक्षकारणः ।

पुराणशास्त्रेषु सुवर्णिता पुरी ,

विभाति काञ्चीनगरी गरीयसी ।।"[504]

"**लंकाप्रयाणसमये सह बन्धुवृन्दैः ,**

यत्र स्वयं हि कृतवान् प्रभुरामचंद्रः ।

श्रद्धास्पदेन मनसा पितृतर्पणं तत् ,

रामेश्वरं भवति तत्परिपूर्णतीर्थम् ।।"[505]

"**यत्र प्राचीनकालादृषि–मुनिदृकविभिश्चर्च्चिता नित्यसिक्ता ,**

गङ्गायाः पुण्यतोया प्रवहति बहुधा संस्कृताध्यायधारा ।

वाङ्गार्लोसिद्धगङ्गोड्डुपिप्रभृतिमहातीर्थदेशाः प्रमाणं ,

सोऽयं श्रीभूतिभव्योऽत्र भुवि विजयतां स्वर्णकर्णाटदेशः ।।"[506]

'इतिहास' शब्द का शाब्दिक अर्थ होता है– "यह निश्चय ही था; परम्परा से प्राप्त उपाख्यान(लोक–कथाएं), वीरगाथा, आदि।"[507] वेद, पुराण, स्मृतियाँ आदि भारत की ऐतिहासिक संपत्तियाँ हैं। समीक्ष्य महाकाव्य में जगदम्बा–'पार्वती' तथा वीरधनुर्धर–'अर्जुन', राजा इन्द्रद्युम्न, श्रीकृष्ण भगवान् के कारागृह में जन्म, भक्तप्रहलाद, गजेन्द्रमोक्ष, आदि पौराणिक कथाओं का वर्णन किया है। यथा–

"**शिवेन या मंगलकारिणा युता,**

सुता हिमाद्रेः गुणराजिराजिता ।

हिताय विश्वस्य तपस्समाचरद् ,

विभाति सा मे जननी न पार्वती ।।"[508]

"**बहूनि वर्षाणि नगेन्द्रकन्दरे,**

शरीरकष्टं न निभालयन ।

तपश्च कृच्छ्रं स चचार दुष्करं ,

प्रसिद्दपार्थश्चधनुर्भृतां वरः ।।"[509]

"**सम्प्रेक्ष्य विस्मृतमना वसुदेव आसीत् ,**

सा देवकी चकितचेतसि तं वहन्ती ।

जातावुभावपि भियाऽपि विमूर्च्छितौ ता– ,

वेवं पुराणपटलेऽस्ति शिशोः प्रभावः ।।"[510]

---

[504] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ६/१३

[505] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, १०/१

[506] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, १०/१०

[507] 'संस्कृत हिंदी कोश'–वामनशिवराम आप्टे चौ०प्र० वाराणसी पृ० १७४

[508] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, १/७६

[509] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, १/६८

समीक्ष्य महाकाव्य में महाकवि ने महात्मागाँधी, आदिशंकराचार्य, स्वामी चन्द्रशेखरेन्द्र– सरस्वती, चालुक्यनरेश–सौमेश्वर आदि धीर–वीर–चरित्रों का वर्णन किया है। यथा–

"विश्वेऽस्मिँश्च महान् स जातिजनकः गान्धी महात्मा पुनः,
मातुः शृंखलाभेदनाय भुवने यस्मिन् जनुर्लब्धवान् ।।"[511]
"वेदान्तस्य तदेव तत्वमखिलं श्रीशंकरः शंकरः ,
विश्वेऽस्मिन् नितरां जगद्गुरुरिति ख्यातोऽभवद्भास्वरः ।।"[512]
"स्वाधीनता भारतवासिनां सा ,
वैदेशिकैर्ऽयापहृता पुराऽऽसीत् ।
सम्प्राप्स्यते केन पथा तदर्थं ,
विधाय चिन्तामचलन्मनीषी ।।"[513]
"राजा सौमेश्वरोऽसौ समजनि गुणवानत्र चालूक्यवंशे ,
शास्त्रं तज्ज्ञानकोषं सपदि रचितवान् मानसोल्लासनाम ।
राजत्वं तत्प्रसिद्धैः प्रचलतु नियमैः सन्तु सर्वे मनुष्याः ,
नीत्या विद्यावदाताः निरवधिसुखिनः स्वर्णकार्णाटकीयाः ।।"[514]

इस प्रकार समीक्ष्य महाकाव्य में भारतभूमिमहात्म्य, विभिन्नतीर्थों के महात्म्य आदि विभिन्न प्रसंगों में पुराणैतिहासिकचिन्तन दृष्टिगत होता है।

घ. सामाजिकचिंतन –

समाज का साहित्य से घनिष्ट होता सम्बन्ध है, वस्तुतः साहित्य को तत्कालीन समाज का दर्पण कहा जाता है। साहित्य में प्रतिबिम्बित जीवन समस्त समाज का जीवन होता है। समाज में जो कुछ घटित होता है उसका साहित्य पर प्रभाव अवश्य पड़ता है। आचार्य हरेकृष्ण शतपथी विरचित समीक्ष्य महाकाव्य 'भारतायनम्' में परिवारव्यवस्था, शोषण के विरुद्ध संघर्ष, दलितों की पीड़ा, अमीरों के प्रति धृणा, अभिजातवर्ग के शोषणमूलक कर्मों की निन्दा, धार्मिकाडम्बरों की निन्दा, धार्मिकसौहार्द का निर्माण आदि सामाजिक संवेदनापरक तत्वों का साकार चित्रण के साथ–२ पाश्चात्य अंधानुकरण के कारण विखण्डित होती पारिवारिक व्यवस्था को भी रेखांकित किया है। समीक्ष्य महाकाव्य के प्रथमसर्ग में महाकवि ने जननी के उदात्त स्वरूप वर्णन किया है। यथा–

---

[510] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, २/३४
[511] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ७/१
[512] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ६/५
[513] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ६/४६
[514] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, १०/१७

भारतीय पारिवारव्यवस्था में माता का स्थान पृथ्वी से भी महान है; और पिता का स्थान गगन से भी उच्च है। जननी आत्मसुख एवं समस्त वैभवों को छोड़कर सदैव अपनी सन्तति के लिए तप करती है। यथा–

''तया हि दृष्टा भुवि जन्मवेदिका
तया श्रुतस्तस्तत्र च रोदनध्वनिः।
तयानुभूतं प्रथमं शिशोः स्मितं
तया हि रूपं जगतोऽपि कल्पितम्।।''[515]

"समस्तवस्तूनि समस्तबान्धवान् ,
समस्तसौन्दर्यमनन्तवैभवम् ।
विहाय मातस्तवसन्ततेः कृते ,
कृतं तपः केवलमेव जीवने ।।"[516]

''पिता मदीयः गगनोपमो महान् ,
वसुन्धरा में जननी धुरन्धरा ।
सुरक्षितोऽहं धरणीनभोऽन्तरे ,
बिभेषि कस्मादयि ! दिव्यबालकः ! ।।"[517]

सामाजिक रूप से पारिवारिक व्यवस्था में विश्वास करने वाले व्यक्ति की दुःख–जनित पीड़ा परिवारजनों के समक्ष अपना दुःख व्यक्त करने पर कम हो जाती है। दुःख एवं संकट के समय परिवारजनों का स्नेह, सहयोग एवं उनकी स्नेहमयी वाणी दुःखों एवं कष्टों को उसी प्रकार दूर कर देती हैं जिस प्रकार कमल की मनोहारी सुगन्ध कीचड़ की दुर्गन्ध को दूर कर देती है। यथा–

"वन्धोर्वचः सुमधुरं सुधयाविधौतं,
सञ्जीवनं भवति नोऽनलदग्धकानाम् ।
तस्यास्यपङ्कजपवित्रसुवासराशि,
दुर्गन्धदेहमलराजिमपाकरोति ? ।।"[518]

वर्तमान समय की पतनोन्नमुखी परिवारव्यवस्था पर प्रहार करते हुए महाकवि ने विघटित परिवारों में वृद्धजनों की दयनीय स्थिति को रेखांकित किया है। अपने पुत्र–पौत्ररत्नों से अत्यधिक स्नेह करने वाले पितामह–पितामही विभिन्न विषयों से कलुषित आज की पीढ़ी को फूटी आँख नहीं सुहाते है। यथा–

"हा हन्त सम्प्रति विशीर्णतनुः स वृद्धः,
वृद्धाऽथवा नयनयोः विषमातनोति ।

---

[515] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, १/१६
[516] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, १/४३
[517] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, १/८५
[518] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ५/४०

दृष्टिं न नन्दयति चात्मपितामहोऽपि,

दृष्टिर्यतः कलुषिताः विभिन्नैर्विषयैः ।।"[519]

'भारतायनम्' महाकाव्य तन, मन और धन से समाजसेवा करने की प्रेरणा देता है। महान लोग समाज के हित के लिए कठोर साधनाएँ करते हैं। जगद्गुरु आदि–शंकराचार्य, कामकोटिपीठाधीश–'चन्द्रशेखरेन्द्रसरस्वती'अष्टम' आदि द्वारा की गयी यात्राओं ने सम्पूर्ण भारतवर्ष में सामाजिकचेतना के प्रसार में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया है। प्रभु बद्रीनाथ समाज के कल्याणार्थ आज भी हिमालय पर तपस्या एवं साधना करते हुए विश्व को प्रेम और शान्ति का सन्देश देते हैं। यथा–

''हिमालयस्योपरि राजमानः

तपश्चरन लोकहिताय नित्यम्।

शान्ताकृतिर्वै कमनीयमूर्तिः

श्रीवद्रिनाथो जयति प्रकामम्।।''[520]

"आचार्यपादो विजयस्य यात्रां,

समाप्य तां लोकहिताय दिष्टाम् ।

काँचीपुरे स्वीयमठं प्रविश्य

समाजसेवामकरोत् स्वलक्ष्यम् ।।"[521]

'दरिद्रता' मनुष्यजीवन का अभिशाप है। बड़े दुःख का विषय है कि आज मनुष्य धर्मपूर्वक अर्थार्जन न करके, लोभ के वसीभूत हो, अर्थदास बन गया है। लोगों की अर्थलोलुपता देख सहृदयों का हृदय विदीर्ण हो जाता है। आज अर्थलोभी दानवरूप धारण कर दीनहीनों का शोषण करते हैं। जब अर्थोपार्जन की प्रणाली स्वार्थयुक्त हो जाती है; तब सामाजिक समता की मर्यादाएं छिन्न–भिन्न होने लगती है तथा शोषण, अराजकता एवं अव्यवस्था का दौर चल पड़ता है। यथा–

"विश्वे वित्तमदैः कदा क्षमतया लोभेन भोगेन वा ,

केचिद् दानावारूपिणः परिणितिं विस्मृत्य वा दूर्गातिम् ।

नित्यं दीनजनान् निरन्नविकलान् विश्वेश्वतः संभावान् ,

सानन्दं खलु शोषयन्ति भगवन् ! क्वास्ते त्वदीया दया ।।"[522]

आज अर्थलोलुपता के कारण खाद्यान्न, वायु, पेयजल, शाकादि समस्त पदार्थ दूषित, पर्युषित एवं गुणहीन हो गये हैं। धन के लालची लोग अपनी ताकत के बल पर, दानव का रूप धारण कर, दीन–हीनों का शोषण कर रहे हैं। उद्योगों में अत्यधिक परिश्रम एवं धन के निवेश के उपरान्त उत्पादित होने वाली विलासतापूर्ण वस्तुओं से दरिद्र जनता का कोई सरोकार नही होता

---

[519] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, २/४२
[520] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ७/२०
[521] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ६/१०२
[522] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ८/५६

है। वस्तुतः दरिद्रों का शोषण एवं धनार्जन ही आधुनिक उद्यमियों का मुख्य उद्देश्य बन गया है। यथा–

"शिल्पेभ्यो ह्युपलभ्यन्ते बहुपरिश्रान्त्या च वित्तव्ययात् ,
सत्यं तद् व्यवहार्यवस्तुसकलं साक्षाद्विलासप्रियम् ।
तत्किं क्रेतुमहो दरिद्रजनताद्वारा सदा शक्यते ?
दीनानां श्रमशोषणाय धनिनां लाभाय च शिल्पमत ।।"[523]

ङ. धार्मिकचिंतन –

'धर्म' मानव की उन्नति का साधन है। मानव, धर्म से उन्नति एवं अधर्म से अधोगति को प्राप्त करता है। भारतायनम्' महाकाव्य में धार्मिकचेतना के अनेक तत्व दृष्टिगोचर होते हैं। श्रीजगन्नाथ, गंगा, विश्वनाथ, वेंकटेशवंदना, महोदधि, द्वारिका, बद्रिनाथ, काशी आदि तीर्थस्थलों के महात्म्यवर्णन, पार्थना, पूजापाठ, अनुष्ठान आदि धर्म के महत्वपूर्ण अंगों का समीक्ष्य महाकाव्य में विवेचन किया गया है। यथा –

"रहस्यमूर्त्तिर्भुवि दारुविग्रहः,
मनुष्यकल्याणविधानतत्परः ।
स एव विश्वोद्गतधर्मदर्शन–
समन्वयः श्रीपुरुषोत्तमो महान् ।।"[524]

भारतायानम् महाकाव्य "सर्वे भवन्तु सुखिनः" की मङ्गलकामना के साथ मनुष्यों को धर्सम्मत कर्म करने का निर्देश देता है। यथा–

''धर्मप्रियाः सुमनसः मनसाऽर्पितेन
त्वत्पादपद्मयुगलं परमर्चयन्तः ।
धर्मेण कर्मनिखिलं परिपालयति
हे धर्मसंयमनिधे! तव सुप्रभातम्।।"[525]

धर्मदर्शन के समन्वय से युक्त 'हमारे तीर्थस्थल' मोक्ष के द्वार है। हमारी उदात्त भारतीय संस्कृति हमें सिखाती है कि 'मातृभूमि एवं सज्जनों की सेवा करना हमारा धर्म है। यथा–

"तेषां बुधानां महती हि सेवा ,
कृता च राज्ञा महतादरेण ।
दानं प्रदत्तञ्च मनोऽनुरूपं ,
सतां हि पूजा मनुजस्य धर्मः ।।"[526]

---

[523] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ८/२७
[524] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ३/१८
[525] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ४/२६
[526] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ६/५

हमारे देश में अनेक महापुरुषों ने अपना समस्तजीवन मानवमङ्गल के लिए, धर्मस्थापना एवं धर्मप्रचार हेतु समर्पित कर दिया। जगद्गुरु आदि–शंकर, के उपरान्त कामकोठीपीठ– कांचीपुरम के ६८वें शंकराचार्य चंद्रशेखरेन्द्रसरस्वती "अष्टम" उनमे से एक है जिन्होंने सम्पूर्ण भारतभूमि की पैदल यात्रायें कर सनातनधर्म की पुनर्स्थापना में अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित कर दिया। यथा–

"वेदे तथा वैदिकधर्मतत्त्वे ,
सचेतनाः सन्तु समस्त लोकाः ।
इत्येव मत्वा शिवरात्रिकाले ,
जयस्य यात्रां कृतवन्त एते ।।"[527]

किन्तु मनुष्य द्वारा धारणीय स्वाभाव–'धर्म' की वर्तमान कलियुग में व्याख्या ही बदल गयी है। कलयुगी मनुष्य स्वार्थ के वशीभूत होकर धर्म से हीन हो गया है। यथा–

''सर्वे स्वार्थपरा कलौ पुनरहो धर्मेण हीनाः जनाः।।"[528]

आज आस्था के नाम पर स्वार्थपूर्ति एवं बाह्याडम्बरों को धर्म की संज्ञा देने वाली मनोवृत्ति की महाकवि ने निंदा की है। यथा–

"गंगा नाम पवित्रमस्ति नितरामुच्चार्य्यते केवलं ,
लोकानां शवमेव सम्प्रति हरिश्चन्द्रादिघाटोच्चये ।
मात्रं ह्यधर्मितं विदाह्य च पुनःनिक्षिप्य तत्तज्जले ,
नित्यं मोहवशादुपार्जनपराः स्वार्थे नियुक्ताः डमाः ।।"[529]

धर्म मनुष्य के सामाजिक आचरण को सकारात्मक रूप देता है। लोकमङ्गल की भावना से परिपूर्ण वैदिकधर्म के प्रति सभी को सचेतन रहने का आह्वान् समीक्ष्य महाकाव्य करता है। मनुष्य जिस भूमि पर जन्म लेता है; उसकी सेवा करना, उसके सर्वांगीण विकास में अपना अवदान देना एवं आवश्यकता पड़ने पर मातृभूमि की प्राणार्पण से भी रक्षा करना सच्चे राष्ट्रभक्त का धर्म है। सह्रदयजनों की धर्म में ही संस्थिति रहती है। यथा–

"धर्मे संस्थिताः सह्रदयजनाः भवन्ति।।"[530]

च. दार्शनिकचिन्तन –

जीवन के प्रति मनुष्य का दृष्टिकोण ही दर्शन है।देखना, विचारना, श्रद्धा करना आदि'दर्शन' शब्द का व्युत्पत्तिजन्य अर्थ है।[531] आदिकाल से ही मानव ने अपने जीवन में दर्शन को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया है। परमसत्ता के साक्षात्कार का अपरनाम ही 'दर्शन' है। 'भारतायनम्' महाकाव्य में

---

[527] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ६/४१
[528] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ८/६४
[529] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ८/४८
[530] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ६/५६
[531] मध्वाचार्यकृत 'सर्वदर्शनसंग्रह'–प्रो०उमाशंकर ऋषि चौ०प्र० वाराणसी२०१४, भू०पृ०२६

वेदान्त, सांख्य, न्याय, योगादि दर्शनों की दृष्टि से विवेचित दार्शनिकचिंतन यथार्थजीवन की खोज का पर्याय है। समीक्ष्य महाकाव्य में समागत दार्शनिकचिंतन का विवेचन इस प्रकार हैः–

सांख्यदर्शन में विवेचित **'सृष्टिनिर्माणप्रक्रिया'** में **'प्रकृति' 'पुरुष'** चिंतन–

"उदासभावान्वितचेतानाहतः
स साक्षिभूतः पुरुषो हि निश्चलः ।
यया स्वशक्त्या क्रियतेऽत्र शक्तिमान्
सुपूजिता सा जननी गरीयसी।।"[532]

आत्मतत्वचिंतन–

"अजो यतः जन्मनि दिव्यपुरुषः ,
जनानुरागो जनानीषु केवलम् ।
ततो हि जन्मान्तरदुःखहरिणी,
कदाऽपि माता भविता न विस्मृता ।।"[533]

पञ्चमहाभूतचिंतन –

"तेजोव्योममरुत्पययः क्षितिचयैः नृणां तनुः सृज्यते।।"[534]

आदिशंकराचार्य, मध्वाचार्य, एवं रामानुजाचार्यप्रसंग में वेदान्तदर्शन में विवेचित **ब्रह्मा, आत्मा, स्रष्टा, सृष्टि** आदि का विवेचन –

"यस्मिन् भारतदर्शनस्फुरिततत्सिद्धान्तरत्नोच्चयै–
र्ज्ञानलोकमहाशिखासुरभितो दीपश्च प्रज्ज्वालितः ।
मध्वाचार्यजनुर्विभूषिततनुः रामानुजः शङ्करः ,
.....।।"[535]

"तत्त्वं द्वैतविचारदर्शनपथेनाविष्कृतं पावनं ,
जीवब्रह्मामहत्त्वसाम्यकलनं स्रष्टा च स्रष्टिस्तथा ।
भूमौ यत्र विभाति भौमभगवन्मध्वादिभिः स्थापितं ,
तत्स्थानंमहीमण्डनं विजयतां स स्वर्णकर्णाटकः ।।"[536]

"सत्यं ब्रह्म सनातनं जगदिदं मिथ्याप्रसूतं श्रुतं,
मायामोहमदैः सदैव भरितं जानीहि तन्नश्वरं ।
तस्मान्मन्दमते ! विहाय निखिलं द्वंदं ततः शाश्वतं ,
गोविन्दं भज नन्दवृन्दमधुरं सत्यं शिवं सुन्दरम् ।।"[537]

न्यायदर्शनप्रमाणचिन्तन–

---

[532] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, १/१४
[533] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, १/१५
[534] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ८/७३
[535] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, १०/१२
[536] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, १०/१५
[537] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ६/४

''यथा प्रधूमोऽनलदीपनात्ततः
समावृणोत्येव जगाज्जनान् तथा।
शुकाग्नितः प्राग् हि मदीयचेतसं
चकार तन्मोहचयो निजालयम् ।।''[538]

गीतादर्शन में विवेचित दुःख, दुःख का कारण, शरीर की नश्वरता, आत्मा की अमरता, जगत् की निस्सारता विषयक दार्शनिक चिन्तन समीक्ष्य महाकाव्य में दृष्टिगत होता है। यथा–

पुनर्जन्मचिन्तन–

''गते वसन्ते भविता पिकः पिकः
पुनश्च शुष्के सलिले सरः सरः ।
गतेऽपि तैले नितरां दशा दशा
जरावतीर्णे च पुनर्जनो जनः ।।''[539]

जीवन की क्षणभंगुरता–

''ततो यथा पुष्करपत्रसम्पुटे जलं तथा जीवनस्तु निर्जनम् ।।''[540]

कामाग्निचिन्तन–

''जनस्य काम्यं जगदग्निदाहिनः।।''[541]

जिसका जन्म हुआ है उसकी मृत्यु निश्चित है–

''जनस्य मृत्युर्भविता ध्रुवो भवे
यतोऽस्ति जन्मस्फुटमेतदञ्जसा ।
अतो न दुःखं कुरु वाऽश्रुविमोचनं
यदेव बीजं ह्यशुभस्यसन्ततम् ।।''[542]

मोहानुरागबन्ध ही दुःख का कारण–

''दुश्छेद्य एव नितरामनुरागबन्धः दुःखस्य कारणमहोऽस्ति तदेव....''[543]

मनुष्य अपने पूर्वजन्म के संस्कारों एवं कर्मों के अनुसार पुनर्जन्मचक्र में फँसकर अनेक योनियों में भटकता रहता है। सांसारिकबंधनों से मुक्ति, परमधामगति–'मोक्षप्राप्ति' के उपरान्त पुरुष को माया के प्रभाव में मुक्त हो जाता है। यथा–

"तस्मात्कथं भवजनैः सह तिष्ठसि त्वं ,
बध्नाति वा तव तनुं कथमद्य माया ।
तोयं यथा कमलपत्रतले तथैव ,
वासं विधाय जगति स्वगृहं गताऽसि ।।"[544]

---

538 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ५/१४
539 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ५/२७
540 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ५/२६
541 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ५/३१
542 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ५/३३
543 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ५/३८

"त्वमेव जाया जननी त्वम्बिके !,
त्वमेव कन्या भगिनी महस्विनी ।
त्वमेव माया जगदभ्रविभ्रमा ,
त्वमेव काया भुवि पुष्पधन्वनः ।।"[545]

चार्वाकदर्शन–

"न काऽपि कान्ता भवतोऽस्ति भूतले ,
न कोऽपि बन्धुर्न तु वा सुतोऽपि ।
न कः सहायो जगदद्भुतं परं ,
सदा जनो यत्र समेति यंत्रणाम् ।।"[546]
"अहो जगद्दृश्यमतीवविचित्रकं ,
सुखस्य हेतुः परिवर्तनप्रियम् ।
ते एव मन्ये नितरां प्रमोदिताः ,
वनालया वृक्षफलाशिनो जनाः ।।"[547]
"कलेवरं रक्तपलादिनिर्मितां ,
वभाति यावत् रुचिरं मनोहरम् ।
भवन्ति तावत्सुहृदः समे भवे ,
वयोगते पृच्छति को जरातुरे ।।"[548]

छ. राजनैतिक चिन्तन –

समीक्ष्य महाकाव्य में विवेचित राजनैतिकचिन्तन वर्तमान पीढ़ी स्थापित है। रामराज्य की प्राप्ति विश्व के सभी लोकतन्त्रों का अंतिम लक्ष्य है। समीक्ष्य महाकाव्य में राजा इन्द्रदयुम्न, महात्मागाँधी, आदिशंकराचार्य, चन्द्रशेखरेन्द्रसरस्वती, द्वारकाधीश– श्रीकृष्ण, प्रभुविश्वनाथ, प्रभुजगन्नाथ, प्रभुवेंकटेश, आदि के महात्म्य एवं कार्यों के वर्णन द्वारा सुशासन, स्वतंत्रता, समानता, न्याय, बंधुत्व, प्रजाहित, लोकतान्त्रिकमूल्य आदि अनेक राजनैतिकचिन्तनों का विवेचनकिया गया है। यथा–

''यया हि सिद्धिः समुपार्जिताऽत्र सा ,
स्वयंकृता केवलमेव साधना ।।"[549]
"योगेश्वरः श्रीवासुदेवपुत्रः ,

---

[544] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ५/४५
[545] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, १/५८
[546] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ५/२५
[547] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ५/२३
[548] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ५/२६
[549] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ७/२५

वृंदावनादेत्य चकार यत्र ।
राज्यं हि सा मानवमङ्गलार्थं ,
द्वारावती राजति दिव्यदिप्तिः ।।"[550]
"कंस परं भोजकुलावतंसं ,
संसारपीड़ाप्रदमेव हत्वा ।
स्वबन्धुवृन्दैर्मथुरां विहाय ,
समागतोऽत्र प्रभुकृष्णचन्द्रः ।।"[551]
"मनः प्रजानामिह रञ्जयित्वा ,
स्वयं प्रजानां स्थितिकर्मकेतुः ।
श्रीद्वारिकाधीशशरीरधारी ,
विराजते साम्प्रतमत्र पश्य ।।"[552]
"अस्मिन् प्रदेशे जनको हि जाते–
र्गान्धि महात्मा जननं हि लब्ध्वा ।
व्रतेन सत्येन समग्रविश्वं ,
विशोभितं तत्कृत्वान्मनस्वी ।।"[553]
"महात्मना नेतृवरेण गान्धिना ,
स्वदेशसम्भारविनिर्मितक्रमे ।
"विश्वेऽमिँश्च महान् स जातिजनकः गान्धी महात्मा पुनः ,
मातुः शृंङ्खलभेदनाय भुवने यस्मिन् जनुर्लब्धवान् ।।"[554]

राजा इन्द्रद्युम्न प्रसंग में दृष्टांत दिया गया है कि जब शासक को अपनी पदवी पर अभिमान हो जाता है, तब उसके समस्त कार्य निष्फल ही होते हैं। यथा–

"स इन्द्रद्युम्नः बहुभाग्यभाजनः
नृपेष्वनन्योऽतुल्यभक्तिचेतनः ।।"[555]
"राजा स्वकीयपदवीस्मरणाप्तगर्वः
गर्व प्रणाशनमहाप्रभुपुण्यदेशे ।
श्रीनीलमाधवतनुरम्यदर्शनेच्छु–
रासीद्यदा तदनु सोऽन्तरितो बभूव ।।"[556]

---

[550] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ७/४
[551] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ७/५
[552] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ७/११
[553] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ७/१६
[554] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ७/१
[555] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ६/२७
[556] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ६/३०

आदिशंकराचार्य द्वारा मन्दिरों की नगरी–कांचीपुरम् के 'कामकोटि' के ६८वें शंकराचार्य– 'चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वती 'अष्टम' ने; आदिशंकराचार्य के पदचिह्नों पर चलते हुए सम्पूर्ण भारत की भ्रमण करते हुए राजनैतिकचिंतन द्वारा भारतीयों में राष्ट्रभक्ति की भावना जाग्रत हुई। उन्होंने भारत की विजययात्रा के समय राष्ट्र की स्वतान्त्रतार्थ प्रयासरत देशबन्धु– चितरञ्जनदास, महात्मागांधि, मदनमोहनमालवीय आदि अनेक देशभक्त क्रांतिकारियों का मार्गदर्शन कर राष्ट्र की स्वतंत्रता में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। यथा–

"स्वाधीनता भारतवासिनां सा ,
वैदेशिकैर्याऽपहृता पुराऽऽसीत् ।
सम्प्राप्स्यन्ते केन पथा तदर्थं ,
विधाय चिंन्तामचलन्मनीषी ।।"
"ततश्च मार्गे बहुदेशभक्तैः ,
स्वाधीनतार्थं विहितप्रयत्नैः ।
स्वयं मिलित्वा निजजन्मभूमेः ,
स्वन्त्रतार्थं कृतवान् विचारम् ।।"
"स देशबन्धुर्भुवि चित्तरञ्जन; ,
यदागुरोर्दर्शनमाप्त्वान् तदा ।
शुभाशिषं तस्य कृते स भावयन्
अभीष्टवान् भारतमुक्तिमासु ताम् ।।"
"यदा स यात्रां कृतवांश्च केरलं
तदा गुरोस्तत्र हि गान्धिना सह ।
समग्रदेशस्य हिताय कल्पितम् ,
अभूतपूर्वं मिलनं समन्वितम् ।।"[557]
"आचार्यपादः मदुराइनग्रे ,
सम्पूजितस्सन् बहुनेतृपादैः ।
तन्नेतृमध्ये मतभेदमीक्ष्य ,
शान्तिप्रचारं कृतवान् स तत्र ।।"[558]

ज. नारी–चिन्तन –

भारतीय समाज का महिलाओं के प्रति "यत्र नार्यस्तु पूजयन्ते रमन्ते तत्र देवता" ऐसा उद्धात् दृष्टिकोण पूर्व से ही रहा है। 'भरतायनम्' महाकाव्य जननी एवं जननीरूपेण मानवीकृता 'जन्मभूमि, (भारतभूमि) के ऐश्वर्य, औदार्य एवं वैभव का गौरवमय गुणगान हुए, महिलासशक्तिकरण एवं

---

[557] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ६/४६–५२
[558] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ६/५५

राष्ट्रनिर्माण में स्त्री की भूमिका को रेखांकित करता है। कभी प्रिया–पत्नी, कभी माँ, कभी पुत्री एवं कभी भगिनी के रूप में; स्त्री द्वारा अनेक सशक्तरूपों में पुरुषों को सहयोग प्रदानकर, राष्ट्र की उन्नति में महत्वपूर्ण योगदान को रेखांकित किया है। यथा–

"प्रियाथ भार्या जननप्रदायिनी,
कदा च कन्या शिवसंगकामिनी।
धृतिः क्षमा साऽखिलशक्तिशालिनी,
प्रकीर्तिता भारतमातृरूपिणी।।"[559]

सशक्त–स्त्री, परिवार, समाज एवं राष्ट्रहित की आधारस्तम्भ है। 'स्त्रीहित में ही जगतहित समाहित है'; इस परिकल्पना से ही विधाता ने स्त्री को बनाया हैं जननी पृथ्वी पर ईश्वर स्वरूप है। "माता के रूप में माहिला ने ईश्वरीय सृष्टि को संरक्षित किया है। मूलप्रकृतिस्वरूपा–स्त्री; उदास–भावान्वित, अचेतन एवं निश्चल पुरुष को स्वात्मशक्ति से चेतन्य प्रदान करके इस चराचर सृष्टि का निर्माण करती है। यथा–

"असीमसौंदर्य्यविभूषितवस्तूना
जगध्दितार्थं विधिनाऽपि निर्मिता ,
विधेश्च धरा हि यया सुरक्षिता
कदाऽपि माता भविता न विस्मृता"।।"[560]

सशक्त स्त्री मनुष्य के जन्म–जन्मान्तर के कष्टों का नाश करने में सक्षम है। यथा–

"जन्मजन्मान्तरदुःखहरिणी स्त्री०।।"[561]

सशक्त भारतीयनारियों के यशोदा (१/१०)), गान्धारी (१/७३), गार्गी (१/७५), जानकी (1/७७) सावित्री (१/११४), पार्वती (१/७६–७६), हरिप्रिया–लक्ष्मी (१/८१–८२), सरस्वती (१/६१), देवी मीनाक्षी (१०/६), रानीगुण्डिचा (६/२२–२३), इत्यादि वन्दनीय रूपों ने पुरुषों का प्रतिपद मार्गदर्शन किया है। जगदम्बा पार्वती के बिना शिव को शव के समान कहकर महाकवि ने स्त्री के महात्म्य को रेखांकित किया है। यथा–

"त्वदीयसम्पर्कमवाप्य शंकरः,
भयंकरो वा कमनीयकिंकरः।
ऋतेऽम्बिके! त्वत् स शिवो शवः भवेत्,
कदा च पुनः स्पन्दितुमेव न क्षमः।।"[562]

जीवनलक्ष्य–"पुरुषार्थचतुष्टय" प्राप्तिहेतु धर्म का संग्रह सहधर्मचारिणी स्त्री की सहायता के बिना असंम्भव है। यथा–

"तस्त्वया सार्धमहं महोमयीं,

---

559 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, १/२
560 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, १/१३
561 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, १/१५
562 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, १/२३

पुरीं प्रयास्यामि स्वधर्मचेतनः।
विहाय को वा सहधर्मचारिणीम्
स्वधर्मसंरक्षणतत्परो भवेत्।।"[563]

"भारतायनं महाकाव्य" के 'काशीविलासः' शीर्षक अष्टमसर्ग में महाकवि ने देवनदी गंगा का मानवीयकरण द्वारा देवनदी गंगा को "शम्भोः शिरसि राजति दिव्यदेहा" कहकर जहाँ सशक्त भारतीय नारी के महात्म्य को प्रस्तुत करते है, वहीं उसके सशक्त न होने की दशा में "सा मलिना विष्णसलिला पंकाकुला व्याकुला" उसकी दुर्दशा को भी रेखांकित किया है। यथा–

"**गंगाऽस्मदीयमहनीयपरम्परायाः,**
प्राणप्रदा सकलमंगलहेतुभूता।
प्रक्षाल्य विष्णुपद्मयुगं सदा सा
शम्भोः परं शिरसि राजति दिव्यदेहा।।"[564]

"**सर्वांगं मधुरं बभूव सुभगं यस्या दृशा चैकदा**
सा गंगा मलिना विष्णसलिला पंकाकुला व्याकुला।।"[565]

शक्तिस्वरूपा–'स्त्री' स्वयं "आत्माविष्कार" करने में सक्षम है। महिलासशक्तिकरण से ही परिवार, समाज एवं राष्ट्र की उन्नति संभव है। वर्तमान भारतीय नारी सशक्त तो हुई है; किन्तु उतनी सशक्त नही कि आधी आबादी होने के वास्तविक अर्थ को प्राप्त कर सके। इस हेतु शिक्षा द्वारा उन्हें उनके अधिकारों का ज्ञान कराकर, संस्कृतसाहित्य एवं अन्य साहित्यों में वर्णित उसके उद्धात् स्वरूप से समाज को परिचित कराकर उन्हें सशक्त किया जाना अत्यावश्यक है। हमारी संस्कृति में जो कुछ भी "सत्यं–शिवं–सुन्दरम्" है; उसकी कल्पना समीक्ष्य महाकाव्य में सशक्त स्त्री के रूप में की गयी है।

झ. प्रकृतिचिन्तन–

भारतभूमि के वैभव के चित्रण में अनेक प्राकृतिक तत्वों का विस्तृत विवेचन उपस्थित हुआ है। भारतभूमि के वैभवशाली वर्णन में महाकवि ने भारतभूमि के भूदृश्यों यथा पर्वत, सागर, नदियों, वनों, लताओं, तीर्थों, वन्यजीवों आदि के वर्णन के साथ ही समीक्ष्य महाकाव्य में सृष्टि' के पर्याय चेतनाचेतन–'प्रकृति' के आलम्बन तथा उद्दीपन दोनों रूपों का अत्यन्त कौशल से चित्रण किया है।

मनुष्य प्रकृति की सन्तति है। पर्वत, नदी, तालाब, शस्यश्यामला–भूमि तथा सुवासित वायु मानवजीवन को सुखद बनती है। प्राचीनकाल में प्रकृति के साथ समन्वय बनाकर रहना मनुष्य का प्रथम ध्येय होता था।[566]

---

563 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ३/२१
564 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ८/६
565 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ८/२०

जिस प्रकार जननी अपनी सन्तति के पोषण एवं संरक्षण हेतु सदैव समर्पित रहती है, उसी प्रकार प्रकृति भी कन्दमूलादि से हमारा पोषण करती है। भारतीय महाकाव्य में प्रकृति को मातृशक्ति के रूप में विवेचित किया गया है, एवं मनुष्य को उसकी सन्तति के रूप में। पृथ्वी गर्मी, वृष्टि, शैत्यादि समस्त कष्टों को सहकर, अपने वक्ष को विदीर्ण करके, खाद्यान्न, फल, जल आदि से सन्तति का पोषण करके, सन्तति का मंगल ही करती है। सन्तति के हितार्थ अनेक कन्दमूलों तथा फलों को अपने वक्ष–स्थल पर धारण करती है। यथा–

"विदीर्य वक्षः परिगृह्य कर्षणं,
सदाभिषिक्ता जलपङ्कर्दमैः।
अशेषशस्यं निजसंततिं प्रति,
तनोति या सा जननी; न मेदिनी।।"
"बहूनि फलानि पुष्पाणि तानि च,
सुमिष्टमूलानि च पल्लवानि वा।
यया निजे वक्षसि सञ्चितानि नो,
हिताय सा में जननी; न मेदिनी।।"
"प्रचण्डवर्षाघनभीमगर्जनैः,
प्रकम्पवातैस्ताड़िताञ्च तर्जनैः।
निरन्तर जर्जरितोऽपि दुःखिनी,
ददाति खाद्यं जननी; न मेदिनी।।"
"नवं नवं भावविलासवेष्टितं,
मनोरमं मानवताङ्कुरोद्गमम् ।
प्रदर्शयन्ती स्मितहासशोभिनी ,
विभाति या सा जननी ; न मेदिनी ।।"[567]
"किं पंकजं स्फुटितमस्ति हि पुष्करिण्यां ,
किं वा तरौ किसलयो ह्युदितौ वसन्ते ।
आकाशवक्षसि किमु प्रतिभाति चन्द्रः
क्रोड़े विभाति नवजातशिशुर्जननन्याः ।।"[568]

हमारी पवित्रनदियाँ हमारे लिए पूज्यनीय रही हैं। उनके पवित्र जल से स्नान करने मात्र से ही हम अपने जीवन को सफल मानते हैं। पवित्र नदियों पर ही देश की संस्कृति का ढाँचा टिका हुआ है। पवित्र एवं अमृततुल्य जल से लोगों को जीवन देने वाली देवनदी गंगा को भी महाकवि ने जननी के रूप में वर्णित किया है। यह देवनदी गंगा भारतीय संस्कृति की जीवनदात्री है। यह

---

[566] प्रो०चम्पाकुमारी(काशीहिन्दूविवि०)द्वारा 'इंडियावाटरपोर्टल' पर "भारतीयचिन्तन में पर्यावरण" विषय पर लिखित लेख
[567] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, १/३८–४२
[568] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, २/१०

देवनदी जगत्हितार्थ जीवनधर्म को धारण करते हुए, भारतभूमि को पवित्र करते हुए प्रवाहित हो रही है। यथा–

"पवित्रभावान्वितशीतलैर्जलैः,
ददाति या जीवनमेव जीविने।
अनन्तपीयूषविशेषभूषिता,
महीतले सा जननी; न जाह्नवी।।"[569]

वन्यजीवों का पारिस्थितिकी तंत्र में योगदान के कारण उनका संरक्षण भी अत्यावश्यक है। माता पार्वती का दृष्टान्त देते हुए महाकवि कहते हैं कि माता पार्वती ने विश्वकल्याणार्थ दुर्गम हिमालय पर तपस्या की एवं वृक्षों, लताओं तथा वन्यजीवों से बन्धुता कर विश्व को पर्यावरणसंरक्षण का सन्देश दिया। यथा–

"कदा च वन्यैः हरिणैः कदा शुकैः,
कदा च सर्पैः नकुलैश्च जीविभिः।
कृता यया विश्वहिताय बन्धुता,
.....पार्वती।।"[570]

प्रस्तुत महाकाव्य के पञ्चमसर्ग में प्रकृतिचिन्तन के विचार व्यक्त करते हुए महाकवि कहते हैं कि ये वन, पेड़–पौधे आदि हमारे घर हैं; और इनमें रहने वाले वन्यजीव हमारे बन्धु–बान्धव है। ये असीमित अन्तरिक्ष हमारा पिता है और यह पृथ्वी हमारी माता है। हमें हर हाल में इनका उत्तम स्वरुप बनाये रखना है। यथा–

"गृहं गृहं नो विपिनो गृहं यतः,
सखा सखा नो हरिणा हि बान्धवाः ।
पिता पिता नो हि पिताऽम्बरः परं,
न साऽस्ति माता जननी वसुन्धरा ।।"[571]

प्रकृति यदि विषमपरिस्थितियों में मनुष्य को सुरक्षा प्रदान करती है तो उससे उलझने पर पिता के समान क्रोध भी करती है। भारत के प्राकृतिकवैभवों का वर्णन करते हुए प्राकृतिक रूप से सुन्दर भारतभूमि को महाकवि ने समस्त संसार से श्रेष्ट बताया है। पृथ्वी को माता एवं आकाश को पिता का अत्युच स्थान समीक्ष्य महाकाव्य में दिया गया है। यथा–

"पिता मदीयः गगनोपमो महान् ,
वसुन्धरा मे जननी धुरन्धरा ।
सुरक्षितोऽहं धरणीनभोऽन्तरे ,
बिभेषि कस्मादयि ! दिव्यबालकः ! ।।"[572]

---

[569] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, १/३२–३७
[570] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, १/७८
[571] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ५/२४

समीक्ष्य महाकाव्य के चतुर्थ एवं पंचम सर्गों में विभिन्न प्राणियों के पोषक–महोदधि को देवस्वरूप मन गया है। समस्त लोकजीवन के संरक्षक एवं आधार के रूप में सागर का वर्णन करते हुए महाकवि कहते हैं कि सागर समस्त रत्नों का दाता, संसार का पोषक एवं उत्तम स्वास्थ्य का दाता है। विष्णुनिवास सागर के तटों से लोग अपनी आजीविका के साथ–साथ स्वास्थ्यलाभ भी प्राप्त करते हैं। सागर हमारे लिए जीवनदाता के समान है। महासागर को तीर्थराज, रम्यनायक एवं भवदुःखविमोचनकारण कहा गया है। यथा–

"प्राप्नोति तोयमतुलं सततं तृषार्तः,
खाद्यं तथा तव तटं प्रविशन् क्षुधार्तः ।
रोगोपशान्तिमनिशं लभते रुजार्त्तः,
हे प्राणदायिजलधे ! तव सुप्रभातम् ।।"[573]

"हे तीर्थराज ! तव पुण्यतटप्रदेशे ,
पुष्पाणि यानि रमणीयानि तानि ।"

"कृष्णा कदा च यमुना कदा च गङ्गा ,
सङ्गाशया पुलकितास्तटिनीरमण्यः ।।"[574]

"अम्भोनिधेरियमपूर्वसुरम्यशोभा ,
या भाति भारतमाततनुमण्डनार्थम् ।
साकर्षयत्यखिलपर्यटकान् स्वधाम्ना ,
नित्यं समुच्छ्वलितरङ्गतरङ्गधन्या ।।"[575]

महाकाव्य के पञ्चमसर्ग में आत्ममनोभावों के प्रस्तुतीकरण में महाकवि ने प्रकृति के उद्दीपनरूप एवं वैपर्यावस्था का वर्णन किया है। यथा–

"मनोहरैर्मौकुलपंक्तिकूजितैः
अतीवकारुण्यवहैर्विरावितै ।
प्रभातकालेपि समागते ,
तमोविभिन्दन् मिहिरो न काशते ।।"

"प्रभातकालीनसुशीतलोऽनिलः ,
मुदा समुन्मोचितकञ्जकोरकः ।
गतः क्व तन्वन् तनुवस्त्रसत्त्वर–
ममन्दमान्द्यां जडतां पुनः पुनः ।।"

"वलाहकस्यावरणं नभस्तले ,
तडित्सुवेगैर्हृतलोकलोचनैः ।

---

572 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, १/८५
573 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ४/१४
574 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ४/३, एवं ४/१३
575 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, १०/४

प्रचण्डनादैर्दरदानसक्षमै–

श्चलन्मनोहारि ससर्ज दुर्दिनम्।।"

"लतोवलावातसमीरिता सती ,

प्रकाश्य हासं स्फुटसूनशोभनैः ।

विलाशराशिं निजपल्लवैः पुन–

र्न पादपैः सम्मिलितुं स्म कांक्ष्यति ।।"

"तृणानि तत्युर्हरिणा वने वने ,

तथैव तस्थुः कलिकास्तरौ तरौ ।

कदापि पुंस्कोकिलरावसौष्ठव ,

मदृश्ताहो प्रकृतेर्विपर्ययः ।।"[576]

इस प्रकार समीक्ष्य महाकाव्य में हमारे परिवेश के पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि, अंतरिक्ष, ऋतुओं, पर्वतों, नदियों, सागरों, महासागरों, तालाब, वृक्षों, लताओं, वनस्पतियों, जीव–जन्तुओं, ग्रहनक्षत्रदिशाओं आदि सम्पूर्ण तत्वो का विवेचन किया गया है।

ञ. पर्यावरणचिन्तन –

मानव एवं पर्यावरण अन्योन्याश्रित है। "पर्यावरण उन सभी बाह्य शक्तियों एवं प्रभावों का वर्णन करता है, जो प्राणी–जीवन के स्वभाव, व्यवहार, विकास एवं परिपक्वता को प्रभावित करते है।"[577] "पर्यावरण में जल, भूमि, मानवीयप्राणी, जीव–जन्तु, पौधे, सूक्ष्म–जीवाणु और उनके मध्ये स्थित अन्तर्सम्बन्ध सम्मिलित है।"[578]

पर्यावरण के प्रति लोगों को जागरूक करना ही पर्यावरणचिन्तन है। 'पर्यावरणचिन्तन' इस शब्द में मानव एवं पर्यावरण का अन्योन्याश्रित सम्बन्ध दृष्टव्य है। अतः पर्यावरण के प्रति मानव की जागरूकता अथवा चैतन्यता ही 'पर्यावरणचिंतन' है। पर्यावरणचिंतन हेतु वैश्विक स्तर पर सर्वप्रथम ५ जून १९७२ को संयुक्त–राष्ट्रसंघ के तत्वादान में स्वीडन के 'स्टॉकहोल्म' में विश्व पर्यावरण सम्मलेन (स्टॉकहोल्म सम्मलेन १९७२) का आयोजन किया गया, जिसके परिणामस्वरुप पर्यावरण के संरक्षण एवं सुधार हेतु भारत में पर्यावरणसंरक्षण अधिनियम १९८६ बना। समय–समय उसमें आवश्यकतानुसार संशोधन भी हुए; किन्तु पर्यावरणप्रदूषण की समस्या और अधिक विकराल रूप में हमारे समक्ष उपस्थित है।

आचार्य हरेकृष्ण शतपथी विरचित महाकाव्य 'भारतायनम्' में वर्तमान की सबसे ज्वलन्त समस्याओं में से एक 'पर्यावरणप्रदुषण' की समस्या, की ओर हमारा ध्यान आकर्षित किया है। वर्तमान में जब विश्व के दस सर्वाधिक प्रदूषित शहरों में से आठ शहर हमारे देश के हों, प्रदुषण

---

576 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ५/२–८

577 'वैदिक वांगमय में पर्यावरण'–डॉ०गोपीनाथ, देववाणीपरिषद् दिल्ली, २०१२, पृ० २

578 भारतीय संविधान पर्यावरणसंरक्षण अधिनियम १९८६, धारा २क, ऑनलाइन,

के कारण लोगों की रोगप्रतिरोधकक्षमता खत्म हो गयी हों, लोग असहाय होकर कोरोना, स्वाइनफ्लू आदि से ग्रसित हो मृत्यु के मुख में समा रहे हों तब समीक्ष्य महाकाव्य में विवेचित पर्यावरणचिंतन लोगों को भविष्य में होने वाले गम्भीर दुष्परिणामों की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट करता है। समीक्ष्य महाकाव्य में प्रदुषण तथा उसके कारणों, दुष्प्रभाओं, निवारण के उपायों आदि का विवेचन कर पर्यावरणचिंतन में अपना महत्त्वपूर्ण अवदान दिया है।

पवित्र जल के प्रदूषित हो जाने की कारण दयनीय स्थिति को प्राप्त हुई माँ गंगा का वर्णन करते हुए कहते हैं कि हमारी सनातन संस्कृति की प्राणभूता, भगीरथ की साधना से स्वर्गलोक से पृथ्वी पर अवतरित होकर भगवान् शिव के शीर्ष पर दिव्यदेह के रूप में विराजित, अपने पवित्रपावन, अमृततुल्य जल से भारतमाता के चरणकमलों का प्रक्षालन करने वाली, सर्वांग मधुरा, देवनदी गंगा अपने पवित्र जल के प्रदूषित हो जाने के कारण व्याकुला है। बड़े–२ सिद्धयोगी भी प्रदूषित गंगाजल में स्नान करने से डरते हैं। पवित्र गंगा जल के प्रदूषित हो जाने से उसके पवित्र जल एवं तटों पर आश्रित जीव–जंतु, वृक्ष–लताएँ आश्रम आदि लुप्त हो रहे हैं। यथा–

"यस्याः स्निग्धतरैः पवित्रसलिलैः प्रक्षालितं भारत–
मातुः पादपयोजयुग्नमनिशं ह्यात्मा च सन्तोषितः ।
सर्वांगं मधुरं बभूव सुभगं यस्या दृशा चैकदा
सा गंगा मलिना विष्णसलिला पंकाकुला व्याकुला ।।"[579]

"मातर्जाह्नवि ! ते शिवाङ्कपटले ये योगिनो ह्याश्रिताः,
त्वत्तीरे च तमाललतामधुरे ये आश्रमाः स्थापिताः ।
त्वन्नीरे परिपाविते च विमले ये जीविनः सञ्चिताः,
ते सर्वे क्वगाताः ! हता मधुरता दूरंगता शुद्धता ।।"[580]

आज सम्पूर्ण प्रकृति अपनी पवित्रता की लड़ाई लड़ रही है। जीवनदायिनी नदियों की दुर्दशा आज किससे छिपी है? माँ के नाम से सम्बोधित की जाने वाली नदियाँ आज इतनी प्रदूषित हो चुकी है कि मनुष्य उनके जल को स्पर्श करने से भी कतराता है। नगरों के समीप से गुजरने वाली नदियों का तो आज स्वरुप ही विकृत हो चुका है; वे एक गंदे नाले में परिवर्तित हो चुकी हैं। गंगाजल के प्रदुषण के उत्तरदायी कारणों को रेखांकित करते हुए महाकवि कहते हैं कि वैज्ञानिक प्रगति एवं औद्योगिकीकरण के परिणामस्वरूप नदियों तटों पर अनेक औद्योगिकक्षेत्र विकसित करके अनेक उद्योगों की स्थापना की गयी। इन उद्योगों से निकालने वाले जहरीले अपशिष्टों को सीधे नदियों में प्रवाहित किये गएद्य उद्योगों की ऊर्जा की मांग की पूर्ति हेतु नदियों के प्रवाह को अवरुद्ध कर बिजली उत्पादक ईकाइयों का प्रदूषित जल भी नदियों में प्रवाहित किया गया। महाकवि बड़े ही दुःखी हृदय से कहते हैं कि इस प्रकार की वैज्ञानिक प्रगति से लाभ की अपेक्षा हानि ही अधिक हुई है। यथा–

---

[579] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ८/२०
[580] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ८/२४

"विज्ञानस्य परे युगे सुरनदीतीरेऽधुना नूतना,
व्यामोहात् किमपि प्रसाधनधिया शिल्पाञ्चलाः निर्मिताः ।
तेभ्यः किन्तु विनिर्गतैश्च मलिनैः वाष्पादिभिर्दुषणैः,
नष्टं भारतजीवनं भवति चेद् विज्ञानदानेन किम् ? ।।"[581]

आज विलासिता के चलते स्थापित अनेक उद्योग अपना कचरा निर्बाध गति से पर्यावरण में छोड़ रहे हैं। गंगा के तटों पर स्थित कानपुर आदि नगरों में स्थापित चर्म–उद्योगों के अपशिष्टों को गंगा में प्रवाहिते करने से गंगाजल सर्वत्र दुर्गन्ध से व्याप्त हो गया। यथा–

"तत्किन्त्वद्य समस्तनेत्रपुरतः दुर्गंधतः दूष्यते ।
नित्यं कानपुरस्य चर्मकालतः निस्सारितैः दूषणैः ।।"[582]

पर्यावरणसंरक्षण हेतु वैश्विक स्तर पर १९७२ के उपरान्त अनेक कदम उठाएं गए। भारत में भी १९८६ में पर्यावरण संरक्षण हेतु कानून बनाया एवं लागू किया। गंगाजल के शोधन एवं गंगानदी को प्रदुषण से मुक्त करने हेतु सरकारों ने **'गंगा कार्ययोजना', 'राष्ट्रीय नदी संरक्षण योजना', 'राष्ट्रीय गंगा नदी बेसिन अथोरिटी', 'राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन सोसायटी', 'नमामि गंगे मिशन',** आदि १९८५ से अब तक हजारों करोड़ रुपये पानी की तरह व्यय किये किन्तु सब व्यर्थ रहा। अनियोजित विकास के कारण पर्यावरण प्रदूषण की समस्या में उत्तरोत्तर वृद्धि होती गयी। आज स्थिति इतनी भयावह हो गयी है कि वैज्ञानिकों एवं नीतिनिर्माताओं द्वारा निर्मित नीतियाँ विफल हो रही हैं। देवनदी गंगा उत्तरोत्तर मलिन होती जा रही है। यथा–

"गङ्गातोयविशोधनाय विहिताः दैर्ध्यातिगा योजना,
मुख्यास्ते विनियोजिताः पुनरहो वैज्ञानिकाः जागृताः ।
सीमाहीनधनव्ययाय नितरां केन्द्रं स्वयं प्रस्तुतं,
किन्तु क्वास्ति फलं ! पवित्रमखिलं गाङ्गजलं दूषितम् ।।"[583]

प्रेम–त्याग की भावना से युक्त–भारतीयसंस्कृति, देवनदी गंगा के प्रदूषित होने से खतरे में है। सभी भारतवासी माँ गंगा की यह दुर्दशा देखकर दुःखी हैं। देवता भी जिस देवनदी गंगा के तटों पर जलक्रीड़ा हेतु आया करते थे वही तट आज जलाये जाते हुए शवों के कारण दुर्गन्ध से व्याकुल है। यथा–

"नित्यं तन्मणिकर्णिकानिकटतो दन्दह्यमानैः शवैः,
तस्याः भङ्गतरङ्गराशिरधुना दुर्गन्धपर्याकुलः ।।"[584]

आज हमारे समस्त तीर्थ प्रदूषण की समस्या का सामना कर रहे हैं। हमारे रम्य पर्यटनस्थल नष्ट हो रहे हैं। जिसके कारण भारत का पर्यटन उद्योग दम तोड़ रहा है। साथ ही विदेशी मुद्रा के अर्जन में भी कमी आई है। मनुष्य देवनदी के तटों पर शवों को अर्ध–ज्वलित करके उन्हें

---

581 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ८/२६
582 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ८/५०
583 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ८/२३
584 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ८/४४

गंगाजल में प्रवाहित करते है, और फिर हरिश्चन्द्र आदि घाटों पर गंगा आरती का आडम्बर करते हैं। यथा–

"गंगा नाम पवित्रमस्ति नितरामुच्चार्य्यते केवलं ,
लोकानां शवमेव सम्प्रति हरिश्चन्द्रादिघाटोच्चये ।
मात्रं ह्यधर्मितं विदाह्य च पुनःनिक्षिप्य तत्तज्जले ,
नित्यं मोहवाशादुपार्जनपराः स्वार्थे नियुक्ताः डमाः ।।"[585]

पृथ्वी पर सबसे तेज दिमाग वाला प्राणी–'मनुष्य', विकास के नाम पर अपने अस्तित्त्व को खतरे में डाल रहा है। आज अत्यधिक कीटनाशकों के उपयोग के कारण भूमि की उर्वरा–शक्ति क्षीण हो रही है। प्रदुषण के कारण खाद्यान्न प्रदूषित है। शाक–सब्जियां गुणों से रहित हो गयी है। लोग व्याधियों से ग्रस्त हो रहे हैं। रोगों से युक्त शरीर भला सुखी कैसे रह सकता है? यथा–

"खाद्यं पर्युषितं गुणैः विरहितं शाकादिवस्तूच्चयं
पानीयञ्च तथा यदा कलुषितं नष्टं मरुन्मण्डलम्
जीवानामपमिश्रितं भवति तत् प्राणप्रदं ह्यौषधं
तस्माज्जीवितुमेव कः प्रभवतात् ? धन्या मृता ये नराः ।।"[586]
''साक्षाद्भारतभूमिपुण्यजननीवक्षःस्थलं दीर्यते
तस्मादद्य निराशभावविकलाः तस्याः सुताः व्याकुलाः
चित्ते व्याकुलिते कथं मतिमतां स्वास्थ्यं हि सुस्थं भवेत्
"व्याप्ते रोगसमुच्चये जगति तत् सौख्यं कथं देहिनाम् ।।"[587]

महाकवि बढ़ते शहरीकरण को प्रदुषण में वृद्धि के लिए उत्तरदायी कारण मानते हैं। शहरीकरण के परिणामस्वारूप गाँवों में स्थापित कुटीर उद्योगों के विनाश के कारण, मशीननिर्मित वस्तुओं का परिचलन बढ़ गया; जिसके परिणामस्वारूप स्थापित आधुनिक उद्योगों ने पर्यावरण का नाश कर दिया। आवासों के निर्माण के कारण वन घटते जा रहे हैं एवं कोठीनुमा महल कुक्कुरमुत्ते की तरह उग रहे हैं। यह स्थिति ठीक नही है। लोग आज शहरों की चका–चौंध से मोहित होकर, गाँवों के अपने कृषिकार्य, कुटीर उद्योग आदि परम्परागत कार्यों को छोड़कर नगरों की और दौड़ रहे हैं। यथा–

"त्यक्त्वा ग्राममहो कृषिञ्च , कुटिरप्राणैकशिल्पस्थलम् ।
व्यामोहान्नमनुजाः भ्रमन्ति , तदनुजाः नग्रस्थले दूषिते ।।"[588]

आज प्रदूषण से मुक्ति हेतु भगीरथप्रयासों की आवश्यकता है। लेकिन आज न तो भागीरथ है और न ही उनके जैसी कठोर तपस्या करने वाले लोग। आज लोगों की स्वार्थपूर्णजीवनशैली ने

---

[585] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ८/४८
[586] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ८/५६
[587] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ८/५३
[588] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ८/३२

पृथ्वी, जल, आकाश, वायु आदि पंचमहाभूतों को प्रदूषित कर दिया है। प्राणियों के शरीर की उत्पत्ति पंचमहाभूतों से ही होती है। हमारे रक्षा कवच पंचमहाभूत आज प्रदूषित हो चुके हैं। पंचमहाभूतों के प्रदूषित हो जाने से मनुष्य के अस्तित्त्व पर संकट आ गया है। यथा–

"तेजो व्योममरुत्पयःक्षितिचयैः नृ॒णां तनुः सृज्यते ,
भूतानां कृपया पुनर्जगदिदं स्थातुं सदा शक्यते ।
बन्ध्या चेत् पृथिवी जलं कलुषितं वायुश्च चेद्दूषितं ,
तेजो व्योम तथा भवेद् यदि तदा जीवः कथं धार्यते ।।"[589]

'आर्थिक विकास'–'जिसका लक्ष्य 'बढ़ती आबादी की पूर्ति हेतु वस्तुओं एवं सेवाओं का उत्पादन बढ़ाने के लिए प्राकृतिक संसाधनों का अबौद्धिक एवं असंवैदनशील तरीके से दोहन करना' है'; उससे पर्यावरण पर भारी दबाव पड़ता है। इस समस्या के निराकरण को भी महाकवि ने समीक्ष्य महाकाव्य में रेखांकित किया है। भारत में खनिज सम्पदाएं प्रचुर्यता से विद्यमान है। मनुष्य को पर्यावरण से अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि हम पर्यावरण के अभिन्न अंग हैं और हमारा विकास पर्यावरण के विकास के साथ ही सम्भव है। उद्योगों की स्थापना हेतु पर्यावरण संरक्षण को केन्द्र में रखकर नीतियों का निर्माण कर, उन्हें उसी स्वरुप में लागू करवाया जाना अत्यावश्यक है। अगर सुनियोजित तरीके से उद्योगों की स्थापन की जावे, तो उनसे पर्यावरण को कोई हानि नही होगी। यथा–

"शिल्पस्थापनतोऽर्थनीतिविषये वृद्धिश्च सम्भाव्यते,
ह्यास्माकञ्च कदा खनीष्टविभवाऽभावोऽत्र नो विद्यते ।
शिल्पस्थापनमस्तु भारततले नास्ति क्षतिः कस्यचित्,
तेषां किन्तु भवेत्चेतनतया स्थानादिनिर्धारणम् ।।"[590]

वर्तमान स्थिति में जब मनुष्य के सभी प्रयास विफल हो रहे हैं; तब महाकवि कहते हैं कि पर्यावरण अपनी शुद्धि करने में स्वयं समर्थ है, बस शर्त यह है की उसके परिवेश से मनुष्य छेड़–छाड़ न करे। अगर "धारणीय विकास" की नीति को मनुष्य अपनाए, प्रकृति को संरक्षित करते हुए उसका दोहन करे, तो प्रकृति और पर्यावरण लाखों वर्षों तक मनुष्य का पोषण करने में समर्थ है। अनियोजित औद्योगिकीकरण पर्यावरण के लिए विनाशकारी है। आज जरुरत यह है कि हम अपने क्रिया–कलापों एवं आर्थिक गतिविधियों को पर्यावरण के प्रति सकारात्मक बनायें, एवं भावी पीढ़ी की आवश्यकताओं से समझौता किये बिना अपनी वर्तमान आवश्यकताओं को पूरा करें।

आम जनता जब तक पर्यावरण संरक्षण की मुहीम से नही जुड़ेगी तब तक इन समस्याओं का समाधान हो पाना सम्भव नही है। जल प्रदुषण के परिणामस्वरुप पानी बंद बोतलों में दूध के भाव मिलाता है। यदि यही हालत रही तो वह दिन दूर नही जब प्राणवायु भी बन्द बोतलों में

---

[589] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ८/७३
[590] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ८/३१

बिका करेगी। परन्तु इससे आम–आदमी ही सर्वाधिक प्रभावित होगा। गरीब जनता ही पर्यावरण प्रदूषण के सर्वाधिक कुपरिणामों को भोग रही है। आम जनता के पास न तो कारखाने है और न ही उद्योग धन्धे; जिससे वातावरण प्रदूषित होता है। किन्तु दर्द सबसे ज्यादा उन्ही के हिस्से में आता है; क्योंकि उनके पास इतना पैसा नहीं है कि वें बोतल का पानी पी सकें। अल्पायुयुक्त, कष्टमय, रोगमय जीवन निर्धन जनता की नियति बन गई है।

५ जून १९७२ को स्वीडन के 'स्टॉकहोल्म' में विश्व पर्यावरण सम्मलेन से सहस्र वर्षों पूर्व ही भारतीय वैदिक साहित्य पर्यावरणचेतना का आह्वान में प्राप्त होता है। अथर्ववेद के पृथ्वीसूक्त के "माता भूमि पुत्रोहं पृथिव्याः, पर्जन्यो पिता०।।" इत्यादि मंत्र से प्रेरित होकर प्रस्तुत महाकाव्य में महाकवि कहते हैं कि यदि हम अपने परिवेश को माता–पिता के समान आदर एवं स्नेह की दृष्टि से देखते हुए उसकी परवाह करें तो हमें कभी कोई कष्ट भोगना ही नहीं पड़े। पर्यावरण सुरक्षित रहा तो पृथ्वी और आकाश के मध्ये हम सब सब सुरक्षित रहेंगे और हमें कभी किसी का भय नही रहेगा। यथा–

लेकिन जब सागरादि प्राकृतिक संसाधनों का तय सीमा से अधिक दोहन होता है, अतिक्रमण होता है, तब उनके भयंकर तथा रोद् रूप सामने आते है। पर्यावरण का संतुलन बिगड़ने पर कही अवृष्टि, कहीं अतिवृष्टि, कहीं अत्यधिक ठण्ड तो कही देह को जला देने वाली गर्मी, कही आंधी, कही तूफ़ान, कही भूकम्प, कही सुनामी जैसी आपदाओं से संसार को जन–धन की हानि होती है। फिर लोग प्रकृति को दोष देते हुए उससे रौद्ररूप नहीं दिखाने की प्रार्थनाएँ करते हैं। यथा–

"कथय हे प्रियवारिनिधेऽधुना,
क्वनुगतं तव तन्मधुचित्रणम् ।
किमपि तां स्वजकथां निभालयन्,
वद करोषि कथं तटलङ्घनम् ।।"
"जगदसीममनोवलधीरता–
मवकलय्य सुधाश्रितवारिधे ।
ननु विहाय निजं तटलङ्घनं,
न खलु दर्शय भीषणताण्डवम् ।।"[591]

वर्तमान में जब वैश्विक महामारी–कोरोना(कोविड–१९) के कारण, सम्पूर्ण विश्व में तालाबन्दी (लॉक डाउन) के कारण जब समस्त आर्थिक–सामाजिक गतिविधियाँ, वाहन, उद्योग इत्यादि बन्द हैं; औद्योगिक इकाइयों से प्रदूषित जल नदियों में प्रवाहित नहीं किया जा रहा है; मनुष्य प्रकृति के कार्य में हस्तक्षेप नहीं कर पा रह है; तब गंगा यमुना आदि समस्त नदियाँ स्वतः शुद्ध हो रही हैं। सम्पूर्ण पृथ्वी से वायुप्रदुषण समाप्तप्राय हो गया है। बिना कोई धन एवं श्रम का व्यय किये

[591] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ४/४० एवं ४/४५

पर्यावरण शुद्धि का वह कार्य हो रहा है जो मनुष्य अथवा सरकारें दशकों में लाखों करोड़ रुपयों को खर्च करके भी नहीं कर पाया है। ''वर्तमान परिस्थिति हमारे द्वारा प्रकृति से की जा रही अनावश्यक हस्तक्षेप एवं उससे उत्पन्न होने वाले घातक दुष्परिणामों के उत्तरदायी भी मनुष्य ही है''; इस ओर संकेत करती है। यदि मनुष्य प्राकृतिक परिवेश से छेड़छाड़ न करे तो गंगादि नदियाँ आत्मशुद्धि में स्वयं समर्थ हैं। यथा –

''सानन्दं प्रकृतिः सदा स्वकृतिभिः नित्यं भुवि क्रीड़िता–
ल्लोकानाञ्च तमःप्रमाथिहृदयान् मोहः क्षयं गच्छतात् ।
भ्रान्तिर्मास्तु कदा प्रफुल्लमनसा तिष्ठन्तु ते मानवाः
गंगे! त्वन्महिमा करोतु निखिलं नष्टं जलं निर्मलम् ।।''[592]

साहित्य ने हमेशा से ही पर्यावरणचिन्तन में अपनी महती भूमिका का निर्वहन किया है। प्रस्तुत महाकाव्य ने भी विभिन्न चरित्रों के माध्यम से पर्यावरणचिन्तन का प्रसार किया है। यह महाकाव्य जन्भूमि को जननी का उदात्त दर्जा देता है; और अपनी जननी को कुरूप करके कोई भी पुत्र, कुपुत्र बनना नहीं चाहेगा।

आज सम्पूर्ण विश्व पर्यावरणप्रदूषण की समस्या से चिन्तित है। ऊर्जा की अन्धाधुन्ध खपत, मीलों, उद्योगों, कल–कारखानों, वाहनों, के माध्यम से प्रदुषण की समस्या में उत्तरोत्तर वृद्धि हो रही है। यथा –

''शिल्पानां परिचालनाय नितारमावश्यकी मुख्यतः
शक्तिर्विद्युत एव या सलिलतः प्राधान्यतः प्राप्यते
सा शक्तिस्त्ववलीयते हि सकलस्त्रोततपस्विनां स्वतः
----------.।।''[593]

विकासशीलविकास अथवा धारणीय विकासनीति के आभाव, कुटीर उद्योगों के विनाश, तथा विद्युत् की आपूर्ति हेतु ऊर्जा संयत्रों की स्थापना ने पर्यावरण के समक्ष संकट खड़ा कर दिया है। प्रकृति का विवेकहीन दोहन उसका शोषण है। शोषण सदैव ही प्रकृति एवं मन दोनों के लिए हानिकारक हैद्य प्रकृति के दोहन के साथ–साथ उसका पोषण भी आवश्यक है। विलासिता के प्रतीक वैज्ञानिक आविष्कार पर्यावरण के लिए हानिकारक सिद्ध हो रहे हैं। सरकारों ने पर्यावरण रक्षा हेतु समय–समय पर उचित कदम उठाये हैं किन्तु लोकचिन्तन के आभाव में उक्त समस्या उत्तरोत्तर भयानक होती जा रही है। अगर हमने पर्यावरण–संरक्षण के उपाए नहीं किये तो भावी सन्ततियां हमें कभी क्षमा नहीं करेंगी।

समीक्ष्य महाकाव्य में प्रस्तुत पर्यावरणचिन्तन हमें पर्यावरणसंरक्षण हेतु ''सत्यम् शिवम् सुन्दरम्''के सन्मार्ग पर चलते हुए, ''सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः, सर्वे भद्राणि

---

[592] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ८/६६
[593] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ८/२६

पश्यन्तु'' की जीवनशैली अपनाते हुए, प्रकृति से समन्वय बनाकर चलने का महान सन्देश देता है। पर्यावरणचिन्तन में आचार्य हरेकृष्ण शतपथी विरचित 'भारतायनम्' महाकाव्य का महत्त्वपूर्ण अवदान रहेगा।

ट. संस्कृतभाषामूलकचिन्तन –

'भाषा' विचारों की अभिव्यक्ति का साधन है। भाषा ही वह प्रधानतत्व है जो पृथ्वी के अन्य प्राणियों से मनुष्य को प्रथक करता है।

समीक्ष्य महाकाव्य में महाकवि द्वारा देववाणी, गीर्वाणी, सुरवाणी आदि विशेषणों से विभूषित, स्वविकसित, संस्कारयुक्त, विश्व की सर्वाधिक 'पूर्ण' एवं तर्कसम्मतभाषा–'संस्कृत' की महिमा में प्रस्तुत संस्कृतभाषामूलकचिन्तन दृष्टव्य है।

सुसंस्कृत एवं सर्वदृष्टया परिपूर्णभाषा, देवभाषा–'संस्कृत' विश्व की सर्वप्राचीनभाषा, तथा समस्त भारतीय भाषाओं की जननी है। यथा–

"भाषाणां जननी जगन्निवसतां सञ्जीवनी याऽवनी–
भूषणां प्रथमापरमानिरुपमा सम्मानसंविभ्रमा ।
भावानां भरिते भवे विलसिते सारस्वते भारते ,
सेयं भारतभारती विजयतां विद्यावतां या गतिः ।।"[594]

संस्कृतभाषा ही विश्व की एकमात्र भाषा है जिसका नामकरण उसके बोलने वालों के नाम पर नहीं किया गया है। भारतीय भाषाओं की तकनीकी शब्दावली भी संस्कृत से ही व्युत्पन्न की जाती है। मूलतः संस्कृत से अपनी पारिभाषिक शब्दावली को लेने वाली हिन्दी हमारी राजभाषा है। संस्कृत, भारत को एकता के सूत्र में बाँधती है। भारतीयसंस्कृति का प्रतिपद संरक्षण तथा संवहन करने तथा भारतभूमि पर शान्ति एवं सौहार्द की स्थापना एवं भारतभूमि की विश्वविजय के लिये संस्कृतभाषा का समुत्थान अत्यावश्यक है। यथा–

"या वा संहतिसंस्कृती प्रतिपदं सम्प्रीतिसंपत्स्थिति ,
शान्तिं कान्तिमकान्तिकां कलयतां संबर्द्धयन्ती सताम् ।
मैत्रीं चारयितुं शुभं वरयितुं कर्तुं प्रियं या प्रिया ,
सेयं भारतभारती विजयतां विद्यावतां या गतिः ।।"[595]

संस्कृतसाहित्य का इतना विस्तार है कि ग्रीक एवं लैटिन दोनों भाषाओं का साहित्य एकत्र किया जाए तो भी संस्कृतसाहित्य के सामने नगण्य प्रतीत होता है। संस्कृतसाहित्य का मूल वेद है। वेदों के पाठ, शाखाएं, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद्, श्रौतसूत्र, गृह्यसूत्र, धर्मसूत्र, शिक्षा, व्याकरण, निरुक्त, निघण्टुछन्दशास्त्र, ज्योतिष, दर्शन, इतिहास, पुराण, काव्य, महाकाव्य, नाटक, शिल्पशास्त्र और तन्त्रादि का भी संस्कृतसाहित्य में समावेश है। ललितकलाओं में भी संस्कृ

---

[594] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, १०/४२
[595] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, १०/४३

तसाहित्य का नाम सर्वोपरि है। संस्कृतसाहित्य की खोज ने ही तुलनात्मक भाषाविज्ञान को जन्म दिया। संस्कृत के अध्ययन ने ही भाषाशास्त्र को उत्पन्न किया। दर्शन और अध्यात्म संस्कृ तसाहित्य की मौलिक देन है। यथा–

"वेदे श्रीसहिता सतां हितरता रामायणे चर्च्चिता ,
काव्ये नृत्यरता कलासु लसिता नृत्याङ्गनाभूषिता ।
देवानां कविता कवीन्द्रवनिता या भारते पूजिता ,
सेयं भारतभारती कथय भोः कस्याद्य नास्तीप्सिता ।।"[596]

संस्कृतभाषा आज भी करोड़ों मनुष्यों के जीवन में ओतप्रोत है। कश्मीर से कन्याकुमारी तक समस्त जनता के धार्मिक कृत्य संस्कृतभाषा के माध्यम से ही सम्पादित होते हैं। हम अपने ईष्टदेव को संस्कृतभाषा में स्मरण करते हैं। गर्भाधान से लेकर अन्त्येष्टिपर्यन्त– 'षोडशसंस्कार' संस्कृतभाषा द्वारा ही सम्पादित होते हैं। जैन और महायानी–बौद्धों का समस्त साहित्य संस्कृत में ही है। आज भी हजारों विद्वान्, नानाविध विषयों में संस्कृतभाषा की गरिमा को निरन्तर बढ़ाकर अपनी और संस्कृत की महिमा से अलंकृत हो रहे हैं। अतः संस्कृतभाषा एक जीवन्त, सशक्त, स्वयं समर्थ, विपुलसाहित्यवाहिनी, सरस, सरल और अमर भाषा है। ज्ञान एवं विज्ञान से परिपूर्ण आध्यात्मिक विद्या भारत की उन्नति के लिये आज भी प्रासंगिक है। यथा–

"अध्यात्मविद्या ऋषिवृन्दवन्द्या ,
विज्ञानसम्भारविशेषयुक्ता ।
आवश्यकी भारतभाग्यभानोः ,
विकाशानार्थं ह्यधुनाऽपि काले ।।"[597]

व्यवहारोपयोगि–ज्ञानविज्ञानविषयकसाहित्य संस्कृतभाषा में उपलब्ध है। धर्म, अध्यात्म, विज्ञान, औषधिविज्ञान, स्वरविज्ञान, गणित, ज्योतिष आदि विषयों में योग्यतापूर्ण साहित्य संस्कृतसाहित्य में प्राप्त है। यह सुरभारती भारतवर्ष की आत्मस्वरूपा है जो देवनदी गंगा के सामान चिरकाल से भारतभूमि को पवित्र कर रही है। यथा–

"इयं प्रसिद्धा सुरभारती सा ,
ह्यात्मस्वरूपा खलु भारतस्य ।
प्रवाहिता जह्नुसुतेव कालात् ,
ज्ञानेन विज्ञानमलङ्करोति ।।"[598]

गीर्वाणी 'संस्कृत' के अनुपम स्वरुप को प्रस्तुत करते हुए, मानवीकरण द्वारा संस्कृत का सांगोपांग वर्णन करते हुए, महाकवि हुए कहते हैं कि समस्त वेद इस दिव्य भाषा के मूल हैं। समस्त स्मृतिग्रन्थ इसके चरण है। षड्वेदांग इसकी दिव्य देह है। समस्त साहित्य, कान्ता के

---

[596] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, १०/४४
[597] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, १०/४०
[598] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, १०/४१

सुन्दर केशों के सामान इसकी शोभा को बढ़ाता है। ज्ञान एवं विज्ञान इसके दो नेत्र है। रसपूर्ण ह्रदययुक्त, गंगा माँ के सामान पवित्र यह देववाणी 'संस्कृतभाषा' 'राष्ट्रभाषा' की उपाधि को प्राप्त करने के योग्य है। यथा–

"या नित्या वेदमूला स्मृतिचयचरणा दिव्यवेदांगदेहा ,
या कान्ता काव्यकेशाऽगणितगुणकरा ज्ञानविज्ञाननेत्रा ।
तन्त्रे यन्त्रे प्रसिद्धा रसभरह्रदया या च गंगेव पूता ,
सा माता वन्दनीया जगति विजयतां संस्कृता राष्ट्रभाषा ।।"[599]

यह प्रसिद्ध 'सुरभारती'–'संस्कृतभाषा' भारत की आत्मा है। इसकी उन्नति के बिना भारत की पूर्ण प्रगति सम्भव नही है। अतः इसका परिरक्षण एवं संवर्धन हम सब का कर्त्तव्य है। यथा–

"अस्माकमेव विदुषाञ्च सतां समेषां ,
कर्त्तव्यमस्ति सुरगीः परिरक्षणार्थम् ।
नोचेच्च पूर्णप्रगतिः प्रियभारतस्य ,
नैवं हि संभवति संस्कृतमन्तरेण ।।" [600]

ठ. नैतिकचिन्तन –

वर्तमान समय में जब नैतिकमूल्यों के पतन के कारण कुकर्म, पापाचार, हिंसा आदि के प्रसार से समस्त पृथ्वी व्याकुल है, तब समीक्ष्य महाकाव्य दया, प्रेम, लोकसंग्रह, निष्कामकर्म, परोपकार, सुख–दुःख आदि नैतिकमूल्यों के महात्म्य द्वारा समाज का पथप्रदर्शन करता है।

महाकाव्य के प्रथमसर्ग में महाकवि ने आदिशंकराचार्य के जननिसेवा के दृष्टान्त द्वारा माता–पिता की सेवा करना सन्तति का नैतिक कर्त्तव्य बताया है। यथा–

"त्वदीयपादाब्जयुगं हि सेवितुं ,
स शंकरः धर्मविचारतत्परः ।
जगद्गुरुः संसृतिवाङ्पराङ्मुख–
स्तथापि कालाड़िगृहं जगाम स ।।"[601]

जीवन में चाहे कितनी भी बाधायें आयें किन्तु मनुष्य को अपने कर्त्तव्यपथ पर अडिग रहना चाहिए। यथा–

"कर्त्तव्यं करणीयमेव नियमैराराध्यतां शृंङ्खला, विघ्नाः सन्तु तथापि..... ।।"[602]

यह जीवन एक कुरुक्षेत्र है। प्रत्येक्षाप्रत्येक्ष रूप से अनेक शत्रुओं से मनुष्य सदैव आवृत्त रहता है। इस प्रकार के शत्रुओं का अविलम्ब नाश अत्यावश्यक है। यथा–

---

599 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, १०/४५
600 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, १०/३६
601 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, १/६०
602 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, १०/४८

"**तथाविधानां क्षय एव वैरिणा–**

मवश्यकार्यो हि विलम्बनं विना ।

तदर्थमेकस्तु भवेत्सुसज्जितः

स्वजीवनस्यैव महारणाङ्गणे ।।"[603]

कामक्रोधलोभमोहादि के कारण मनुष्य नैतिक रूप से पतित होकर संसार में कष्ट भोगता रहता है। यथा–

"**कामेनजर्जरितजीर्णविदग्धदेहः ,**

क्रोधस्य नर्कवलयेन विशीर्णचित्तः ।

संसारजालपतितः प्रथितो मनुष्यो ,

मोहान्धकारकुहरे भ्रमति प्रकामम् ।।"[604]

महोदधिमहिमावर्णन के अवसर पर महाकवि ने 'त्याग' एवं अपरिग्रह का विवेचन किया है। यथा–

"**भक्तप्रदत्तमपि वस्तु न तद्गृहीत्वा,**

सन्दर्शितं व्रतमहोऽप्यप्रिग्रहस्य।

त्यक्तेन तेन कुरुषे सततं हि भोगं

हे त्यागमूर्त्तिजलधे ! तव सुप्रभातम् ।।"[605]

निरन्तर चलते रहना ही जीवन है और ठहरना मृत्यु। यथा–

"**चलादतीतो नियमो निरन्तरः ..... ।।"**[606]

जिसने जन्म लिया है उसकी मृत्यु निश्चित है, किन्तु आज्ञानी मनुष्य इस निगूढतत्व को न जानकर समीपासन्न मृत्यु के भयभीत हो दुःखी होता रहता है। यथा–

"**जनस्य मृत्युर्भविता ध्रुवो भवे ,**

यतोऽस्ति जन्मस्फुटमेतदञ्जसा ।

अतो न दुःखं कुरु वाऽश्रुविमोचनं ,

यदेव बीजं ह्यशुभस्य सन्ततम् ।।"

"**यतः सदाऽज्ञानतमोमया वयं ,**

न भाति मृत्युः पुरुषस्य कर्हिचित् ।

इतीह सत्यं कथमेव वेदितुं ,

निगूढतत्त्वं न कदाऽपि शक्नुमः ।।"[607]

---

[603] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, १/११०
[604] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, २/२४
[605] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ४/२५
[606] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ५/६
[607] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ५/३३–३४

जीवन में सुख–दुःख का क्रम चलता रहता है। हमें दुःख में धैर्य रखना चाहिये। दुःख को बाँटने ने दुःखजनित पीड़ा कम हो जाती है। मनुष्य को 'स्थितप्रज्ञ' के समान सुख–दुःख में समभाव रहना चाहिए। यथा–

"प्रायो दुःखं सकलसमये कारणं मङ्गलस्य ।।"[608]

"प्रोक्ते दुःखे भवति हि लघु प्राणबन्धोः समीपे ।।"[609]

"सुखं च दुःखं सकलं समानं ,
यस्यास्ति नूनं स्थितधीः स विद्वान् ।।"[610]

मनुष्य कालक्रमेण निर्मलस्वभाव को पूर्णतया त्यागकर, पराश्रित होकर, महान् लोगों के महान् गुणों को भूलकर, स्वयं को सभी कार्यों में कुशल मानकर, अकारण ही ईर्ष्या एवं शत्रुता से ग्रसित होकर, काल का ग्रास बनता है। युवावस्था अथवा प्रौढ़ावस्था में अपनी जवानी में मत्तचित्त होकर मनुष्य; जिस चतुरता, बुद्धिमत्ता एवं कार्यकुशलता का प्रदर्शन करता है; वह वास्तव में उसकी आत्मप्रवञ्चना मात्र है। स्वार्थपूर्ति एवं पराश्रित होने के साधन मात्र है। निजबाल्यभाव को त्यागकर एवं स्वयं को सभी कार्यों में दक्ष मानकर आज मनुष्य दर्प में जीता है। यथा–

"कालक्रमेण मनुजः निजबाल्यभावं ,
सन्त्यज्य संसृतिविषाक्तमना यदास्ते ।
विस्मृत्य विश्वमहनीयगुणाँस्तदा स ,
ह्यात्मानमेव मनुते बहुकर्मदाक्षम् ।।"[611]

ड. वैश्विकचिन्तन –

प्रस्तुत महाकाव्य में महाकवि ने अपनी वैश्विकचिन्तनयुक्त उदात्त वैश्विक भावनाओं को भी उजागर किया है। संसार को 'विश्वबन्धुत्व', 'सत्यं–शिवं–सुन्दरम्' 'सत्य', 'अहिंसा' आदि का पाठ पढ़ाते हुए विश्वमङ्गल की मनोकामना को प्रकट करके आत्मनिष्ठ वैश्विक भावनाओं को अभिव्यक्त किया है। आज संसार में सर्वत्र व्याप्त छलप्रपन्च वैश्विक शान्ति एवं सद्भाव के लिए खतरा है। यथा–

"वाणी विषण्णहृदया छलनाप्रपञ्चै–
रुचार्यते भूवि यदा मनुजैस्तु सर्वैः ।
न ज्ञायते हि कियती क्रियतेऽत्र हानिः ,
सद्भावशान्तिविषये विषदग्धविश्वैः ।।"[612]

---

608 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ५/७५
609 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ५/७६
610 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ६/६५
611 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, २/४८
612 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, २/४३

आज चीन, अमेरिका आदि विकसित राष्ट्र एवं पाकिस्तान जैसे आतंकवादप्रायोजकराष्ट्र, विश्वबन्धुता की भावना को भूलकर धन, बल एवं इर्ष्या के कारण मिथ्या गर्व से गर्वित दृष्टिगत होते हैं। समीक्ष्य महाकाव्य पर्यावरणप्रदुषण, आतंकवाद, आर्थिकमंदी, शस्त्रीकरण आदि वैश्विक खतरों की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट करता है। यथा–

"विश्वं विश्वनियामकस्य मधुरं सौन्दर्यसंशोभितं ,
मोहात् सम्प्रति विस्मरत्यनुदिनं विश्वप्रियां भावनाम् ।
देशाः सर्वविधाः भवन्तु धनिनः किं वा दरिद्रा भुवि ,
ते स्व स्व प्रतिरक्षणे विचलिताः गर्वेण किन्तूद्धता ।।"[613]

समीक्ष्य महाकाव्य 'वसुधैवकुटुम्बम् ', 'विश्वभवत्येकनीडम्' आदि उदात्त एवं निष्णान्त वैश्विक भावनाओं प्रदीप्त करते हुए, 'जीओ और जीने दो' की परिकल्पना को साकार करते हुए, सत्य और अहिंसा का पाठ पढ़ाते हुए, 'सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः' की वैश्विक मंगलकामना करता है। यथा–

''लोकास्सन्तु निरामयाश्च सुखिनः दारिद्रयविध्वसनात्
भद्रं तत्परिकल्पयन्तु सकलं भद्राणि शृण्वन्तु ते।
भद्रञ्चाचरणं तथा विचरणं भवेत् प्राणिनां
.....।।"[614]

ढ. आर्थिकचिंतन –

'अर्थ' द्वितीय पुरुषार्थ है। 'अर्थ' प्राणियों की सुखसमृद्धि और धर्म का मूल है। जीवन को सुखमय बनाने के लिये अर्थ की आवश्यकता होती है। अर्थ से ही जीवन का सौंदर्य उत्कृष्ट होता है। यदि अर्थ की कमी रहती है, तो जीवन सारहीन हो जाता है। धर्म और काम अर्थ के संयोग से ही सफल होते हैं। अर्थवान के लिये कोई भी वस्तु अप्राप्य नहीं है। इसलिए त्रिवर्ग (धर्म–अर्थ–काम) में अर्थ ही सबसे ज्यादा महत्त्वपूर्ण ळें यथा–

"अर्थो हि नाम जनजीवनमुख्यलक्ष्यम् ,
अर्थेन संचलति संसृतिधर्मचक्रम् ।।"[615]

अर्थ में बड़ी शक्ति है, अर्थवान मनुष्य सबकुछ करने में समर्थ होता है। किन्तु बड़े दुःख का विषय है कि आज मनुष्य धर्मपूर्वक अर्थार्जन न करके, लोभ के वसीभूत हो अर्थदास बन गया है। लोगों की अर्थलोलुपता को देखकर सहृदयों का हृदय विदीर्ण हो जाता है। अर्थलोभी दानवरूप धारण कर दीनहीनों का शोषण करते हैं। यथा–

"विश्वे वित्तमदैः कदा क्षमतया लोभेन भोगेन वा ,
केचिद् दानवरूपिणः परिणितिं विस्मृत्य वा दूर्गतिम् ।

---

[613] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ८/५५
[614] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, १०/४७
[615] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ४/२७

नित्यं दीनजनान् निरन्नविकलान् विश्वेश्वतः संभावान् ,

सानन्दं खलु शोषयन्ति भगवन् ! क्वास्ते त्वदीया दया ।।"[616]

आज अर्थलोलुपता के कारण खाद्यान्न, वायु, पेयजल, शाकादि समस्त पदार्थ दूषित, पर्युषित एवं गुणहीन हो गये हैं। जब अर्थोपार्जनप्रणाली स्वार्थयुक्त हो जाती है तब सामाजिकसमता की मर्यादाएं छिन्न–भिन्न होने लगती है तथा शोषण, अराजकता एवं अव्यवस्था का दौर चल पड़ता है। वैज्ञानिक प्रगति के परिणामस्वरूप अनियोजित तरीके से अनेक उद्योगों की स्थापना हुई, जिसके परिणामस्वरूप प्रदूषण में तीव्र वृद्धि हुई। इस प्रकार के विकाश से लाभ की अपेक्षा हानि अधिक होती है। उद्योगों में अत्यधिक परिश्रम एवं धन के निवेश के उपरान्त उत्पादित होने वाली विलासतापूर्ण वास्तूओं से भारत की दरिद्र जनता का कोई सरोकार नही होता है। वस्तुतः दरिद्रों का शोषण एवं धनार्जन ही आधुनिक उद्यमियों का मुख्य उद्देश्य बन गया है। यथा–

"शिल्पेभ्यो ह्युपलभ्यते बहुपरिश्रान्त्या च वित्तव्ययात् ,

सत्यं तद् व्यवहार्यवस्तुसकलं साक्षाद्विलासप्रियम् ।

तत्किं क्रेतुमहो दरिद्रजनताद्वारा सदा शक्यते ?

दीनानां श्रमशोषणाय धनिनां लाभाय शिल्पं मतम्।।"[617]

समीक्ष्य महाकाव्य बड़े–बड़े उद्यमियों द्वारा देश का धन लूटने की ज्वलन्त समस्या कि ओर हमारा ध्यान आकृष्ट किया है। उद्योग की स्थापना के नाम पर बड़े–बड़े उद्यमियों द्वारा बैंकों तथा सरकार से ऋण तथा अनेक सुविधाएं प्राप्त की जाती है। लालची एवं बेईमान उद्यमी अपने उद्योगों को कूटरचितनीति द्वारा हानि में बताकर बैंकों द्वारा दिए गए हजारों करोड़ की ऋण–राशि को, देश की व्यवस्थाओं में व्याप्त भ्रष्टाचार की मदद से, गैरनिष्पादितराशि (NPA) घोषित करवाकर अपनी देनदारी से मुक्त हो जाते हैं। फिर पुनः बड़ी ही चतुरता से एवं भ्रष्टाचार की मदद से नए उद्योगों की स्थापना के लिए नया ऋण लेने में सफल हो जाते हैं। इनका यह क्रम चलता रहता है। यथा–

"रुग्णाः शिल्पगणास्ततः स तु परं शिल्पाधिकारी ऋणी ,

सम्प्राप्य क्षतिपूरणं बहुविधैर्मिथ्याप्रकारैः पुनः ।

किंचिद्वंचकचंचकत्वपटुतामिष्टक्षणे दर्शयन् ,

कृत्वा वित्तचयं स मौलिक ऋणान्मुक्तो भवेल्लीलया ।।"[618]

वर्तमान धनलोलुपता का समाधान प्रस्तुत करते हुए महाकवि कहते हैं कि धन को सही और शुद्ध कार्यों में लगाया जाना चाहिए। धर्म के अनुकूल होकर जिस अर्थ का उपार्जन किया जाता है; वही शुद्ध अर्थ होता है। उसके सेवन से मनुष्य में मानवता बनी रहती है। यही अर्थ की प्रधानता है। मनुष्य को अपरिग्रह की भावना से त्यागपूर्वक अर्थार्जन करना चाहिए। यथा–

---

[616] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ८/५६
[617] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ८/२७
[618] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ८/३०

"त्यक्तेन तेन कुरुषे सततं हि भोगः ।।"[619]

किसी भी राष्ट्र की आर्थिकसमृद्धि में पर्यटनउद्योग से प्राप्त में विदेशी मुद्रा का महत्वपूर्ण योगदान होता है। किन्तु आतंकवाद, पर्यावरणप्रदूषण, साम्प्रदायिकता आदि के कारण पर्यटकों के अभाव में आर्थिकहानि होती है। यथा–

"अस्माकञ्च ततः महान् समुदयः जातश्च सार्थं परं ,
विश्वे पर्यटनस्य शिल्पशिखिनः माहात्म्यमाविष्कृतम् ।
तीर्थेष्वद्य प्रदूषितेषु विगते सौन्दर्यजाते पुनः ,
क्वास्ते पर्यटनं? क्व तत्र रसिकाः !मुद्रा क्व वैदेशिकी ।।"[620]

ण. गंगानदिचिन्तन–

समीक्ष्य महाकाव्य नदियों के प्रति हमारी संवेदनशीलता को बनाये रखने में महत्वपूर्ण योगदान देता है। मनुष्य की स्वार्थान्धता एवं लालच ने हमारे जलस्त्रोतों को किस प्रकार प्रदुषित किया है, इत्यादि तथों की ओर समीक्ष्य महाकाव्य हमारा ध्यान आकृष्ट करता है।

समीक्ष्य महाकाव्य के अष्टमसर्ग में महाकवि ने हमे देवनदी गंगा की वास्तविक दुर्दशा दिखाकर गंगा के प्रति लोकचिंतन का महनीय प्रयास किया है। देवनदी के नाम से सम्बोधित–'गंगानदी' करोड़ों भारतीयों की जीवनरेखा हैं एवं संसार में भारत का प्रतिनिधित्व करती है। गंगानदी न केवल भारत अपितु सम्पूर्ण विश्व की संस्कृति की परिचायिका है। यथा–

"गंगाऽस्मदीयमहनीयपरम्परायाः ,
प्राणप्रदा सकलमंगलहेतुभूताः ।
प्रक्षाल्य विष्णुपदपद्मयुगं सदा सा ,
शम्भोः परं शिरसि राजति दिव्यदेहा ।।"[621]
"जगद्भुवां जीवनमन्त्रधारिणी,
स्वलक्ष्यमर्गस्य पवित्रकारिणी ।
समस्तसंसारतृषानिवारिणी,
.....।।'' [622]

गंगानदी के प्रति लोगों के हृदयों में जो अपार श्रद्धा एवं अटूट विश्वास है, उसे उत्पन होने में वर्षों लगते हैं। धर्म, आध्यात्म, की बात हो या संस्कृति की, समस्त विश्व में भारत को आदर की दृष्टि से देखा जाता है, और देवनदी गंगा इस उदात्त भारतीयसंस्कृति की प्रतीक है। अगर इसे खतरा हुआ तो हमारी संस्कृति खतरे में पड़ जायेगी। यथा–

"प्रेमत्यागतपःपवित्रवलया या भारते संस्कृतिः ,

---

619 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ४/२५
620 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ८/४७
621 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ८/६
622 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, १/८३

स्वीयभ्रातृपदे च विश्वमखिलं सम्बोधयन्ती सती ।

या गङ्गासलिलेन साकममला चोद्भासमानाऽभवत् ,

सा किं संस्कृतिरेव नश्यति न वा गाङ्गे जले दूषिते।।"[623]

हिमालय से लेकर बंगाल की खाड़ी तक प्रवाहक्षेत्र में गंगानदी के २३०० किमी० से भी अधिक लम्बें तटों ने हजारों गाँवों, नगरों–महानगरों के करोड़ों लोगों को जीवन दिया है। भारत के अर्थतंत्र, अध्यात्म एवं सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन में गंगानदी का विशेष स्थान है। किन्तु इसके तटों पर स्थित उद्योगों से होने वाले प्रदुषण के कारण गंगानदी की दुर्दशा किसी से छिपी नहीं है। यथा–

"यस्याः वारि दिने महर्षिरचितात् पुष्पांजलेः निस्सरन् ,

माधुर्य्यैर्मधुरं बभूव तदहो पुण्यातिपुण्यं स्वतः ।

तत्किन्त्वद्य समस्तनेत्रपुरतः दुर्गन्धतः दूष्यते ,

नित्यं कानपुरस्य चर्मकलतः निस्सारितैः दूषणैः ।।"[624]

ऐसा नही है कि गंगानदी की पवित्रता बनाये रखने हेतु सर्वकारों ने प्रयास नही कियें हों। वर्ष १९८५ से २०१४ तक नीतिनिर्माताओं ने विभिन्न योजनाओं पर लगभग ४००० करोड़ रूपये पानी की तरह बहाये किन्तु सब व्यर्थ ही रहा। यथा–

"गङ्गातोयविशोधनाय विहिताः दैर्घ्यातिगा योजना,

मुख्यास्ते विनियोजिताः पुनरहो वैज्ञानिकाः जागृताः ।

सीमाहीनधनव्ययाय नितरां केन्द्रं स्वयं प्रस्तुतं,

किन्तु क्वास्ति फलं ! पवित्रमखिलं गाङ्गाजलं दूषितम् ।।"[625]

वर्ष २०१४ में केंद्र सर्वकर द्वारा "नमामि गंगे" परियोजना गंगाशुद्धि में मील का पत्थर साबित हुई। इस परियोजना में २०००० करोड़ रुपये का प्रावधान रखा गया। सन् २०२० में जलशक्ति मंत्रालय का गठन कर जलप्रदूषणोन्मूलन हेतु ३०७०० करोड़ का बजट आवंटित किया जाना इस ओर सरकार के गम्भीर प्रयासों को दर्शाता है। किन्तु आज भी गंगाजल का हरिद्वार के उपरान्त पीने योग्य नहीं होना सरकारी प्रयासों पर प्रश्नचिन्ह लगाता है।

वस्तुतः नदियाँ स्वयं अपना परिष्करण करने में समर्थ है, अगर विद्युत उत्पादन आदि हेतु इसके प्रवाहक्षेत्र को अवरुद्ध न किया जावे एवं इसके मार्ग में पड़ने वाले उद्योगों एवं आबादी के कचरों को इसमें गिरने से रोका जावे। इसका ताजा उदाहरण हमारे समक्ष है– जब वैश्विक महामारी–'कोरोना' (कोविड–19) के कारण जब महीनों तक सम्पूर्णदेश (एवं विश्वमें भी) तालाबन्दी (लॉक–डाउन) रहा; तब गंगा आदि नदियों का जल स्वतः ही शुद्धता के उस स्तर तक पहुँच गया जिसको सरकारे अनेकों दशकों के प्रयासों में भी हजारों करोड़ रूपये खर्च करके

---

[623] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ८/३८

[624] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ८/५०

[625] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ८/२३

भी न प्राप्त कर सकीं थी। गंगा की पवित्रता को बनाये रखना हम सब का दायित्व एवं कर्त्तव्य भी है। इसे केवल औपचारिकता न समझा जाये। गंगानदी भारतमाता की धमनियों की तरह है। अगर धमनियों में कोई भी रूकावट आती है तो नुकसान देश का ही होगा। गंगा नदी के प्रदूषण के कारन देश का जीवन खतरे में पड़ सकता है। गंगानदी हमारे लिए भूत, वर्तमान और भविष्य है। इसके बिना हमारा अस्तित्व संभव नहीं है। इसकी रक्षा करना स्वयं की रक्षा करना है। यथा–

"हे गंगे ! यदि ते समस्तसलिलं नित्यं भवेन्निर्मलं,
माता सा च रसा भविष्यन्ति तदा वीर्यान्विता भास्वरा ।
तेजो विच्छुरितं विभास्यति तदा भूमण्डले पावनं ,
पूर्णाकाशतलं वितानमखिलं सम्पत्स्यते प्राणिनाम् ।।"[626]

त. श्रीजगन्नाथसंस्कृतिचिंतन–

आचार्य हरेकृष्ण सतपथी ने समीक्ष्य महाकाव्य के तृतीय, चतुर्थ, पञ्चम एवं षष्ठमसर्गों में श्रीजगन्नाथसंस्कृतिचिंतन प्रस्तुत किया है। नीलाद्रिक्षेत्र, नीलांचलक्षेत्र, श्रीक्षेत्र, पुरुषोत्तमक्षेत्र, नृसिंहक्षेत्र, तुलसीक्षेत्र, महोदधिक्षेत्र इत्यादि विभिन्न नामों से प्रसिद्द, 'श्रीजगन्नाथतीर्थ 'की अपनी एक संस्कृति है। महाकवि ने "भारतनीलांचलमहिमवर्णनम्" शीर्षक तृतीयसर्ग में श्रीजगन्नाथतीर्थ की महिमा का वर्णन करते हुए इस पवित्रक्षेत्र को भारतभूमि का गौरव बताया है। यथा–

"प्रिय प्रयावः प्रथमं हि तत्स्थलं ,
वसन्ति यत्रैव समस्त देवता ।
तदेव साक्षात् पुरुषोत्तमाभिधं ,
विराजते भारतधाम गौरवम् ।।"[627]

पवित्र नीलांचलक्षेत्र में प्रवेश करते ही दूर से ही जगन्नाथ प्रभु के मंदिर पर सुशोभित विजयध्वजा एवं दिव्यचक्र 'सुदर्शन' के दर्शन होते हैं। यह सुनील सुदर्शनचक्र सभी दिशाओं से आत्माभिमुखी प्रतीत होता है, जो भक्तों को दूर से ही आकर्षित करता है। भगवान् पुरुषोत्तम का आयुध– 'सुदर्शन' समस्त गर्वों के नाश एवं विनम्रता के रक्षण हेतु अहर्निश जाग्रतावस्था में रहता है; इससे ज्ञात होता है कि श्रीजगन्नाथसंस्कृति में दुष्टों का नाश तथा विनम्रजनों का रक्षण किया जाता है। यथा–

"सुनीलचक्रं पुरुषोत्तमायुधं,
विशोभितं मन्दिरमुग्धमूर्धनि।
समस्तगर्वक्षयनम्ररक्षण–
परायणे जाग्रतमस्त्यहर्निशम्।।"[628]

---

626 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ८/७४
627 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ३/१६

"महोदधिमहिमवर्णनम्" नामक चतुर्थसर्ग तथा "सागरसमर्पणम्" शीर्षक पञ्चमसर्ग में महाकवि ने पुरीतीर्थस्त 'सागर', जिसे जगन्नाथसंस्कृति में "महोदधि" कहा जाता है, की महिमा का वर्णन किया है। श्रीहरि एवं लक्षी का निवास स्थल यह महोदधि श्रीजगन्नाथप्रभु के पवित्र काष्ठमयशरीर को किनारे पर प्रवाहित करके लेन के कारण प्रभु के समान पूज्यनीय है।

यह समस्ततीर्थों स्वामी, प्राणियों रक्षक, रम्यनायक, संसार का पोषक, मुक्तिदायक, भक्तवत्सल, सर्वरत्नों के निधि है जो अनेक सम्पदाओं को अपने गर्भ मैं संचित रखता है एवं यथाकाल उनको जनता को अर्पित कर उनका पोषण करता है। महोदधि की यह त्यागभावना श्रीजगन्नाथसंस्कृति के चमत्कार को प्रस्तुत करती है। यथा–

"संस्थाप्य रत्ननिचयान् निजगर्भमध्ये,
काले प्रदाय भुवि तानखिलान् जनेभ्यः ।
संसारपोषणमहो कुरुषे महात्मन् !
हे तीर्थराज ! जलधे ! तव सुप्रभातम् ।।"[629]

'भारतायनम्' महाकाव्य के "दारुमहोत्सवमन्दिरनिर्माणम्" शीर्षक षष्ठमसर्ग में पवित्र दारुखण्ड से प्रभुविग्रहनिर्माण, पुरी मंदिरनिर्माण, मूर्तिस्थापना एवं श्रीजगन्नाथरथयात्रा की कथा का वर्णन है। राजा इन्द्रधुम्न स्वप्न में प्रभु के आदेशानुसार महोदधितट से पवित्र 'दिव्यदारुखण्ड' को रानीगुण्डिचा के महल में लाकर वहाँ प्रभु के काष्ठविग्रहों का निर्माण करवाते हैं। रानीगुण्डिचा अत्यन्त भक्तिभाव से प्रभु जगनाथ की की पूजार्चना करती है, इसलिए प्रभु की जन्मवेदिका को श्रीजगन्नाथसंस्कृति में 'श्रीगुण्डिचामन्दिर' के नाम से जाना जाता है।

राजा इन्द्रधुम्न ने पुरी नामक स्थल पर कल्पवृक्षों से आच्छादित भूमि पर भव्य 'जगन्नाथमन्दिर' का निर्माण करवाया तथा जन्मवेदिका 'रानीगुण्डिचा महल' से प्रभुजगन्नाथ, प्रभुबलभद्र तथा देवी सुभद्रा के विग्रहों को रथों के द्वारा ले जाकर श्रीजगनाथमन्दिर में स्थापित किया। जन्मवेदिका 'रानीगुण्डिचा महल' से श्रीजगनाथमन्दिर 'पुरी' तक की इस यात्रा एवं यात्रा के मार्ग को श्रीजगन्नाथसंस्कृति में अत्यन्त पवित्र माना जाता है। यथा–

"य एव साक्षाद्वड़दाण्डधूलिभिः,
विभूषितः पावनचन्दनोपमैः ।
स सौख्यमाप्नोति च तस्य सन्ततं ,
विनाशमाप्नोति समस्तकल्मषम् ।।"[630]

थ. तीर्थचिन्तन–

---

628 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ३/२५
629 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ४/५
630 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ६/३०

हमारे तीर्थ हमारी सांस्कृतिकचेतना के ज्योतिर्मय स्तम्भ हैं। तीर्थों पर सांस्कृतिकचेतना सर्वाधिक सक्रिय, जीवन्त और मुखर होती है। समीक्ष्य महाकाव्य में महाकवि ने तीर्थों एवं तीर्थयात्राओं के फल पर प्रचुरता से प्रकाश डाला है।

भारतीय तीर्थों का प्रमुख उद्देश्य एक ही रहा है कि जनसामान्य को ईश्वरीय अवतारों का परिचय मिले और वे ईश्वरीय अवतारों से प्रेरणा पा सकें। इसी कारण तीर्थस्थलों को अवतारों का 'भावनाशरीर' कहा जाता है, एवं इसी श्रद्धा भावना से उनके सानिध्य का प्रयास भी किया जाता है। प्रस्तुत महाकाव्य में महाकवि ने इसी प्रयोजन से; पुरी, द्वारिका, बद्रीनाथ, काशी, मथुरा, रामेश्वरम्, मदुरै, श्रीशैल, श्रीरंगपटनम्, तिरुपति अदि मोक्षदायक तीर्थों का महात्म्य प्रस्तुत किया है। महाकाव्य के तृतीयसर्ग से षष्ठमसर्ग पर्यन्त महाकवि ने परमपवित्र, पुरुषोत्तमधाम, जगन्नाथ'पुरी' का विस्तृत वर्णन किया है। यथा–

"प्रिय प्रयावः प्रथमं हि तत्स्थलं ,
वसन्ति यत्रैव समस्त देवता ।
तदेव साक्षात् पुरुषोत्तमाभिधं ,
विराजते भारतधामगौरवम् ।।"[631]

"कामप्रदा वन्दितरूक्मिणीयं ,
मोक्षप्रदा केशवकान्तिरेषा ।
अर्थप्रदा सागररम्यवेला ,
धर्मप्रदेयं नगरी नमस्या ।।"[632]

आज तीर्थों की काया विद्यमान है किन्तु उनकी आत्मा प्रसुप्त है। यद्यपि प्रसुप्ति मृत्यु नही है किन्तु इस स्थिति में होने वाला आचरण मृत्युवात् होता है। इन दिनों तीर्थों पर स्नान, दर्शन, दान–पुण्य आदि के लिये विशेष अवसरों पर पहुँचने वाली भीड़ तो पूर्ववत् है; लेकिन पूर्व एवं वर्त्तमान की दोनों परिस्तिथियों में वही अन्तर है जो सुसुप्ति और जागृति में होता है। आज भी प्रथाएं तो सब पूर्ववत् हैं, किन्तु प्रेरणाएं बुझ गयी हैं। आज सांस्कृतिकचेतना के प्रमुख स्त्रोत्र–"तीर्थ" अपना मूल स्वरुप खो रहे हैं। अगर इन तीर्थों को खतरा हुआ तो हमारी संस्कृति खतरे में पड़ जायेगी। यथा–

"प्रेमत्यागतपःपवित्रवलया या भारते संस्कृतिः ,
स्वीयभ्रातृपदे च विश्वमखिलं सम्बोधयन्ती सती ।
या गङ्गासलिलेन साकममला चोद्भासमानाऽभवत् ,
सा किं संस्कृतिरेव नश्यति न वा गाङ्गे जले दूषिते ।।"[633]

---

631 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ३/१६
632 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ७/१५
633 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ८/३८

समीक्ष्य महाकाव्य में भारतभूमि के गौरवान्वित महात्म्य के चित्रण प्रसंग में महाकवि ने भारतभूमि पर स्थित प्रसिद्द धार्मिकतीर्थों श्रीकृष्णजन्मभूमि– मथुरा, श्रीपुरुषोत्तमभूमि– जगन्नाथपुरी, श्रीकृष्णकर्मभूमि–द्वारिका, श्रीवद्रीनाथ, श्रीरामजन्मभूमि–अयोध्या, रामेश्वरम्, प्रभुवेंकटेशभूमि–तिरुपति, श्रीपेरुम्बुदुर, पांडुरंगतीर्थ आदि प्रसिद्द वैष्णवतीर्थों की महिमा को प्रस्तुत किया है। यथा–

"अस्मिन् पवित्रमभारतपुण्यखण्डे ,
वृन्दावनेन मधुरे मथुराप्रदेशे ।।"[634]
समस्ततीर्थेषु तदेव साम्प्रतं ,
प्रसिद्धमास्ते हि च तत्र राजते ।
अनन्तसंसारभयार्तिहारकः ,
स्वयं जगन्नाथप्रभुर्महान् ।।"[635]
"पश्याद्य तत्सम्प्रति भारतस्य ,
प्रसिद्धतीर्थं दिशि पश्चिमस्याम् ।
श्रीकृष्णराजप्रियराजधानी–
द्वारावतीभूषितमप्रमेयम् ।।"[636]
"हिमालयस्योपरि राजमानः ,
तपश्चरन् लोकहिताय नित्यम् ।
वन्दावहे वहे श्रीविभुबद्रिनाथं ,
प्रत्यक्षरूपं खलु साधानायाः ।।"[637]
"रामानुजोऽनुपमभक्तगणाग्रगण्यः ,
प्रज्ञावतार इति ते शरणं प्रपन्नः ।
ख्यातोऽभवत् हि शरणागतितत्ववेत्ता ,
श्रीवेंकटेश! भगवन् शरणं प्रपद्ये ।।"[638]
"हिमालयस्योपरि राजमानः ,
तपश्चरन लोकहिताय नित्यम् ।
शान्ताकृतिर्वै कमनीयमूर्तिः ,
श्रीवद्रिनाथो जयति प्रकामम् ।।"[639]
"लंकाप्रयाणसमये सह बन्धुवृन्दैः ,
यत्र स्वयं हि कृतवान् प्रभुरामचन्द्रः ।

---

634 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, २/३२
635 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ३/१७
636 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ७/२
637 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ७/३५
638 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, १०/२४
639 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ७/२०

श्रद्धास्पदेन मनसा पितृतर्पणं तत् ,

रामेश्वरं भवति तत्परिपूर्णतीर्थम् ।।"[640]

"सप्ताद्रिभूषण विभूषितभूमिभागः ,

नानाद्रुमार्चितसुरम्यशरीररागः ।

वैराग्यभक्तिधिषणाध्युषितान्तरात्मा ,

धर्मातिथिस्तिरुपतिर्जयति प्रकामम् ।।"[641]

इसी प्रकार समीक्ष्य महाकाव्य में सोमनाथ, काशी–विश्वनाथ, एकाम्बरनाथ–कांचीपुरम्, मिनाक्षिमन्दिर–मदुरै, श्रीकालहस्ती, मल्लिकार्जुन–श्रीशैलम्, कनकदुर्गा, श्रृंगेरी, कुम्भकोणम् आदि शैवतीर्थों का चिंतन उपस्थित हुआ है। यथा–

"सौराष्ट्रं प्रणमामि यत्र भगवान् श्रीसोमनाथः स्वयं ,

ज्योतिर्लिंगतनुस्वरूपकलया चात्मानमाविष्कृतम् ।।"[642]

"श्रीविश्वनाथनगरी च गरीयसी सा ,

विद्याविनोदविभवाऽतिपवित्रदेहा ।

गंगातरंगशुभंगतिधन्यधन्या ,

वाराणसी विजयतां विवुधैर्वरेण्या ।।"[643]

"एकाम्रनाथो भगवान् महेश्वरः ,

विराजते यत्र स मोक्षकारण : ।

पुराणशास्त्रेषु सुवर्णिता पुरी ,

विभाति काञ्चीनगरी गरीयसी ।।"[644]

"श्रीशैलमन्दिरमनोहरपुण्यभूमौ ,

देवः स्वयं लसति शंकरमल्लिकाख्यः ।

देवी च तत्र जननी भ्रमरात्मिका सा ,

स्थित्वा करोति जगते मधुसर्जनानि ।।"[645]

द. वैदिकचिन्तन–

समीक्ष्य महाकाव्य में अनेक प्रसंगों में वैदिकचिन्तन उपस्थित होता है। जननी तथा जन्मभूमि महिमा वर्णन में अथर्ववेद के पृथ्वीसूक्त में विवेचित उदात्त चिन्तन को महाकवि ने स्वशब्दों में अभिव्यक्त किया है। यथा–

---

640 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, १०/१

641 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, १०/२०

642 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ७/१

643 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ८/१

644 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ६/१३

645 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ६/७२

''विस्तीर्णरम्यतमभारतभूमिरेषा
या जन्मभूमिरतुला जननी समेषाम् ।।''[646]
''पिता पिता नो हि पिताऽम्बरः परं
न साऽस्ति माता जननी वसुन्धरा।।''[647]
यदा नमामि प्रिय भारतं मम,
तदा स्वरूपं प्रतिभाति तेऽम्बिके ।।"[648]

"पिता मदीयः गगनोपमो महान् ,
वसुन्धरा मे जननी धुरन्धरा ।।"[649]
"माता हि नो जगति भारतभूमिरेषा ,
तस्या वयं हि नियतं शिशुपुत्रकल्पाः ।।"[650]

समीक्ष्य महाकाव्य में प्रकृति को देवी के रूप में प्रतिष्टित करते हुए वृक्षों, पर्वतों, लताओं आदि में देवी–देवताओं का निवास बताया गया है। यथा–

''तरौ लतायाम् तृणे च पर्वते
फले च मूले कुसुमे पुनः कदा
निवासमाप्नोति विलासविभ्रमा–
हरिप्रिया सा जननी य न चंचला ।।''[651]

महाकाव्य के ''महोदधिमहिमवर्णनम्'' इत्याख्य चतुर्थसर्ग में महोदधिमहिमावर्णनप्रसंग में ऋग्वेद के प्रसिद्द– नासदीयसूक्त (१०.२९) में विवेचित सृष्काटि की उत्पत्ति का चिन्तन प्रस्तुत हुआ है। यथा–

"सृष्टेरनादिसमये न यदा किमासीत् ,
नो पादपः न च लता ग्रहमण्डलं च ।
धृत्वा तदा जलमयीं स्वतनुं त्वमासीः ,
हे ब्रह्मनीलजलधे ! तव सुप्रभातम् !।।"[652]
''देवाः पितृगणाः ग्रहतारकाश्च
सर्वे त्वदीय कृपया प्रभवन्ति विश्वे।।''[653]

---

646 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, २/१
647 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, १/८५
648 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, १/१
649 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, १/८५
650 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, १/१२०
651 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, १/८२
652 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ४/२१
653 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ४/१५

इस प्रकार समीक्ष्य महाकाव्य में आचार्य हरेकृष्णशतपथी ने राष्ट्रीय, पौराणिक, सामाजिक, धार्मिक, दार्शनिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक, नारी, प्रकृति, पर्यावरण, संस्कृत– भाषामूलक, नैतिक, वैश्विक, पर्यावरण आदि विचारोद्भाविक लोकचिन्तन को प्रस्तुत किया है।

.....इति पञ्चमोऽध्यायः.....

उपसंहार

अ. 'भारतायनम्' महाकाव्य का वैशिष्ट्य

आ. संस्कृतसाहित्य में 'भारतायनम्' का स्थान–

इ. प्रस्तुत शोधकार्य की उपादेयता

उपसंहार

केन्द्रीय साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत, २१वीं सदी का प्रतिनिधि महाकाव्य– 'भारतायनम्' का समीक्षात्मक अध्ययन करने का अवसर प्राप्त होना मेरा महद् सौभाग्य है। राष्ट्रियसंस्कृतविद्यापीठ (अब विश्वविद्यालय) तिरुपति से शिक्षाप्राप्ति के समय वर्ष २००८ में मुझे प्रस्तुत महाकाव्य के प्रणेता 'महाकवि आचार्यहरेकृष्णशतपथी जी के महान व्यक्तित्त्व को समीप से जानने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। तत्समय ही 'भारतायनम्' महाकाव्य का प्रथम संस्करण प्रकाशित हुआ, 'भारतायनम्' महाकाव्य ने मुझे अत्यन्त प्रभावित किया। शोधमार्गदर्शक द्वारा स्वरुचि का विषय शोधप्रबन्ध हेतु चुनने को कहने के उपरान्त मैनें "आचार्यहरेकृष्ण शतपथी कृत 'भारतायनम्' महाकाव्य का समीक्षात्मक अध्ययन" विषय को अपने शोधप्रबन्धविषय के रूप में चुना। शोधसमिति द्वारा उक्त विषय को शोधकार्य हेतु स्वीकृत किये जाने के उपरान्त तिरुपतिविद्यापीठ, पुरीविद्यापीठ, श्रीजगन्नाथसंस्कृत– विश्विद्यालय पुरी, आदि स्थानों की शोधयात्राओं द्वारा; महाकवि की कृतियों के अध्ययन एवं साक्षात् भेंट द्वारा; कोटा, जयपुर, दिल्ली आदि स्थानों के विश्वविद्यालयों के पुस्तकालयों, दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी आदि से विषयवस्तु से सम्बंधित ग्रन्थों एवं सन्दर्भग्रंथो के गम्भीर अध्ययन द्वारा सूचनाओं का संग्रहण किया गया। संगृहीत सूचनाओं का अतिगम्भीरतया अध्ययन करके मार्गदर्शक डॉ० गीतारामशर्मा जी के अद्वितीय मार्गदर्शन एवं सहयोग से दिन–रात के अथक परिश्रम द्वारा एकत्रित सूचनाओं को प्रबन्ध का स्वरूप दिया गया।

''आचार्यहरेकृष्णशतपथी कृत 'भारतायनम्' महाकाव्य के समीक्षात्मक अध्ययन'' को मेरे द्वारा पंच–अध्यायों में विभक्त किया गया है। प्रथम अध्याय में 'भारतायनम्' महाकाव्य के प्रणेता आचार्य हरेकृष्णशतपथी जी का व्यक्तित्व–कर्तृत्त्व वर्णित है। व्यक्तित्व के अन्तर्गत कविवंश, जन्म, जन्मस्थान, छात्रजीवन अथवा अध्ययनकाल, राजकीयसेवाओं, उपलब्धियों, प्राप्त सम्मानों एवं प्रशस्तियों का वर्णन किया है। कर्तृत्व के अन्तर्गत आचार्य हरेकृष्ण शतपथी जी की मूल, सम्पादित, अनूदित, टीका, तथा अन्य कृतियों के विषय में संक्षिप्त जानकारी प्रस्तुत की गयी है।

द्वितीय अध्याय में भारतायनम् महाकाव्य की सर्गानुसारी कथावस्तु संक्षिप्तरूप में प्रस्तुत की गयी है। तृतीय अध्याय में प्राचीन एवं अर्वाचीन काव्यशास्त्रों में विवेचित महाकाव्यस्वरुप का संक्षिप्त विवेचन, 'भारतायनम्' महाकाव्य स्वरूपविवेचन तथा अर्वाचीन एवं प्राचीन महाकाव्य–लक्षणों के आधार पर भारतायनम् महाकाव्य का 'महाकाव्यत्त्व' प्रतिपादन भी तृतीय अध्याय में किया गया है। प्राचीन काव्यशास्त्रों के अन्तर्गत अग्निपुराण, काव्यालंकार, काव्यदर्पण, काव्यप्रकाश एवं साहित्यदर्पण तथा अर्वाचीनकाव्यशास्त्रों के अन्तर्गत अभिराजयशोभूषणं,

अभिनवकाव्यालंकारसूत्र एवं डॉ० रहसबिहारी द्विवेदी द्वारा विवेचित महाकाव्यस्वरुप को प्रस्तुत किया गया है।

चतुर्थ अध्याय में भारतायनम् महाकाव्य का "काव्यशास्त्रीय–विवेचन" प्रस्तुत किया गया है; जिसके अन्तर्गत क्रमशः महाकाव्य के इतिवृत्त, पात्रयोजना, छन्दयोजना, अलङ्कार– योजना, अङ्गीरस एवं अङ्गभूतरसों, भाषासौष्ठव, तथा गुण–दोष विवेचन प्रस्तुत किया गया है। महाकवि ने महाकाव्य लक्षणों के अनुरूप ही समीक्ष्य महाकाव्य को १० सर्गों में समाहित किया है। प्रत्येक सर्ग के अन्त में भावी कथा की सूचना प्रदत्त है। महाकवि ने अपनी उदात्त कल्पनाओं का साधिकार उपयोग करते हुए, मानवीकरण द्वारा देवतुल्य, विश्वगुरुत्त्व को प्राप्त, महान्, उदात्त चरित्र युक्त, सज्जनचरित्र, समुज्ज्वलचरित्र, विश्वविख्यात, श्रेष्ठ–गुणान्वित भारतमातृभूमि के नायकत्व सहित अनेक पात्रों का चित्रण किया है। भारतभूमि की महिमा से मण्डित इस महाकाव्य में 'शिशु', 'प्रभु जगन्नाथ', 'नृप इन्द्रद्युम्न', 'महोदधि, 'काशीविश्वनाथ', 'आदिशंकराचार्य', 'कामकोटिमठाधीश–शंकराचार्य चन्द्रशेखरेन्द्रसरस्वती (अष्टम)', 'प्रभु वेंकटेश्वर', 'श्रीकृष्ण', 'द्वारिकाधीश' 'प्रभु बद्रीनाथ', 'अर्जुन', 'बालक ध्रुव', 'भगवान विष्णु', 'प्रभु सोमनाथ', 'महात्मा गाँधी', भगवान एकाम्बरनाथ', 'मध्वाचार्य', 'चालुक्य राजा सोमेश्वर' 'रामानन्दाचार्य', 'महामना पण्डित मदनमोहनमालवीय' 'विश्वावसु' आदि पुरुष पात्रों के रूप में गणित हैं। स्त्री पात्रों में 'जननी', 'माता पार्वती', 'यशोदा', 'देवी लक्ष्मी' 'देवी मीनाक्षी', 'रानी गुण्डिचा', 'देवी मल्लिका' 'देवी सुभद्रा' आदि उपस्थित हैं। साथ ही मानवीयकरण द्वारा 'नीलाञ्चलक्षेत्र', 'सुदर्शनचक्र', 'महोदधि', 'सागर', 'पुरीतीर्थ', 'द्वारिकातीर्थ', 'रामेश्वरम्', 'पृथ्वी', 'देवनदी गंगा', 'साधना', 'सौराष्ट्र', 'काशीतीर्थ', 'काञ्चीपुरम्, 'तिरुपतितीर्थ', 'स्वर्णभूमि–कर्णाटक' आदि पात्रों का आधुनिक रीति से चित्रण किया गया है। महाकाव्य के सभी पद्य छन्दबद्ध हैं। वंशस्थ, उपजाति, वसन्ततिलका पर विशेष अनुराग प्रदर्शित करते हुए, प्रतिसर्ग को एक ही छन्द में समाहित करने का महनीय प्रयास तथा सर्गान्त में छन्द में परिवर्तन भी किया गया है।
अनुप्रासोपमायमकरूपकोत्प्रेक्षा– स्वभोवोक्ति० इत्यादि विंशत्यधिक अलंकारों का प्रयोग महाकवि की अलंकारयोजना में सिद्धहस्तता का का प्रमाण है। शब्दालंकारयोजना के आधार पर महाकवि की 'शब्दों का जादूगर' कहा जावे तो अतिश्योक्ति नही होगी। शान्तरस अँगीरस तथा अन्य रस अंगभूत रसों के रूप में वर्णित है। प्रसादगुण एवं वैदर्भीरीति में गुम्फन के कारन समीक्ष्य महाकाव्य जनसाधारण के लिए भी ग्राह्य है।

पंचम अध्याय में 'भारतायनम् महाकाव्य में लोकचिन्तन' विषयान्तर्गत राष्ट्रीय, पौराणिक, सामाजिक, धार्मिक, दार्शनिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक, नारी, प्रकृति, पर्यावरण, संस्कृत–भाषामूलक, नैतिक, वैश्विक, पर्यावरण आदि अनेक लोकचिन्तनों का विवेचन प्रस्तुत किया गया है। संसार में ' भारतभूमि' के आदर्शचरित्रस्थापना के साथ ही देश में व्याप्त वैमनस्य, वैर–भाव, अविश्वास, देशभक्तिभावना का पतन, आतंकवाद, क्षेत्रवाद, पर्यावरणप्रदूषण, महिलाओं के प्रति बढ़ते अपराध, भ्रष्टाचार, दीन–हीनों के शोषण आदि बुराइयों का समूलनाश महाकवि आचार्यहरेकृ

ष्णशतपथी का मुख्योद्देश्य प्रतीत होता है। इस महाकाव्य का उद्देश्य राष्ट्रीयता एवं देशप्रेम की भावना को बल देने के साथ–साथ आतंकवाद, भ्रष्टाचार, असहिष्णुता, धार्मिकवैमनस्य, पर्यावरणप्रदूषण जैसी ज्वलन्त समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करना है। प्रस्तुत महाकाव्य भारतीय चिन्तनपरम्परा, राष्ट्रभक्ति, राष्ट्रस्वातन्त्र्य, राष्ट्रीय, पौराणिक, सामाजिक, धार्मिक, दार्शनिक, राजनैतिक,सांस्कृतिक, नारी, प्रकृति, पर्यावरण, संस्कृतभाषामूलक, नैतिक, वैश्विक, पर्यावरण आदि अनेक विषयों से काव्य रसज्ञों को परिचित कराता है। राष्ट्रनीति, धर्म, दर्शन, पर्यावरण आदि अनेक विषय भी प्रस्तुत महाकाव्य में समाहित है।

समीक्ष्य महाकाव्य में भारत के तीर्थों के महात्म्य एवं उदात्त भारतीय संस्कृति का महाकवि ने यथास्थान वर्णन किया है। "सर्वे भवन्तु सुखिनः.." वचन को आधार बना कर महाकवि ने भारतवर्ष की "वसुधैवकुटुम्बकम्", "विश्वबंधुत्वम्" जैसी उदात्त वैश्विक भावनाओं को प्रस्तुत किया है।

अ. 'भारतायनम्' महाकाव्य का वैशिष्ट्य–

आचार्य हरेकृष्णसतपथी विरचित 'भारतायनम्' महाकाव्य महाकाव्यत्व के सर्वगुणों से सम्पन्न है। 'भारतायनम्' महाकाव्य में दशसर्गों में कुल ६५६ पद्यों में महाकवि आचार्य हरेकृष्ण सतपथी ने भारतमातृभूमि के वैभव, औदार्य एवं गौरव का शांतकान्त चित्रण मधुर पदावलियों द्वारा किया है। यथा–

"माता हि नो जगति भारतभूमिरेषा ,
तस्या वयं हि नियतं शिशुपुत्रकल्पाः ।
स्तन्यामृतं मधुमयं समवाप्य तस्याः ,
सर्वे भवन्तु सुखिनः शिशवः तदङ्के ।।" [654]

प्रस्तुत महाकाव्य में प्राचीन एवं अर्वाचीन काव्यशास्त्रीयों द्वारा प्रतिपादित महाकाव्य के समस्त लक्षण दृष्टिगत होते हैं। महाकवि ने मानवीकरण द्वारा भारतभूमि को महाकाव्य के नायक के रूप में प्रस्तुत किया है। वस्तुनिर्देशानात्मक मंगलाचरण, सज्जनप्रशंसा, खलनिन्दा, चतुर्वर्गफलाभिव्यक्ति, संध्या–रात्रि–चन्द्र–सूर्या–सागर–नदी–पोखर–वन– नगर–प्रयाण आदि मनोरम वर्णन महाकाव्य स्वरुप के प्रकाशक हैं। यथा–

''नदनदीगिरिकन्दरवारिधि–
परिधिवर्धितकाननराजितम् ।
प्रकृतिसुन्दरसौरभशाश्वतं,
विजयतां भूवि नः प्रियभारतम् ।।"[655]

प्रस्तुत महाकाव्य के सर्ग न तो अत्यल्प है, और न ही अतिदीर्घ। प्रथमसर्ग में कुल १२० पद्यों में जननी तथा जन्मभूमि का महात्म्य वर्णित है। द्वीतीयसर्ग में मातृ–शिशु के वत्सल्यतापूर्ण

---

[654] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, १/१२०
[655] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ३/१०

सम्बन्धों के वर्णन के साथ ही बदलते सामाजिक दृष्टिकोण को भी महाकवि ने ५३ पद्यों बड़ी ही सुन्दरता से चित्रित किया है। तृतीयसर्ग में भारतभूमि के वैभव के साथ ही पवित्रक्षेत्र नीलाञ्चल एवं जगन्नाथपुरी का भक्तिमय वर्णन महाकवि ने कुल ३७ पद्यों में समाहित किया है। चतुर्थसर्ग में महोदधि की महिमा के वर्णन प्रसंग को महाकवि ने ४६ छंदों में सरल सरस भाषा में प्रस्तुत किया है। पञ्चमसर्ग में ८१ पद्यों में आत्मनिवेदन प्रस्तुत करते हुए महाकवि ने अनेक दार्शनिक विचार अभिव्यक्त किये है, जो अनुकरणीय है। यथा–

"गते वसन्ते भविता पिकः पिकः ,
पुनश्च शुष्के सलिले सरः सरः ।
गतेऽपि तेले नितरां दशा दशा ,
जरावतीर्णे च पुनर्जनो जनः ।।"[656]

षष्ठसर्ग में राजा 'ईन्द्रधुम्न' द्वारा जगन्नाथ प्रभु के विग्रहनिर्माण एवं श्रीजगन्नाथ–मन्दिरनिर्माणकथा को महाकवि ने ४० छंदों में प्रस्तुत किया है। सप्तमसर्ग में कुल ३६ पद्यों द्वारिका, वद्रीनाथ एवं साधना की महिमा का वर्णन महाकवि ने किया है। कुल ८१ पद्यों में निबद्ध महाकाव्य के अष्टमसर्ग में काशीमहात्म्य एवं गंगा की दुर्दशा के वर्णन के साथ–२ वर्तमान की प्रदुषण, आतंकवाद, क्षेत्रवाद, शोषण, भ्रष्टाचार, साम्प्रदायिकता आदि अनेक ज्वलंत समस्याओं के साथ–२ समाधान भी प्रस्तुत करता है। नवमसर्ग में कामकोटिपीठ के ६८वें शंकराचार्य स्वामी चन्द्रशेखरेन्द्रसरस्वती "अष्टम" के सम्पूर्ण जीवनचरित्र को महाकवि ने कुल १११ पद्यों में प्रस्तुत किया है। दशमसर्ग में कुल ५५ पद्यों में कर्नाटक सहित तमिलनाडु, केरल, एवं आन्ध्रप्रदेश के महत्त्वपूर्णतीर्थों के वर्णन के साथ ही संस्कृत भाषा का महात्म्य महाकवि ने वर्णित किया है। यथा–

"इयं प्रसिद्धा सुरभारती सा ,
ह्यात्मस्वरूपा खलु भारतस्य ।
प्रवाहिता जह्नुसुतैव कालात् ,
ज्ञानेन विज्ञानमलङ्करोति ।।"[657]

आधुनिक शैली में रचित 'भारतायनम्' महाकाव्य २१वीं सदी का सर्वश्रेष्ट महाकाव्य है। आधुनिक काव्यशास्त्रियों द्वारा प्रस्तुत महाकाव्यलक्षणों के अनुरूप प्रस्तुत महाकाव्य में नायक का उदार एवं सज्जनाश्रित चरित्र वर्णित है। प्रस्तुत महाकाव्य में प्रधान नायक–'भारतभूमि' के धर्मार्थकाम –त्रिवर्ग के संपादन में शिशुस्वरूपा–जनता, पवित्र नीलांचलक्षेत्र, महोदधि, प्रभुजगन्नाथ, राजा इन्द्रधुम्न, द्वारिका, वद्रीनाथ, काशी, आदिशंकराचार्य, कामकोटिपीठ कांचीपुरम के ६८वें शंकराचार्य स्वामी चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वति'अष्टम', भगवान वेंकटेश आदि अतीव सुन्दर चरित्रचित्रण महाकवि ने समीक्ष्य महाकाव्य में किया है। सभी काव्यरस महाकाव्य के अंगभूत रसों के रूप में वर्णित हैं।

---

656 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ५/२७
657 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, १०/४१

महाकाव्य के स्वरूपनुसार शान्तरस प्रस्तुत महाकव्य का अंगीरस है; महाकाव्य के प्रत्येक पद्य में शान्तरस की भावना अन्तर्निहित है। यथा–

"वरं धरातल्पमनल्पकाकृतिः ,
वरं तरोस्त्वगवसनं मनोहरम् ।
वरं परं ज्ञानमहोऽस्तु भोजनं ,
वरं विचित्रंच सदाऽस्तु जीवनम् ।।"[658]

छन्दयोजना की दृष्टि से "नानावृत्तमयं क्वापि सर्गः कश्चन दृश्यते" इति लक्षण को प्रस्तुत महाकाव्य में महाकवि ने सम्यकता से विहित किया है। प्रत्येक सर्ग में छन्दों का सम्यक विधान है। समीक्ष्य महाकाव्य के दश सर्गों में कुल ६५६ पद्यों में कुल १३ छंदों का प्रयोग किया है।

प्रस्तुत महाकाव्य में सर्गयोजना अत्यंत सुन्दर है। गोपुच्छ के सामान सुशोभित दशसर्गों में भारतभूमि के ऐश्वर्य–औदार्य–गौरव–वात्सल्य का वर्णन महाकवि ने अत्यन्त चारुता से किया है। महाकाव्य में वर्णित प्राकृतिकदृश्य इसके महाकाव्यत्व को द्विगुणित कर देते हैं। महाकाव्य का नामकरण महाकाव्य में वर्णित कथावस्तु के आधार पर किया गया है। यथा–

"इदं पवित्रं भूवि भारतायनं...।।" [659]

संसार में 'विश्वगुरु' की उपाधि से विभूषित –'भारतभूमि' के आदर्शचरित्र–स्थापना के साथ ही देश में व्याप्त वैमनस्य, वैर–भाव, अविश्वास, देशभक्तिभावना का पतन, आतंकवाद, क्षैत्रवाद, पर्यावरणप्रदूषण, महिलाओं के प्रति बढ़ते अपराध, भ्रष्टाचार, दीन–हीनों के शोषण आदि बुराइयों का समूलनाश महाकवि आचार्यहरेकृष्णशतपथी का मुख्योद्देश्य प्रतीत होता है। समीक्ष्य महाकाव्य में महाकवि ने उक्त सभी विषयों को साधने का प्रयास किया है। आधुनिक मनुष्य की स्वार्थभावना सर्वथा अनुचित है। इस महाकाव्य का उद्देश्य राष्ट्रीयता एवं देशप्रेम की भावना को बल देने के साथ–साथ आतंकवाद, भ्रष्टाचार, असहिष्णुता, धार्मिकवैमनस्य, पर्यावरणप्रदूषण जैसी ज्वलन्त समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करना है। महाकाव्य के यही गुण आधुनिक महाकाव्यों में समीक्ष्य महाकाव्य को विशिष्ट स्थान प्रदान करते हैं। संस्कृतसाहित्य में श्रृंगाररस एवं वीररस प्रधान महाकाव्य तो अनेक हैं, किन्तु समीक्ष्य महाकाव्य–'भारतायनम्' के समान शान्तरसप्रधान आधुनिक महाकाव्य विरल ही है।

साहित्य की सभी विधाओं में आचार्यहरेकृष्णशतपथी ने अत्युत्कृष्ट कोटि का लेखनकार्य किया है। महाकाव्यों, खण्डकाव्यों, सहित अनेकों अनुदित एवं सम्पादित रचनाओं से महाकवि श्री शतपथी ने संस्कृत–साहित्य–भण्डार में वृद्धि हेतु अपना अमूल्य योगदान दिया है। समीक्ष्य महाकाव्य के अतिरिक्त उनकी अन्य काव्यकृतियों के अनुशीलन के उपरान्त निःसंकोच कहा जा सकता है कि श्री शतपथी आधुनिक संस्कृत मनीषियों में अपना महत्त्वपूर्ण स्थान रखते हैं। भाषा प्रयोग में भी वे अतिविशिष्ट हैं। भाषा तो जैसे उनकी सहचरी है। संस्कृतभाषा पर उनका

---

[658] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ५/३०
[659] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, १/११७

असाधारण अधिकार है। साहित्य की विभिन्न विधाओं में उनके अद्वितीय योगदान को देखकर उनके नाम से पूर्व संलग्न 'आचार्य' विशेषण सार्थक ही प्रतीत होता है। वैदर्भीरीति एवं प्रसादगुणगुम्फन–शैली सहृदयजनों के मन को विमोहित करती है। यथा–

"सकललोकविनोदबर्द्धने ,
निखिलसंस्कृतशास्त्रसुरक्षणे ।
अविरतं प्रविधाय च साधनां ,
सविनयं चलातान्मम जीवनम् ।।[660]

आ. संस्कृतसाहित्य में 'भारतायनम्' का स्थान–

काव्यप्रणेता किसी विशेषप्रयोजन से, किसी विशिष्ट आदर्श को मन में रखकर काव्यरचना में संलग्न होता है। कवि की कृति को काव्य की संज्ञा से अभिहित किया जाता है;[661] और कवि को क्रान्तदृष्टा कहा गया है।[662] सृजनकार्य हेतु कवि के पास 'शब्द' नामक विशिष्ट साधन होता है, जिसके द्वारा वह काव्यजगत् का सृजन करता है।

महाकाव्य का उद्भव आदिकाव्य–'वाल्मीकिरामायण' से प्रारम्भ हुआ है। रामायण एवं महाभारत को उपजीव्य काव्य कहा जाता है। यद्यपि महर्षि 'पाणिनि' ने 'जाम्बवतिविजयम्' महाकाव्य लिखा, किन्तु प्राप्तिरभाव के कारण लौकिकसाहित्य में अश्वघोष को प्रथम महाकवि के रूप में देखा जाता है। 'बुद्धचरितम्' एवं 'सौन्दरानन्दम्' महाकवि अश्वघोषकृत दो महाकाव्य है। भारतीयविद्वान् कविकुलगुरु कालिदास को प्रथम महाकवि के पद पर स्थापित करते हैं। 'रघुवंशम्' एवं 'कुमारसम्भवम्' महाकवि कालिदास रचित दो महाकाव्य हैं। महाकवि कालिदासानन्तर भर्तृमेण्ठकृत 'हयग्रीववधम्', प्रवरसेन रचित 'सेतुबन्धम्', भारविकृत 'किरातार्जुनीयम्', कुमारदास रचित 'जानकीहरणम्', माघकृत 'शिशुपालवधम्', श्रीहर्ष रचित 'नैषधीयचरितम्', राजमल्लकृत 'जम्बूस्वामिचरितम्' आदि महाकाव्यों द्वारा १७वीं शताब्दी तक महाकाव्यपरम्पराप्रवाह दृष्टिगत होता है।

तदनन्तर कुछ काल के लिए यह प्रवाह क्षीणप्रायहो गया। वर्तमान में पुनः कतिपय संस्कृतविद्वानों ने महाकाव्यलेखन पर अपनी लेखनी चलाई है। महाराणाप्रताप, रानीलक्ष्मीबाई, महात्मागाँधी, पं० जवाहरलालनेहरू, रामकृष्णजानकी, इन्द्रविष्णुनारद, भारतभूमि आदि विषयों से सम्बन्धित अनेक महाकाव्यों का अनेक महाकवियों ने सृजन किया। इस महाकाव्य परम्परा में समीक्ष्य महाकाव्य– 'भारतायनम्' भी कथावस्तु, चरित्रचित्रण, रसछन्द–अलंकार आदि महाकाव्यलक्षणों की दृष्टि से अपना विशिष्ट स्थान रखता है।

'भारतायनम्' महाकाव्य आधुनिक शैली में रचित अत्युत्तम काव्यकृति है; जिसमें भारतभूमि की उदारता, वैभव एवं गौरव का शान्तकान्तचित्रण महाकवि ने पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया है।

---

660 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, १०/५४

661 ''कवेः कृतिः काव्यम''– 'काव्यतत्त्वविमर्शः' – आ.राममूर्तित्रिपाठी चौखम्बा २०१३ पृ.सं.१

662 "कविः मनीषी परिभूः स्वयंभू''– 'काव्यमीमांसा', राजशेखर चौखम्बा २००८ पृ.सं.१४

यह महाकाव्य संस्कृतमहाकाव्यपरम्परा में विशेष स्थान का अधिकारी है। प्रस्तुत महाकाव्य महाकवि के वैदुष्य एवं सृजनात्मकता से काव्य रसज्ञों को परिचित कराता है। विगत शताब्दी में सैंकड़ो महाकाव्य, खण्डकाव्य, दृश्यकाव्य आदि प्रकाशित हुए है, जिनमें भारतीय चिन्तनपरम्परा, राष्ट्रभक्ति, राष्ट्रस्वातन्त्र्य, राष्ट्रीय, पौराणिक, सामाजिक, धार्मिक, दार्शनिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक, नारी, प्रकृति, पर्यावरण, संस्कृतभाषामूलक, नैतिक, वैश्विक, पर्यावरण आदि अनेक विषय समाहित हैं।

प्रस्तुत महाकाव्य में काव्यसम्पदा सर्वत्र विलसित होती है। राष्ट्रनीति, धर्म, दर्शन, पर्यावरण आदि अनेक विषय भी प्रस्तुत महाकाव्य में समाहित है। जिस प्रकार सृष्टि के आदि में, समुद्रमंथन से अनेक रत्न प्राप्त हुए हैं; उसी प्रकार इस महाकाव्य के मुहुर्मुहु चिंतन एवं अध्ययन से नित–नवीन तथ्य एवं तत्त्वरत्न उपस्थित हुए हैं।

आचार्य हरेकृष्ण शतपथी ने अलौकिकी प्रतिभा का परिचय देते हुए 'भारतायनम्' रूपी अमूल्य महाकाव्यरत्न का उत्थापन संस्कृत साहित्य–सागर से किया है। वर्तमान में जब भारतमातृभूमि बाहर से पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवाद एवं अन्दर से नक्सलवाद, साम्प्रदायिकता, जातिवाद, भ्रष्टाचार, प्रदुषण आदि गंभीर समस्याओं से पीड़ित है; तब महाकवि ने राष्ट्रभक्ति को अंकुरित एवं पोषित करने वाले राष्ट्रीय चेतना के गीत गाकर प्रस्तुत महाकाव्य ने राष्ट्रीय एकता, अखण्डता एवं धार्मिकसौहार्द के लिए एक मील का पत्थर स्थापित किया है। यदि इस प्रकार से राष्ट्रभक्ति–भावना को परिपुष्ट करने वाले काव्य अनवरत रचे जाते रहे तो प्रत्येक भारतीय भारतराष्ट्र के स्वाभिमान एवं सम्मान की रक्षार्थ अपने आप को समर्पित कर देने को आतुर रहेगा; और कोई भी बाह्य अथवा आतंरिक दुश्मन भारतमातृभूमि को कुदृष्टि से देखने की कभी हिम्मत नहीं करेगा। यथा–

"पकिस्थानभयं बहिः खलु खलिस्तानप्रकम्पोऽन्तरे ,
गुर्खास्थानधिया धिया कलुषिताः धावन्ति केचित्पुनः ।
तस्मात्क्रन्दति भारतार्त्तजननी स्वाङ्गक्षयाशङ्कया ,
सन्तानस्तु कदा समर्थयति कः स्वमातृदेहक्षयम् ।।"[663]

श्री हरेकृष्णशतपथी विरचित 'भारतायनम्' महाकाव्य में सभी महाकाव्य लक्षण समग्ररूप से घटित होते हैं। प्रस्तुत महाकाव्य में महाकवि के पौढ़रचनाकौशल के दर्शन होते हैं। सहृदयजन इस महाकाव्य के पठनकाल में अलौकिकानन्दानुभूति प्राप्त करते हैं। युगानुरूप राष्ट्रियता की स्वभाविक कल्पना करते हुए महाकवि ने राष्ट्र एवं समाज के दिग्दर्शन हेतु यह श्लाघनीय प्रयास किया है। पुराणों की कथा द्वारा साम्प्रतिक प्रसंग में राष्ट्रीय, धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, पर्यावरण, संस्कृतभाषामूलक एवं स्त्री–चेतना हेतु महाकवि ने यह रचना की है जो स्वार्थान्ध एवं मूल्यहीन सामाजिकों को कर्त्तव्यपथोन्मुख करने हेतु कान्तासम्मितोपदेशवत् पथप्रदर्शन करते हुए,

---

[663] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ८/४६

आर्थिकमंदी, प्रदूषण, आतंकवाद, नश्लवाद, आदि गंभीर वैश्विक समस्याओं की ओर ध्यान आकृष्ट करते हुए समीक्ष्य महाकाव्य में "सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः" की मंगलकामना की गयी है। यथा–

"लोकाः सन्तु निरामयाश्च सुखिनो भद्राणि पश्यन्तु ते ,
भद्रं तत्परिकल्पयन्तु सकलं भद्राणि श्रृण्वन्तु ते ।।"[664]

भारत के तीर्थों के महात्म्य एवं उदात्त भारतीय संस्कृति का महाकवि ने यथास्थान वर्णन किया है। "सर्वे भवन्तु सुखिनः.." इस वचन को आधार बना कर महाकवि ने भारतवर्ष की "वसुधैवकुटुम्बकम्", "विश्वबंधुत्वम्" जैसी उदात्त भावनाओं को प्रस्तुत किया है। प्रसादगुण तथा वैधर्भी–रीति कथावस्तु के वर्णन में प्रतिपद दृष्टिगत होती है। महाकाव्य में की गयी अलंकार–योजना महाकवि की वाक्पटुता को प्रदर्शित करती है। यथा–

"तुङ्गागङ्गातरङ्गायितजलधिजलप्राणपपुण्यप्रवाहः ,
कावेरीवारिधारासुरभितवपुषा भूषितः नित्यपूतः ।
योऽसौ सौन्दर्यसम्पत्सकलविधमहामण्डनैर्मण्डिताङ्गः ,
सोऽसौ कालीप्रसन्नो जगति विजयतां स्वर्णकर्णाटदेशः ।।"[665]

"बहुरङ्गतरङ्गविभङ्गयुते ! ,
सुरसङ्गमपुण्यपयः परिधे ! ।
भवदुःखविमोचनकारण हे ! ,
प्रणतिस्तवदपारपदाब्जयुगे ।।"[666]

"तीर्थेषु धन्या नितरां सुपुण्या ,
करालवन्याकुलकालकन्या ।
सा द्वारिकामन्दिरमालमान्या ,
विराजते विश्वविभाग्रगण्या ।।"[667]

इ. प्रस्तुत शोधकार्य की उपादेयता–

मेरे द्वारा कृत ''आचार्य हरेकृष्ण शतपथी कृत भारतायनम् महाकाव्य का समीक्षात्मक अध्ययन'' शीर्षक प्रस्तुत शोधकार्य समाज एवं भावी शोधार्थियों के लिए अत्यन्त्युपयोगी साबित होगा। प्रस्तुत शोधकार्य की सामाजिक एवं शोधकार्य हेतु उपादेयता इस प्रकार है।

1. समाजिक उपादेयता :–

प्रस्तुत शोधप्रबन्ध में मेरे द्वारा प्रस्तुत महाकवि आचार्य हरेकृष्ण शतपथी का अनुकरणीय व्यक्तित्व समाज को राष्ट्रसेवा के लिए प्रेरित करेगा। महाकवि के कृर्तृत्व महाकवि के रचनासंसार से काव्यरसज्ञों को परिचित करवाकर संस्कृतसाहित्य में उनके अद्वितीय योगदान को रेखांकित

---

664 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ८/७१
665 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, १०/८
666 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ४/३१
667 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ७/८

करने का कार्य करेगा। प्रस्तुत शोधप्रबन्ध में प्रदत्त भारतायनम्' महाकाव्य की सर्गानुसरी संक्षिप्त कथावस्तु को पढ़कर कव्यानुरागी– सामाजिकजन महाकवि की कृतियों का अध्ययन करने को प्रेरित होकर संस्कृतसाहित्य के अध्ययन में रूचि प्रदर्शित करेंगे तथा विभिन्न काव्यशास्त्रियों द्वारा प्रस्तुत महाकाव्य– स्वरूपावलोकन करते हुए विभिन्न महाकाव्यों के नामावलोकन करते हुए समीक्ष्य महाकाव्य–'भारतायनम्' के महाकाव्यत्व से परिचित होंगे।

प्रस्तुत शोधकार्य समीक्ष्य महाकाव्य में विवेचित नायक एवं विभिन्न पात्रों को चरित्रचित्रण समाज के समक्ष प्रस्तुत करते हुए महाकाव्य की काव्यगत विशेषताओं यथा– कथावस्तु, छंदालंकाररसभाषासौष्ठव एवं गुणदोष से सामाजिकों के समक्ष प्रस्तुत करेगा, जिससे काव्यरसज्ञ सामाजिक काव्यरचना की ओर प्रेरित होंगे।

इस शोधप्रबन्ध में पंचमध्याय में 'भारतायनम् महाकाव्य में लोकचिन्तन' के अन्तर्गत प्रस्तुत 'राष्ट्रियचिन्तन' समाज में राष्ट्रभक्ति एवं राष्ट्रियचेतना का संचार करते हुए राष्ट्रीय एकता एवं अखंडता की भावना को पोषित करेगा जिससे वर्तमान में देश के समक्ष उपस्थित आतंकवाद, नक्सलवाद, प्रान्तवाद, क्षेत्रवाद, साम्प्रदायिकता जैसी ज्वलंत समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करेगा। सांस्कृतिकचिन्तन जहाँ समाज को भारतीय उदात्त संस्कृति से परिचित करवाते हुए हमारी संस्कृति पर समाज को गर्व करने का अवसर प्रदान करेगा वहीं पुराणैतिहासिकचिन्तन महान एवं अनुकरणीयपुराणैतिहासिक चरित्रों एवं कथाओं से समाज को परिचित करवाते हुए भारतवर्ष को पुनः विश्वगुरुत्व की पदवी पर देखने की भावना का समाज में संचार करेगा।

'सामाजिकचिंतन' समाज को समाजकल्याण की और प्रेरित करते हुए वर्तमान में प्रासंगिक मानवीयमूल्यों से परिचित करवाते हुए समाज को अन्धकार से प्रकाश की ओर गमनार्थ प्रेरित करेगा। 'दार्शनिकचिन्तन'– 'सृष्टिनिर्माणप्रक्रिया, पञ्चमहाभूत, जीवन के प्रति मनुष्य का दृष्टिकोण से समाज को परिचित करवाते हुए उसे परमसत्ता का साक्षात्कार करवाएगा। 'राजनैतिकचिन्तन' राजा इन्द्रदयुम्न, महात्मागाँधी, आदिशंकराचार्य, चन्द्रशेखरेन्द्रसरस्वती, द्वारकाधीश, प्रभुविश्वनाथ, प्रभुजगन्नाथ, प्रभुवेंकटेश, देशबन्धु चितरञ्जनदास, महात्मागांधि, मदनमोहनमालवीय आदि के द्वारा रामराज्य, सुशासन, स्वतंत्रता, समानता, न्याय, बंधुत्व, प्रजाहित, लोकतान्त्रिकमूल्य आदि की रक्षा हेतु कृत कार्यों से समाज को परिचित करवाकर समाज को निस्वार्थसेवा हेतु प्रेरित करेगा।

प्रस्तुत शोधकार्य में विवेचित 'स्त्री–चिन्तन' महिलासशक्तिकरण में महदुपयोगी साबित होगा। वर्तमान में जब स्त्रियों के प्रति बढ़ते अपराध समाज के लिए चिता का विषय बने हुए हैं, तब यह शोधकार्य 'यत्र नार्यस्तु पूजयन्ते रमन्ते तत्र देवता' जैसी उदात्त भावना का पोषक होगा। प्रस्तुत शोधप्रबन्ध में विवेचित प्रकृतिचिन्तन, पर्यावरणचिन्तन एवं गंगानदिचिन्तन वर्तमान की ज्वलन्तसमस्याओं–'प्रदूषण', वैश्विकतापवृद्धि (ग्लोबल वार्मिंग), महामारी, भूकम्प, बाढ़, सुनामी, आदि के खतरों से समाज को अवगत करवाते हुए उनके कारण एवं समाधान भी समाज के समक्ष प्रस्तुत करता है। वर्तमान में जब विश्व के दश सर्वाधिक प्रदूषित शहरों में से आठ शहर

हमारे देश के हों, प्रदूषण के कारण लोगों की रोगप्रतिरोधकक्षमता खत्म हो गयी हों, लोग असहाय होकर कोरोना, स्वाइनफ्लू आदि असाध्य महामारियों से ग्रसित हो मृत्यु के मुख में समा रहे हों तब प्रस्तुत शोधकार्य में विवेचित पर्यावरणचिंतन लोगों को भविष्य में होने वाले गम्भीर दुष्परिणामों की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट करते हुए प्रदूषण तथा उसके कारणों, दुष्प्रभाओं, निवारण के उपायों आदि का विवेचन कर पर्यावरणचिंतन में अपना महत्त्वपूर्ण अवदान देता है।

प्रस्तुत शोधकार्य में विवेचित 'संस्कृतभाषामूलकचिन्तन' देववाणी, गीर्वाणी, सुरवाणी आदि विशेषणों से विभूषित, स्वविकसित, समलंकृत या संस्कारयुक्त, संस्कृतभाषा, विश्व की सर्वाधिक 'पूर्ण' एवं तर्कसम्मतभाषा,–'संस्कृत' की महिमा से समाज को परिचित करवाते हुए भारतीयसंस्कृति का प्रतिपद संरक्षण तथा संवहन करने तथा भारतभूमि पर शान्ति एवं सौहार्द की स्थापना एवं भारतभूमि की विजय हेतु संस्कृतभाषा के समुत्थान की आवश्यकता को रेखांकित करता है। वर्तमान समय में जब नैतिकमूल्यों के पतन के कारण कुकर्म, पापाचार, हिंसा के प्रसार से समस्त पृथ्वी व्याकुल है तब प्रस्तुत शोधकार्य में विवेचित 'नैतिकचिंतन' समाज का पथप्रदर्शन करता है।

प्रस्तुत शोधप्रबन्ध में विवेचित 'वैश्विकचिन्तन' 'वसुधैवकुटुम्बकं', 'विश्वभवत्येकनीडम्' आदि उदात्त एवं निष्णान्त वैश्विक भावनाओं को प्रदीप्त करते हुए, 'जीओ और जीने दो' की परिकल्पना को साकार करते हुए, सत्य और अहिंसा का पाठ पढ़ाते हुए, 'सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः' की वैश्विक मंगलकामना के साथ पर्यावरणप्रदूषण, आतंकवाद, आर्थिक–मंदी, शस्त्रीकरण आदि वैश्विक खतरों की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट करता है। इस शोधकार्य में प्रस्तुत 'आर्थिकचिन्तन' बड़े–२ उद्यमियों के द्वारा भ्रष्टाचार एवं राजनैतिक साँठ–गाँठ से देश और समाज को ठगने की प्रवृत्ति, गैरनिष्पादितऋण (एनपीए), यंत्रीकरण के नुकसानों आदि की ओर समाज का ध्यान आकृष्ट कर कुटीर उद्योग के महत्व को रेखांकित करता है। प्रस्तुत शोधकार्य में विवेचित 'जगन्नाथसंस्कृति– चिन्तन' समाज को प्रभुजगन्नाथ की महिमा से अवगत करवाता है, तथा 'तीर्थचिन्तन' समाज को भारतभूमि के तीर्थों से परिचित करवाते हुए तीर्थयात्राओं के महत्त्व को रेखांकित करता है।

2. भावी शोधार्थियों के लिए उपादेयता :–

मेरे द्वारा कृत इस शोधप्रबन्ध का भविष्य में महाकवि आचार्य हरेकृष्ण शतपथी के व्यक्तित्व–कृर्तृत्व, उनकी रचनाओं, भारतायनम् महाकाव्य भाषासौष्ठव, रस, अलंकर, राष्ट्रीय, पौराणिक, सामाजिक, धार्मिक, दार्शनिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक, नारी, प्रकृति, पर्यावरण, संस्कृतभाषामूलक, नैतिक, वैश्विक, पर्यावरण, गंगानदिचिन्तन, श्रीजगन्नाथ– संस्कृतिचिंतन इत्यादि विषयों पर भावि–शोधार्थियों के लिए महदुपयोगी साबित होगा। देशवासियों में देशभक्तिभावना के सञ्चार के साथ ही वर्तमान में देश में व्याप्त पर्यावरणप्रदूषण, स्त्री–अपराध, आतंकवाद, धार्मिक असहिष्णुता, क्षेत्रवाद, आदि ज्वलन्त समस्याओं के समाधान में मेरे इस शोध का महत्त्वपूर्ण योगदान रहेगा।

प्रस्तुत समीक्षात्मक अध्ययन को मैनें महत्पर्यत्न से सम्पादित किया गया है। "आचार्य हरेकृष्ण शतपथी कृत 'भारतायनम्' महाकाव्य का समीक्ष्त्मक अध्ययन" शीर्षकाधारित इस शोधप्रबन्ध के

अन्तर्गत शोधार्थी द्वारा अर्वाचीनसंस्कृतसाहित्य के महर्षि, आचार्य, कविवर, महामहोपाध्याय, सरस्वतिपुत्र, वाग्मिप्रवर, आशुकवि, प्रशासकरत्न, आदि अनेक उपाधियों से विभूषित, अलौकिक प्रतिभासम्पन्न आचार्यहरेकृष्णशतपथी विरचित भारतायनम्' महाकाव्य का समीक्षात्मक अध्ययन करने का प्रयास किया है। अतः आन्तरिक संतुष्टि का अनुभव कर रहा हूँ।

.....इत्युपसंहार .....

शोधसारांश

शीर्षकः– "आचार्यहरेकृष्णशतपथी कृत 'भारतायनम् महाकाव्य का समीक्षात्मक अध्ययन"।।

"या नित्या वेदमूला स्मृतिचयचरणा दिव्यवेदांगदेहा ,
या कान्ता काव्यकेशाऽगणितगुणकरा ज्ञानविज्ञाननेत्रा ।
तन्त्रे यन्त्रे प्रसिद्धा रसभरहृदया या च गंगेव पूता ,
सा माता वन्दनीया जगति विजयतां संस्कृता राष्ट्रभाषा ।।"[668]

संस्कृतकाव्यामृतधारा वैदिककाल से प्रारम्भ होकर आदिकवि महर्षि वाल्मीकि के श्रीमुख से निसृत् होती हुई वर्तमान पर्यन्त अनवरतरूपेण प्रवाहित है। सद्भावनाप्रस्फुटन, सद्विचारोद्भवन, लौकिकभावसंरक्षण, कुरूतियों तथा आडम्बरों का खण्डन, प्राकृतिकसौन्दर्यावलोकन, नैतिकमूल्यों का स्थापन, जीवनसंरक्षण, परोपकारचिन्तन, सामाजिक, राजनैतिक एवं चरित्रनिर्माणादि विचारों का स्थापन संस्कृतसाहित्य ने ही किया है। जगत्हिकारिणी, भवोदधितारिणी, सद्बुद्धिकारिणी, दुर्बुद्धिनिवारिणी, मंगलसञ्चारिणी, द्रुतप्रभावकारिणी–'संस्कृतभाषा', विश्वज्ञानविज्ञान की अमूल्य निधि है। आदिकाल से वर्तमान पर्यन्त संस्कृतसाहित्य ने नित नव नूतनता का प्रदर्शन किया है। वर्तमानकाल में भी विश्वपुञ्ज पर हमारा संस्कृतसाहित्य प्रधानता ने विराजित है।

कव्याचार्यों द्वारा संस्कृतसाहित्य के मुख्यतः दो भेद किये जातें है :–१. वैदिक साहित्य; एवं २. लौकिक साहित्य। वेद, सहिता, ब्राह्मण, उपनिषद्, स्मृतियाँ, वेदांग आदि 'वैदिकसाहित्य' के अन्तर्गत आते हैं। लौकिक संस्कृतसाहित्य को काव्यशास्त्रियों द्वारा 'दृश्य एवं श्रव्य' दो मुख्य भागों में विभक्त किया जाता है। जिस काव्य को देखकर रसास्वादन किया जाता है, उन्हें दृश्य काव्य कहते है।[669] रुपक एवं उपरूपक दृश्य काव्य के अंतर्गत आते है। जिस काव्य के श्रवणमात्र से रसानुभूति प्राप्त हो उसे 'श्रव्यकाव्य' कहते है। गद्य (छन्दरहित), पद्य (छन्दबद्ध) एकं चम्पू (मिश्र) 'श्रव्यकाव्य' के तीन उपभेद है। गद्यकाव्य के पुनः कथा एवं आख्यायिका के रूप में दो उपभेद कहे गयें है।[670] इसी प्रकार पद्य–काव्य के भी महाकाव्य, खण्डकाव्य, गीतिकाव्य नामक तीन उपभेद कहे गये है।

उपर्युक्त काव्यभेदप्रभेदों में 'पद्य' काव्यविधा के अन्तर्गत आने वाली 'सर्गबद्ध रचना' को ही काव्यशास्त्रियों ने 'महाकाव्य' की संज्ञा दी है। स्वरुप एवं आकर की दृष्टि से विशिष्ट काव्य

---

668 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, १०/४५
669 विश्वनाथविरचित 'साहित्यदर्पण'–शालिग्रामशास्त्री, मो०ब०वाराणसी, प्र०२००४, ५/५
670 विश्वनाथविरचित 'साहित्यदर्पण'–शालिग्रामशास्त्री, मो०ब०वाराणसी, प्र०२००४, षड्–परि०,पृ.सं.१७०,३३२ एवं २२६

'महाकाव्य' कहलाता है। 'महाकाव्य' किसी जाति, समाज, प्रदेश और देश की सांस्कृतिक धरोहर से युक्त जीवन के सर्वांगस्वरुप को अभिव्यञ्जित करता है। महाकाव्य के अन्तर्गत काव्य–विधा की प्राय सम्पूर्ण घटनाएँ घटित होती हैं।

महाकाव्यों का उद्भव आदिकाव्य–'वाल्मीकिरामायण' से प्रारम्भ हुआ है। रामायण एवं महाभारत को उपजीव्य काव्य कहा जाता है। यद्यपि महर्षि 'पाणिनि' ने 'जाम्बवतिविजयम्' महाकाव्य लिखा, किन्तु प्राप्तिरभाव के कारण लौकिकसाहित्य में अश्वघोष को प्रथम महाकवि के रूप में देखा जाता है। 'बुद्धचरितम्' एवं 'सौन्दरानन्दम्' महाकवि अश्वघोषकृत दो महाकाव्य है। भारतीयविद्वान् कविकुलगुरु कालिदास को प्रथम महाकवि के पद पर स्थापित करते हैं। 'रघुवंशम्' एवं 'कुमारसम्भवम्' महाकवि कालिदास रचित दो महाकाव्य हैं। महाकवि कालिदासानन्तर भर्तृमेण्ठकृत 'हयग्रीववधम्', प्रवरसेन रचित 'सेतुबन्धम्', भारविकृत 'किरातार्जुनीयम्', कुमारदास रचित 'जानकीहरणम्', माघकृत 'शिशुपालवधम्', श्रीहर्ष रचित 'नैषधीयचरितम्', राजमल्लकृत 'जम्बूस्वामिचरितम्' आदि महाकाव्यों द्वारा १७वीं शताब्दी तक महाकाव्यपरम्पराप्रवाह दृष्टिगत होता है। तदनन्तर कुछ काल के लिए यह प्रवाह क्षीणप्रायहो गया। वर्तमान में पुनः कतिपय संस्कृत –विद्वानों ने महाकाव्यलेखन पर अपनी लेखनी चलाई है। महाराणाप्रताप, रानीलक्ष्मीबाई, महात्मागाँधी, पं० जवाहरलालनेहरू, राम, कृष्ण, जानकी, इन्द्र, विष्णु, नारद, भारतभूमि आदि विषयों से सम्बन्धित अनेक महाकाव्यों का अनेक महाकवियों ने सृजन किया। इस महाकाव्य परम्परा में आचार्य हरेकृष्णशतपथी प्रणीत, भारतमातृभूमि के गौरव एवं भारतीय अध्यात्म से परिपूर्ण 'भारतायनम्' महाकाव्य उल्लेखनीय महाकाव्य है। "भारतयनम्' महाकाव्य के लिये आचार्य हरेकृष्ण शतपथी को केन्द्रीय साहित्य अकादमी पुरस्कार[671] २०११ से फरवरी २०१३ में सम्मानित किया गया। इस महाकाव्य में दशसर्गों में ६५६ पद्यों में महाकवि ने भारतमातृभूमी के वैभव, औदार्य एवं गौरव का शांत–कान्त चित्रण मधुर पदावलियों द्वारा किया है। यथा–

"आसतोर्जलधेस्तटात् हिमगिरिं यावन्मुदा विस्तृतं ,
नित्यं प्राकृतिकैश्च वैभवचयैर्नानाविधैर्भूषितम् ।
ब्राह्मीपादपयोजमुग्धमधुपैर्विद्वद्भिरासेवितम्,
अस्माकं प्रियभारतं विजयतां सत्यं शिवं सुन्दरम् ।।"[672]

''आचार्यहरेकृष्णशतपथी कृत 'भारतायनम्' महाकाव्य के समीक्षात्मक अध्ययन'' शीर्षक शोधकार्य को मेरे द्वारा गुरुवर्य डॉ० गीताराम जी शर्मा के मार्गदर्शन से पंच–अध्यायों में विभक्त किया गया है। **प्रथम अध्याय** में 'भारतायनम्' महाकाव्य के प्रणेता आचार्य हरेकृष्णशतपथी जी का व्यक्तित्त्व एवं कर्तृत्त्व वर्णित है। व्यक्तित्त्व के अन्तर्गत कविवंश, जन्म, जन्मस्थान, छात्रजीवन अथवा अध्ययनकाल, राजकीयसेवाओं, उपलब्धियों, प्राप्त सम्मानों एवं प्रशस्तियों का वर्णन किया है। कर्तृत्त्व के अन्तर्गत आचार्य हरेकृष्णशतपथी जी की मूल, सम्पादित, अनूदित, टीका, तथा अन्य

---

671 www.sahitya-acadamy.gov.in//listofawardwinners.

672 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, समर्पणम् पृष्ठ संख्या 1

कृतियों के विषय में संक्षिप्त जानकारी प्रस्तुत की गयी है। आचार्यहरेकृष्णशतपथी का व्यक्तित्त्व सच्चे अर्थों में साहित्यिक एवं निजी रूप से भी गगनचुम्बी पहचान लिये हुए है। उन्होंने बनी बनायीं सरल रेखाओं का न तो अपने जीवन में और न ही साहित्य में अनुगमन किया है। जीवन के सहज और सरल रूप के समर्थक आचार्यहरेकृष्णशतपथी के जीवन का मूल आधार सरलता ही है। उनका रचना संसार अति–विस्तृत एवं विविध है। उनकी वक्तव्य कला असाधारण है। वे पाण्डित्य से अलंकृत विचक्षण विद्वान् हैं। उनमें काव्यत्त्व एवं भावनाओं का उत्तम समन्वय है। यथा–

"स्वसुखनिरभिलाषः शिक्षाकाणां गरिष्ठः
सुरगिरि परिसेवी त्यागपूतो वरिष्ठः ।
कुलपतिकुलरत्नः भारते भ्राजतेऽसौ
सफलकुशलकर्मा श्रीहरेकृष्णशर्मा ।। "[673]

आचार्य हरेकृष्ण शतपथी का रचनासंसार अर्वाचीनसाहित्य में अति महत्वपूर्ण स्थान रखता है। वे संस्कृत साहित्य की सभी विधाओं समान रूप से अधिकार रखने के साथ–२ आंग्ल एवं उड़िया भाषा के भी मर्मज्ञ विद्वान् हैं। संस्कृत, उड़िया, आंग्ल आदि भाषों के साथ–२ इतिहास, भूगोल, दर्शनशास्त्र, विधिशास्त्र आदि विषयों पर आचार्य हरेकृष्ण शतपथी की संस्कृत, आंग्ल, उड़िया आदि भाषाओं में रचित एवं सम्पादित शताधिक रचनाओं का प्रकाशन हो चुका है।

आचार्य हरेकृष्ण शतपथी को उत्कृष्ट राजकीयसेवाओं एवं उत्कृष्ट लेखन हेतु अनेक सम्मान प्राप्त हो चुके हैं। उन्हें वर्ष २००७ में उड़िया भाषा में रचित मौलिक कृति "संस्कृत साहित्य का इतिहास" के लिए "उड़ीसा साहित्य अकादमी पुरस्कार" से सम्मानित किया गया। उच्चतर शिक्षा में अविश्वसनीय योगदान हेतु आचार्य शतपथी को 'इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ़ ओरिंटल हेरिटेज' कलकत्ता द्वारा "विश्वकवि रबिन्द्रनाथ सम्मान" से सम्मानित किया गया। उन्हें उत्कृष्ट संस्कृत लेखन हेतु उड़ीसा सरकार द्वारा "जयदेव पुरस्कार" से सम्मानित किया गया। संस्कृत वांग्मय में लेखन हेतु उन्हें वर्ष १९९२ में "उड़ीसा संस्कृत अकादमी" तथा वर्ष २००५ में "दिल्ली संस्कृत अकादमी" द्वारा संस्कृत 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। महाकवि शतपथी को वर्ष २०१० में 'रामकृष्ण जयदयाल डालमिया ट्रस्ट' द्वारा ५० वर्ष से कम आयु वाले श्रेष्ठ संस्कृत लेखकों को दिये जाने वाले पुरस्कार "श्रीवाणी–अलंकरण" से सम्मानित किया गया। उत्कृष्ट राजकीयसेवा हेतु २०११ में महामहीम माननीय राष्ट्रपति द्वारा "राष्ट्रपति सेवा पदक" से सम्मानित किया गया। वर्ष २०११ में ही आचार्य हरेकृष्ण शतपथी जी को तत्कालीन महामहीम राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभापाटिल द्वारा 'भारतीयविद्या' में उनके योगदान के लिए "ब्रह्मर्षि–सम्मान" से सम्मानित किया गया। श्री शतपथी को केन्द्रियसाहित्य अकादमी द्वारा उनकी अमरकृति "भारतयनम्' के लिये केन्द्रीय साहित्य अकादमी पुरस्कार २०११ से फरवरी २०१३ में सम्मानित

---

673 श्रीजगन्नाथसंस्कृतविश्वविद्यालय के कुलपति प्रो०गोपीनाथमहापात्र द्वारा कृत आचार्यशतपथिप्रशंसाा

किया गया। वर्ष २०१२ में उन्हें "आदि शंकराचार्य पुरस्कार" से सम्मानित किया गया। वर्ष २०१२ में ही 'कविकुलगुरु कालिदास विवि०', नागपुर द्वारा उन्हें 'महामहोपाध्याय ' उपाधि से सम्मानित किया गया। वर्ष २०१३ में महाराष्ट्र सरकार ने श्री सतपथी को "कविकुलगुरु कालिदास संस्कृत साधना पुरस्कार" से सम्मानित किया। वर्ष २०१३ में ही 'भारतीय विद्या भवन' नई दिल्ली ने उन्हें "कौस्तुभ पुरस्कार" से सम्मानित किया। वर्ष २०१६ में नेशनल एल्युमीनियम कंपनी लिमिटेड द्वारा आचार्य हरेकृष्ण शतपथी को "कालिदास पुरस्कार" से सम्मानित किया गया। आचार्य शतपथी को अध्यापन, संस्कृत एवं उड़ियाभाषा तथा भारतीयसंस्कृति के प्रसार में अत्युत्कृष्ट योगदान हेतु अगस्त २०१६ में राष्ट्रपतिसम्मान हेतु नामांकित किया गया है।

द्वितीय अध्याय में भारतायनम् महाकाव्य की सर्गानुसारी कथावस्तु संक्षिप्तरूप में प्रस्तुत की गयी है। "भारतायनम्" महाकाव्य में महाकवि ने भारतमाता के ऐश्वर्य, औदार्य, वैभव, गौरवादि के शान्तकान्तचित्रण द्वारा सरससुन्दरपद्यावलियों के माध्यम से वर्णित किया है। "**जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी**"[674] इस प्रसिद्द आभाणक के अनुसार हमारी जन्मभूमि ही हमारी जननी है। यह भारतभूमि स्वर्ग से भी बढ़कर है। हम सब भारतीय इस भारतजननी की सन्तति है। इसके आशीर्वाद वात्सल्य एवं स्नेह से ही हम सब सुखी एवं समृद्ध है। अतः सर्वदा भारतभूमि का गौरवगान एवं चरणयुगलवन्दन हम भारतीयों का कर्त्तव्य है। जननी एवं जन्मभूमि पवित्र भावान्वित, सन्तति को जीवन देने वाली, सन्तति के सन्तापों को हरनेवाली, स्वयंप्रभा देवनदी गंगा स्वरूपा है। सूर्य की सहस्त्र रश्मियों से प्रतप्त होकर एवं अपना वक्षस्थल विदीर्ण करके सन्तान के पोषण हेतु खाद्यान प्रदान करने वाली यह पृथ्वी भी जननी स्वरूपा है। आदिशंकराचार्य की जननी आर्याम्बा; भगवान् श्रीकृष्ण की जननी यशोदा; कौरवों की जननी गान्धारी; जगत्हितार्थ कठोर तपस्या करने वाली पार्वती; हरिप्रियालक्ष्मी; 'निरंतर चलने का जीवनमंत्र देने वाली तटिनी, भी जननी के ही स्वरूपा है। यह भारतभूमि शिक्षा, साहित्य, संस्कृति, राजनीति, पर्यटन, आध्यात्मिकता, शान्ति, मैत्री इत्यादि विभिन्न क्षेत्रों में गुरुरूप में विवेचित है। यह भारतभूमि एवं इसकी भाषा–'संस्कृत' भी हमारी जननी है। अतः प्रस्तुत महाकाव्य के प्रारम्भिकसर्ग में महाकवि ने जननी की परिकल्पना की है, तत्पश्चात् भारतभूमि एवं शिशु की परिकल्पना की है। यथा–

''**माता हि नो जगति भारतभूमिरेषा ,**
तस्या वयं हि नियतं शिशुपुत्रकल्पाः ।
स्तन्यामृतं मधुमयं समवाप्य तस्याः ,
सर्वे भवन्तु सुखिनः शिशवः तदङ्के ।।"[675]

वह शिशु आनन्द एवं शान्ति की प्रतिमूर्ति एवं ईश्वर का अवतार है। उसका विकास ही सृष्टि का प्रकाश है। ये दोनों कौन हैं? माता और शिशु? अथवा आत्मा और परमात्मा? सानन्द इस

---

[674] वाल्मीकि रामायण युद्धकाण्ड ६/१२४/१७, हिंदी प्रचार प्रेस मद्रास संस्करण १६३०

[675] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, १/१२०

भारतभूमि पर विचरण करते हुए वे दोनों भारतवर्ष के महनीय गौरव के दर्शन करते हुए कदाचित् स्वयं को भी विस्मृत कर देते हैं। द्वितीयसर्ग में कवि ने मातृ–शिशु के शाश्वत् संपर्क से स्वहृदयान्तर्भावों की कोमल अभिव्यंजना की है। वे दोनों– जननि एवं शिशु; सृष्टि तथा सृष्टा; आत्मा तथा परमात्मा अथवा प्रकृति तथा पुरुष भारतभूमि के अलौकिक रूपलावण्य का आस्वादन करने हेतु पृथ्वी पर अवतरित होते हैं।

'भारतायनम्' महाकाव्य के तृतीय–चतुर्थ–पञ्चम–एवं षष्ठसर्गों में 'श्रीजगन्नाथचेतना' एवं 'श्रीजगन्नाथसंस्कृति' का महात्म्य वर्णित है। तृतीयसर्ग में महाकवि ने पवित्र नीलाञ्चलक्षेत्र का भव्य वर्णन किया हैं। भगवान् विष्णु के नीलमाधव अवतार के लिये प्रसिद्ध पुरी क्षेत्र को 'नीलांचलक्षेत्र' के रूप में जाना जाता है। भूलोक के समस्त देवता इस परमपुरुषोत्तमक्षेत्र में ही निवास करते हैं। समस्ततीर्थों में प्रसिद्ध, परमपवित्रतीर्थ–'पुरी' में संसारभयार्तिहारक प्रभुजगन्नाथ स्वयं विराजते है। भारत का यह पवित्र स्थल समस्त पृथ्वी पर पुण्यतम है। यज्ञों एवं तपों की इस पवित्रभूमि पर जन्म लेना हमारा सौभाग्य है। यथा–

''इदं हि सौभाग्यमहो महत्तपः
कृतं मया प्राक्तजन्मजन्मनि ।
यतोऽत्र लब्धं जननं हि पावनं
पवित्रिते भारतभूमिमण्डले ।।''[676]

चतुर्थसर्ग में महोदधि का वर्णन है। पुरी क्षेत्र के समुद्र को 'महोदधि' कहा जाता है। महाकवि ने राजा इन्द्रद्युम्न के मुख से, सुप्रभात स्त्रोत द्वारा महोदधिमहात्म्य वर्णित किया है। यह 'महोदधि' समस्ततीर्थों का स्वामी है। पञ्चमसर्ग में महाकवि सांसारिक जीवन के दुःखों को पत्र में लिखकर जलधि को समर्पित करते हुए; जलधि को दूत बनाकर उस पत्र को असमय 'दिवंगता 'स्वसहोदरी' को पहुँचाने की प्रार्थना करते हैं। करुण एवं शान्तरस से आप्लावित पञ्चमसर्ग में महाकवि द्वारा कृत भावुकतापूर्ण वर्णन पाठकों के हृदयों को करुणा से भर देता है। षष्ठसर्ग में महाकवि ने पवित्र दारुखण्ड से प्रभुविग्रहनिर्माण; पुरी मन्दिरनिर्माण; मूर्तिस्थापना एवं जगन्नाथरथयात्रा की कथा का वर्णन किया है।

सप्तमसर्ग में महाकवि ने प्रसिद्ध चारधामों में अन्यतमधामों–"द्वारिका" एवं "बद्रीनाथ"–के भक्तिमय वर्णन के साथ–साथ 'साधना' के महात्म्य का वर्णन किया गया है। "द्वारिका" में प्रभु 'सोमनाथ' ज्योतिर्लिंग के रूप में विराजते हैं। धरातल के धामों में धन्या एवं धार्मिक नगरियों में अनन्या, 'द्वारिकानगरी' अरबसागर के जल में तपस्या में संलग्न योगी के सामान शोभायमान है। भगवान विष्णु के अवतार, शान्ताकृति एवं कमनीयमूर्ति– प्रभुबद्रीनाथ; हिमालय पर लोकहितार्थ तपस्या करते हैं।

---

[676] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ८/४६

अष्टमसर्ग में महाकवि ने पवित्र–'काशीनगरी' का भक्तिमय वर्णन करने के साथ ही गंगा नदी की दुर्दशा, पर्यावरणप्रदुषण, साम्प्रदायिकता, क्षेत्रवाद, आतंकवाद, नक्सलवाद, भ्रष्टाचार, राष्ट्रद्रोह आदि ज्वलन्त समस्याओं पर चिन्ता व्यक्त करते हुए इन समस्याओं के कारण एवं समाधान भी प्रस्तुत किये हैं। महाकवि देश में व्याप्त साम्प्रदायिकता, क्षेत्रवाद, आतंकवाद, नक्सलवाद, भ्रष्टाचार, राष्ट्रविरोधी गतिविधियों आदि समस्याओं के पर दुःख व्यक्त करते हुए कहते हैं कि आज हम भारतीय ही आपस में विभाजित हैं; इस अवस्था में 'वसुधैव–कुटुम्बकम्' एवं 'विश्वबन्धुत्वम्' कैसे संभव है? अपना अंग–भंग होने की आशंका से भारत–मातृभूमि क्रन्दन कर रही है। यदि हम अपनी जन्मभूमि के अश्रु भी नही पोंछ सकते तो हमारा इस भूमि पर जन्म लेना धिक्कार है। यथा–

"पकिस्थानभयं बहिः खलु खलिस्तानप्रकम्पोऽन्तरे ,
गुर्खास्थानधिया धिया कलुषिताः धावन्ति केचित्पुनः ।
तस्मात्क्रन्दति भारतार्त्तजननी स्वाङ्गक्षयाशङ्कया ,
सन्तानस्तु कदा समर्थयति कः स्वमातृदेहक्षयम् ।।"[677]

हमारा यह शरीर पृथ्वी, अग्नि, जल, वायु, और आकाश इन पञ्च महाभूतों से मिलकर बना है। प्रदुषण के कारण यदि अगर वायु, पृथ्वी, जलादि तत्त्व दूचित हो जायेंगें तो फिर मनुष्य शरीर जीवन धारण कैसे करेगा? समीक्ष्य महाकाव्य में प्रस्तुत पर्यावरणचिन्तन हमें पर्यावरणसंरक्षण हेतु ''सत्यम् शिवम् सुन्दरम्''के सन्मार्ग पर चलते हुए, ''सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः, सर्वे भद्राणि पश्यन्तु'' की जीवनशैली अपनाते हुए, प्रकृति से समन्वय बनाकर चलने का महान सन्देश देता है। पर्यावरणचिन्तन में आचार्य हरेकृष्ण शतपथी विरचित 'भारतायनम्' महाकाव्य का महत्त्वपूर्ण अवदान रहेगा। यथा–

"तेजो व्योममरुत्पययःक्षितिचयैः नृ॒णां तनुः सृज्यते ,
भूतानां कृपया पुनर्जगदिदं स्थातुं सदा शक्यते ।
बन्ध्या चेत् पृथिवी जलं कलुषितं वायुश्च चेद्दूषितं ,
तेजो व्योम तथा भवेद् यदि तदा जीवः कथं धार्यते ।।"[678]

नवमसर्ग में महाकवि ने दक्षिण के प्रसिद्ध तीर्थ–'काञ्चीपुरम' एवं जगद्गुरु आदिशंकराचार्य का संक्षिप्त तथा कामकोटिपीठ के ६८वें शंकराचार्य–"चन्द्रशेखरेंद्र सरस्वती–" का विस्तृत रूप से वर्णन किया है। दशमसर्ग में महाकवि ने महाकाव्य के पूर्व सर्गों में वर्णित तीर्थस्थलों के अतिरिक्त शेष दक्षिणभारतीयतीर्थस्थलों– कर्णाटक, रामेश्वरम्, मदुरै, तिरुपति आदि प्रसिद्ध तीर्थों का वर्णन किया है। यथा–

"तुङ्गागङ्गातरङ्गायितजलधिजलप्राणपपुण्यप्रवाहः ,
कावेरीवारिधारासुरभितवपुषा भूषितः नित्यपूतः ।

---

677 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ८/४६
678 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ८/७३

योऽसौ सौन्दर्यसम्पत्सकलविधमहामण्डनैर्मण्डिताङ्गः ,

सोऽसौ कालीप्रसन्नो जगति विजयतां स्वर्णकर्णाटदेशः ।।"[679]

इस प्रकार आचार्य हरेकृष्ण शतपथी ने "भारतायनम्" महाकाव्य में भारतभूमि की महिमा का वर्णन किया है। मनोरम भारतभूमि को आधार बनाकर रचित समीक्ष्य महाकाव्य में भारतमाता का रमणीय एवं विश्ववन्द्य स्वरूप महाकवि ने प्रस्तुत किया है।

तृतीय अध्याय में प्राचीन एवं अर्वाचीन काव्यशास्त्रों में विवेचित महाकाव्य–स्वरुप का विस्तृत विवेचन प्रस्तुत किया गया है। प्राचीन काव्यशास्त्रों के अन्तर्गत अग्निपुराण, काव्यालंकार, काव्यदर्पण, काव्यप्रकाश तथा साहित्यदर्पण तथा अर्वाचीन कव्यशास्त्रों के अन्तर्गत अभिराजयशोभूषणं, अभिनवकाव्यालंकारसूत्र एवं डॉ० रहसबिहारी द्विवेदी द्वारा विवेचित महाकाव्यस्वरुप को प्रस्तुत किया गया है। अर्वाचीन एवं प्राचीन महाकाव्य–लक्षणों के आधार पर भारतायनम् महाकाव्य का 'महाकाव्यत्त्व' प्रतिपादन भी तृतीय अध्याय में किया गया है।

प्राचीन एवं अर्वाचीन काव्यशास्त्रियों द्वारा निरुपित महाकाव्यस्वरुप– सर्गबद्धता, मंगलाचरण, सर्गसंख्या, सर्गविस्तार, छन्दप्रयोग, सर्गान्त में भावि कथा की सूचना, सर्गों का नामकरण, महाकाव्य के नामकरण, अंगीरस, नायकत्व, वर्ण्य–विषयों– नगर, सागर, पर्वत, नागरिक समुदाय, नदी/सरोवर, रात्रि, वन/उपवन, पुत्रोत्पत्ति, राजनितिक, रणक्षेत्र, राष्ट्र, अध्वर (यज्ञ), तप के आधार पर तथा विद्वज्जनमान्य एवं महाकाव्य–लक्षणकारों के मनोऽनुकूल, महाकवि की आत्मस्वीकृति के आधार पर सर्वलक्षणसमन्वित "भारतायनम्" महाकाव्य का महाकाव्यत्व का सिद्ध होता है।

चतुर्थ अध्याय में भारतायनम् महाकाव्य का "काव्यशास्त्रीय–विवेचन" प्रस्तुत किया गया है; जिसके अन्तर्गत क्रमशः महाकाव्य के इतिवृत्त, पात्रयोजना, छन्दयोजना, अलङ्कार– योजना, अङ्गीरस एवं अङ्गभूतरसों, भाषासौष्ठव, तथा गुण–दोष विवेचन प्रस्तुत किया गया है।

महाकवि ने अपनी उदात्त कल्पनाओं का साधिकार उपयोग करते हुए, मानवीकरण द्वारा देवतुल्य, विश्वगुरुत्त्व को प्राप्त, महान्, उदात्त चरित्र युक्त, सज्जनचरित्र, समुज्ज्वलचरित्र, विश्वविख्यात, श्रेष्ठ–गुणान्वित भारतमातृभूमि के नायकत्व सहित अनेक पात्रों का चित्रण किया है। भारतभूमि की महिमा से मण्डित इस महाकाव्य में 'शिशु', 'प्रभु जगन्नाथ', 'नृप इन्द्रद्युम्न', 'महोदधि, 'काशीविश्वनाथ', 'आदिशंकराचार्य', 'कामकोटि मठाधीश– चन्द्रशेखरेन्द्रसरस्वती (अष्टम)', 'प्रभु वेंकटेश्वर', 'श्रीकृष्ण', 'द्वारिकाधीश' 'प्रभु बद्रीनाथ', 'अर्जुन', 'बालक ध्रुव', 'भगवान विष्णु', 'प्रभु सोमनाथ', 'महात्मा गाँधी', भगवान एकाम्बरनाथ', 'मध्वाचार्य', 'चालुक्य राजा सोमेश्वर' 'रामानन्दाचार्य', 'महामना पण्डित मदनमोहनमालवीय' 'विश्वावसु' आदि पुरुष पात्रों के रूप में गणित हैं। स्त्री पात्रों में 'जननी', 'माता पार्वती', 'यशोदा', 'देवी लक्ष्मी' 'देवी मीनाक्षी', 'रानी गुण्डिचा', 'देवी मल्लिका' 'देवी सुभद्रा' आदि उपस्थित हैं। साथ ही मानवीयकरण द्वारा 'नीलाञ्चलक्षेत्र', 'सुदर्शनचक्र', 'महोदधि', 'सागर', 'पुरीतीर्थ', 'द्वारिकातीर्थ', 'रामेश्वरम्', 'पृथ्वी',

---

[679] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, १०/८

'देवनदी गंगा', 'साधना', 'सौराष्ट्र', 'काशीतीर्थ', 'काञ्चीपुरम्, 'तिरुपतितीर्थ', 'स्वर्णभूमि–कर्णाटक' आदि पात्रों का आधुनिक रीति से चित्रण किया गया है।

महाकाव्य की कथावस्तु के विभिन्न विषयों के प्रतिपादन में महाकवि ने प्रमुखतया वंशस्थ, वसन्ततिलका, शार्दुलविक्रीडित, उपजाति, अनुष्टुप, द्रुतविलम्बित, मन्दाक्रान्ता, इन्द्रवज्रा, शिखरिणी आदि १३ छन्दों का प्रयोग किया है।

महाकवि आचार्य हरेकृष्ण शतपथी ने शब्दार्थसौन्दर्यवृद्धि हेतु अनुप्रास, यमक, वीप्सादि शब्दालंकारों, उपमा, रूपक, दीपक, विभावना, उत्प्रेक्षा आदि अर्थालंकारों एवं संसृष्टि, संकर इत्यादि विंशत्यधिक अलंकारों की सुन्दर योजना की है। यथा–

"बहुरङ्गतरङ्गविभङ्गयुते ! ,
सुरसङ्गमपुण्यपयः परिधे ! ।
भवदुःखविमोचनकारण हे ! ,
प्रणतिस्तवदपारपदाब्जयुगे ।।"[680]

"तीर्थेषु धन्या नितरां सुपुण्या ,
करालवन्याकुलकालकन्या ।
सा द्वारिकामन्दिरमालमान्या ,
विराजते विश्वविभाग्रगण्या ।।"[681]

समीक्ष्य महाकाव्य 'भारतायनम्' में शान्तरस अँगीरस तथा अन्य रस अंगभूत रसों के रूप में वर्णित है। महाकाव्य के प्रत्येकसर्ग में शान्तरस की बहुमत से उपस्थिति दृष्टिगत होती है। यथा–

"अहो जगद्दृश्यमतीवविचित्रकं ,
सुखस्य हेतुः परिवर्तनप्रियम् ।
ते एव मन्ये नितरां प्रमोदिताः ,
वनालया वृक्षफलाशिनो जनाः ।।"[682]

समीक्ष्य महाकाव्य की भाषा काव्यकीर्तिवर्धयित्री, 'सा विद्या या विमुक्तये' भाव की जनयित्री, भारतमातृभूमिचरणयुगलसेविका, दुर्गुणों को दूर करने वाली, भक्तिभाव द्वारा मोक्षमार्ग को प्रदर्शित करने वाली, पुरुषार्थचतुष्टय की प्रदायिका, काव्यरसज्ञों के हृदय को आह्लादित करने वाली, सरस, सरल, प्राञ्जल, परिमार्जित एवं परिष्कृत है। महाकवि ने स्वप्रतिभा से जन्मभूमि–'भारतभूमि' की प्रशंसा एवं भक्ति में जो भी वर्णन किया है, उसकी भाषा वर्णन के अनुरूप, पात्रों के अनुरूप तथा भावानुकूल है। शान्तवत्सलभक्ति आदि रसों से युक्त समीक्ष्य महाकाव्य में अनेक भाषागत विशिष्टताएँ दृष्टिगत होती हैं। इस महाकाव्य में वैदर्भिरीतिप्रयोग में, विविध अलंकारों के पांडित्यपूर्ण दर्शन में, प्रसादमाधुर्यगुणान्वित पदों के प्रबन्धन में, शान्तादि रसों

---

[680] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ४/३१
[681] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ७/८
[682] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ५/२३

के वर्णन में स्वप्रतिभा प्रदर्शन में, दीर्घसमासरहित पदयोजना में, सागरसदृश गहन एवं विस्तृत कथा का परिपाक सार रूप में प्रस्तुत करने में महाकवि का भाषासौष्ठव दर्शनीय है। समीक्ष्य महाकाव्य में महाकवि द्वारा इतना उत्तम भाषाप्रबन्ध किया गया है कि काव्यरसास्वादन में कहीं पर भी विरक्ति नहीं होती है। भाषा पर महाकवि का सशक्त अधिकार दृष्टिगोचर होता है। महाकवि का शब्द–चयन अत्यन्त श्लाघनीय है। भावोचित पदयोजना की दृष्टि से महाकवि का भाषा पर एकाधिकार दृष्टिगत होता है। प्रस्तुत महाकाव्य का पदलालित्य, अलंकारयोजना द्वारा अत्यन्त हृदयहारी प्रतीत होता है। महाकवि द्वारा विभिन्न प्रसंगों में प्रयुक्त–**"दुःखं सुखं द्वयमहोऽस्ति शिशोर्नभिन्नम् ।।"**[683]**", सा चारुता भवति या निजभावसिद्धा ।।"**[684]**, "जनस्य काम्यं जगदग्निदाहिनः।।"**[685]**, "प्रोक्ते दुःखे भवति हि लघु प्राणबन्धोः समीपे ।।"**[686] इत्यादि ५० से अधिक सूक्तियाँ समीक्ष्य महाकाव्य के अर्थगौरव की पुष्टि करती हैं। प्रसादगुण एवं वैदर्भीरीति में गुंफित भाषा के कारण 'भारतायनम्' महाकाव्य जनसाधारण के लिए भी ग्राह्य है। यथा–

"बहूनि पुष्पाणि फलानि तानि च ,
सुमिष्टमूलानि च पल्लवानि वा ।
यया निज वक्षसि सञ्चितानि नो ,
हिताय सा में जननी ; न मेदिनी ।।"[687]

पंचमध्याय में 'भारतायनम् महाकाव्य में लोकचिन्तन' विषयान्तर्गत राष्ट्रीय, पौराणिक, सामाजिक, धार्मिक, दार्शनिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक, नारी, प्रकृति, पर्यावरण, संस्कृतभाषामूलक, नैतिक, वैश्विक, पर्यावरण आदि अनेक लोकचिन्तनों का विवेचन प्रस्तुत किया गया है। संसार में 'विश्वगुरु' की उपाधि से विभूषित 'भारतभूमि' के आदर्शचरित्रस्थापना के साथ ही देश में व्याप्त वैमनस्य, वैर–भाव, अविश्वास, देशभक्तिभावना का पतन, आतंकवाद, क्षैत्रवाद, पर्यावरणप्रदुषण, महिलाओं के प्रति बढ़ते अपराध, भ्रष्टाचार, दीन–हीनों के शोषण आदि बुराइयों का समूलनाश महाकवि आचार्यहरेकृष्णशतपथी का मुख्योद्देश्य प्रतीत होता है। इस महाकाव्य का उद्देश्य राष्ट्रीयता एवं देशप्रेम की भावना को बल देने के साथ–साथ आतंकवाद, भ्रष्टाचार, असहिष्णुता, धार्मिकवैमनस्य, पर्यावरणप्रदुषण जैसी ज्वलन्त समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करना है। प्रस्तुत महाकाव्य भारतीय चिन्तनपरम्परा, राष्ट्रभक्ति, राष्ट्रस्वातन्त्र्य, राष्ट्रीय, पौराणिक, सामाजिक, धार्मिक, दार्शनिक, राजनैतिक,सांस्कृतिक, नारी, प्रकृति, पर्यावरण, संस्कृतभाषामूलक, नैतिक, वैश्विक, पर्यावरण आदि अनेक विषयों से काव्य रसज्ञों को परिचित कराता है। राष्ट्रनीति, धर्म, दर्शन, पर्यावरण आदि अनेक विषय भी प्रस्तुत महाकाव्य में समाहित है। वर्तमान में जब भारतमातृभूमि बाहर से पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवाद एवं अन्दर से नक्सलवाद, साम्प्रदायिकता, जातिवाद,

---

683 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, २/१३,
684 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, २/२८
685 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ५/३१
686 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ५/७६
687 भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, १/४०

भ्रष्टाचार, प्रदुषण आदि गंभीर समस्याओं से पीड़ित है; तब महाकवि ने राष्ट्रभक्ति को अंकुरित एवं पोषित करने वाले राष्ट्रीय चेतना के गीत गाकर प्रस्तुत महाकाव्य ने राष्ट्रीय एकता, अखण्डता एवं धार्मिकसौहार्द के लिए एक मील का पत्थर स्थापित किया है। यथा–

"का वा विश्वकथाव्यथा ! श्रुणु सखे ! माता स्वयं क्रन्दति ,
तस्या अश्रुजलं वहत्यविरतं ह्युष्णं सदा जाह्नवी ।
सन्तानाश्च तथाऽपि भारतभूवि व्यामोहतः नीरवाः ,
धिक् तज्जन्म, यतो न नेत्रसलिलं सम्प्रोच्छितुं शक्यते ।।"[688]

इस प्रकार से राष्ट्रभक्ति–भावना को परिपुष्ट करने वाले काव्य यदि अनवरत रचे जाते रहे तो प्रत्येक भारतीय भारतराष्ट्र के स्वाभिमान एवं सम्मान की रक्षार्थ अपने आप को समर्पित कर देने को आतुर रहेगा; और कोई भी बाह्य अथवा आतंरिक दुश्मन भारतमातृभूमि को कुदृष्टि से देखने की कभी हिम्मत नहीं करेगा।

युगानुरूप राष्ट्रीयता की स्वभाविक कल्पना करते हुए महाकवि ने राष्ट्र एवं समाज के दिग्दर्शन हेतु यह श्लाघनीय प्रयास किया है। पुराणों की कथा द्वारा साम्प्रतिक प्रसंग में राष्ट्रीय, धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, पर्यावरण, संस्कृतभाषामूलक एवं स्त्री–चेतना हेतु महाकवि का यह रचना की है जो स्वार्थान्ध एवं मूल्यहीन सामाजिकों को कर्त्तव्यपथोन्मुख करने हेतु कान्तासम्मितोपदेशवत् पथप्रदर्शन करते हुए, आर्थिकमंदी, प्रदुषण, आतंकवाद, नक्सलवाद, आदि गंभीर वैश्विक समस्याओं की ओर ध्यान आकृष्ट करते हुए समीक्ष्य महाकाव्य में "सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः" की मंगलकामना की गयी है। यथा–

"लोकाः सन्तु निरामयाश्च सुखिनो भद्राणि पश्यन्तु ते ,
भद्रं तत्परिकल्पयन्तु सकलं भद्राणि शृण्वन्तु ते ।।"[689]

पंचम अध्याय के उपरान्त उपसंहार में भारतायनम् महाकाव्य के वैशिष्ठ्य के साथ ही संस्कृत साहित्य को समीक्ष्य महाकाव्य की देन आदि विषयों को समाहित किया गया है। उपसंहार के उपरान्त शोधग्रन्थ के अन्त में सहायक एवं सन्दर्भ ग्रन्थों एवं पत्र–पत्रिकाओं, विभिन्न पत्रिकाओं में प्रकाशित शोधपत्रों, की सूची को प्रस्तुत किया गया है। परिशिष्ट के रूप में 'भारतायनम्' महाकाव्य की श्लोक–अनुक्रमणिका को प्रस्तुत किया गया है।

प्रस्तुत शोधप्रबन्ध में मेरे द्वारा प्रस्तुत महाकवि आचार्य हरेकृष्ण शतपथी का अनुकरणीय व्यक्तित्व समाज को राष्ट्रसेवा के लिए प्रेरित करेगा। महाकवि के कृर्तृत्व महाकवि के रचनासंसार से काव्यरसज्ञों को परिचित करवाकर संस्कृतसाहित्य में उनके अद्वितीय योगदान को रेखांकित करने का कार्य करेगा। प्रस्तुत शोधप्रबन्ध में प्रदत्त समीक्ष्य महाकाव्य–'भारतायनम्' की सर्गानुसरी संक्षिप्त कथावस्तु को पढ़कर कव्यानुरागी– सामाजिकजन महाकवि की कृतियों का अध्ययन करने को प्रेरित होकर संस्कृतसाहित्य के अध्ययन में रूचि प्रदर्शित करेंगे तथा विभिन्न

---

[688] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ८/५८
[689] भारतायनम् – आ०हरेकृष्णशतपथी, विद्यापीठ प्र.तिरुपति, २००८, ८/७१

काव्यशास्त्रियों द्वारा प्रस्तुत महाकाव्य– स्वरूपावलोकन करते हुए विभिन्न महाकाव्यों के नामावलोकन करते हुए समीक्ष्य महाकाव्य–'भारतायनम्' के महाकाव्यत्व से परिचित होंगे।

प्रस्तुत शोधकार्य समीक्ष्य महाकाव्य में विवेचित नायक एवं विभिन्न पात्रों को चरित्रचित्रण समाज के समक्ष प्रस्तुत करते हुए महाकाव्य की काव्यगत विशेषताओं यथा– कथावस्तु, छंदालंकाररसभाषासौष्ठव एवं गुणदोष से सामाजिकों के समक्ष प्रस्तुत करेगा, जिससे काव्यरसज्ञ सामाजिक काव्यरचना की ओर प्रेरित होंगे।

इस शोधप्रबन्ध में पञ्चमध्याय में 'भारतायनम् महाकाव्य में लोकचिन्तन' के अन्तर्गत प्रस्तुत 'राष्ट्रियचिन्तन' समाज में राष्ट्रभक्ति एवं राष्ट्रियचेतना का संचार करते हुए राष्ट्रीय एकता एवं अखंडता की भावना को पोषित करेगा जिससे वर्तमान में देश के समक्ष उपस्थित आतंकवाद, नक्सलवाद, प्रान्तवाद, क्षेत्रवाद, साम्प्रदायिकता जैसी ज्वलंत समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करेगा। सांस्कृतिकचिन्तन जहाँ समाज को भारतीय उदात्त संस्कृति से परिचित करवाते हुए हमारी संस्कृति पर समाज को गर्व करने का अवसर प्रदान करेगा वहीं पुराणैतिहासिकचिन्तन महान एवं अनुकरणीयपुराणैतिहासिक चरित्रों एवं कथाओं से समाज को परिचित करवाते हुए भारतवर्ष को पुनः विश्वगुरुत्व की पदवी पर देखने की भावना का समाज में संचार करेगा।

'सामाजिकचिंतन' समाज को समाजकल्याण की और प्रेरित करते हुए वर्तमान में प्रासंगिक मानवीयमूल्यों से परिचित करवाते हुए समाज को अन्धकार से प्रकाश की ओर गमनार्थ प्रेरित करेगा। 'दार्शनिकचिन्तन'– 'सृष्टिनिर्माणप्रक्रिया, पञ्चमहाभूत, जीवन के प्रति मनुष्य का दृष्टिकोण से समाज को परिचित करवाते हुए उसे परमसत्ता का साक्षात्कार करवाएगा। 'राजनैतिकचिन्तन' राजा इन्द्रदयुम्न, महात्मागाँधी, आदिशंकराचार्य, चन्द्रशेखरेन्द्रसरस्वती, द्वारकाधीश, प्रभुविश्वनाथ, प्रभुजगन्नाथ, प्रभुवेंकटेश, देशबन्धु चितरञ्जनदास, महात्मागांधि, मदनमोहनमालवीय आदि के द्वारा रामराज्य, सुशासन, स्वतंत्रता, समानता, न्याय, बंधुत्व, प्रजाहित, लोकतान्त्रिकमूल्य आदि की रक्षा हेतु कृत कार्यों से समाज को परिचित करवाकर समाज को निस्वार्थसेवा हेतु प्रेरित करेगा।

प्रस्तुत शोधकार्य में विवेचित 'स्त्री–चिन्तन' महिलासशक्तिकरण में महदुपयोगी साबित होगा। वर्तमान में जब स्त्रियों के प्रति बढ़ते अपराध समाज के लिए चिता का विषय बने हुए हैं, तब यह शोधकार्य 'यत्र नार्यस्तु पूजयन्ते रमन्ते तत्र देवता' जैसी उदात्त भावना का पोषक होगा। प्रस्तुत शोधप्रबन्ध में विवेचित प्रकृतिचिन्तन, पर्यावरणचिन्तन एवं गंगानदिचिन्तन वर्तमान की ज्वलन्त समस्याओं–'प्रदूषण', वैश्विकतापवृद्धि (ग्लोबल वार्मिंग), महामारी, भूकम्प, बाढ़, सुनामी, आदि के खतरों से समाज को अवगत करवाते हुए उनके कारण एवं समाधान भी समाज के समक्ष प्रस्तुत करता है। वर्तमान में जब विश्व के दश सर्वाधिक प्रदूषित शहरों में से आठ शहर हमारे देश के हों, प्रदुषण के कारण लोगों की रोगप्रतिरोधकक्षमता खत्म हो गयी हों, लोग असहाय होकर कोरोना, स्वाइनफ्लू आदि असाध्य महामारियों से ग्रसित हो मृत्यु के मुख में समा रहे हों तब

प्रस्तुत शोधकार्य में विवेचित पर्यावरणचिंतन लोगों को भविष्य में होने वाले गम्भीर दुष्परिणामों की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट करते हुए पर्यावरणचिंतन में अपना महत्त्वपूर्ण अवदान देता है।

प्रस्तुत शोधकार्य में विवेचित 'संस्कृतभाषामूलकचिन्तन' देववाणी, गीर्वाणी, सुरवाणी आदि विशेषणों से विभूषित, स्वविकसित, समलंकृत या संस्कारयुक्त, संस्कृतभाषा, विश्व की सर्वाधिक 'पूर्ण' एवं तर्कसम्मतभाषा,–'संस्कृत' की महिमा से समाज को परिचित करवाते हुए भारतीय–संस्कृति का प्रतिपद संरक्षण तथा संवहन करने तथा भारतभूमि पर शान्ति एवं सौहार्द की स्थापना एवं भारतभूमि की विजय हेतु संस्कृतभाषा के समुत्थान की आवश्यकता को रेखांकित करता है। वर्तमान समय में जब नैतिकमूल्यों के पतन के कारण कुकर्म, पापाचार, हिंसा के प्रसार से समस्त पृथ्वी व्याकुल है तब प्रस्तुत शोधकार्य में विवेचित 'नैतिकचिंतन' समाज का पथप्रदर्शन करता है।

प्रस्तुत शोधप्रबन्ध में विवेचित 'वैश्विकचिन्तन' 'वसुधैवकुटुम्बकं', 'विश्वभवत्येकनीडम्' आदि उदात्त एवं निष्णान्त वैश्विक भावनाओं को प्रदीप्त करते हुए, 'जीओ और जीने दो' की परिकल्पना को साकार करते हुए, सत्य और अहिंसा का पाठ पढ़ाते हुए, 'सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः' की वैश्विक मंगलकामना के साथ पर्यावरणप्रदूषण, आतंकवाद, आर्थिकमंदी, शस्त्रीकरण आदि वैश्विक खतरों की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट करता है। इस शोधकार्य में प्रस्तुत 'आर्थिकचिन्तन' बड़े–२ उद्यमियों के द्वारा भ्रष्टाचार एवं राजनैतिक साँठ–गाँठ से देश और समाज को ठगने की प्रवृत्ति, गैरनिष्पादितऋण (एनपीए), यंत्रीकरण के नुकसानों आदि की ओर समाज का ध्यान आकृष्ट कर कुटीर उद्योग के महत्व को रेखांकित करता है। प्रस्तुत शोधकार्य में विवेचित 'जगन्नाथसंस्कृति– चिन्तन' समाज को प्रभुजगन्नाथ की महिमा से अवगत करवाता है, तथा 'तीर्थचिन्तन' समाज को भारतभूमि के तीर्थों से परिचित करवाते हुए तीर्थयात्राओं के महत्त्व को रेखांकित करता है।

मेरे द्वारा कृत इस शोधप्रबन्ध का भविष्य में महाकवि आचार्य हरेकृष्ण शतपथी के व्यक्तित्व एवं कृर्तृत्व, उनकी रचनाओं, भारतायनम् महाकाव्य भाषासौष्ठव, रस, अलंकर, राष्ट्रीय, पौराणिक, सामाजिक, धार्मिक, दार्शनिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक, नारी, प्रकृति, पर्यावरण, संस्कृतभाषामूलक, नैतिक, वैश्विक, पर्यावरण, गंगानदिचिन्तन, श्रीजगन्नाथसंस्कृतिचिंतन इत्यादि विषयों पर भावि–शोधार्थियों के लिए महदुपयोगी साबित होगा। देशवासियों में देशभक्तिभावना के संचार के साथ ही वर्तमान में देश में व्याप्त पर्यावरणप्रदूषण, स्त्री–अपराध, आतंकवाद, धार्मिक असहिष्णुता, क्षेत्रवाद, आदि ज्वलन्त समस्याओं के समाधान में मेरे इस शोध का महत्त्वपूर्ण योगदान रहेगा।

प्रस्तुत समीक्षात्मक अध्ययन को मैनें महत्पर्यत्न से सम्पादित किया गया है। "आचार्य हरेकृष्ण शतपथी कृत 'भारतायनम्' महाकाव्य का समीक्ष्त्मक अध्ययन" शीर्षकाधारित इस शोधप्रबन्ध के अन्तर्गत शोधार्थी द्वारा अर्वाचीनसंस्कृतसाहित्य के महर्षि, आचार्य, कविवर, महामहोपाध्याय, सरस्वतिपुत्र, वाग्मिप्रवर, आशुकवि, प्रशासकरत्न, आदि अनेक उपाधियों से विभूषित, अलौकिक

प्रतिभासम्पन्न आचार्यहरेकृष्णशतपथी विरचित भारतायनम्' महाकाव्य का समीक्षात्मक अध्ययन करने का प्रयास किया है। अतः आन्तरिक संतुष्टि का अनुभव कर रहा हूँ।

सन्दर्भग्रन्थानुक्रमणिका

अ. सतपथिवाङ्मय–

आ. सहायकग्रन्थ–

इ. कोशग्रन्थ–

ई. शोधपत्रिकाएँ–

उ. वेबसाइट/यूआरएल–

ऊ. गूगलप्लेस्टोर–

सन्दर्भग्रन्थानुक्रमणिका

अ. शतपथिवाङ्मय –

क्र०सं०	ग्रन्थनाम	प्रकाशन	प्र०वर्ष

1. भारतायनम्– प्रकाशनविभाग रा०सं०विद्यापीठम् तिरुपति – २००८
2. कविशतकम्– उत्कल संस्कृत रिसर्च सोसाइटी, पुरी उड़ीसा– १९७८
3. आचार्य–शंकरः – 'राष्ट्रभाषा प्रेस कटक, (उड़ीसा) – १९८२
4. गंगाजलदूषितम्– किताबमहल प्रकाशन, कटक, (उड़ीसा)' – १९८५
5. श्री–चन्द्रशेखरेन्द्रसरस्वती–शतपुष्पमाला– विद्यापुरी प्र०पुरी, – १९८५
6. संस्कृत साहित्य का इतिहास– किताबमहल प्र०,कटक, – १९८८
7. जननि – सारी प्रकाशन' पुरी – २००५
8. संस्कृतशास्त्रसंग्रहः – सारी प्रकाशन' पुरी – २००३
9. संस्कृत–सौरभम् – उड़ीसा मा०शिक्षा बोर्ड भुवनेश्वर – १९९८
10. धर्मपदम् :– "उत्कल संस्कृत शोधसमिति"पुरी – १९७८
11. विश्वायनम् – रा०सं०विद्यापीठम् तिरुपति – २०१४
12. संस्कृतसरणी – उड़ीसा मा०शिक्षा बोर्ड भुवनेश्वर – १९९८
13. वेदः – किताबमहल प्रकाशन, कटक, (उड़ीसा) – १९८१
14. कुमारसम्भवम् (पञ्चमसर्गः) –किताबमहल प्र०,कटक, – १९८४
15. रघुवंशम् (प्रथमसर्गः) –'किताबमहल प्र०,कटक, – १९८४
16. रघुवंशम् (द्वितीयसर्गः)– किताबमहल प्र०,कटक – १९८६
17. पञ्चतन्त्रम् – किताबमहल प्र०,कटक, – १९८४
18. स्वप्नवासदत्तम् – किताबमहल प्र०,कटक – १९८५
19. किरातार्जुनियम् (प्रथमसर्गः) दृ किताबमहल प्र०,कटक १९८७
20. अभिज्ञानशाकुन्तलम् (एक दृष्टिपात्)–किताब०प्र०,कटक,–१९८६
21. दशकुमारचरितम् – किताबमहल प्र०,कटक १९८७
22. साहित्यदर्पण (दशमोऽध्यायः)दृकिताबमहल प्रकाशन,कटक, १९८०
23. राघवयादवीयम् – 'भारतीय बुक कॉर्पोरेशन,दिल्ली' १९९८
24. श्रीदारूब्रह्मा–चित्रकल्प –किताबमहल प्रकाशन,कटक, २०००
25. कम्पलीट संस्कृत वर्क्स ऑन जगन्नाथा कल्चर– रा०सं०वि०तिरु०२००८
26. सोसिअलिज्म इन जगन्नाथा कल्चर– भा०बु०कोर्पोरेशन दिल्ली,२००२
27. सुम्मेरिन ऑफ़ पेपर्स– अखिलभारतीय ओरिंटल कांफ्रेंस २००२

28. अ फ्रेश पीप् टू संस्कृत लिटरेचर– अ०भारतीय ओरिंटल कांफ्रेंस २००२
29. Eco-spititualism – अप्रकाशित
30. साहित्यत्रयी– राष्ट्रीयसंस्कृत विद्यापीठ,तिरुपति २००८
31. श्रीनिवासविलासचम्पू– राष्ट्रीयसंस्कृत विद्यापीठ,तिरुपति २००८
32. काव्यतत्त्वलोक– राष्ट्रीयसंस्कृत विद्यापीठ,तिरुपति २००८
33. श्रीपुरुषोत्तमचित्रकल्प– राष्ट्रीयसंस्कृत विद्यापीठ,तिरुपति २००८
34. शेषस्वनितम्– राष्ट्रीयसंस्कृत विद्यापीठ,तिरुपति २००८
35. श्री उत्कलमंजूषा– राष्ट्रीयसंस्कृत विद्यापीठ,तिरुपति २००८
36. पाणिनीयपदव्यवस्था– राष्ट्रीयसंस्कृत विद्यापीठ,तिरुपति २००८
37. स्त्रोत्रमाला– राष्ट्रीयसंस्कृत विद्यापीठ,तिरुपति २००८
38. वंदनावितानम्– राष्ट्रीयसंस्कृत विद्यापीठ,तिरुपति २००८
39. पानिनियन लिंग्विस्टिक्स– राष्ट्रीयसंस्कृत विद्यापीठ,तिरुपति २००८
40. भजगोविन्दम्– राष्ट्रीयसंस्कृत विद्यापीठ,तिरुपति २००८
41. श्रीजगन्नाथसुप्रभातस्त्रोत्रलहरी (CD)– राष्ट्रीयसंस्कृत विद्यापीठ,तिरुपति २०१३
42. जयदेव कृत गीतगोविन्दम् (MP3)– राष्ट्रीयसंस्कृत विद्यापीठ,तिरुपति २०१४
43. काव्येष्वलंकाररससन्निवेशनविधिः– राष्ट्रीयसंस्कृत विद्यापीठ,तिरुपति २०१६

आ. सहायकग्रन्थ–

क्र०सं०	ग्रन्थनाम	सम्पा०/लेखक	प्रकाशक	प्र०वर्ष
1.	कपिलपुराणम् –	डॉ.कृष्णमणित्रिपाठी	चौ०प्र०वाराणसी,	२००६
2.	शतपथब्राह्मण–	सत्यप्रकाश सरस्वती	चौ०प्र०वाराणसी	२००१
3.	हिंदीशब्दकोश–	डॉ. हरदेव बिहारी	राजपाल प्र० दिल्ली	२००६
4.	चाणक्यनीतिशास्त्रदृ	रामचंद्रवर्मा	किताबघर प्र० कटक	२००७.
5.	प.रा.जगन्नाथकृत रसगंगाधर–	मधुसुधनशास्त्री,	बना०हि०विवि०	२००६
6.	वाल्मीकि कृत 'रामायण'–	गीताप्रेस	गोरखपुर	२००५
7.	अग्निपुराणम् –	डॉ. विनय	चौखम्बा वाराणसी	२००६
8.	भर्तृहरिप्रणीतं 'वाक्यपदीयम्'–	डॉ.शिवशंकर अवस्थी,	चौ०प्र०वारा०,	२०१३
9.	अग्निपुराणम्–	डॉ.घनश्यामत्रिपाठी,	हिंदीसाहित्यसम्मलेन प्र.प्रयाग,	२०१४
10.	आ.भामह काव्यालंकार–	डॉ. रामानंदशर्मा,	चौ०प्र.वाराणसी	२०१४
11.	महाकवि दंडी विरचित काव्यादर्श–	आ.रामचंद्रमिश्र	चौ०प्र.वारा०	२०१४
12.	कव्यतत्त्वविमर्शः –	आ.राममूर्तित्रिपाठी	चौ०प्र०वारा०	२०१३

13. काव्यमीमांसा, राजशेखर चौ०प्र०वारा० २००८
14. संस्कृत साहित्य 20वीं शताब्दी–रा०व०त्रिपाठी,रा०सं०सं०दिल्ली, २०१३
15. संस्कृत साहित्य– पं.चंद्रशेखरपाण्डेय,चौ०प्र०वारा०,२००५
16. महा०दंडीविरचित काव्यादर्श–आ.रामचंद्रमिश्र चौ०प्र०वारा०,२०१४
17. आ०भा०काव्यालंकार–डॉ.रामानंदशर्मा,चौ०प्र.वारा०२०१४,
18. आ०वर्ध०वि०'ध्वन्यालोक'–डॉ०श्रद्धासिंह,जग०सं०पु०प्र०जय०,२००५
19. आ०मम्मटविरचित'काव्यप्रकाश'डॉ०श्रीनिवासशास्त्री,सा०भण्डार,मेरठ,२००३
20. विश्व०वि० सा०द०शालिग्रामशास्त्री,मो०ब०वारा० प्र०२००४
21. विश्व०वि०'साहित्यदर्पण'–शालिग्रामशास्त्री,मो०ब०वारा०प्र.सं.२००४,
22. सं०सा०का इति०– बलदेव उपध्याय हिन्दू विवि०प्र० काशी,१९६३,
23. रुद्रटकृत'काव्यालंकार'–डॉ०कपि०द्विवेदी,न्यू भा०बुक कॉर्पो०दिल्ली,२००६,
24. अभिनवकाव्यालंकारसूत्र–प्रो.राधावल्लभत्रिपाठी,सम्पूर्णानन्दसंस्कृतविवि0,वाराणसी,२००५,
25. अभि.का.अ.सू.– प्रो.रा०व०त्रिपाठी,लक्ष्मी०चा०बु०डि०,जय०,२००६,
26. आधु०संस्०सा०का इति०– डॉ०बाबूरामत्रिपाठी महा०प्र०,आगरा,२००६
27. महाकाव्यों का मूल स्वरूप एवं विकास–डॉ०शंभू०सिंह,युग०प्र०,उन्नाव,२०११
28. महा०कालिदासकृत 'रघुवंशम्'– देवीरत्न अवस्थी,सा०अका०दिल्ली, २००५
29. महा०भारविकृत 'किरातार्जूनीयम्'–डॉ.श्रीकृष्णओझा अभि.प्र.जयपुर२००५,
30. अभि०यशो०–अभिराजराजेन्द्रमिश्र,वैजयन्तप्र०इलाह०,२००७, ४/६६–६७
31. सं०सा०का इतिहास– प्रो०कैलाशनाथद्विवेदी,रा०सं०सा०केंद्र,जय०,२००६
32. 'सं0सा0का आलो0इति0'–डॉ.रामजी उपाध्याय,रामनारायणलालविजयकुमार प्र०इलाहाबाद,१९७३,
33. सं०सा०का इतिहास–डॉ०सत्यनारायणपाण्डेय,चौ०,प्र०वारा०,२०१२
34. ब्रह्मपुराण– उत्कलखण्ड पीडीएफ पृ०२०१–२८४
35. स्कंधपुराण– उत्कलखंड पीडीएफ पृ.२५१–३०१.
36. हिस्ट्री ऑफ़ जगन्नाथपुरी– बिजयकुमार,बी०के०प्र०,२०१७
37. "भारत में धार्मिक मूल्य एवं विचारधारा"–{कोर्ट जॉन ई0} ऑक्स०प्र०,२००१
38. द लिविंग लार्ड – डॉ०सुब्रह्मण्यम,कामकोटि०प्र०,कांची०२००१
39. चन्द्रशेखरेन्द्रसरस्वती"अष्टम"–आर०गोपीनाथ,कामकोटि प्र०,कांची०,२०००
40. भरतमुनिप्रणीतम् 'ना०शा०'–पुष्पे०कुमार,न्यू भा०बु०कोर्पो०दिल्ली,२०१५
41. क्षेमेन्द्र कृत 'सुवृत्ततिलकम्' – डॉ० रबीन्द्र कुमार पांडा, परममित्रा प्र० दिल्ली,१९९८
42. वृहद्धातुकुसुमाकरः–पं०हरेकान्तमिश्रा,चौ०प्र०,वारा०,२०१६
43. 'ऋक्–सर्वानुक्रमणि'–भग०दत्त, प्रणव,प्र०,दिल्ली,२०११
44. 'वृहद्–सर्वानुक्रमणि'–पं०रामगोपालशास्त्री,डीएवी कॉलेज आगरा,२०१३,

45. पिंगलकृत'छन्दसूत्राणि'– डॉ०श्यामलाल,विवि०प्र०,वारा०२०१३
46. वैदिक साहि० और संस्कृति– आ०बलदेव,शा०संस्थान,वारा०,२००८
47. छन्दकौमुदी–डॉ०राधामोहन, प्रणव,प्र०,दिल्ली,२०१२
48. श्रीकेदारविरचितं'वृत्तरत्नाकरम्–श्रीधरानन्शास्त्री,मो०बना०प्र०वारा०,२०१२
49. श्रीगंगादासप्रणीता'छन्दोमञ्जरी'–डॉ०ब्रह्मानन्दत्रिपाठी,चौ०प्र०,वारा०,२०१३
50. महाकविकालिदासप्रणीतः 'श्रुतबोधः'–पं०कनकलालठक्कुर, चौखम्बा विद्याभवन प्र०, वाराणसी०,२००४,
51. क्षेमेन्द्रकृत सुवृत्ततिलकम्– डॉ०सूर्यकान्त, चौ०प्र०,वारा०,२०११
52. भट्टचन्द्रशेखरविरचित 'वृत्तमौक्तिकम्'–राजस्थान प्राच्यविद्याप्रतिष्ठान,जोधपुर,२०११
53. छन्दप्रभाकरः'– भानुकवि जगन्नाथशर्मा' जगन्नाथप्रेस बिलासपुर २००१,
54. रस–छंद–अलंकार तथा अन्य काव्यांग– डॉ.वेंकटशर्मा चौ०प्र०,वारा०,२०११
55. साहित्यसार– अचुतानंद,चौ०प्र०वारा०,२०१५
56. अलंकारकौमुदी– रामशंकरशुक्ल,ओंकारप्रेस प्रयाग,२०१५
57. आ०वामनविरचिता 'काव्यालंकारसूत्रवृत्ति'– डॉ०नरेश झा,चौ०प्र०वारा०२००१२
58. काव्यालोचन– ओमप्रकाशशास्त्री,आर्य बुक डिपो,दिल्ली,२००१३
59. आ०हर्षदेवकृत'वागीश्वरीकण्ठसूत्रम्'–डॉ०प्रवीणपंड्या,रा०सं०सं०दि०,२०११
60. श्री राजशेखरकृत 'काव्यमीमांसा'– डॉ० गंगासागर,चौ०प्र०वारा०,२००७
61. धनञ्जयकृत'दशरुपकम्'–डॉ०भोलानाथव्यास,चौ०प्र०,२०१०
62. आ०रुपगोस्वामीकृत 'उज्जवलनीलमणि'–डॉ०नागेन्द्र,दिल्ली विवि०प्र०,२००८
63. सं०सा०का इति०– डॉ०कन्हैयालालपौद्दार, श्रीरामवि०प्र०,बम्बई,२०१०
64. नारदभक्तिसूत्र– गीताप्रेस गोरखपुर,२०१०
65. सं०साहि०में भक्तिरस– डॉ०दीपाअग्रवाल,साहि०निके०२००७
66. श्रीरूपगोस्वामिरचित'भक्तिरसामृतसिन्धु–डॉ०नागेन्द्र,दिल्ली विवि०प्र०,२००६
67. श्रीभोजराजप्रणीत'सरस्वतिकण्ठाभरण'–विश्वनाथशास्त्री,चौ०प्र०वारा०,२०११
68. काव्यदर्पण– पं०रामदीनमिश्र, ग्रंथमाला प्र०,पटना,२००६
69. सिद्धान्तकौमुदी–सम्पा०–आ०विजय०शास्त्री,चौ०प्र०,वारा०,२०१०
70. जैमिनीयोपनिषद– गीताप्रेस गोरखपुर,२००६
71. महर्षिपाणिनिविरचिता'अष्टाध्यायी'–नरेशझा,मोती०बना०,वारा०,२००५
72. अमरसिंहविरचितः'अमरकोशः–आ०नारायणराम,भार०विद्या,प्र०,दिल्ली,२०११
73. अभिनवगुप्तकृत'अभिनावाभारती'–डॉ०नागेन्द्र,दिल्लीविवि०प्र०,२००८
74. जनपद–आ०हजारीप्रसादद्विवेदी,वाणी प्र०दिल्ली २००१
75. साहित्य–निकषः– डॉ.रामचन्द्रतिवारी,राजकमल,दिल्ली,२०१२

76. यास्कप्रणीतं'निरुक्तम्'–डॉ०उमा०ऋषि चौ०प्र०वारा०,२०१२,
77. राष्ट्रीयता की अवधारणा–डॉ०चंद्रप्रकाश आर्य,राजकमल,प्र०दिल्ली,२०१२
78. राष्ट्रीयता– डॉ०आरिफ़ नजीर प्रभात प्र०,दिल्ली,२०१०
79. भारत की राष्ट्रीय संचेतना–डॉ०मिथिलेशवामनकार,किताबघर,दिल्ली,२००२
80. राष्ट्रीयता– गुलाबराय,प्रभात प्र०दिल्ली,२००५,
81. राष्ट्रीय–उन्नति में जातीय महत्ता– गुलाबराय डायमण्ड प्र०दिल्ली२०११
82. राष्ट्रीय–जागरण और निरालासाहित्य–डॉ०डी०ना०राव,मिलिंद प्र०हैदरा०,२०१३
83. कठोपनिषद– डॉ०बैजनाथपाण्डे मोती०बना०वारा०,२००६
84. अथर्ववेद–पृथ्वीसूक्त,–राजबहादुरपांडे,चौ०प्र०वारा०,२०१०
85. महर्षिपाणिनिरचित'अष्टाध्यायी'सूत्रपाठ'– चौ०प्र०,वारा०,२००२
86. भारतीय संस्कृति और कला– वाचस्पतिगैरौलादृ चौ०प्र०,वारा०,२००८
87. भारतीय संस्कृति के मूलतत्त्व–डॉ०रू०ना०त्रिपाठी,उ०प्र०सा०अकादमी२००७
88. The Centre Of Indian Culture-R.N.Thagore;NPH delhi,२००७
89. साहित्य और संस्कृति– डॉ०वासुदेवशरण अग्रवाल,चौ०प्र०,वारा०,२००८
90. सांस्कृतिक चेतना के केंद्र और परिधि–'अज्ञेय'राजकमल दिल्ली,२००६
91. साहित्य समीक्षा और सांस्कृतिक बोध–डॉ०देवराजन,प्रभातप्र०,दिल्ली,२००६
92. साहित्य का आधार 'संस्कृति'–डॉ०के०आचार्यलू, छठज्प्र०दिल्ली,२००७
93. भगवद्गीता– गीताप्रेस गोरखपुर,२००५
94. सामजिक मूलाधार–शम्भूनाथतिवारी,वाणीप्र०,दिल्ली,२०१०
95. नागार्जुन की सामाजिकचेतना– डॉ०सोमनाथ,प्रभातप्र०,दिल्ली,२००६,
96. आ०चाणक्यरचित'चाणक्यसूत्र'–अश्विनीपाराशर–डायमण्ड,प्र०,दिल्ली,२००८
97. पुरुषार्थचतुष्टय–प्रेमवल्लभत्रिपाठी,आनन्दकानन प्रेस,वारा०,२००१
98. धर्मशास्त्र का इतिहास(भा–२)–पांडुरंगवामनकाणे,चौ०प्र०,वारा०,२००८
99. ईश्वर०रचित'सांख्याकारिका'–आ०जगन्नाथशास्त्री,मोती०बना०,दिल्ली२००६
100. Outlines of linguistic analysis- B. Block and G.L.Trager,पीडीऍफ़
101. रचनानुवादकौमुदी– डॉ०कपिलदेव द्विवेदी,मोती०बना०,वारा०२००७,
102. संस्कृत व्याकरण– डॉ०प्रीतिप्रभागोयल ,वाणी,प्र०दिल्ली,२०१३
103. सशक्त संस्कृतभाषा– डॉ०हरिदत्तशास्त्री,साहित्य भवन दिल्ली२०१२
104. भौगोलिक परिभाषाकोश– आर०एन०सिंह, च्म्प्र०दिल्ली,२०१३
105. वैदिक वाङ्मय में पर्यावरण–डॉ०गोपीनाथ,देववाणीपरिषद् दिल्ली२०१२
106. वैदिकसाहित्य में पर्यावरणीय अवधारणा–डॉ०छायाठाकुर,दे०परि०दि०,२०१२
107. शुक्लयजुर्वेदः– सम्पा०–वेणीरामशर्मा,व्यास प्र०वारा०२०१२

108. जैनधर्म और पर्यावरण–भागचंदजैन"भास्कर"न्यू भा०बु०को०दिल्ली,२०१५
109. आ०कु०वि०'वक्रोक्तिकाव्यजीवितम्'–पं०परमे०दीनपाण्डेय,चौ०प्र०,२०१३
110. संस्कृ०महाका०का समालो०अध्य०–रहस्य वि०द्वि०–न्यू भा०बु०को०दि०२००८
111. संस्कृत साहित्य में राष्ट्रीय भावना–हरिना०दीक्षित,देव०प्र०दिल्ली २००४
112. आधुनिक भारत में संस्कृत की उपादेयता–प्रो०कृष्णलाल,नाग प्र०दि०२००७
113. संस्कृत महाकाव्य परम्परा–डॉ०केशवमूसलगावकर,चौ०प्र०वारा०२००६
114. काशी की सारस्वत साधना–कवि०गोपीनाथ, चौ०प्र०,वारा०,२००५
115. वेंकटेशसहस्रनामस्त्रोतम्– कवि०गोपीनाथ, चौ०प्र०,वारा०,२००८
116. सत्यार्थप्रकाश–स्वा०दया०सरस्वती,आर्षसाहित्य प्रचार ट्रस्ट दिल्ली२०१२
117. भारतवैभवम्–भट्टमथुरानाथशास्त्री–राज०संस्कृत अका०जयपुर,२००३
118. भारतगाथा–गंगाधरशास्त्री,चौ०प्र०,वारा०,२००५
119. चम्पूभारतम्–अनन्तभट्ट,चौ०प्र०,वारा०,२००५
120. भाति मे भारतम्–डॉ०रमाकान्तशुक्ल,देववाणीपरिषद् दिल्ली२०११
121. मातृगीताञ्जली–डॉ०हरेकृष्णमेहत्तर,गंगाधर कॉलेज संबलपुर उड़ीसा२००७
122. भारती०संस्कृति में मानव मूल्य और लोककल्याण–डॉ०सुकेश,संज०प्र०दि०७
123. तदैव गगनं सैव धरा–डॉ०श्रीनिवासरथ,राष्ट्रीयसंस्कृतसंस्थानम्,दिल्ली२००६

इ. कोशग्रन्थ–

1. संस्कृत–हिंदी कोश– वा०शि०आप्टे, न्यू भा०बुक कॉर्पो०दिल्ली,२००६
2. रा०का०दे०बहादुर निर्मित शब्दकल्पद्रुम–चौ०प्र०,वारा०,२०१५
3. यास्कप्रणीतं 'निरुक्तम्'– डॉ० कपिलदेव शास्त्री साहित्यभण्डार, मेरठ प्र० २०११
4. अमरकोश–आ०नारायण चौ०प्र०,वारा०,२००५
5. भार्गव कन्साईज इंग्लिश डिक्शनरी–भार्गव बुक डिपो,वाराणसी,२००५
6. मानक हिंदीदृअंग्रेजी कोश–डॉ०एस०एस०गुप्ता,अशोक,प्र०दिल्ली२००८
7. ऑक्सफ़ोर्ड डिक्शनरी–पेंग्विन प्र०दिल्ली,२०१२

ई. शोध–पत्रिकाएँ –

1. देवभाषा– रेवेंशा महाविद्यालय,कटक, उड़ीसा
2. अभिव्यक्तिः – श्री जगन्नाथ संस्कृत विवि०, पुरी, उड़ीसा
3. विद्वत्प्रभा – 'पुरी विद्वत् परिषद्' पुरी, ओड़िसा
4. अमृतभाषा– 'अमृतवाणीसेवाप्रतिष्ठानम्' बालेश्वर,उड़ीसा

5. सुभद्रा –रेवेंशा महाविद्यालय कटक, उड़ीसा
6. महस्विनी – संस्कृत विद्यापीठ तिरुपति (आ.प्र.)
7. शेमुषी– संस्कृत विद्यापीठ तिरुपति (आ.प्र.)
8. वाग्वर्धिनी पत्रिका– संस्कृत विद्यापीठ तिरुपति (आ.प्र.)
9. स्मारिका पत्रिका'–अखिल भारतीय ओरियंटल कांफ्रेंस' पुरी
10. संस्कृत प्रतिभा–केन्द्रीय साहित्य अकादमी,दिल्ली
11. दृक्भारती– इलाहाबाद,उत्तरप्रदेश
12. भारती– भारती भवन जयपुर (राजस्थान)
13. अर्वाचीन संस्कृतम्– देववाणी परिषद् दिल्ली
14. स्वरमङ्गला– राजस्थान संस्कृत अकादमी जयपुर
15. संस्कृतमञ्जरी–दिल्ली संस्कृत अकादमी दिल्ली
16. संस्कृत–विमर्शः –रा०सं० संस्थानम् जनकपुरी दिल्ली
17. शब्दार्णव– समन्वय पब्लिशिंग हाउस मुजफ्फरपुर,बिहार
18. वेदाञ्जलि–वैदिक एजुके०रि०सोसाइटी,वाराणसी
19. सम्मलेन–हिन्दी साहि०सम्मे०प्रयाग (उ०प्र०)
20. अनन्ता–तिरुपति जर्नल सो०रोहिणी से०३ दिल्ली
21. हरिप्रभा–हरियाणा संस्कृत अकादमी पञ्चकुला
22. सुसंस्कृतम्–सुरुचि कला समिति,वाराणसी(उ०प्र०)
23. परिशीलनम्–उ०प्र० संस्कृत संस्थान, लखनऊ
24. शोध–नवनीतम्–स्तुति प्राच्यसमिति गोंडा(उ०प्र०)
25. संस्कृत–वाङ्मयी–प्राच्यभाषाविभाग लखनऊ विवि०(उ०प्र०)
26. ओरिसा रिव्यु (OrisaReview)– सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय उड़ीसा
27. दूर्वा– कालिदास संस्कृत अकादमी, उज्जैन,
28. श्रीमन्दिरसमाचार–श्रीजगन्नाथ मन्दिर समिति पुरी
29. नमामि गंगे– गंगासंरक्षणविभाग भारतसरकार

उ. वेबसाइट / यूआरएल–

1. www.orisasahityaacadamy.org
2. www.rbu.ac//listofawardwinners
3. www.orisa.gov.in
4. www.orisa.gov.in
5. www.sanskritdelhiacadamy.gov.in

6. www.rkjdss.dalmiatrust.in
7. https://rashtrapatisachiwalaya.gov.in
8. https://rashtrapatisachiwalaya.gov.in
9. www.sahitya-acadamy.gov.in
10. www.kksanskrituni.digitaluniversity.ac
11. https://www.maharastra.gov.in.
12. www.bvbdelhi.org
13. https://www.tirumala.org
14. https://www.chittoor.ap.gov.in
15. https://nalcoindia.com
16. www.oxforddictionaries.com
17. www.vediksanskriti.com/2015/12/brahmpurana.html
18. www.vediksanskriti.com/2015/12/skandpuran.html
19. www.2shindi.com
20. www.unionpedia.com
21. www.kamkothi.org
22. www.jagannath.nic.in
23. https://nmcg.nic.in
24. https://mowr.gov.nic.in
25. www.bookforyou.com
26. www.indiawaterportal.com

ऊ. गूगल–प्लेस्टोर/सीडी–

1. ऋग्वेद- samarthapp/googleplaystore
2. महाभारत- samarthapp/googleplaystore.
3. रामायण- samarthapp/googleplaystore.
4. Sri Kamakoti App

.....इति सहायक एवं सन्दर्भग्रन्थसूची.....

प्रकाशित शोधपत्रसूची-

क्र सं	शोधपत्र का शीर्षक	शोध पत्रिका/ पुस्तक	ISBN /NO.	संस्क-रण	राष्ट्रीय /अंतर्राष्ट्रीय
1	आचार्यहरेकृष्णसतपथी कृत 'भारतायम्' महाकाव्य का धार्मिक चेतना में योगदान |	"अनन्ता" संस्कृत की अंतर्राष्ट्रीय शोध-पत्रिका	2394 - 7519	vol-5, Iss-3 मई-जून-2019 part-C	अंतर्राष्ट्रीय
2	आचार्यहरेकृष्णसतपथी कृत 'भारतायम्' महाकाव्य में पुरुषार्थचतुष्टय-विमर्श |	"वेदाञ्जली" अंतर्राष्ट्रीय शोध-पत्रिका	2349 - 364X	vol-10 part-3 जुलाई-दिसम्बर 2018	अंतर्राष्ट्रीय

परिशिष्टः—

'भारतायनम्' महाकाव्य की श्लोकानुक्रमणिका :—

क्र०सं०	श्लोक	सर्गानुसार—श्लोकक्रम

"अ."

१. अखण्डलोकस्य समस्तजीवनं० ३—३६
२. अग्निर्यथा भवति तस्य तथा० २—१४
३. अचिन्त्यचिन्तामणिमन्त्रमार्जित० १—८१
४. अजोः यतः जन्मनि दिव्यपुरुषः० १—१५
५. अज्ञानकारणवशान्नहितस्य शत्रुः० २—१२
६. अत्यन्तनिर्मलसुदर्पणतुल्यशुभ्रं० २—४५
७. अत्रत्यसागरजलं भगवत्पदाब्ज० १०—२
८. अत्रैव सातिरुपतिपुण्यतीर्थे० १०—३८
९. अतः कथं मत्सदृशान् स्मरिष्यति० ५—४९
१०. अतस्तस्याः नत्त्वाचरणकमलौ० १०—७
११. अर्थो हि नाम जनजीवनमुख्यलक्ष्यं० ४—२७
१२. अद्य क्वोस्ति भगीरथः० ८—६४
१३. अद्यापि सांसारिकमंगलार्थं० ७—२३
१४. अध्यात्मविद्या ऋषिवृन्दवन्द्या० १०—४०
१५. अधीत्यऽखिलशास्त्राणि प्रत्यागतो० ९—३४
१६. अन्तर्यामी त्वमसि भगवन् भास्करः० ५—६७
१७. अनन्तदुःखञ्च विशालवेदना० १—११
१८. अनन्तसौन्दर्यविभावभूषिता० ६—२४
१९. अनन्तशास्त्रार्थविचारणक्षमा० १—७५
२०. अनन्ततायाः भवति प्रतीकः० — ४—४९
२१. अनन्तकलात्तनुमेत्य मानवीं० — १—८९
२२. अनन्तरं जीवनजीवमुक्तये० — १—९०
२३. अनुक्षणं वज्रगभीर गर्जनैः० — १—६९
२४. अपाणिपादोपि समस्तवस्तु० — ६—२१
२५. अभ्यर्थितो गुरुवरोऽपि विनीतभावे० — ९—७८
२६. अभिषेकात् परं पूज्यपादश्रीचन्द्रशेखरः० —९—३२

२७. अभीष्टसिद्धिप्रदमादिवीजम्० — ७—१२
२८. अभूदवस्थाविषये प्रसाक्षिणी० ५—१८
२९. अम्भोनिधेरियमपूर्वसुरम्यशोभा० — १०—४
३०. अम्भोनिधे ! तव शुभेखिलरत्नगर्भे० —४—१६
३१. अमंगलानांशकुनं विलोकयन्० — ५—१५
३२. अयि पद्मनिकेतनमातृपद० — ४—३३
३३. अयि प्रिये जीवनमार्गदर्शिके० — ३—२०
३४. अयि महामहिमप्रियसागर० — ४—४३
३५. अयि महेश्वरमंगलकारण० — ८—१४
३७. अये धन्ये ! मन्येधिगतमधुना० —६—११०
३८. अयं वराको न गतोत्र धन्यता० — १—७
३९. अरे कलामाणिककान्हुचञ्चलः० — १—७०
४०. अवर्ण्यचित्तस्थिरताविराजिता० — १—७६
४१. अस्माकं जननी सदा मधुमयी० — ८—६०
४२. अस्माकमेव च विदुषां सतां समेषाम्०—१०—३६
४३. अस्माकञ्च ततः महान् समुदयः० — ८—४७
४४. अस्मिन् प्रदेशे जनको हि जातेः० — ७—१६
४५. अस्मिन् संकटपूर्णसन्धिसमये० — ८—६१
४६. अस्मिन् पवित्रभारतपुण्यखण्डे० —२—३२
४७. अस्मिन् विचित्रविरहे ननु० — ५—३६
४८. अस्मिन्महाविषमघोरकरालकाले० — ३—३२
४९. असीमसौन्दर्यविभूषितवस्तुना० — १—१३
५०. असीमसौन्दर्यविशेषसौरभम्० — १—१
५१. असौ ततः कुम्भकोणंप्रविष्ट० — ६—६६
५२. असंशयं या विजयस्य कुञ्जिका० — १—११२
५३. अहो जगद्दृश्यमतीवचित्रकम्० — ५—२३
५४. अहो विधे ! किं करुणा गता० — ५—२२
५५. अहो ! सुरम्यं फलपुष्पपल्लव० — ५—३१
५६. अहो ! मुखाब्जं हिममर्द्दितप्रभम्० — ५—२०
५७. अहं क्व मातः ! क्व धनुर्धरोर्जुनः० — १—६७

"आ."

५८. आकाशमात्रपतितानि जलानि तानि० — ४—११
५९. आकाशवाणीञ्च निशम्य राजा० — ६—१२

६०. आगच्छ मुग्धहृदये शिरसा नमाव० –१०

६१. आचार्यपादशुभदर्शनमवाप्य० – ६–८१

६२. आचार्यपादस्य महत्त्वपूर्णा० – ६–६८

६३. आचार्यपादैरूपहारदानैः० – ८–६४

६४. आचार्यपादो नितरां वरेण्य० – ८–८२

६५. आचार्यपादः मदुराइनग्रे० – ६–५५

६६. आचार्यपादो विजयस्य यात्रां ० – ६–१०२

६७. आचार्यदर्शनं कृत्त्वा स्वामिनाथो० – ६–२६

६८. आचार्यशंकरजगद्गुरुपूज्यपादो० – ६–७१

६९. आचार्यशंकरजगद्गुरुबालस्वामि० – ६–१०७

७०. आद्यो जगद्गुरुमहाप्रभुशंकरः० – ८–६

७१. आन्द्रप्रदेशभ्रमणंविधाय० – ६–६८

७२. आन्द्रप्रदेशे बहु मन्दिराणि० – ६–६६

७३. आधारहेतुरसि हे रमणीयतायाः० – ४–१६

७४. आयान्ति ये तव गुणेन विमुग्धचित्ताः० – ४–२८

७५. आयाहि हे मलयमारुतमननीये० – ३–२

७६. आरोग्यं विगतं यतो दिनकृतः० – ८–५२

७७. आरोग्यं ह्युपलभ्यते भगवतो० – ८–४६

७८. आलक्तकारुणनिभंभवतापनाशं० – २–५

७९. आशाः प्रसन्नहृदयास्सरितश्च धन्या० – २–८

८०. आस्तां नाम महार्घनीतिनिपुणैः० – ८–६६

८१. आसीत्तदेव बहुसुन्दरदारुखण्डः० – ३–३३

८२. आस्ये हास्यं हृदयकमले० – ५–७४

"इ"

८३. इत्येव कालेऽभवदेव शून्या० – ६–११

८४. इदं कुरुक्षेत्रसमं रणांगणम्० – १–१०७

८५. इदं न मे प्रार्थनमस्ति केवलं० – १–११८

८६. इदं पवित्रं भूवि भारतस्थलं० – ३–३२

८७. इदं पवित्रं भूवि भारतायनम्० – १–११७

८८. इदं हि सौभाग्यमहो महत्तपः० – ३–२३

८९. इयमिहास्ति भवत्पदपंकज० – ८–१५

९०. इयं देवी साक्षात्करुणाकारणकलां० – १०–६

९१. इयं प्रसिद्धा सुरभारती सा० – १०–४१

"उ"

६२. उदासभावान्वितचेतनाहतः० – १–१४

६३. उच्चारणं स्खलितमप्यतिशोभनीयं० – २–३०

"ऋ"

६४. ऋषिमुनीश्वरदानवदेवता० – ३–१२

"ए"

६५. एतत्सत्यं त्वमसि च धनी० – ५–७६

६६. एतत्समस्त शुभकार्यसुचालनार्थ० – ६–१०६

६७. एतत्सिद्धं किमपि भवतो नास्ति० – ५–६३

६८. एकाम्रनाथो भगवान् महेश्वरः० – ६–१३

६९. एवं प्रकारेण बहुस्थलेषु० – ६–७०

१००. एवं प्रणम्य पुरुषोत्तमभक्तराजय० – ६–६

१०१. एवं भ्रमित्त्वान्ध्रबहुस्थलानि० – ६–१०१

१०२. एवं भ्रमन्नुत्कलपुण्यधाम्नि० – ६–६७

"ऐ"

१०३. ऐक्यं स्थापयितुं शुभं० – ६–६

"क"

१०४. कथय हे प्रियवारिनिधेधुना० – ४–४०

१०५. कथामृतं ते जननि ! श्रुतं मया० – १–३१

१०६. कदैव मातस्तव पादपंकजे० – १–४७

१०७. कदैव मातस्तव पादपंकज० – १–४८

१०८. कदाऽहं वैकुण्ठे कुसुमतुलसीशोभित० – ६–३८

१०९. कदाऽम्बिके ! ते चरणांगुली० – १–८१

११०. कदाऽपि पूजाम्ब ! तवपादपंकजे० – १–५०

१११. कदाऽपि मातुः ऋणभारगौरव० – १–६

११२. कदाऽषाढ़े मासे विजयविभवे० – ६–३५

११३. कदा नन्दाधारे परमविमला० – ६–३६

११४. कदा नीले चक्रे विलसतिपताका० – ६–३३

११५. कदा श्रद्धारेणुस्फुरितरुचिना० – ६–३६

११६. कदा प्रशंसा च कदापि भर्त्सना० – १–८०

११७. कदा हीन्द्रधुम्ने मधुरमधुरे० – ६–३४

११८. कदा शंखक्षेत्रे कलिकलितगंगा० – ६–३२

११९. कदा तं बौद्धानां परमशरणं० – ६–३७

१२०. कदा च वन्यैः हरिणैः कदा शुकैः० — १—७८

१२१. कपिलतीर्थविनिः सृतशाश्वतः० — १०—४३

१२२. कर्तव्यं करणीयमेव नियमैराराध्यतां० — १०—४८

१२३. कर्णाटकभूमिं प्रणिपत्य सम्प्रति० — १०—१८

११४. करुणाकणिकासिन्धो० — ४—३५

१२५. कल्पान्तकालकान्ताय० — ४—३७

१२६. कलेवरं रक्तपलादिनिर्मितां० — ५—२६

११७. कलौ कलिध्वंशविधानसक्षामो० — १०—१६

१२८. कामप्रदा वन्दितरुक्मणीयं० — ७—१५

१२६. कामेन जर्जरितजीर्णविदग्धदेहः० — २—२४

१३०. कारुण्यमूर्तिरवतीर्ययदर्णपूर्णा० — ८—२

१३१. काले गते क्व च गता प्रियधूलिमेखला० — २—२६

१३२. कालक्रमेण मनुजः निजबाल्यभावं० — २—४८

१३३. का वा विश्वकथाव्यथा ! श्रुणु सखे ! ० — ८—५८

१३४. काशीनृपो मदनमोहनमलवीय० — ६—७७

१३५. काशीनिवासिविदुषां सुमहत्सभां० — ६—८०

१३६. किमेतदाहोस्विदमन्दचन्दनं० — ५—३२

१३७. किं पंकजं स्फुटितमस्ति हि० — २—१०

१३८. कृत्त्वा भीतिं कुलिशनिकरा० — ६—६५

१३६. कृतं हि किं दुष्कृतमेव जीवने० — ३—३१

१४०. कृतं मया यद् ह्यथवा करिष्यते० — १—८८

१४१. कृपार्थिपुत्रन्तव पादपद्मयोः० — १—११५

१४२. कृष्णानदीपूतपयः प्रवाहे० — ६—१००

१४३. कृष्णा कदा च यमुना च० — ४—१३

१४४. कोऽसौ शिशुः कथमिहागतः० — १—११६

१४५. कंसं परं भोजकुलावतंसं० — ७—५

१४६. क्व मेऽस्ति पुत्रः क्व गतः० — १—६४

१४७. क्वाऽयोध्या सा परमपुरुषैः० — ५—६६

"ख"

१४८. खाद्यं पर्युषितं गुणैः विरहितं० — ८—४६

"ग"

१४६. गंगातोयविशोधनाय विहित० — ८—२३

१५०. गंगानाम परं महासुरनदी० — ८—४०

१५१. गंगा नाम पवित्रमस्ति नितरा० – ८–४८

१५२. गंगा पुण्यजला स्वकीर्तिध्वला० – ८–१६

१५३. गंगायां नितरां वहन्ति पयसामाद्या० – ८–४३

१५४. गंगायाः खननं कदोपि न कृतं० – ८–६३

१५५. गंगास्त्रोतसि नित्यमेवाधुना० – ८–४६

१५६. गंगाऽस्मदीयमहनीयपरम्परायाः० – ८–६

१५७. गंगे ! स्नेहमयी त्वमेव जननी० – ८–६७

१५८. गंगे ! ते विमले तरंगपटले० – ८–३४

१५९. गच्छन् यथा श्वा हि युधिष्टरेण० – ९–६६

१६०. गत्वा पुरीं च पुरुषोत्तमदर्शनेन० – ९–९४

१६१. गते वसन्ते भविता पिकः पिकः० – ५–२७

१६२. गतं दिनं चिन्तनतो न निर्नयो० – ५–१७

१६३. गर्भाद्यदाऽवतरतीह शिशुः० – २–७

१६४. गान्धी हि हिन्दीमधिकृत्य चोक्तवान्० – ९–५३

१६५. गिरिपतौ मम भक्तिरखण्डिता० – १०–५०

१६६. गुरुपरम्परया परिदीपितं० – ३–११

१६७. गृहाण हे मंगलमात्रकारणः० – ३–३७

१६८. गृहं गृहं नो विपिनं गृहं यतः० – ५–२४

"घ"

१६९. घनान्धकारे गिरिरन्ध्रकन्दरे० – १–१०१

"च"

१७०. चकास्ति यस्याः जननी वसुन्धर० – ५–५३

१७१. चक्षुर्युगं भुवि निमील्य च० – १०–३४

१७२. चक्षुश्च पश्यति तदेव धरातले० – २–४०

१७३. चतुर्थश्रेणीच्छात्रऽसौ आंलभाषैक० दृ ९–२७

१७४. चरणहस्तमनः करणैः कृतं० – १०–५५

१७५. चराचरस्रष्टृवरं परात्परं० – ५–१

१७६. चलादतीतो नियमो निरन्तरं० – ५–९

१७७. चिन्ता ततो हृदि ममोभवदेव० – ५–३७

१७८. चेंगालपाट्टोनगरे प्रपठ्य० – ९–६०

"ज"

१७९. जगज्जलप्लावितविव्रतः जनः० – १–४८

१८०. जगज्जलाधारकरालविभ्रम० – ५–२८

१८१. जगद्गुरुस्थापितकामकोटिक० — ६—१४

१८२. जगद्गुरुर्वेदवरः स शंकरः० — १—८

१८३. जगत्प्रसूतेः प्रभृति प्रभाधना० — ७—२६

१८४. जगद्भुवां जीवनमन्त्रधारिणी० — १—८३

१८५. जगदसीममनोवलधीरता० — ४—४५

१८६. जगदीशमहाविभुपूततनो० — ४—३४

१८७. जनस्य नो तज्जननं निरर्थकं० — ५—३५

१८८. जनस्य मृत्युर्भविता ध्रुवो भवे० — ५—३३

१८९. जन्मान्तरेऽपि मनुजाः भवता० — ४—२३

१९०. जलं न तत्याज जलौघवाहकः० — ५—५

१९१. जयत्यहो जीवनमार्गसिद्धये० — ६—१

१९२. जयति जह्नुसुताचरणाम्बुज० — ८—११

१९३. जयति सम्प्रति भारतभाः प्रति० — ३—६

१९४. जयति स प्रियविश्वपतिर्गतिः० — ८—१३

१९५. जयतु भारतभास्वरभारती० — ३—५

१९६. जाने त्वमेव भगवत्यमरप्रसूता० — ५—४४

१९७. जाने हिमाद्रिमहनीयशुभप्रदेशे० — ३—३

१९८. जायन्ताञ्च गृहे गृहे विनयिनो० — ८—७०

१९९. ज्वलति एष जले वडवानलः० — ४—४४

"त"

२००. तच्छैशवे सुविमले विगते० — २—४४

२०१. तत् शुभ्रदर्पणनिभं शिशुदिव्यचित्तं० — २—४६

२०२. तत्त्वं द्वैतविचारदर्शनपथेनाविष्कृतं० — १०—१५

२०३. तत्तद्वैतविचारतत्त्वरचनासम्भार० — १०—१६

२०४. ततस्सः माङ्गास्नगरीं प्रविष्टो० — ६—६७

२०५. ततस्त्वया सार्धमहं महोमयीं० — ३—२१

२०६. ततस्तस्य प्रवेशोभूत्० — ६—२४

२०७. ततो गुरुस्तीरुपतिं समेत्य० — ६—६३

२०८. ततो गुरुः पश्चिमवंगदेशं० — ६—८७

२०९. ततश्च शभुस्तपसा हि तोषितः० —१—६६

२१०. ततश्च राज्ञी भुवि गुण्डिचाख्या० — ६—२२

२११. ततश्च मार्गे बहुदेशभक्तैः० — ६—५०

२१२. ततः समानीय स दारुविग्रहान्० — ६—२६

२१३. ततः स काञ्चीपुरपूज्यपादः० — ६—४०

२१४. ततः स काञ्चीपुरमेत्य० — ६—५८

२१५. ततः स राजा जगदीश्वरप्रभो० — ६—२५

२१६. ततः गुरुः केरलदेशतोऽसौ० — ६—५४

२१७. तथाविधानां क्षय एव वैरिणां० — १—११०

२१८. तथाऽपि मातस्तव दिव्यशाश्वतः० — १—१०४

२१९. तथैव दीना वयमत्र चञ्चला० — ५—५८

२२०. तदर्थमाचारविचारपूता० — ७—१७

२२१. तदेव धाम प्रियभारताजिरे० — ३—१६

२२२. तदेव विश्वोज्ज्वलगौरवावहं० — ३—१४

२२३. तदेव मातुर्हृदयं दयामयं० — १—१०६

२२४. तदेव मातर्हि पुरीषवर्जनं० — १—२४

२२५. तदेव दृष्ट्वा नतमस्तकोभवत्० — ३—२६

२२६. तपः कठोरं समुपास्य पार्वती० — ७—२७

२२७. तपस्विवेशेन समाधिमग्नः० — ७—२२

२२८. तमः प्रवाहे घनगर्जने श्रुते० — १—७१

२२९. तव महामहिमानमहं विदन्० — ४—३६

२३०. तवाधरे यास्ति सुधारसच्छटा० — १—५५

२३१. तवैवमुत्संगकोमलस्थले० — १—५३

२३२. तवैव जन्म ह्यभवत्कदा कुतः० — १—३०

२३३. त्वोदरे विश्वविभूतिकन्दरे० — १—५६

२३४. तरौ लतायाञ्च तृणे च पर्वते० — १—८२

२३५. तस्मात्कथं भवजनैः सह तिष्ठसि० — ५—४५

२३६. तस्मात्गते सुहृदि कस्य न दुःखमस्ति० — ५—४१

२३७. तस्माच्छान्तिरहो न कस्य हृदये० — ८—५४

२३८. तस्मात्परं पथि स भक्तसुपूजितः० — ६—७४

२३९. तस्मात्पर्यटकाः विभिन्नरुचिकाः० — ८—४६

२४०. तस्माद्वक्षस्यतुलकुसुमै० — ५—७१

२४१. तस्मात्स्वकीयेन सदुद्यमेन० — ६—१०३

२४२. तस्मिन् प्रचण्डलयगण्डजले हि० — ४—२२

२४३. तस्मिन् स्थले शंकरजन्मपूत० — ६—८४

२४४. तस्मिन् वयसि स स्वामिनाथो० — ६—३१

२४५. तस्य व्यक्तित्त्वमालोक्य प्रतिभां० — ६—२६

२४६. तस्यैव चक्षुषि चकास्ति० – २–२६

२४७. तं शैशवं मधुमयं रसभावपूर्ण० – २–३६

२४८. तया हि दृष्टा भुवि जन्मवेदिका० – १–१६

२४९. तत्रादिशंकरमहेशमहामनोज्ञ० – ६–७६

२५०. तत्रैव वर्णितमहो ध्रुवनामकस्य० – २–२६

२५१. तत्रैव पण्डिता मुख्या अपाठयन्० – ६–३३

२५२. तामिळ्नाडुप्रदेशस्य दक्षिणाकोर्टमण्डले० – ६–१८

२५३. तीर्थेषु धन्या नितरां सुपुण्या० – ७–८

२५४. तुंगागंगातरंगायितजलधिजल० – १०–८

२५५. तृणानि तत्युर्हरिणा वने वने० – ५–८

२५६. तेजोवीर्ययुतः परात्परसुतः सच्चिन्मयो० – ८–२८

२५७. तेजोव्योममरुत्पयः क्षितिचयैः० – ८–७३

२५८. तेषां बुधानां महती हि सेवा० – ६–५

२५९. त्रिजगतां रमणीमणिवारुणा० – ८–१२

२६०. त्रेतायुगे रावणमेव हन्तुं० – ६–१७

२६१. त्वदीयनेत्रोत्पलकोमलान्तरे० – १–५४

२६२. त्वदीयसम्पर्कमवाप्य शंकरः० – १–२३

२६३. त्वदीयपादाब्जयुगं हि सेवितुं० – १–६०

२६४. त्वदीयपादाम्बुजधूलिधारया० – १–४६

२६५. त्वदीयपादाम्बुजपुण्यपीठके० – १–४५

२६६. त्वमेव बुद्धिरस्त्वमसीह चेतना० – १–६३

२६७. त्वमेव जाया जननी त्वमम्बिके० – १–५८

२६८. त्वमेव शान्तिश्च मतिश्च चेतना० – १–२२

२६९. त्वमेव सम्मोहनमन्त्रमूर्छिता० – १–६५

२७०. त्वमेव सिद्धिर्भुविविन्ध्यवासिनी० – १–६४

२७१. त्वमेव माता महिषासुरमर्दिनी० – १–२०

२७२. त्वं हि स्वांगैर्धरसि नियतं वाडवाग्निं० – ५–६८

"द"

२७३. दत्त्वा बन्धो ! मधुमयसुधां० – ५–६१

२७४. दीनार्तिनाशंकरुणाविलासं० – ६–१५

२७५. दलितमानवरक्षणतत्परां० – ३–४

२७६. दारिद्र्यनाशनिपुणा भयहरिणी० – ४–२०

२७७. दारिद्र्यदुःखविनिवारणपूर्णदक्षा० – ४–६

२७८. दृष्ट्वा परमाचार्याणां तेजोराशिं० – ६–३७

२७९. द्वारावतीसुन्दरमन्दिरे यः० – ७–२६

२८०. द्वारावतीतीर्थमिह प्रणम्य० – ७–१६

२८१. द्वारं हि योगेश्वरशासनस्य० – ७–३

२८२. द्वेषं त्यक्त्वा स्वतनुभवना० – ५–६२

२८३. दिनावसानं किमु नाद्य विद्यते० – ५–१६

२८४. दिव्यलोकं वितरति पुनर्यत्र० – ५–७३

२८५. दैवबन्धो ! युगकवलितः० – ५–७०

२८६. देवास्तथा पितृगणाः ग्रहतारकाश्च० – ४–१५

२८७. देहि प्रभो ! जलनिधेनुमतिं० – ६–२

२८८. दुःखं विभातु हृदये ननु नास्ति० – ५–४२

२८९. दुःखं यतः वयसि बृहितं एव लोकः० – २–२३

२९०. दुःखं यतः मनसि चिन्तनं० – २–२२

"ध"

२९१. धन्येयं विभुविश्वनाथनगरी० – ८–७५

२९२. धन्यास्ति निर्माणकलाप्रसिद्ध० – ७–१४

२९३. धन्यं तत् शाश्वतं पुण्यं० – २–५३

२९४. धन्यं कान्तकलेवरेण सफलं० – ६–३

२९५. धर्मप्रचाराय विकाशनाय० – ६–१०५

२९६. धरातले धामसु धन्यधन्या० – ७–७

२९७. धर्मप्रियाः सुमनसः मनसोऽर्पितेन० – ४–२६

२९८. धर्मक्रियास्तम्भनिभः मठः स० – ७–१०

२९९. धृतं हि गर्भं नवमासाञ्जसा० – १–१२

"न"

३००. न कोपि कान्ता भवताऽस्ति० – ५–२५

३०१. नगाधिराजामृतकुम्भधारिणी० – १–४३

३०२. न दत्तमास्ते शिशवे स्तनामृतं० – १–६५

३०३. नदनदीगिरिकन्दरवारिधि० – ३–१०

३०४. न भक्षितं किं न जलं निवेदितं० – १–६७

३०५. नमामि नीलाद्रिनिसर्गसुन्दर० – ६–२८

३०६. नमामि मातस्तवपादपंकजं० – १–४

३०७. नमो नमस्ते प्रभुचंद्रशेखरः० – ६–१७

३०८. न वेद्मि मातः कतिवारमेव० – १–२६

३०६. न वेद्मि मातः किमुतामदृश्यतां० — १—११४

३१०. नवं नवं भावविलासवेष्टितं० — १—४२

३११. नष्टे गागजले सुवासमलय० — ८—३३

३१२. न सन्ति गावः निजभक्ष्यतोषिताः० — १—६६

३१३. न सा समेषां सुलभा महीतले० — १—११३

३१४. नानापंकादिमलसहिताः पापकायाश्च० — ५—८१

३१५. नासीत् वृद्धः न च मूर्तिकार्यं० — ६—१०

३१६. निजयशोमहसा सहसोज्ज्वलं० — ३—८

३१७. निजार्जित स्वान्ततरंगसंगमैः० — १—३३

३१८. नित्यं पावयतच्च वायुवलयं० — ८—७२

३१९. नित्यं शिशुर्विभुरहो विभुरेव० — २—४

३२०. निमन्त्रिताः ब्राह्मणदेववृन्दाः० — ६—४

३२१. निरन्तरं यज्जनताजनार्धनः० — १—६३

३२२. निरन्तरं रुपरसादिभीषणैः० — १—१०३

३२३. निराशभावान्वितशीर्णमानसः० — १—१११

३२४. निशान्तवाताहतकम्पिता० — १—६८

३२५. नीत्वा पत्रं सपदि जलधे ! ० — ५—६०

३२६. नीलाद्रिशेखरविभोर्जगदीश्वरस्य० — ४—७

३२७. नीलान्धकारनिकरो बहुदुःखद० — ५—४६

३२८. नीलाम्बुदश्यामलकान्तिकान्तं० — ६—१३

३२९. नोचेत् चेज्जननि ! त्वदीयकरुणा० — ८—६५

"प"

३३०. पद्मावतीचरणपंकजरागरक्तः० — १०—२१

३३१. पन्थाः हि यत्र भुवि मानवमंगलार्थ० — १०—२८

३३२. पपात वा पादपवृन्दतो० — ५—७

३३३. पयोनिधेः सन्तरणं भयंकरं० — १—५

३३४. परन्तु सर्त्तोभवदेव वृद्धः० — ६—८

३३५. परन्तु पूज्ये ! सुखदेशवासिनः० —५—५७

३३६. परन्तु निर्माणविशेषजात० — ६—९

३३७. परार्थमेकां जनकात्मजां कदा० — १—४४

३३८. परिवेशविज्ञाने संगीते च कलाविधौ० — ९—३८

३३९. परं मध्येमार्गं न भवति कदा० — ९—१११

३४०. पवित्रभावान्वितशीतलैर्जलैः० — १—३२

३४१. पवित्रनीलाचलधाम्नि हे प्रिये० — ३—२४

३४२. पवित्रयन्ती वसुधां सुधारसैः० — १—१७

३४३. पश्याद्य तत्सम्प्रति भारतस्य० — ७—२

३४४. पकिस्तानभयं बहिः खलु० — ८—४६

३४५. पारावार ! प्रभवसि यदि त्वं० — ५—८०

३४६. पिता मदीयः गगनोपम महान्० — १—८५

३४७. पितोसीत् स्वामिनाथस्य० — ६—२४

३४८. पुर्यौं स्वयं गजपतिनृपतिर्गुरुणां० — ६—६५

३४९. पूजाविधानमखिलं प्रतिपाद्य० — ६—६३

३५०. पूज्या माता महालक्ष्मी० — ६—२०

३५१. पूतातिपूतसलिलं सततं वहन्त्य० — ४—४

३५२. पूर्णाकारं सकलसरितः सागरं० — ५—७७

३५३. पूर्वाम्नायपवित्रधाम हि जगन्नाथ० — ६—४०

३५४. पृथ्वी समस्तधनसम्पदपारपारा० — २—२८

३५५. प्रचण्डकालस्य करालपाशतः० — १—७४

३५६. प्रचण्डशैत्यं तनुकम्पकारकं० — १—७२

३५७. प्रचण्डतापत्रयभिन्नभूतले० — १—२१

३५८. प्रचण्डवर्षाघनभीमगर्जनैः० — १—४१

३५९. प्रचारितोभूत्प्रणयस्य वार्ता० — ६—४२

३६०. प्रणम्य मूर्ध्ना विभुवद्रिनाथं० — ७—३६

३६१. प्रदाय पुण्यं जगतां हिताय वा० — १—३७

३६२. प्रपीडितानामपि वैरिणां पुनः० — १—६२

३६३. प्रबोधितोऽपि प्रभुपादवान्धवैः० — ५—३६

३६४. प्रभातकालीनसुशीतलोनिलः० — ५—३

३६५. प्रयामि तद्भारतसंगरांगणं० — १—११६

३६६. प्रह्लादनामकशिशोर्विभुभक्तिधारा० — २—३५

३६७. प्रातः समस्तसुरशक्त्यरुणोदयेन० — ४—१

३६८. प्राप्नोति तोयमतुलं सततं तृषार्त्तः० — ४—१४

३६९. प्राणप्रिये ! जगति जीवनदानधन्ये० — ३—१

३७०. प्रेमत्यागतपः पवित्रवलया या भारते० — ८—३८

३७१. प्रौढ़ेऽथवा युवकजीवनमार्गमध्ये० — २—४७

३७२. प्रियेऽत्र किञ्चित् क्षणमावासावः० — ४—४८

३७३. प्रियेऽत्र या शिल्पकलाऽस्ति मन्दिरे० — ६—२७

३७४. प्रिये जगन्नाथपवित्रदर्शनं० – ६–३१

३७५. प्रिये प्रसिद्धे यमभून्महामयी० – ६–२३

३७६. प्रिये प्रयावः प्रथमं हि तत्स्थलं० – ३–१६

३७७. प्रिया अथ भार्या जननप्रदायिनी० – १–२

३७८. बन्धो ! त्वां हि प्रतिदिनमहो० – ५–६४

"ब"

३७९. बहति यत्र भगीरथसाधना० – ८–१७

३८०. बहवः भवतापविदग्धहृदः० – ४–३२

३८१. बहुपुरातनकालत आगता० – ८–१६

३८२. बहुरंगतरंगविभंगयुते० – ४–३१

३८३. बहूनि पुष्पाणि फलानि यानि० – १–४०

३८४. बहूनि वर्षाणि नगेन्द्रकन्दरे० – १–६८

३८५. बाल्येऽसौ परमाचार्यः स्वामिनाथेति० – ६–२६

"भ"

३८६. भक्तप्रदत्तमपि वस्तु न तद्गृहित्त्वा० – ४–२५

३८७. भक्तार्तिनाशपरायण ! दीनबन्धो० – १०–३२

३८८. भक्ताः समेत्य भगवन् ! तव पुण्यतीर्थं० – १०–३३

३८९. भवतु पुष्पित एव भवत्पथः० – ४–४७

३९०. भाग्यं चेत् भविता ततः सुरनदीतोयं० – ८–३५

३९१. भाग्यं तत्क्व गतं ? क्व शान्तिरधुना० – ८–३६

३९२. भाषाणां जननी जगन्निवसतां सञ्जीवनी० – १०–४२

३९३. भिक्षां प्रदेहि जगदीश्वरि ! हेन्नपूर्णे० – ८–४

३९४. भूमावतीर्य जननीप्रकृतिं विलोक्य० – २–६

३९५. भ्रमन् पतंगस्तनुशान्तिवाञ्छया० – ५–५२

३९६. भ्रमन् स्वकीयप्रियभारतान्तरे० – ६–६

"म"

३९७. मंगल लोककान्तायै० – ४–३६

३९८. मनसि किन्तु महत्यनुशोचना० – ८–१८

३९९. मनुष्यमात्रेऽत्रमृदादिगात्रके० – १–१६

४००. मन्ये किमस्ति सुतरां मम० – १०–३६

४०१. मनोहरैर्मोकुलिपंक्तिकूजितैः० – ५–२

४०२. मनः प्रजानामिह रञ्जिज्यत्वा० – ७–११

४०३. ममेव यावज्जननीह जीवति० – १–८६

४०४. महनीयकृपाकणिकाम्बुपते० — ४—३०

४०५. महात्मना नेतृवरेण गान्धिना० — ७—२५

४०६. महाहवे भारतभीषणांगणे० — ७—३२

४०७. महीतले ते जननीह सन्ति ये० — १—१०२

४०८. मातर्जाह्नवि ! तव प्रशान्तविमले० — ८—६२

४०९. मातर्जाह्नवि ! ते शिवांकपटले० — ८—२४

४१०. मातुस्स्तनौ चलशिशुः करपल्लवाभ्यां० — २—१६

४११. मातुश्च गर्भनिलये नवमासकालं० — २—६

४१२. मातामही वयसि जातु गृहीतयष्टि० — २—४१

४१३. माता स्तन्यमहो द्दाति शिशवे० — १०—४६

४१४. माता हि नो जगति भारतभूमिरेषा० — १—१२०

४१५. मातः ! कदा तव सुधामयशान्ति० — २—५०

४१६. मार्गस्य मध्ये महनीयभाव० — ७—५७

४१७. मार्गस्य मध्ये कदा गणेशं० — ६—४५

४१८. मित्रं भवत्यथ रिपुर्बलवान् यदा० — २—१७

४१९. मुखे हि ते नृत्यति चन्द्रमण्डलं० — १—५६

४२०. मूर्खातिनिर्दयमृगान्तवृन्ददत्त० — ५—४६

"य"

४२१. य एव साक्षाद्वड़दाण्डढूलिभिः० — ६—३०

४२२. यः कोऽपि जीवजगतो दृतरूप० — ४—२८

४२३. याच्चिन्तयत्यपि मनोनिलये० — २—२६

४२४. यज्ञात्परं कश्चन वृद्धशिल्पी० — ६—६

४२५. यतो गजो नक्रधृतस्ततः प्रभु० — ५—५६

४२६. यतः सदाऽज्ञानतमोमया वयं० — ५—३४

४२७. यत्र प्राचीनकालादृषिमुनि—कविभिः० — १०—१०

४२८. यत्रैव नीलवसना प्रकृतिः प्रसन्ना० — १०—२७

४२९. यथोहमस्मि ह्यधुना यथोभवनं० — १—५७

४३०. यथा प्रधुमोऽनलदीपनात्ततः० — ५—१४

४३१. यथा शरच्चन्द्रमनोरमश्रियं० —७—३०

४३२. यथा महत्कष्टचयेन सञ्चितं० — १—२७

४३३. यदाऽर्जुनोभूद्‌र्णभूमिमण्डले० दृ १—६२

४३४. यदाऽर्जुनः भक्तिभरेण चेतसा० — १—६६

४३५. यदा समागत्य मदीयबान्धवाः० — ५—१६

४३६. यदा स यात्रां कृतवांश्च केरलं० — ६—५२
४३७. यदाहमासं चलचञ्चलः शिशुः० — १—२४
४३८. यदाह्यशृण्वं भगिनी दिवंगता० — ५—२१
४३९. यदि द्विरेफः शतपत्रशंकया० — ५—५१
४४०. यद्दीयते शिशुरहोत्र तदेव भुंक्ते० — २—१६
४४१. यदीयसंस्पर्शमवाप्य पावनं० — १—३६
४४२. यदीह संसारविलोलविभ्रमे० — १—३
४४३. यदेव किञ्चिन्मनसीह चिन्तनं० — १—६०
४४४. यया समाधिं समुपास्य दुष्करं० — ७—३३
४४५. यस्माद्बन्धोऽद्य भवजविषादाग्निना० — ५—७६
४४६. यस्मिन् भारतदर्शनस्फुरित० — १०—१२
४४७. यस्मिन् देशे लयमरणजा० — ५—७२
४४८. यस्मिन् विभाति भगवान्० — ६—६०
४४९. यस्य श्रीः रमते यदा नरपते० — १०—११
४५०. यस्यास्तीरतलेतमालगहने० — ८—२१
४५१. यस्यामलौकिकगुणोज्ज्वलभूषिताया० — २—३७
४५२. यस्याः स्रोतसि पावने विलिलिताः० — ८—२२
४५३. यस्याः वारि दिने महर्षिरचितात्० — ८—५०
४५४. यस्याः पदाब्जयुगमुत्कलमातृदेव्याः० — ६—६१
४५५. यस्याः स्निग्धतरैः पवित्रसलिले० — ८—२०
४५६. यस्या अंकतले प्रफुल्लमनसा० — ८—४४
४५७. याता क्व सा सपदि शैशवधूलिमेखला० — २—४६
४५८. यात्रादिशंकरप्रतिष्ठितपुण्यधाम० — ६—६६
४५९. या नित्या वेडमूलास्मृतिचयचरणा० — १०—४५
४६०. या या बिन्ध्यहिमाचलादिजनिताः० — ८—४१
४६१. या वा संहतिसंस्कृती प्रतिपदं० — १०—४३
४६२. योगेश्वरः श्रीवसुदेवपुत्रः० — ७—४

"र"

४६३. रहस्यमूर्तिर्भुवि दारुविग्रहः० — ३—१८
४६४. राजां स्वकीयपदवीस्मरणाप्तगर्वः० — ३—३०
४६५. राजा सोमेश्वरोऽसौ समजनि० — १०—१७
४६६. राजा यत्र रसेश्वरः सुमधुरः० — ७—१८
४६७. राजेन्द्रद्युम्नः जलधेः० — ६—३

४६८. रामानुजोऽनुपमभक्तगणाग्रगण्य० — १०—३४

४६९. रुग्णाः शिल्पगणास्ततः स तू परं० — ८—३०

"ल"

४७०. लक्षाधिकाः प्रतिदिनं ननु यत्र० — १०—२५

४७१. लंकाप्रयाणसमये सह ० — १०—१

४७२. लतोवलावातसमीरिता० — ५—६

४७३. लब्ध्वा यदेव मनुजो ह्येतिमृत्युमेति० — ४—१७

४७४. लाभं न वाञ्छति कदा न कदापि हानि० — २—१३

४७५. लोकाः सन्तु निरामयाश्च० — ८—७१

"व"

४७६. वने मृगेन्द्रोऽपि नृपः ० — ७—३१

४७७. वन्दावहे श्रीविभुवद्रिनाथं० — ७—३५

४७८. वन्दे मुकुन्दमधुकन्दपदाराविन्द० — २—३

४७९. वन्धोर्वचः सुमधुरं सुधयाविधौतं० — ५—४०

४८०. वन्द्योऽयं विभुभावभासितशिशुः० — २—५२

४८१. वयं विमूढा भवतापपातकैः० — ५—५५

४८२. वरं धरातल्पमनल्पकाकृतिः० — ५—३०

४८३. वलाहकस्यावरणं नभस्तले० — ५—४

४८४. वसुन्धरा धरयतीह सन्ततिं० — १—२९

४८५. वस्त्रं विना विलसति प्रतरां० — २—२७

४८६. वाणी विषण्णहृदया छलनाप्रपञ्चौः० — २—४३

४८७. वाणी स्वभावसुलभा मधुरा च रम्या० — २—३१

४८८. वाराणसीपुरपतिं पुनरेकवारं० — ८—७६

४८९. वाराणसीं जिगामिषुर्विदुषां० — ९—७६

४९०. विचित्रतेयं जगतोस्ति यत्सदा० — ५—२९

४९१. विज्ञानस्य परे युगे सुरनदीतीरे० — ८—२६

४९२. विज्ञानं सकलं पराहतमलं ज्ञानं० — ९—७

४९३. विदितमेव सतां तव गर्भके० — ४—४१

४९४. विदीर्ण वक्षः परिगृह्य कर्षणं० — १—३८

४९५. विद्यारण्यविभाविभूषितसतां० — १०—१३

४९६. विद्या शास्त्रविचारसरसहिता० — ७—३४

४९७. विधाय पूजां बहुमन्दिरेषु० — ९—४४

४९८. विधीयते येन शुभस्य कामना० — ७—२८

४६६. विनिर्मिता मन्दिरमालशोभिता० — ७—२६

५००. विभिन्नरूपाः रिपवो भ्रमन्त्यहो० — १—१०६

५०१. विभिन्नरोगैः कलितं कदा वपुः० — १—१०८

५०२. विराजते भारतमेखलेव या० — ६—१२

५०३. विलसतात्तव वक्षसि तत्सुधा० — ४—४६

५०४. विलोकयन्ती जननीं च हे प्रिये० — ३—१५

५०५. विविधतीर्थपवित्रतया तया० — ३—६

५०६. विविधसंस्कृतिसंस्कृतमानसं० — ३—१३

५०७. विश्वख्यातमभूत् स्वसौरभवशात्० — ८—४५

५०८. विश्वस्य मंगलविधाननिमित्तमेव० — ४—१८

५०६. विश्वावसुः शवरवंशकलावतंशः० — ३—२६

५१०. विश्वे वित्तमदैः कदा च क्षमतया० — ८—५७

५११. विश्वं यदा प्रलयगण्डजलेन लुप्तः० — ४—८

५१२. विश्वं विश्वनियामकस्य० — ८—५५

५१३. विस्तीर्णरम्यतमभारतभूमिरेषाः० — २—१

५१४. विहाय भीतिं भवकाननान्तरे० — १—७७

५१५. विहाय संसारमरालमानवः० — ५—५४

५१६. बुधवरैः सह काव्यविनोदनं० — १०—४१

५१७. वृद्धोऽथवाऽस्तु तरुणी युवकोथ० — २—२०

५१८. वेदधर्मप्रकाशार्थमाचार्यः० — ६—३५

५१६. वेदान्तस्य तदेव तत्वमखिलं० — ६—५

५२०. वेदान्तिनो विश्वगुरोर्वरेण्य० — ६—४६

५१. वेदे तथा वैदिकधर्मतत्त्वे० — ६—४१

५२२. वेदे श्रीसंहिता सतां हितरता० — १०—४४

"श"

५२३. शतं हि वर्षाणि कठोरसाधना० — ६—१६

५२४. शान्तः प्रशान्तविपिने० — ५—४७

५२५. शान्तस्वरूप ! जलधे ! शिवकल्पयोगिन्० — ४—१२

५२६. शास्त्रानुसारेण समस्तचातुः० — ६—४७

५२७. शिक्षाप्रचारविषये नियतञ्च० — १०—२६

५२८. शिल्पस्थानतोर्थनीतिविषये० — ८—३१

५२६. शिल्पानां परिचालनाय० — ८—२६

५३०. शिल्पेभ्यो ह्युलभ्यन्ते० — ८—२७

५३१. शिवेन या मंगलकरिणा युता० — १—७६

५३२. शिशुस्वभावात्तगर्भमण्डले० — १—२८

५३३. श्रीक्षेत्रराजिततनुर्भगवान् भवेशः० — ४—२

५३४. श्रीचक्रसंशोभितमादिशंकरः० — ६—४६

५३५. श्रीचन्दनं भवति तस्य यथा पवित्रं० — २—१५

५३६. श्रीचन्द्रशेखरसरस्वतीपूज्यपादः० — ६—८६

५३७. श्रीद्वारिकाधीशविराजितस्य० — ७—१३

५३८. श्रीनीलमाधवमनोहरदिव्यमूर्ति० — ३—२८

५३९. श्रीपूर्वपेरूम्बुदुरं प्रसिद्द० दृ ६—६६

५४०. श्रीवेंकटेशकृतकृछ्रतपोमहिम्ना० — १०—२२

५४१. श्रीलश्रीस्वामिपदानां मातृभाषास्ति कन्नड़ः० — ६—२३

५४२. श्रीविश्वनाथनगरी च गरीयसी सा० — ८—१

५४३. श्रीशंकरः शिवमहोमहिमावतारो० — ८—३

५४४. श्रीशैलमन्दिरमनोहरपुण्यभूमौ० — ६—७२

५४५. श्रीसुव्रमणिआशास्त्रिपादाः विद्याविशारदाः० — ६—१६

५४६. श्रीस्वामिनां केवलमाशिषं तां० — ६—१०४

५४७. श्रीस्वामिनां शंकरस्नस्तवानां० — ६—८३

५४८. श्रीस्वामिनः सकलपावनतीर्थतोये० — ६—६२

"स"

५४९. स इन्द्रधुम्नः बहुभाग्यभाजनं० — ३—२७

५५०. सकललोकविनोदबर्द्धने० — १०—५८

५५१. सकललोकसुलोचनसुन्दर० — ८—३८

५५२. सकलविश्वविसारितचारुता० — ४—३८

५५३. सकलसाधनया परिमार्जितं० — १०—५२

५५४. स कामकोटिपीठस्य कर्तुमाचार्यदर्शनम्० — ६—२८

५५५. स कालहस्तिस्थलमेत्य तत्र० — ६—६२

५५६. संगीतं रमणीयतालालयसम्भारादिसंशोभितं० — १०—१४

५५७. सच्चित्स्वरूपमधिगम्य विशोभमाना० — २—२५

५५८. स जयति हिममेरूस्वर्गभूमिप्रकश० — ७—३७

५५९. स तत्र काञ्चीनगरेश्वरेश्वरीं० — ६—११

५६०. सत्यं ब्रह्मा सनातनं जगदिदं० — ६—४

५६१. सत्यं यदुक्तमिह तद्विवुधैर्वरेगण्यैः० — ५—३८

५६२. सत्यं यत्र प्रभुकरकृतं० — ५—७५

५६३. सदाऽभवच्च स्खलनं पदे पदे० — ५—१२

५६४. स देशबन्धुर्भुवि चित्तरञ्जनः० — ६—५१

५६५. सदैव पापस्य भवत्यहो क्षयः० — १—७३

५६६. सन्तुष्टचेतर्नृपतीस्तदैव० — ६—७

५६७. सनातनो वैदिकधर्म एव० — ७—६

५६८. सप्ताद्रिभूषण विभूषितभूमिभागः० — १०—२०

५६९. समन्वयं स्थापयितुं प्रकृत्या० — ६—४३

५७०. समस्ततीर्थेषु तदेव साम्प्रतं० — ३—१७

५७१. समस्तदेवाः निजदेहजं महः० — १—१८

५७२. समस्तवस्तूनि समस्तवान्धवान्० — १—५२

५७३. समस्तवेदेषु च शास्त्रराशिषु० — ६—१५

५७४. समागतानां गुरुदर्शनार्थं० — ६—४८

५७५. समासां विद्यानां० — ६—३६

५७६. स्मुत्थमर्मेर्मविदीर्णं० — ५—११

५७८. सम्प्रेक्ष्य विस्मृतमना० — २—३४

५८१. सरस्वती सा धिषणाप्रचोदिनी० — १—६१

५७९. सर्वत्र सर्वेश्वरदेवदेव० — ६—८६

५८०. सर्ववेदेषु निष्णान्ताः सर्वविद्या० — ६—२२

५८१. सर्वाः दिशश्च सर्वाः मनुजाः० — २—३३

५८२. सर्वेषु सर्वविषयेषु यदेव भद्रं० — ६—१०८

५८३. सर्वेषु तीर्थनिचयेषु परं प्रसिद्धं० — ३—३५

५८४. सर्वे भारतवासिनः प्रतिदिनं० — ८—३१

५८५. स शंकरोभूत् प्रथमो जगद्गुरुः० — ६—२

५८६. सहस्ररश्मिप्रभयाप्रतापिता० — १—३६

५८७. सहसा परमाचार्यः भक्तानां० — ६—३६

५८८. साक्षाद्दृष्ट्वा विरहविधुरा० — ५—७८

५८९. साक्षाद्भारतभूमिपुण्यजननीवक्षः० — ८—५३

५९०. सानन्दमेव निजरम्यतरंगमालैः० — ४—६

५९१. सानन्दं प्रकृतिः सदा स्वकृतिभिः० — ८—६६

५९२. साहित्यसंस्कृतिपरिस्थितियोग्यनीतिः० — १०—२४

५९३. साहित्ये यत्र धन्याः० — १०—६

५९४. सिद्धानां व्रतमन्त्रचारण० — ८—२४

५९५. सुतासुतानां विधिनोपि निर्मिता० — १—६१

५६६. सुतः स्वकीयैः सुगुणैरथान्यथा० — १—१०५

५६७. सुदुस्तरोऽयं जगदम्बुधिर्महान्० — ७—२४

५६८. सुनीलचक्रं पुरुषोत्तमायुधं० — ३—२५

५६९. सुरैः कियद्भिः महती स्तुतिः० — १—६

६००. सूर्यास्ततप्तमरुभूमिपथाध्वगश्च० — ४—२१

६०१. सृजामि खादामि ददामि नौमि वा० — १—८६

६०२. सृष्टेरनादिसमये न यदा किमासीत्० — ४—२१

६०३. सृष्टेरनादिमसर्जनं हि सलिलं० — ८—४२

६०४. सौभाग्यदानरतसंकटमोचनस्य० — ८—८

६०५. सौभाग्यमेतदधुना वयमत्र० — १०—३०

६०६. सौभाग्यं लसतात् सुखं विकसतात्० — ८—६८

६०७. सौराष्ट्रसंशोभितसागरस्य० — ७—६

६०८. सौराष्ट्रं प्रणमामि यत्र भगवान्० — ७—१

६०९. सौहार्द्रपूर्णपरितोषितमानसेन० — १०—२६

६१०. संवर्धितः सन् स बुधैरनेकैः० — ६—८५

६११. संसारदुःखमयबन्धननाशदक्षे० — ८—७

६१२. संसारधातारमनन्तरूपं० — ६—१४

६१३. संसारनिर्मितपरायणसृष्टिकर्तृतुः० — २—२

६१४. संसारबन्धकवलात्कलिकल्मषाच्च० — ४—२६

६१५. संसारमद्य भगिनि ! प्रविहाय० — ५—४३

६१६. संसाररक्षणपरायणसौम्यमूर्तेः० — १०—३१

६१७. संसारसागरमुत्तरणैकसेतुः० — १०—२३

६१८. संसारसृष्टिपरिरक्षणनाशहेतुं० — १०—३

६१९. संस्थाप्य रत्ननिचयान्० — ४—५

६२०. स्तन्यं प्रदाय शिशवे जननी० — २—११

६२१. स्तन्यं शिशुः समुपलभ्य० — ८—५

६२२. स्तुतिः कृत्ता तेन तपश्च० — १—१००

६२३. स्थानादितः वसति सानतिदूरदशे० — १०—५

६२४. स्नात्वा ततः जह्नुसुताप्रवाहे० — ६—८८

६२५. स्नानं च जह्नुतनयासलिले० — ६—७५

६२६. स्मरामि मातस्तवकष्टवर्धने० — १—५१

६२७. स्रगाकृतिं व्योमनि गृध्रपक्षिणः० — ५—१३

६२८. स्रष्टा त्वमेवासि परं नियन्ता० — ६—२०

६२९. स्त्रोतोयुक्तमलयसलिलां० – ५–६६

६३०. स्वकीयजीवने नूनं त्वं वै० – ९–३०

६३१. स्वकीयमातुः परलोकवार्त्तां० – ६–६५

६३२. स्वकीययात्रासमये महात्मा० – ९–५६

६३३. स्वकीयवक्षोजतले मलीमसं० – १–३४

६३४. स्वकीयवक्षोजसुधारसोच्चयै० – १–१०

६३५. स्वयंप्रभा या शिवमस्तकार्चिता० – १–३५

६३६. स्वयं विभुःस्वर्गपुरात्प्रजापतिः० – ६–२६

६३७. स्वाधीनता भारतवासिनां ० – ९–४६

"ह"

६३८. हठान्मदीये हृदये प्रकम्पनं० – ५–१०

६३९. हर्त्तुं नराणामिह पापतापं० – ६–१८

६४०. हा शैशवं तदधुना सुतरामतीतं० – २–३८

६४१. हास्ये शिशोर्विलसति० – २–१८

६४२. हा हन्त सम्प्रति विशीर्णतनुः० – २–४२

६४३. हिमालयस्योपरि राजमानः० – ७–२०

६४४. हिरण्यपूर्वं कशिपुं निहन्तुं० – ६–१६

६४५. हृदि विराजति ते मुरलीधरः० – ४–४२

६४६. हे आत्मरूप ! भगवन्० – ९–८

६४७. हे गंगे ! तवपुण्यतोयनिकरैः० – ८–३७

६४८. हे गंगे ! यदि ते समस्तसलिलं० – ८–७४

६४९. हे जातेर्जनक ! स्वयञ्च भगवन्० – ८–३२

६५०. हे तीर्थराज ! तव पुण्यतटप्रदेशे० – ४–३

६५१. हे देव देव प्रभुदारुरूप० – ६–१९

६५२. हे पद्मजाप्रिय ! भवन्मुखनिःसृता ० – १०–३७

६५३. हे भीमरूप ! बहुभिर्जलजन्तुभिस्तैः० – ४–१०

६५४. हे लोकशंकरजगद्गुरुपूज्यपाद० – ९–१०१

६५५. शैशव स्मृतिपथान्न्कदोपि गच्छ० – २–५१

६५६. हे संसारसमस्तसुप्तजनतोत्थानैकसूर्यप्रभ० – १०–४७

६५७. हैद्रावदाख्यनगरं च ततः समेत्य० – ९–७३

"क्ष"

६५८. क्षुद्रो वराकशिशुको ननु निःसहाय० – ५–४८

६५९. क्षेत्रे नृसिंहवसतौ परमे पवित्रे० – ३–३४

.....इति परिशिष्ट.....